

सौगात कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

त्रिभुवन विश्व विद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय

अन्तर्गत रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली विभाग

स्नातकोत्तर तह, द्वितीय वर्षको दसौं पत्रको

प्रयोजनका लागि प्रस्तुत

शोधपत्र

शोधार्थी :

हरि शरण खनाल

त्रिवि दर्ता नं. ६३४०२२७५२००६

रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस

प्रदर्शनी मार्ग, काठमाडौं

२०७०

शोध निर्देशक :
प्रा.डा. बढी विशाल भट्टराई

सौगात कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

त्रिभुवन विश्व विद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय
अन्तर्गत रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली विभाग
स्नातकोत्तर तह, द्वितीय वर्षको दसौं पत्रको
प्रयोजनका लागि प्रस्तुत

शोधपत्र

हरि शरण खनाल
त्रिवि दर्ता नं. ६३४०२२७५२००६
रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस
प्रदर्शनी मार्ग, काठमाडौं
२०७०

निर्देशकको सिफारिस

त्रिभुवन विश्व विद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय अन्तर्गत रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली विषयका छात्र हरि शरण खनालले स्नातकोत्तर तह, द्वितीय वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनका लागि प्रस्तुत गरेको **सौगात कविता सङ्ग्रहको अध्ययन** शीर्षकको शोधपत्र मेरो निर्देशनमा तयार पारिएको हो । परिश्रम र लगनशीलता पूर्वक तयार गरिएको यस शोधकार्यबाट म पूर्ण रूपमा सन्तुष्ट छु । यस शोधपत्रको मूल्याङ्कनका लागि रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली शिक्षण समिति समक्ष सिफारिस गर्दछु ।

.....
प्रा. डा. बट्टी विशाल भट्टराई
रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस
प्रदर्शनी मार्ग, काठमाडौं

मिति : २०७०/०८/०९

त्रिभुवन विश्व विद्यालय
रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस
प्रदर्शनी मार्ग, काठमाडौं

मिति : २०७०/०८/१०

स्वीकृति पत्र

त्रिभुवन विश्व विद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय अन्तर्गत रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली शिक्षण समितिका छात्र हरि शरण खनालले स्नातकोत्तर तह, द्वितीय वर्षको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि प्रस्तुत गरेको **सौगात कविता सङ्ग्रहको अध्ययन** शीर्षकको शोधपत्र स्वीकृत गरिएको छ ।

.....
प्रा.डा. नन्दीश प्रसाद अधिकारी
बाह्य विशेषज्ञ

.....
प्रा. डा. बट्टी विशाल भट्टराई
शोध निर्देशक

.....
सह प्रा. भगवान चन्द्र उपाध्याय
अध्यक्ष
नेपाली शिक्षण समिति

कृतज्ञता ज्ञापन

त्रिभुवन विश्व विद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय अन्तर्गत रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली विभागको स्नातकोत्तर तह, द्वितीय वर्षको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि मैले सौगात कविता सङ्ग्रहको अध्ययन शीर्षकमा यो शोधकार्य तयार पारेको हुँ। सर्वप्रथम म यस कार्यमा आफ्नो अमूल्य समय, सद्भावपूर्ण सल्लाह, सुझाव र निर्देशन दिनु हुने श्रद्धेय गुरु एवम् यस शोधका निर्देशक प्रा. डा. बट्टी विशाल भट्टराईप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु।

प्रस्तुत शोधकार्यका लागि विभागीय स्वीकृति दिएर अवसर प्रदान गर्नु हुने क्याम्पसका विभागीय प्रमुख आदरणीय गुरु भगवानचन्द्र उपाध्यायप्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु। यसैगरी आफ्नो अमूल्य कृतिमा शोधकार्य गर्न स्वीकृति दिनु हुने कवि बलराम दाहाल, शोधकार्यका लागि आवश्यक मार्ग दर्शन गर्नु हुने श्रद्धेय गुरु प्रयाग राज वाशिष्ठ र मित्र डा. प्रेम प्रसाद चौलागाईंप्रति पनि हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु। त्यसैगरी बेला बेलामा आवश्यक सहयोग, सल्लाह, सुझाव सहित शोध कार्यका लागि निरन्तर घच्चचाइ रहने मित्रहरू प्रभात आचार्य र लेखनाथ दाहालप्रति पनि म पूर्णतः आभारी छु। शोधकार्यका सिलसिलामा आवश्यक पुस्तक, पत्र पत्रिका उपलब्ध गराई सहयोग गर्ने त्रि. वि. केन्द्रीय पुस्तकालय तथा केशर पुस्तकालय परिवारप्रति पनि धन्यवाद ज्ञापन गर्दछु।

अन्त्यमा, यस शोधपत्रको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली शिक्षण समिति समक्ष प्रस्तुत गर्दछु।

त्रिवि दर्ता नं. ६३४०२२७५२००६

परीक्षा क्रमाङ्क : ४३४४

शैक्षिक सत्र : २०६३

हरि शरण खनाल

नेपाली विभाग

रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस

प्रदर्शनी मार्ग, काठमाडौं

विषय सूची

अध्याय : एक

शोध परिचय

१.१.	शोध शीर्षक	१
१.२.	शोधकार्यको प्रयोजन	१
१.३.	विषय परिचय	१
१.४.	समस्या कथन	१
१.५.	शोधका उद्देश्यहरू	२
१.६.	पूर्वकार्यको समीक्षा	२
१.७.	शोधको औचित्य र महत्त्व	४
१.८.	शोधको सीमाङ्कन	५
१.९.	सैद्धान्तिक ढाँचा र शोधविधि	५
१.१०.	शोधपत्रको रूपरेखा	५

अध्याय : दुई

कवि बलराम दाहालको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व

०.	विषय प्रवेश	६
२.१.	बलराम दाहालको जीवनी	६
२.१.१.	जन्म र जन्मस्थल	६
२.१.२.	पारिवारिक पृष्ठभूमि	६
२.१.३.	शिक्षा	६
२.१.४.	पेसा	७
२.१.५.	रुचि	७
२.१.६.	साहित्यिक प्रेरणा	७
२.१.७.	भ्रमण	८
२.१.८.	सङ्घ, संस्थागत संलग्नता	८
२.२.	बलराम दाहालको व्यक्तित्व	८
२.२.१.	साहित्येतर व्यक्तित्व	८
२.२.१.१.	शारीरिक व्यक्तित्व	८
२.२.१.२.	पारिवारिक व्यक्तित्व	९
२.२.१.३.	सामाजिक व्यक्तित्व	९
२.२.१.४.	अध्ययनशील व्यक्तित्व	९
२.२.१.५.	शिक्षक व्यक्तित्व	१०
२.२.२.	साहित्यिक व्यक्तित्व	१०
२.२.२.१.	कवि व्यक्तित्व	१०
२.२.२.२.	खण्डकाव्यकार व्यक्तित्व	१०
२.२.२.३.	गजलकार व्यक्तित्व	१०
२.२.२.४.	बाल साहित्यकार व्यक्तित्व	११
२.२.२.५.	निबन्धकार व्यक्तित्व	११
२.२.२.५.	हास्य व्यङ्ग्यकार व्यक्तित्व	१२

२.२.२.६.	भूमिकाकार व्यक्तित्व	१२
२.३.	बलराम दाहालको कृतित्व	१३
२.३.१.	घरको कथा (खण्डकाव्य)	१३
२.३.२.	हामी बालक (बाल कविता सङ्ग्रह)	१४
२.३.३.	खरानी पो भयो माटो (गजल सङ्ग्रह)	१५
२.३.४.	पश्चात्ताप (बाल उपन्यास)	१७
२.३.५.	सौगात (कविता सङ्ग्रह)	१७
२.३.६.	फुलबारी (बाल गजल सङ्ग्रह)	१८
२.४.	बलराम दाहालको साहित्यिक यात्रा	१९
२.४.१.	प्रथम चरण (वि.सं. २०५३-वि.सं. २०६२)	१९
२.४.२.	द्वितीय चरण (वि.सं. २०६३ देखि हालसम्म)	१९
२.५.	कवि बलराम दाहालका काव्य प्रवृत्ति	२०
२.५.१.	स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति	२०
२.५.२.	प्रकृति चेतना	२१
२.५.३.	राष्ट्रवादी चेतना	२१
२.५.४.	मानवतावादी चेतना	२१
२.५.५.	सामाजिक चेतना	२२
२.५.६.	भाषिक चेतना	२२
२.६.	सारांश	२३

अध्याय : तिन

कविता सिद्धान्त र नेपाली कविता परम्परा

०.	विषय प्रवेश	२४
३.१.	कविताको परिचय	२४
३.२.	कविता सम्बन्धी पूर्वीय अध्ययन	२४
३.३.	संस्कृत (पूर्वीय) साहित्यमा कविताको परिभाषा	२५
३.४.	कविता सिद्धान्त सम्बन्धी पश्चिमी अध्ययन	२६
३.५.	नेपाली विद्वान्हरूको नजरमा कविता	२८
३.६.	कविता विश्लेषण पद्धतिको खोजी	२९
३.६.१.	शीर्षक	३०
३.६.२.	संरचना	३०
३.६.२.१.	आन्तरिक संरचना	३०
३.६.२.२.	बाह्य संरचना	३०
३.६.३.	लय विधान	३१
३.६.४.	भाव विधान/केन्द्रीय भाव विचार	३१
३.६.५.	कथन पद्धति	३१
३.६.६.	भाषाशैली	३१
३.६.७.	बिम्ब तथा अलङ्कार	३२
३.७.	नेपाली कविताको समसामयिक धारा (२०३७-हालसम्म) तथा कवि बलराम दाहालको आगमन	३२
३.८.	सारांश	३३

अध्याय : चार

कविता तत्त्वका आधारमा 'सौगात' कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

०.	विषय प्रवेश	३४
४.१.	परिचय	३४
४.२.	'जिन्दगी' कविता	३४
४.२.१.	संरचना	३४
४.२.२.	लय विधान	३४
४.२.३.	भाव विधान	३५
४.२.४.	कथन पद्धति	३५
४.२.५.	भाषाशैली	३५
४.२.६.	विम्ब/अलङ्कार	३५
४.२.७.	शीर्षक	३६
४.३.	'गुरु' कविता	३६
४.३.१.	संरचना	३६
४.३.२.	लय विधान	३६
४.३.३.	भाव विधान	३६
४.३.४.	कथन पद्धति	३७
४.३.५.	भाषाशैली	३७
४.३.६.	विम्ब/अलङ्कार	३७
४.३.७.	शीर्षक	३७
४.४.	'कविता' कविता	३८
४.४.१.	संरचना	३८
४.४.२.	लय विधान	३८
४.४.३.	भाव विधान	३८
४.४.४.	कथन पद्धति	३८
४.४.५.	भाषाशैली	३८
४.४.६.	विम्ब/अलङ्कार	३९
४.४.७.	शीर्षक	३९
४.५.	'दैनिकी' कविता	३९
४.५.१.	संरचना	३९
४.५.२.	लय विधान	३९
४.५.३.	भाव विधान	३९
४.५.४.	कथन पद्धति	४०
४.५.५.	भाषाशैली	४०
४.५.६.	विम्ब/अलङ्कार	४०
४.५.७.	शीर्षक	४०
४.६.	'यात्रा' कविता	४०
४.६.१.	संरचना	४०
४.६.२.	लय विधान	४०
४.६.३.	भाव विधान	४१
४.६.४.	कथन पद्धति	४१
४.६.५.	भाषाशैली	४१
४.६.६.	विम्ब/अलङ्कार	४१
४.६.७.	शीर्षक	४२
४.७.	'नरोएको कुनै दिन' कविता	४२
४.७.१.	संरचना	४२

४.७.२.	लय विधान	४२
४.७.३.	भाव विधान	४२
४.७.४.	कथन पद्धति	४३
४.७.५.	भाषाशैली	४३
४.७.६.	बिम्ब/अलङ्कार	४३
४.७.७.	शीर्षक	४४
४.८.	'लाली' कविता	४४
४.८.१.	संरचना	४४
४.८.२.	लय विधान	४४
४.८.३.	भाव विधान	४४
४.८.४.	कथन पद्धति	४४
४.८.५.	भाषाशैली	४४
४.८.६.	बिम्ब/अलङ्कार	४५
४.८.७.	शीर्षक	४५
४.९.	'सम्भ्रना छात्रावासको' कविता	४५
४.९.१.	संरचना ४५	
४.९.२.	लय विधान	४५
४.९.३.	भाव विधान	४५
४.९.४.	कथन पद्धति	४६
४.९.५.	भाषाशैली	४६
४.९.६.	बिम्ब/अलङ्कार	४६
४.९.७.	शीर्षक	४६
४.१०.	'म अनन्त जान्छु' कविता	४७
४.१०.१.	संरचना	४७
४.१०.२.	लय विधान	४७
४.१०.३.	भाव विधान	४७
४.१०.४.	कथन पद्धति	४७
४.१०.५.	भाषाशैली	४८
४.१०.६.	बिम्ब/अलङ्कार	४८
४.१०.७.	शीर्षक	४८
४.११.	'उचाइ' कविता	४९
४.११.१.	संरचना	४९
४.११.२.	लय विधान	४९
४.११.३.	भाव विधान	४९
४.११.४.	कथन पद्धति	४९
४.११.५.	भाषाशैली	४९
४.११.६.	बिम्ब/अलङ्कार	५०
४.११.७.	शीर्षक	५०
४.१२.	'भानुलाई पत्र' कविता	५०
४.१२.१.	संरचना	५०
४.१२.२.	लय विधान	५०
४.१२.३.	भाव विधान	५०
४.१२.४.	कथन पद्धति	५१
४.१२.५.	भाषाशैली	५१
४.१२.६.	बिम्ब/अलङ्कार	५१
४.१२.७.	शीर्षक	५१

४.१३.	‘ॐकारमा छौं सबै’ कविता	५२
४.१३.१.	संरचना	५२
४.१३.२.	लय विधान	५२
४.१३.३.	भाव विधान	५२
४.१३.४.	कथन पद्धति	५२
४.१३.५.	भाषाशैली	५२
४.१३.६.	बिम्ब/अलङ्कार	५३
४.१३.७.	शीर्षक	५३
४.१४.	‘बाटो चिनेनौ तर’ कविता	५३
४.१४.१.	संरचना	५३
४.१४.२.	लय विधान	५३
४.१४.३.	भाव विधान	५३
४.१४.४.	कथन पद्धति ५४	
४.१४.५.	भाषाशैली	५४
४.१४.६.	बिम्ब/अलङ्कार	५४
४.१४.७.	शीर्षक	५४
४.१५.	‘गए गहना’ कविता	५४
४.१५.१.	संरचना	५४
४.१५.२.	लय विधान	५४
४.१५.३.	भाव विधान	५४
४.१५.४.	कथन पद्धति	५५
४.१५.५.	भाषाशैली	५५
४.१५.६.	बिम्ब/अलङ्कार	५५
४.१५.७.	शीर्षक	५५
४.१६.	‘सुकर्म’ कविता	५६
४.१६.१.	संरचना	५६
४.१६.२.	लय विधान	५६
४.१६.३.	भाव विधान	५६
४.१६.४.	कथन पद्धति	५६
४.१६.५.	भाषाशैली	५६
४.१६.६.	बिम्ब/अलङ्कार	५६
४.१६.७.	शीर्षक	५७
४.१७.	‘सम्भना’ कविता	५७
४.१७.१.	संरचना	५७
४.१७.२.	भाव विधान	५७
४.१७.४.	कथन पद्धति	५७
४.१७.५.	भाषाशैली	५७
४.१७.६.	बिम्ब/अलङ्कार	५८
४.१७.७.	शीर्षक	५८
४.१८.	‘देवकोटाप्रति’ कविता	५८
४.१८.१.	संरचना	५८
४.१८.२.	लय विधान	५८
४.१८.३.	भाव विधान	५८
४.१८.४.	कथन पद्धति	५९
४.१८.५.	भाषाशैली	५९
४.१८.६.	बिम्ब/अलङ्कार	५९

४.१८.७.	शीर्षक	५९
४.१९.	'रक्सी पुरानै रह्यो' कविता	५९
४.१९.१.	संरचना	५९
४.१९.२.	लय विधान	५९
४.१९.३.	भाव विधान	५९
४.१९.४.	कथन पद्धति	६०
४.१९.५.	भाषाशैली	६०
४.१९.६.	बिम्ब/अलङ्कार	६०
४.१९.७.	शीर्षक	६०
४.२०.	'आग्लो नलागोस् तर' कविता	६१
४.२०.१.	संरचना	६१
४.२०.२.	लय विधान	६१
४.२०.३.	भाव विधान	६१
४.२०.४.	कथन पद्धति	६१
४.२०.५.	भाषाशैली	६१
४.२०.६.	बिम्ब/अलङ्कार	६१
४.२०.७.	शीर्षक	६२
४.२१.	'प्यारो नेपाल' कविता	६२
४.२१.१.	संरचना	६२
४.२१.२.	लय विधान	६२
४.२१.३.	भाव विधान	६२
४.२१.४.	कथन पद्धति	६२
४.२१.५.	भाषाशैली	६२
४.२१.६.	बिम्ब/अलङ्कार	६३
४.२१.७.	शीर्षक	६३
४.२२.	'सम्भेर आऊ प्रिये' कविता	६३
४.२२.१.	संरचना	६३
४.२२.२.	लय विधान	६३
४.२२.३.	भाव विधान	६३
४.२२.४.	कथन पद्धति	६४
४.२२.५.	भाषाशैली	६४
४.२२.६.	बिम्ब/अलङ्कार	६४
४.२२.७.	शीर्षक	६४
४.२३.	'सोचेर आऊ तर' कविता	६४
४.२३.१.	संरचना	६४
४.२३.२.	लय विधान	६४
४.२३.३.	भाव विधान	६४
४.२३.४.	कथन पद्धति	६५
४.२३.५.	भाषाशैली	६५
४.२३.६.	बिम्ब/अलङ्कार	६५
४.२३.७.	शीर्षक	६५
४.२४.	'बाल्यकाल र कर्तव्य' कविता	६६
४.२४.१.	संरचना	६६
४.२४.२.	लय विधान	६६
४.२४.३.	भाव विधान	६६
४.२४.४.	कथन पद्धति	६६

४.२४.५.	भाषाशैली	६६
४.२४.६.	बिम्ब/अलङ्कार	६६
४.२४.७.	शीर्षक	६७
४.२५.	'वैशाख लागेपछि' कविता	६७
४.२५.१.	संरचना	६७
४.२५.२.	लय विधान	६७
४.२५.३.	भाव विधान	६७
४.२५.४.	कथन पद्धति	६७
४.२५.५.	भाषाशैली	६७
४.२५.६.	बिम्ब/अलङ्कार	६८
४.२५.७.	शीर्षक	६८
४.२६.	'कवितै कविता लाग्छन्' कविता	६८
४.२६.१.	संरचना	६८
४.२६.२.	लय विधान	६८
४.२६.३.	भाव विधान	६८
४.२६.४.	कथन पद्धति	६८
४.२६.५.	भाषाशैली	६९
४.२६.६.	बिम्ब/अलङ्कार	६९
४.२६.७.	शीर्षक	६९
४.२७.	'बाँकी छ' कविता	६९
४.२७.१.	संरचना	६९
४.२७.२.	लय विधान	६९
४.२७.३.	भाव विधान	६९
४.२७.४.	कथन पद्धति	७०
४.२७.५.	भाषाशैली	७०
४.२७.६.	बिम्ब/अलङ्कार	७०
४.२७.७.	शीर्षक	७०
४.२८.	'जोगिदै आएँ' कविता	७०
४.२८.१.	संरचना	७१
४.२८.२.	लय विधान	७१
४.२८.३.	भाव विधान	७१
४.२८.४.	कथन पद्धति	७१
४.२८.५.	भाषाशैली	७१
४.२८.६.	बिम्ब/अलङ्कार	७१
४.२८.७.	शीर्षक	७२
४.२९.	'नियति, कविता र कवि' कविता	७२
४.२९.१.	संरचना	७२
४.२९.२.	लय विधान	७२
४.२९.३.	भाव विधान	७२
४.२९.४.	कथन पद्धति	७२
४.२९.५.	भाषाशैली	७२
४.२९.६.	बिम्ब/अलङ्कार	७३
४.२९.७.	शीर्षक	७३
४.३०.	'सौगात' कविता	७३
४.३०.१.	संरचना	७३
४.३०.२.	लय विधान	७३

४.३०.३.	भाव विधान	७३
४.३०.४.	कथन पद्धति	७४
४.३०.५.	भाषाशैली	७४
४.३०.६.	बिम्ब/अलङ्कार	७४
४.३०.७.	शीर्षक	७४
४.३१.	'कलिकथा' कविता	७४
४.३१.१.	संरचना	७४
४.३१.२.	लय विधान	७४
४.३१.३.	भाव विधान	७५
४.३१.४.	कथन पद्धति	७५
४.३१.५.	भाषाशैली	७५
४.३१.६.	बिम्ब/अलङ्कार	७५
४.३१.७.	शीर्षक	७५
४.३२.	'कलाको आँगन' कविता	७६
४.३२.१.	संरचना	७६
४.३२.२.	लय विधान	७६
४.३२.३.	भाव विधान	७६
४.३२.४.	कथन पद्धति	७६
४.३२.५.	भाषाशैली	७६
४.३२.६.	बिम्ब/अलङ्कार	७६
४.३२.७.	शीर्षक	७६
४.३३.	'हार खान्नाँ' कविता	७७
४.३३.१.	संरचना	७७
४.३३.२.	लय विधान	७७
४.३३.३.	भाव विधान	७७
४.३३.४.	कथन पद्धति	७७
४.३३.५.	भाषाशैली	७७
४.३३.६.	बिम्ब/अलङ्कार	७७
४.३३.७.	शीर्षक	७७
४.३४.	'यस्तो किन ?' कविता	७८
४.३४.१.	संरचना	७८
४.३४.२.	लय विधान	७८
४.३४.३.	भाव विधान	७८
४.३४.४.	कथन पद्धति	७८
४.३४.५.	भाषाशैली	७८
४.३४.६.	बिम्ब/अलङ्कार	७८
४.३४.७.	शीर्षक	७९
४.३५.	'बुभेरे आऊ' कविता	७९
४.३५.१.	संरचना	७९
४.३५.२.	लय विधान	७९
४.३५.३.	भाव विधान	७९
४.३५.४.	कथन पद्धति	७९
४.३५.५.	भाषाशैली	७९
४.३५.६.	बिम्ब/अलङ्कार	७९
४.३५.७.	शीर्षक	८०
४.३६.	'सिद्धिन्छ, राम्रैसँग' कविता	८०

४.३६.१.	संरचना	८०
४.३६.२.	लय विधान	८०
४.३६.३.	भाव विधान	८०
४.३६.४.	कथन पद्धति	८१
४.३६.५.	भाषाशैली	८१
४.३६.६.	बिम्ब/अलङ्कार	८१
४.३६.७.	शीर्षक	८१
४.३७.	'संसारको सार' कविता	८१
४.३७.१.	संरचना	८१
४.३७.२.	लय विधान	८१
४.३७.३.	भाव विधान	८२
४.३७.४.	कथन पद्धति	८२
४.३७.५.	भाषाशैली	८२
४.३७.६.	बिम्ब/अलङ्कार	८२
४.३७.७.	शीर्षक	८२
४.३८.	'नथाक्ने मन' कविता	८२
४.३८.१.	संरचना	८२
४.३८.२.	लय विधान	८२
४.३८.३.	भाव विधान	८३
४.३८.४.	कथन पद्धति	८३
४.३८.५.	भाषाशैली	८३
४.३८.६.	बिम्ब/अलङ्कार	८३
४.३८.७.	शीर्षक	८३
४.३९.	'शङ्का' कविता	८४
४.३९.१.	संरचना	८४
४.३९.२.	लय विधान	८४
४.३९.३.	भाव विधान	८४
४.३९.४.	कथन पद्धति	८४
४.३९.५.	भाषाशैली	८४
४.३९.६.	बिम्ब/अलङ्कार	८४
४.३९.७.	शीर्षक	८४
४.४०.	'घोत्तिरहेछु' कविता	८५
४.४०.१.	संरचना	८५
४.४०.२.	लय विधान	८५
४.४०.३.	भाव विधान	८५
४.४०.४.	कथन पद्धति	८५
४.४०.५.	भाषाशैली	८५
४.४०.६.	बिम्ब/अलङ्कार	८६
४.४०.७.	शीर्षक	८६
४.४१.	'आमा' कविता	८६
४.४१.१.	संरचना	८६
४.४१.२.	लय विधान	८६
४.४१.३.	भाव विधान	८६
४.४१.४.	कथन पद्धति	८६
४.४१.५.	भाषाशैली	८७
४.४१.६.	बिम्ब/अलङ्कार	८७

४.४१.७.	शीर्षक	८७
४.४२.	'रहस्य' कविता	८७
४.४२.१.	संरचना	८७
४.४२.२.	लय विधान	८७
४.४२.३.	भाव विधान	८७
४.४२.४.	कथन पद्धति	८८
४.४२.५.	भाषाशैली	८८
४.४२.६.	बिम्ब/अलङ्कार	८८
४.४२.७.	शीर्षक	८८
४.४३.	'उही छ कुरो' कविता	८८
४.४३.१.	संरचना	८८
४.४३.२.	लय विधान	८८
४.४३.३.	भाव विधान	८८
४.४३.४.	कथन पद्धति	८९
४.४३.५.	भाषाशैली	८९
४.४३.६.	बिम्ब/अलङ्कार	८९
४.४३.७.	शीर्षक	८९
४.४४.	सारांश	८९

अध्याय : पाँच

'सौगात' कविता सङ्ग्रहका कविताहरूको प्रवृत्तिपरक अध्ययन

५.१.	विषय प्रवेश	९०
५.२.	स्वच्छन्दता	९०
५.३.	सामाजिक यथार्थता	९१
५.४.	राष्ट्रियता	९२
५.५.	व्यङ्ग्यात्मकता	९३
५.६.	छन्दोबद्धता	९४
५.६.१.	उपजाति	९५
५.६.२.	उपजाति र उपेन्द्रवज्रा ९५	
५.६.३.	उपजाति र इन्द्रवज्रा	९५
५.६.४.	उपजाति, उपेन्द्रवज्रा र इन्द्रवज्रा	९६
५.६.५.	शार्दूलविक्रीडित	९६
५.६.६.	अनुष्टुप्	९७
५.६.७.	द्रुतविलम्बित	९७
५.६.८.	पञ्चचामर	९७
५.६.९.	शिखरिणी	९७
५.७.	सारांश	९८

अध्याय : छ

उपसंहार तथा निष्कर्ष

६.१.	अध्यायगत सार	९९
६.२.	निष्कर्ष	९९
	अध्ययनको उपलब्धि	१०२
	अध्ययनका सम्भाव्य शीर्षकहरू	१०२
	परिशिष्ट	१०३
	सन्दर्भ सामग्री सूची	१०६

अध्याय : एक शोध परिचय

१.१. शोध शीर्षक

प्रस्तुत शोधपत्रको शीर्षक 'सौगात कविता सङ्ग्रहको अध्ययन' रहेको छ ।

१.२. शोधकार्यको प्रयोजन

प्रस्तुत शोधपत्र त्रिभुवन विश्व विद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय अन्तर्गत रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली विभाग स्नातकोत्तर तह द्वितीय वर्षको दसौँ पत्रको पाठ्यांशीय प्रयोजनका लागि तयार गरिएको हो ।

१.३. विषय परिचय

नेपाली साहित्यको उर्वर फाँटलाई अनेक साहित्यकारका अनमोल सिर्जनाले हराभरा पारेका छन् । त्यस्ता साहित्यकारका पङ्क्तिमा कवि बलराम दाहाल (वि.सं. २०३७) को पनि नाम आउँछ । नेपाली साहित्यको फाँटमा भर्खरै वामे सर्न सुरु गरेका भए पनि लगभग ६-७ वर्षको अन्तरालमा कवि बलरामले **घरको कथा** (खण्डकाव्य-वि. सं. २०६३), **हामी बालक** (बाल कविता सङ्ग्रह-२०६५), **पश्चात्ताप** (बाल उपन्यास-२०६८), **खरानी पो भयो माटो** (गजल सङ्ग्रह-वि.सं.२०६८), र **सौगात** (कविता सङ्ग्रह-वि. सं.२०६८) जस्ता पाँच अनमोल कृति प्रदान गरेर नेपाली साहित्यलाई गहकिलो योगदान पुऱ्याएका छन् ।

दाहाल नेपाली समसामयिक धारामा देखिएका छन्द कविताका थोरै सर्जकमध्ये सायद उमेरमा कान्छा तर सिर्जनामा परिष्कृत सर्जक हुन् । उनको कविता सङ्ग्रह **सौगात** (२०६८) ले छन्द कविताको उत्तमनमा एक इँटा थप्ने काम गरेको छ । सोही सौगात कविता सङ्ग्रहभित्र समेटिएका कविताहरूको यहाँ अध्ययन गरिएको छ ।

१.४. समस्या कथन

सौगात कविता सङ्ग्रहबारे हालसम्म छुट्टै शोधपरक अध्ययन नभए पनि नेपाली भाषा साहित्यका केही स्रष्टा तथा समालोचकले सो कविता सङ्ग्रहको भूमिका खण्डमा समीक्षात्मक टिप्पणीहरू गरेका छन् । यस्ता टिप्पणीकारमा माधव घिमिरे, वासुदेव त्रिपाठी, तारानाथ शर्मा, मोदनाथ प्रश्रित, दैवज्ञ राज न्यौपाने र राम प्रसाद ज्ञवाली देखिन्छन् । उनीहरूका टिप्पणीलाई समेत मनन गरी यस शोधपत्रका लागि निम्न समस्या निर्धारित गरिएको छ :

- । कवि बलराम दाहालको जीवनी र व्यक्तित्व के कस्तो छ ?
- । कवि बलराम दाहालको कवित्व के कस्तो छ ?
- । कविता तत्त्व तथा प्रवृत्तिका आधारमा सौगात कविता सङ्ग्रहका कविता के स्ता छन् ?

१.५. शोधका उद्देश्यहरू

उपर्युक्त समस्यामा केन्द्रित रही विवेच्य कृतिको अध्ययनका निम्ति निम्न उद्देश्य रहेका छन् :

-) कवि बलराम दाहालको जीवनी र व्यक्तित्वमाथि प्रकाश पार्नु ।
-) कवि बलराम दाहालको कवित्वको पहिचान गर्नु ।
-) कविता तत्त्व र प्रवृत्तिका आधारमा **सौगात कविता** सङ्ग्रहका कविताहरूको विवेचना तथा मूल्याङ्कन गर्नु ।

१.६. पूर्वकार्यको समीक्षा

कवि बलराम दाहालको **सौगात** कविता सङ्ग्रहबारे हालसम्म कुनै शोधकार्य तथा छुट्टै समीक्षा नभए पनि सो कविता सङ्ग्रहको भूमिकामा राष्ट्रकवि माधव घिमिरे, समालोचक वासुदेव त्रिपाठी, तारानाथ शर्मा, मोदनाथ प्रश्रित, दैवज्ञ राज न्यौपाने तथा राम प्रसाद ज्ञवालीले समीक्षात्मक टिप्पणी गरेका छन् ॥ उपर्युक्त विद्वान्हरूले गरेको टिप्पणी नै यस शोधकार्यका लागि पूर्वकार्यको समीक्षाका रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

सौगात कविता सङ्ग्रहको भूमिकामा कविवर माधव घिमिरेले 'रमाइलो शैली रसिलो भाव' शीर्षकमा पहिलो समीक्षात्मक टिप्पणी गरेका छन् । उनले कवि दाहालको काव्यशैलीको प्रशंसा सहित उनका कविता गाई गाई लेखे जस्ता र गाऊँ गाऊँ जस्ता भएको उल्लेख गरेका छन् ।^१ सङ्ग्रहभित्रका कविताको प्रशंसाका अतिरिक्त उनले प्रकृत भावसँग नमिल्ने खालका यमक अलङ्कारको कसरत देख्दा दाहाल शास्त्रीय शैलीका कवि हुन् कि भन्ने भ्रम पर्ने भए पनि उनको शैली स्वच्छन्दतावादी नै हो भनेर दाहालको काव्यशैलीबारे टिप्पणी गरेका छन् ।^२

वरिष्ठ समालोचक वासुदेव त्रिपाठीले **सौगात** कविता सङ्ग्रहको भूमिकामा '**सौगातका सम्बन्धमा**' शीर्षकको लामो समीक्षा गरेका छन् । त्रिपाठीले कवि दाहालको कवित्वको प्रशंसा सहित उनलाई कविता सृजन र गायन दुबै कलामा पोख्त प्रतिभा भन्दै वसन्ती बैँसका नव कोकिलका मधुर आलाप र उल्लासको समन्वय जस्तै दाहालका कविता सुन्दर र मधुर रहेको उल्लेख गरेका छन् ।^३ त्रिपाठीले कवि दाहालको यमक प्रयोगको वैचित्र्यको चामत्कारिक छटाको प्रशंसाका क्रममा अर्ध पङ्क्तिगत, पङ्क्तिगत तथा अन्तर पङ्क्तिगत र कहीं कहीं श्लोकार्ध र श्लोक योजनामै पनि अनि कहीं एकदमै सहवर्ती र कहीं निकट सहवर्ती सार्थक वर्णगत आवृत्ति क्रमका रुचिर सादृश्यको रनक र रौनक सहितको सृजनाकार भनेका छन् ।^४ त्रिपाठीले संस्कृत परम्पराका कालिदास, भारवि, माघ र श्रीहर्षका अनि नेपाली परम्पराका विशेषतः सोमनाथ सिग्देल र लक्ष्मी प्रसाद देवकोटाका रमणीय यमक केलिको झल्को दिने तर पर्याप्त मौलिक पाराको कवि दाहालको यमक छटा अवश्य नै नेपाली काव्यको एक विशेष प्राप्ति हो^५ भन्ने टिप्पणी सहित समालोचक त्रिपाठीले भूमिकामा दाहालको कवित्वको मन खोलेर प्रशंसा गर्दै कतिपय कवितामा प्रयोग भएका छन्द, अलङ्कार आदिवारे पनि विशेष चर्चा गरेका छन् ।

^१ घिमिरे, भूमिका, २०६८

^२ घिमिरे, भूमिका, २०६८

^३ त्रिपाठी, भूमिका, २०६८

^४ पूर्ववत्

^५ पूर्ववत्

ग) वरिष्ठ समालोचक तारानाथ शर्माले **सौगात** कविता सङ्ग्रहमा 'जसका कलममा अनुप्रास थैथै गर्छ' शीर्षकमा छोटो टिप्पणी गरेका छन् । आफ्नो टिप्पणीमा शर्माले कवि बलराम दाहालको छन्दोबद्ध कविता रचना शिल्पको प्रशंसा गरेका छन् । नेपाली भाषामा सुललित संस्कृत छन्द मिलाएर कविताको रचना गर्न सक्नु लर्तरो प्रयास होइन ।^६ उनले अग्रज साहित्य सर्जकहरूको नेपाली भाषामा संस्कृतका वर्णमात्रिक छन्दको सुललित प्रयोगको प्रसङ्ग उठाउँदै वर्तमानमा गद्य कविताको शैलीका प्रभावले अनुप्रास, छन्द तथा लयहीन कविताहरू लेख्ने उन्माद दिन दुगुना रात चौगुना बढेर गएकोले नेपाली पाठकहरू दिनहुँ छन्दोबद्ध सौन्दर्यबाट वञ्चित हुँदै गएकोमा दुःख व्यक्त गरेका छन् साथै छन्दोबद्ध शैलीमा अनुप्रास र लयलाई कज्याउँदै कवि दाहाल नेपाली कविताका क्षेत्रमा उपस्थित भएकोमा सन्तोष पनि व्यक्त गरेका छन् । जसका कलममा अनुप्रास थैथै गर्छ, लय सहर्ष नाच्छ र भावना भाषासँग मितेरी लगाएर हृदय र मस्तिष्कलाई भन्भनाउन पुग्छ ।^७

घ) मोदनाथ प्रश्रितले **'सौगात' बनोस् जन यात्राको सम्बल !** शीर्षकमा सङ्ग्रहको चौथो भूमिकामा अत्यन्त उत्साही र होनहार युवा कविका रूपमा कवि बलराम दाहाललाई चिनाएका छन् । उनले बलरामका कवितामा कला, सौन्दर्य, भाव, छन्द, लय, विचार, संस्कृति, दर्शन, ध्येय, राष्ट्र आदि धेरै कुरा पाइने चर्चा गर्दै उनका कवितामा प्रभावशाली जादुमय सामर्थ्य रहेको तथ्यलाई सोदाहरण प्रस्तुत गरेका छन् ।^८ उनले दाहालका कवितामा ज्ञानको भोक, समानताको सङ्कल्प, विनम्रता, गतिशीलता, भाग्यवादको विरोध, सकुर्मप्रतिको निष्ठा आदि भाव छुटाछुल्ल भएको चर्चा गरेका छन् । खास गरी विविध अलङ्कार र बिम्बलाई अत्यन्तै सहजतासाथ आफ्ना छन्दोबद्ध कवितामा प्रयोग गर्ने दाहालको खुबीलाई प्रश्रितले मुक्तकण्ठले प्रशंसा गरेका छन् । अन्त्यानुप्रास, मध्यानुप्रासका साथै यमक अलङ्कारको प्रयोगमा उनको कलम निकै रहरालु देखिन्छ ।^९ समीक्षक प्रश्रितले दाहाललाई शैलीमा लेखनाथ, संवेदनामा माधव घिमिरे र विचारमा गोकुल जोशीको समन्वित व्यक्तित्व बन्ने लक्ष्यतिर क्रमशः अधि बढ्दै गरेका उज्ज्वल भविष्य बोकेका स्रष्टाका रूपमा चिनाएका छन् ।

ङ) सौगात कविता सङ्ग्रहको पाँचौँ भूमिकाकारका दैवज्ञ राज न्यौपानेले **'जहाँ सबैको मुटु भस्किने छ'** शीर्षकमा अधिकांश पङ्क्ति पुञ्जमा उपजाति र कतै कतै वंशस्थ, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा लगायतका विविध छन्दमा उनिएको कवितात्मक भूमिका लिएर देखा परेका छन् । उनले कवि दाहाललाई कवितात्मक सुभाब दिँदै भनेका छन् : हेर्ने पनि जो मुटु देखिँदैन
लेखेर मात्रै पनि त्यो हुँदैन ।
सक्यौ भने त्यै चिज मात्र लेख
जहाँ सबैको मुटु भस्किनेछ ॥^{१०}

^६ शर्मा, भूमिका, २०६८

^७ पूर्ववत्

^८ प्रश्रित, भूमिका, २०६८

^९ पूर्ववत्

^{१०} न्यौपाने, भूमिका, २०६८

न्यौपानेले कवि दाहालको कवित्व चर्चामा उनलाई शुभ कामना दिँदै साहित्यको खेती सजाउन अनुरोध गरेका छन् । साहित्यको खेती तयार भए पनि कुलो खाली भएकाले त्यसमा पानी लगाएर थप हराभरा पार्न कवि दाहालसित अनुरोध गरेका छन् । कविले सिर्जनाको यात्रामा हार नखाई अघि बढ्नु पर्नेमा न्यौपानेले जोड दिएका छन् । न्यौपानेले दाहालका कवितामा खारिए जस्तो छन्द, भरि भराउ अलङ्कार र यमकको अपूर्व मेल पाइने चर्चा गरेका छन् ।

छन्द छन् खारिए जस्ता अलङ्कार भरिभर

यमक अनुप्रासैको यहाँ मेल अपूर्व छ ।^{११}

च) राम प्रसाद ज्ञवालीले कविता सङ्ग्रहको छैटौँ भूमिकामा 'यमक र समस्या पूर्तिमा बलवान् कवि बलराम' भन्दै आफ्नो टिप्पणी प्रस्तुत गरेका छन् । कवि बलराम दाहाल नाम अनुसार शरीर र कविता दुवैमा बलराम नै छन् ।^{१२} उनले बलरामलाई नाम अनुसार नै शरीर र कविता दुवैमा बलराम भन्दै कविको बलशाली कवित्वको प्रशंसा गरेका छन् । समीक्षक ज्ञवालीले सौगात सङ्ग्रह भित्रका कतिपय कविताको विषय स्वाधीनता, देशभक्ति र राष्ट्रियता पनि देखिने विचार प्रकट गरेका छन् । उनले नरोएको कुनै दिन, उचाइ लगायतका कवितालाई उदाहरणका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । नरोएको कुनै दिन शीर्षकको कवितामा प्रस्तुत 'मुला भैँ देश काटेर बाँडेको हेर्न सकिदैन' भन्ने अभिव्यक्तिबाट राष्ट्रिय अखण्डता खण्डित हुने हो कि भन्ने चिन्ता व्यक्त गरिएको छ भने उचाइ शीर्षकको कवितामा 'हिमाल सदैँ जब पुग्छ पारि, सिद्धिन्छ हामी सबको चिनारी' भन्ने अभिव्यक्तिका माध्यमबाट नेपालका सीमाहरू मिचिँदै भएको चिन्ता र आक्रोश व्यक्त गरिएको पाइन्छ ।^{१३} ज्ञवालीले गुरु शीर्षकको कविताको विशेष चर्चा गरेका छन् । गुरु शीर्षकको कवितामा भौगोलिक एकताका लागि पृथ्वी नारायण, भाषिक विस्तार र काव्यिक पृष्ठभूमि निर्माणका लागि भानुभक्त, कलात्मक निर्माण र सौन्दर्यका लागि अरनिको, शान्ति दर्शनका लागि बुद्ध, हिन्दू दर्शन, ज्ञान, धर्म र संस्कृतिको सौन्दर्यका लागि महर्षि व्यास एवं रहस्यमय व्यापकताका लागि प्रकृति आदिलाई आदर्श पुरुष र आदर्श तत्त्वका रूपमा स्मरण गर्दै तिनीहरूप्रति श्रद्धा र कृतज्ञता व्यक्त गरिएको छ । जुन सारतः उनका कवितामा राष्ट्रियता, देशभक्ति र जातीय गौरवको पक्षमा गरिएको अभिव्यक्तिका रूपमा नै विश्लेषणीय देखिन्छ ।^{१४} समीक्षक ज्ञवालीले कवि दाहालका कवितामा समस्या पूर्तिको रौनक पाइने धारणा व्यक्त गरेका छन् । कवि बलराम दाहालका कवितामा समस्या पूर्तिका रौनक पनि उत्तिकै पाइन्छ । नरोएको कुनै दिन, रक्सी पुरानौ रहयो, आग्लो नलागोस् तर, प्यारो नेपाल, सम्भेर आऊ प्रिये, सोचेर आऊ तर, वैशाख लागेपछि, सिद्धिन्छ राम्रैसँग लगायतका अनेक कविता यसै शैलीमा लेखिएका छन् ।^{१५}

१.७. शोधको औचित्य र महत्त्व

उल्लिखित पूर्वकार्यको समीक्षाबाट विभिन्न विद्वान् तथा अनुसन्धाताले सौगात कविता सङ्ग्रहबारे सामान्य चर्चा परिचर्चा र मूल्याङ्कन गरे पनि विभिन्न दृष्टिकोणबाट यसको सूक्ष्म विश्लेषण गरेको देखिँदैन । तसर्थ यस कविता सङ्ग्रहमै केन्द्रित भएर अध्ययन विश्लेषण गरी कविका काव्यिक प्रवृत्ति

^{११} पूर्ववत्

^{१२} ज्ञवाली, भूमिका, २०६८

^{१३} पूर्ववत्

^{१४} पूर्ववत्

^{१५} पूर्ववत्

केलाउँदै कविता सङ्ग्रहका कविताको भिन्न भिन्न कोणबाट गरिएको विश्लेषण आवश्यक भएकाले यो शोधकार्य औचित्यपूर्ण देखिन्छ भने यस अतिरिक्त शोध अनुसन्धानको क्षेत्रमा एक इँटा थपिने र नेपाली साहित्यानुरागी तथा पाठकलाई पनि यस शोधकार्यले मद्दत पुऱ्याउने देखिन्छ ।

१.८. शोधको सीमाङ्कन

यस शोधकार्यमा कवि बलराम दाहालका अन्य कृतिको विश्लेषण नगरी **सौगात** कविता सङ्ग्रहको मात्र अध्ययन, विश्लेषण तथा समीक्षा गरिएको छ । यही नै यस शोधकार्यको सीमा रहेको छ ।

१.९. सैद्धान्तिक ढाँचा र शोधविधि

प्रस्तुत शोधकार्यका लागि मूलतः पुस्तकालयीय अध्ययन पद्धतिको प्रयोग गरिएको छ । विभिन्न पुस्तक, पत्र पत्रिका तथा विषयसँग सम्बन्धित लेख, रचनाबाट आवश्यक सामग्री सङ्कलन गरिएको छ । त्यसका अतिरिक्त पूर्वशोधकर्ता, शोध नायक, शोध निर्देशक तथा गुरुवर्ग र सम्बन्धित विशेषज्ञका राय, सुझाव र अन्तर्वार्तालाई पनि सन्दर्भ सामग्रीका रूपमा उपयोग गरिएको छ ।

१.१०. शोधपत्रको रूपरेखा

प्रस्तुत शोधपत्रको संरचनालाई सुसङ्गठित र व्यवस्थित रूपमा प्रस्तुत गर्न छ, अध्यायमा निम्नानुसार विभाजन गरिएको छ ।

अध्याय एक	:	शोध परिचय
अध्याय दुई	:	कवि बलराम दाहालको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व
अध्याय तीन	:	कविता सिद्धान्त र नेपाली कविता परम्परा
अध्याय चार	:	कविता तत्त्वका आधारमा सौगात कविता सङ्ग्रहको अध्ययन
अध्याय पाँच	:	' सौगात ' कविता सङ्ग्रहका कविताहरूको प्रवृत्ति परक अध्ययन
अध्याय छ	:	उपसंहार तथा निष्कर्ष

अध्याय : दुई

कवि बलराम दाहालको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व

०. विषय प्रवेश

यस अध्यायमा बलराम दाहालको जीवनी प्रस्तुत गरिएको छ । यस सन्दर्भमा उनको जन्म, जन्मस्थल, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, पेसा, रुचि, साहित्यिक प्रेरणा, लगायत जीवनका विविध तथ्यको प्रस्तुति सहित उनको व्यक्तित्वको समेत चर्चा गरिएको छ । साहित्यिक रूपमा र साहित्येतर क्षेत्रमा समेत छरिएको उनको व्यक्तित्वको विवेचना गरी अन्त्यमा सारांश दिइएको छ ।

२.१. बलराम दाहालको जीवनी

२.१.१. जन्म र जन्मस्थल

नेपाली साहित्य जगत्मा भर्खरै प्रसिद्धिको उकालो चढ्दै गरेका कवि बलराम दाहालको जन्म दोलखा जिल्लाको सुन्द्रावती गाविस वडा नं. ५ मा पर्ने लप्से भन्ने स्थानमा वि. सं. २०३७ साल मङ्सिर २२ गते आइतबार राति ११:३० बजे भएको हो । पिता देवी प्रसाद दाहाल र माता लक्ष्मी दाहालका द्वितीय पुत्रका रूपमा जन्मेका दाहालको न्वारनको नाम इन्द्र प्रसाद राखिएको भए पनि हाल उनी बलराम दाहाल नामले नै परिवार, छरछिमेक, समाज र नेपाली साहित्यिक संसारमा परिचित छन्।^{१६}

२.१.२. पारिवारिक पृष्ठभूमि

दोलखाको ग्रामीण भेगमा बसोबास गर्ने एक मध्यम वर्गीय किसान परिवारमा जन्मेका कवि बलराम दाहालका हजुरबा कर्मकाण्ड गरेरै जीवन निर्वाह गर्थे भने उनका पिता देवी प्रसाद दाहालले गाउँकै एक सरकारी विद्यालयमा शिक्षण पेसा अपनाएका छन् । कवि दाहालका पिताले पनि विद्यालयको भैँभमेलाबाट फुर्सद पाएको समयमा भने पुर्खाको कर्मकाण्ड पेसालाई पनि निरन्तरता दिँदै आएको पाइन्छ । सामान्य लेखपढ गर्न सक्ने भए पनि कवि दाहालकी आमाको चाहिँ बढी समय घरधन्दाभैँ बित्ने गरेको देखिन्छ । कर्मकाण्डी संस्कार बोकेको परिवारमा जन्मेर हुर्केकाले पनि होला, कवि दाहालले पनि सानैदेखि संस्कृत शिक्षा लिने प्रेरणा पाए ।

कवि दाहालका एक दाजु, एक दिदी, एक भाइ र एक बहिनी छन् । उनीहरू पनि दाहालका पिता भैँ शिक्षण पेसामै आवद्ध रहेको जानकारी पाइन्छ।^{१७} हजुरबुवा कर्मकाण्डी पण्डित, बाबु सरकारी जागिरे र खेती गरेर खानका लागि प्रशस्त जग्गा जमिन समेत भएकाले उनको परिवारले आर्थिक सङ्कट भने खासै भेट्नु परेको देखिन्छ । समग्रमा उनको बाल्यकाल सुखद वातावरणमै बितेको पाइन्छ ।

२.१.३. शिक्षा

कवि बलराम दाहालको प्रारम्भिक शिक्षा दोलखा जिल्लाको सुन्द्रावती गाविसस्थित कालिका माध्यमिक विद्यालयबाट सुरु भएको देखिन्छ । सो स्कूलमा उनले कक्षा ७ सम्मको अध्ययन पुरा गरेपछि

^{१६} काफ्ले, घरको कथा खण्डकाव्यको कृतिपरक अध्ययन, परिशिष्ट, २०६८

^{१७} पूर्ववत्

थप अध्ययनका लागि काठमाडौंको रानी पोखरीस्थित संस्कृत माध्यमिक विद्यालयमा कक्षा ८ मा भर्ना भएको देखिन्छ। सोही विद्यालयबाट उनले विद्यालय तहको शिक्षा अर्थात् एसएलसी उत्तीर्ण गरे।

विद्यालय तहको शिक्षापछि दरबार मार्गस्थित तिन धारा संस्कृत छात्रावासमा बसेर दाहालले प्रदर्शनी मार्गस्थित वाल्मीकि विद्यापीठ (तत्कालीन महेन्द्र संस्कृत विश्व विद्यालय) बाट ज्योतिष विषयमा आचार्यसम्मको अध्ययन पुरा गरेको देखिन्छ। त्यसपछि उनले त्रिभुवन विश्व विद्यालय अन्तर्गतको रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पसबाट नेपाली विषयमा एमएसम्मको अध्ययन पुरा गरेको देखिन्छ।

२.१.४. पेसा

कवि बलराम दाहालको परिवारमा उनका पिता, दाजु, भाइ, दिदी र बहिनी सबै नै शिक्षण पेसासितै गाँसिएका छन्। त्यसैले उनी पनि घरायसी वातावरण र बाबुको संस्कारबाट टाढा हुन सकेनन्। परिवारका सदस्यको शिक्षण पेसाप्रतिको समर्पणले उनलाई पनि तानेरै छाड्यो। जसको प्रभाव स्वरूप उनले पनि आफूलाई शिक्षण पेसामै संलग्न गराए। आखिर बाबुआमाको प्रभाव सन्तानमा पर्नु स्वाभाविकै पनि त हो। हाल उनी काठमाडौंको लैनचौरस्थित निस्ट कलेजमा अध्यापनरत छन्।

२.१.५. रुचि

मान्छेका रुचि अनेक भए जस्तै कवि बलराम दाहालका पनि आफ्नै खालका रुचि छन्। उनी आफूलाई विशेषतः प्रकृतिका पुजारी ठान्छन्। त्यसैले प्राकृतिक मनोरम स्थलको भ्रमण गर्नु उनको रुचिकर विषयमा पर्छ। यसका साथै उनी विभिन्न विद्वान् लेखकहरूका पुस्तक अध्ययनमा पनि रमाउँछन्। विशेष गरी दर्शन र ज्ञान विज्ञानका पुस्तकहरू खोजी खोजी अध्ययन गर्नुमा उनको विशेष अभिरुचि रहेको पाइन्छ।

२.१.६. साहित्यिक प्रेरणा

कवि बलराम दाहालले सानैदेखि कविता रचन थालेको पाइन्छ। उनले विद्यालयका तल्ला कक्षामा पढ्दा नै विभिन्न कविता रचेका थिए। विभिन्न शीर्षकमा कविता लेख्ने, आफूले लेखेका कविता मिठो भाकामा अरूलाई सुनाउने, अन्य कवि लेखकका रचना भाका हाली हाली गाउने र अरूलाई सुनाउने समेत गर्दा गर्दै उनले कविता सिर्जनामा सक्रियता पूर्वक लाग्ने प्रेरणा प्राप्त गरेको देखिन्छ। उनले रचेको **मेरो विद्यालय** जस्ता अप्रकाशित कविता नै उनको कवित्वको बीजभूमि बनेका देखिन्छन्। नेपाली साहित्यिक फाँटमा उनको औपचारिक प्रवेश चाहिँ वि. सं. २०५३ सालको **आँकुरा** पत्रिकाको वैशाख अङ्कमा प्रकाशित **मानवता** शीर्षकको कविताबाट भएको पाइन्छ। मानवताको प्रकाशनपछि उनले अझ सक्रियतासाथ नेपाली कविताको फाँटमा कलम चलाउन थालेको देखिन्छ। मानवताको प्रकाशनसँगै सुरु भएको उनको औपचारिक कविता यात्रा अझै निरन्तर चलिरहेकै छ। त्यस यता उनले आधा दर्जनभन्दा बढी पुस्तकाकार कृति प्रकाशित गरिसकेको देखिन्छ।

खास गरी संस्कृत साहित्यका महाकवि कालिदासका **कुमारसम्भव**, **रघुवंश**, **मेघदूत**, **अभिज्ञान शाकुन्तल** जस्ता कृति आफैले पढ्दा वा अरूले वाचन गरेको सुन्दा सुन्दै कवि दाहालमा संस्कृतका वर्णमात्रिक छन्दप्रतिको आकर्षण बढेको पाइन्छ। यसका साथै, अरूले श्रीमद्भागवतका श्लोक वाचन गर्दा पनि उनलाई अपार आनन्दको अनुभूति हुने गर्थ्यो। क्रमशः आफू स्वयं र अरूले समेत संस्कृतका वर्णमात्रिक छन्दमा रचिएका श्लोक पढ्दा वा पढेको सुन्दा उनमा पनि यस्तै छन्दोबद्ध कविता रचन पाए कस्तो हुँदो हो, यस्ता कविता कसरी रचिन्छन् होला भन्ने जिज्ञासाले बारम्बार भकभककाइ रहन्थ्यो। यस्तै अनेकानेक जिज्ञासा र कौतूहल बोकेर जब उनले राष्ट्रकवि माधव प्रसाद घिमिरेको **गौरी** शोककाव्यको अध्ययन गर्ने अवसर पाए, उनमा त्यस काव्यको गम्भीर प्रभाव परेको पाइन्छ। त्यसपछि नै उनले पनि संस्कृतका वर्णमात्रिक छन्दका नियम सिकेर छन्दोबद्ध कविता रचना गर्न थालेको थाहा पाइन्छ।

खास गरी आफ्ना गुरुहरूको सङ्गत, उनीहरूको हौसला, प्रेरणा र मार्ग दर्शनबाट उनमा साहित्यिक बीज अङ्कुरित भएको पाइन्छ भने तिन धारा संस्कृत छात्रावास भित्रको साहित्यिक माहोलले त्यसलाई अझ मलजल गरेको देखिन्छ। छात्रावासभित्रका अग्रज र अन्य प्रतिभाशाली सर्जकहरूको प्रेरणा, हौसला र मार्ग दर्शन तथा छात्रावासभित्रको साहित्यिक वातावरणले उनलाई कविता सिर्जनाको क्षेत्रमा लाग्ने उचित डोरेटो देखाइदिएको अनुभूत हुन्छ।

२.१.७. भ्रमण

नौला नौला स्थानको भ्रमणमा रुचि राख्ने कवि बलराम दाहालले नेपालका अधिकांश जिल्लाको भ्रमण गरि सकेका छन्। भ्रमणका क्रममा उनी आफू जहाँ जहाँ पुगे, त्यहाँ त्यहाँका सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आर्थिक अवस्थाबारे उनले राम्ररी बुझ्ने मौका पाएका छन्। त्यसको प्रत्यक्ष प्रभाव उनका रचनाहरूमा पनि देख्न सकिन्छ। उनले अन्तरराष्ट्रिय शैक्षिक तथा साहित्यिक सम्मेलनका क्रममा भारतको लखनउ, दिल्ली, मुम्बई, उडिसा आदि स्थानको पनि भ्रमण गरेको पाइन्छ। ती स्थानको भ्रमणबाट पनि उनले त्यहाँको सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषिक, राजनीतिक आदि विविध पक्षबारे जानकारी लिन पाएको देखिन्छ।

२.१.८. सङ्घ, संस्थागत संलग्नता

कवि बलराम दाहाल शिक्षण पेसामै मात्र खुम्चेर बस्ने खालका व्यक्ति होइनन्। विद्यालय शिक्षणका अतिरिक्त उनी विभिन्न साहित्यिक र सामाजिक गतिविधिमा समेत संलग्न छन्। विभिन्न सामाजिक तथा साहित्यिक सङ्घ संस्थासित उनको अत्यन्तै प्रगाढ संलग्नता रहेको पाइन्छ। खास गरी साहित्य कुञ्ज नेपाल, अनाम मण्डली, मानव अधिकार तथा शान्ति समाज नेपाल जस्ता विभिन्न सङ्घ संस्थामा कवि दाहालको सक्रिय आवद्धता रहँदै आएको पाइन्छ। अनाम मण्डली नामक साहित्यिक संस्थामा त उनी हाल अध्यक्ष नै छन्।

२.२. बलराम दाहालको व्यक्तित्व

कवि बलराम दाहालको व्यक्तित्वलाई साहित्येतर र साहित्यिक गरी दुई प्रकारमा विभाजन गरेर हेर्न सकिन्छ।

२.२.१. साहित्येतर व्यक्तित्व

बलराम दाहालका साहित्येतर व्यक्तित्वमा निम्न विशेषता देखिन्छन्।

२.२.१.१. शारीरिक व्यक्तित्व

बाहिरबाट हेर्दा मोटोघाटो र अग्लो शरीर भएका बलराम दाहाल भट्टा देखिने शरीरको तुलनामा निकै फुर्तिला र निरोगी देखिन्छन्। गहुँगोरो वर्ण, हँसिलो चेहरा, मिजासिलो बोली बचनका धनी दाहाल भलादमी व्यक्तिका रूपमा साथीभाइ र परिचितमाझ चिनिन्छन्। कवि दाहाल नाम अनुसार शरीर र कविता दुवैमा बलराम नै देखिन्छन्।^{१८}

^{१८} ज्वाली, २०६८, भूमिका

२.२.१.२. पारिवारिक व्यक्तित्व

कवि बलराम दाहाल पिता देवी प्रसाद दाहाल र माता लक्ष्मी दाहालका माहिला सुपुत्र हुन् । सन्तानको रोल क्रममा चाहिँ उनी तेस्रो सन्तान हुन् । उनका एक दाजु, एक दिदी, एक भाइ र एक बहिनी रहेका छन् । उनमा परिवारमा ठूलालाई आदर र मान सम्मान गर्ने तथा आफूभन्दा सानालाई माया गर्ने चालचलन देखिन्छ । उनको परिवारका सदस्यसितको कुराकानीका क्रममा उनी परिवारमा सबैसित विशेष मिलनसार भएको थाहा पाइन्छ ।

२.२.१.३. सामाजिक व्यक्तित्व

सामान्यतः कुनै पनि शिक्षक अध्यापक मात्र नभई समाजको पथ प्रदर्शक पनि हो । ऊ आफू बाँचेको समाजको सामाजिक अभियन्ता र कुशल अभिनेता पनि हो । हरदम, हरपल समाजको सेवा गर्ने लक्ष्य र भावना बोकेर अघि बढ्ने शिक्षक समाजको एउटा 'रोल मोडल' पनि हो । कवि बलराम दाहाल पनि एक कुशल शिक्षक हुन् । शिक्षक भएकैले उनमा पनि माथिका विविध विशेषता पाइन्छन् । उनी आफूले नियमित रूपमा विद्यालयलाई दिने समयपछि विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक तथा अन्य सङ्घ, संस्था मार्फत सामाजिक काममा पनि संलग्न हुने गरेका छन् । हाल उनी अनाम मण्डलीका संयोजक तथा साहित्य कुञ्ज नेपालका सक्रिय सदस्य छन् । यी संस्थाका संयोजक तथा सदस्य भएर उनी हर हमेसा नेपाली साहित्यको श्रीवृद्धिका लागि दत्तचित्त छन् ।

यी विविध सामाजिक तथा साहित्यिक पाटोका अतिरिक्त उनको जीवनको अर्को पाटो पनि देख्न सकिन्छ । उनी मानव अधिकार तथा शान्ति समाज नेपालका पनि सक्रिय सदस्य हुन् । सो संस्थामा रहेर उनी हाम्रो समाजमा अन्यायमा परेका र मानव अधिकारबाट वञ्चित भएका पीडितलाई न्याय दिलाउने काममा समेत सक्रिय रूपमा लागिपरेका छन् ।

२.२.१.४. अध्ययनशील व्यक्तित्व

बलराम दाहाल अध्ययनमा निरन्तर सक्रिय रूपमा लागिरहने अध्ययनशील व्यक्तित्वका रूपमा परिचित छन् । विद्यालय तहको अध्ययन सकेर उच्च शिक्षाका लागि तत्कालीन महेन्द्र संस्कृत विश्व विद्यालयमा भर्ना भएर त्यहीँबाट उनले ज्योतिष शास्त्रमा आचार्यसम्मको अध्ययन गरेको देखिन्छ । औपचारिक शिक्षालाई त्यतिमै मात्र सिमित नराखी उनले त्रिभुवन विश्व विद्यालय अन्तर्गत काठमाडौँको प्रदर्शनी मार्गस्थित रत्न राज्य लक्ष्मी क्याम्पसबाट नेपाली विषयमा स्नातकोत्तर तह उत्तीर्ण गरेको देखिन्छ । उनले स्नातकोत्तर तहमा सिर्जना (गजल) मा सिर्जनात्मक लेखन पत्र तयार गरेर आफ्नो सिर्जनात्मक क्षमता तथा प्रखर अनुसन्धानात्मक व्यक्तित्वको समेत चिनारी दिएका छन् ।

औपचारिक अध्ययनका अतिरिक्त अनौपचारिक अध्ययनमा पनि दाहालको उत्तिकै रुचि देखिन्छ । कुनै व्यक्ति औपचारिक अध्ययनले मात्र कहिल्यै पूर्ण हुन सक्दैन भन्ने उनले राम्ररी बुझेका छन् । आफू कवि भएकाले पनि होला, उनी नेपाली, हिन्दी तथा अङ्ग्रेजी भाषाका कविता खोजी खोजी पढ्ने गर्छन् । विशेषतः उनी लेखनाथ पौड्याल, लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा, बालकृष्ण सम, माधव प्रसाद घिमिरे, भूपि शेरचन, राम प्रसाद ज्ञवाली लगायत स्रष्टाका रचना असाध्यै रुचाउँछन् । कविता पढ्ने मात्र होइन, ती कवितालाई सुमधुर लयमा वाचन गर्न पनि उनी उत्तिकै सिपालु देखिन्छन् । कविताका अतिरिक्त उनी कथा, निबन्ध, उपन्यास लगायत साहित्यका अन्य विधाका रचना पनि उत्तिकै रमाई रमाई पढ्ने गर्छन् ।

यसका साथै विभिन्न ज्ञान विज्ञानसँग सम्बन्धित विविध पुस्तक, पत्र पत्रिका पढ्नुमा पनि उनको विशेष अभिरुचि पाइन्छ । विविध दर्शनका पुस्तक मन लगाएर पढ्नु पनि कवि दाहालको रुचिको विषय रहेको पाइन्छ । सानैदेखि अध्ययनमा लगनशील भई कडा मिहिनेत गर्ने दाहालमा देश र समाजका लागि आफूले सकेको योगदान दिई नै रहनु पर्छ भन्ने प्रबल भावना देखिन्छ । त्यसैले सोही अनुसार उनी निरन्तर अघि बढि रहेका छन् ।

२.२.१.५. शिक्षक व्यक्तित्व

कवि बलराम दाहालले आजीविकाका लागि शिक्षणलाई आफ्नो पेसा बनाएका छन् । हाल उनी राजधानीको लैनचौरस्थित निस्ट कलेजमा अध्यापनरत छन् । सादा जीवन उच्च विचारका धनी दाहाल एक आदर्श शिक्षकका रूपमा आफ्ना छात्र छात्रामाभक्त परिचित छन् । खासगरी विद्यार्थीलाई असाध्यै माया गर्ने, उनीहरूसित सजिलै घुलमिल हुने र उनीहरूमा प्रेरणा छर्न सक्ने व्यक्तित्वका धनी भएकाले पनि उनी विद्यालयकै प्रिय शिक्षकका रूपमा परिचित छन् ।

२.२.२. साहित्यिक व्यक्तित्व

कवि बलराम दाहालद्वारा लिखित कृतिहरूको समग्र अध्ययनका आधारमा उनको साहित्यिक व्यक्तित्वको निम्न अनुसार चर्चा गर्न सकिन्छ ।

२.२.२.१. कवि व्यक्तित्व

बलराम दाहालको कवि व्यक्तित्वको अध्ययन गर्न उनको विद्यालय जीवनसम्म पुग्नु पर्ने हुन्छ । विद्यालयमा आयोजित विभिन्न कार्यक्रममा आफैले सिर्जना गरेका र कहिले काहीं अरूका रचना समेत मिठो स्वरमा वाचन गर्ने दाहालको अनौपचारिक साहित्यिक जीवन विद्यालय जीवनदेखि नै सुरु भएको पाइन्छ । उनको साहित्यिक जीवनको औपचारिक यात्रा भने वि. सं. २०५३ सालमा प्रकाशित आँकुरा साहित्यिक पत्रिकाको वैशाख अङ्कमा **मानवता** शीर्षकको कविता प्रकाशनपछि सुरु भएको पाइन्छ । त्यसदेखि यताको भन्डै डेढ दशक लामो समयावधिमा उनका प्रशस्त फुटकर रचना विभिन्न पत्र पत्रिकामा प्रकाशित भएका पाइन्छन् । विभिन्न पत्र पत्रिकामा उनका प्रशस्त फुटकर रचना छरिएर रहेका भए पनि एउटै सिङ्गो पुस्तकाकार कृति प्रकाशित नभइरहेको समयमा वि.सं. २०६८ सालमा मात्र उनको **सौगात** कविता सङ्ग्रह प्रकाशित भएको छ । छन्दोबद्ध कविताहरूको प्रस्तुत सङ्ग्रहभित्र ४२ लामा छोट्टा कविता सङ्कलित छन् । यसै कविता सङ्ग्रहको कृतिपरक अध्ययन गर्नु यस शोधकार्यको प्रमुख उद्देश्य भएको हुनाले यसको विस्तृत समीक्षा अर्को अध्यायमा गरिने छ ।

२.२.२.२. खण्डकाव्यकार व्यक्तित्व

विद्यालय तहदेखि नै कविता विधाको सिर्जनातर्फ कलम चलाउन थालेका बलराम दाहालले अप्रकाशित/प्रकाशित फुटकर कविता लेख्दै आएको पाइन्छ । यिनै फुटकर कविता सिर्जनाले उनमा खण्डकाव्य रचनाको आधारशिला निर्माण गरेको देखिन्छ । उनका हालसम्म प्रकाशितमध्ये पहिलो कृति **घरको कथा** खण्डकाव्य हो । जुन खण्डकाव्य वि. सं. २०६३ सालमा प्रकाशित भएको पाइन्छ । यसरी हेर्दा कवि बलराम दाहालको कृति प्रकाशनको आरम्भ नै खण्डकाव्यबाट भएको पाइन्छ । दोस्रो ऐतिहासिक जन आन्दोलन अधिकांश द्वन्द्वकालीन वातावरण र त्यसले समाजमा छाडेका घाउ चोटका कथालाई आफ्नो पहिलो पुस्तकाकार रचना **घरको कथामा** खण्डकाव्यकार दाहालले अत्यन्तै मार्मिक शब्द, शैली र भावमा उतारेका छन् ।

२.२.२.३. गजलकार व्यक्तित्व

विशेषतः कविता विधामै आफ्नो कलम कुदाउने कवि बलराम दाहाललाई साहित्यका पारखीहरू गजलकार बलरामका रूपमा पनि चिन्ने गर्छन् । गजल लेखन र वाचनमा सक्रिय उनको पहिलो गजल **म दिन्थेँ फूलको गुच्छा** २०६३, अनाम मण्डलीद्वारा प्रकाशन गरिएको भदौ महिनाको बहर मालामा प्रकाशित भएको पाइन्छ । त्यसपछि सोही सालमा दोलखाली समकालीन साहित्य (२०६३) मा उनको अर्को गजल **नगर्नेले गर्थेँ भन्छन्** शीर्षकमा प्रकाशित भएको पाइन्छ । यसरी फाट्टफुट्ट प्रकाशित गजलका अतिरिक्त

उनको गजल लेखनले भने अद्यापि निरन्तरता पाउँदै आएको छ । यस क्रममा उनको **खरानी पो भयो माटो** नामको गजल सङ्ग्रह (२०६८) प्रकाशित भएको पाइन्छ । यस सङ्ग्रहभित्र उनका ५६ गजल सङ्कलित छन् । हाल उनी विभिन्न विद्यालयका विद्यार्थीलाई गजल लेखनप्रति आकर्षण जगाउन गजल लेखन तथा वाचनको विशेष कक्षा सञ्चालन गर्दै हिँडेका समेत भेटिन्छन् ।

त्यसै गरी गजलकार दाहालको अर्को बाल गजल सङ्ग्रह **फुलबारी** (२०६९) पनि सार्वजनिक भएको छ । विभिन्न २५ बाल गजल समेटिएको यस सङ्ग्रहको भूमिका खण्डमा दाहालले गजल लेख्दा थाहा पाउनुपर्ने कुराहरू दिएका छन् । उनले यस खण्डमा गजल कसरी लेखिन्छ, भन्ने चर्चा गर्ने क्रममा गजल सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द र तिनका अर्थ पनि दिएका छन् । काफिया (अनुप्रासयुक्त शब्द), रदफ (दोहोरिने शब्द), मिसरा (गजलका हरेक पङ्क्ति), शेर (गजलका दुई लाइन वा दुई मिसरा), मतला (गजलको सुरुको भाग), मकता (गजलको अन्तिम भाग) जस्ता शब्दको चिनारीले गजल रचनामा चासो राख्ने जो कोहीले यसबारे आवश्यक ज्ञान प्राप्त गर्न सक्ने देखिन्छ । गजल रचनामा चासो राख्नेहरू सबैका लागि यो पुस्तक उपयोगी हुन सक्छ ।

२.२.२.४. बाल साहित्यकार व्यक्तित्व

कवि बलराम दाहालले बाल बालिकाका लागि पनि निकै रमाइला र प्रेरक बाल कविता सिर्जना गरेका छन् । उनका बाल कविताहरू भानुभक्त मेमोरियल उच्च माविद्वारा वि. सं. २०६५ मा प्रकाशित **हामी बालक** नामको बाल कविता सङ्ग्रहमा सङ्कलित छन् । यस सङ्ग्रहभित्र उनले कविता सिर्जनामा रमाउन चाहने बाल बालिकालाई निकै सरल शैलीमा कविता रचना गर्ने विधि समेत सिकाएका छन् । यस सङ्ग्रहभित्र उनका २५ बाल कविता समेटिएका छन् ।

बाल साहित्यकै कुरा गर्दा बलराम दाहालले बाल कविताका अतिरिक्त बाल उपन्यास रचनामा पनि आफ्नो कलम कुदाएका छन् । उनको हालसम्म एक मात्र बाल उपन्यास **पश्चात्ताप** (२०६८) प्रकाशित भएको छ । विशेषतः कविता विधामै कलम चलाइरहेका कवि दाहालको कदम साहित्यको अर्को विधा उपन्यास रचनाको क्षेत्रमा पनि चलेको हुनाले **पश्चात्ताप**ले उनलाई उपन्यासकार बलराम दाहालका रूपमा समेत चिनाएको छ ।

२.२.२.५. निबन्धकार व्यक्तित्व

बलराम दाहालको कलम कविता, गजल र उपन्यासका अतिरिक्त निबन्ध रचनाको क्षेत्रमा पनि चलेको पाइन्छ । उनका थुप्रै फुटकर निबन्ध विभिन्न पत्र पत्रिकामा प्रकाशित भएको पाइन्छ । उनको पहिलो प्रकाशित निबन्ध **नेताहरूलाई जनताको चिठी** (२०६०, जेठ) हो । यो निबन्ध हिमालय टाइम्स दैनिकमा प्रकाशित भएको पाइन्छ । यसपछि उनका **राष्ट्रिय कविता महोत्सवको हाँसो** (२०६०, असार १२) र **तु सम्पर्क राख्नु होला** (२०६०, असार १५), **शत वार्षिकी मनाउने मन छ** (२०६०, असार २४) शीर्षकका तीन निबन्ध हिमालय टाइम्स दैनिकमै प्रकाशित भएका पाइन्छन् । यी प्रकाशित केही निबन्धका अतिरिक्त दाहालका कैयौं निबन्ध विभिन्न पत्र पत्रिकामा प्रकाशित हुँदै आएका छन् । उनका अन्य फुटकर निबन्धमा **कति दिउँ वकिल साप !**, **जुत्ता लुकाउने परम्परा**, **शान्ति हराएको सूचना !**, **हात्ती आयो हात्ती आयो फुस्सा**, **खुट्टा तान्ने प्रवृत्ति**, **विश्व ब्राह्मण महासम्मेलन** आदि निकै चर्चित छन् ।

उपर्युक्त निबन्धमध्ये अधिकांशका शीर्षकले नै हास्य व्यङ्ग्य निबन्धको सङ्केत गरेका छन् । दाहालले आफ्ना निबन्धमा समसामयिक सामाजिक विकृति र विसङ्गतिमाथि तिखो व्यङ्ग्य गरेका छन् । मुलुकमा कवि, साहित्यकारको सच्चा मूल्याङ्कन नहुने, कविताको मर्म नै नबुझेका तर विशेष पहुँच भएका, राजनीतिको गन्ध मिसिएकाहरू सम्मानित हुने नेपाली साहित्य संसारमा सल्केको महारोगप्रति उनले **राष्ट्रिय कविता महोत्सवको हाँसो** शीर्षकको निबन्धमा मिठो हास्यका साथमा कडा व्यङ्ग्य बाण प्रहार गरेका छन् ।

मुलुकमा चर्को बेरोजगारीको मार विशेष गरी शिक्षित जनशक्तिमाथि परिरहेको छ । दुःखसाथ पढे लेखेर योग्य जनशक्ति बनिसकेपछि पनि बेरोजगार भई विदेशी विकसित मुलुकको दास, मजदुर हुन विदेसिनुपर्ने बाध्यता हाम्रा शिक्षित युवा जन शक्तिसामु रहेको छ । मुलुकका शैक्षिक संस्थाहरू बेरोजगार उत्पादन गर्ने कारखानामा परिणत भएका छन् । व्यवहारोपयोगी, स्वरोजगारमुखी सिप मूलक शिक्षाको अभावमा उच्च शिक्षा प्राप्तपछि पनि कि त विदेसिएर तल्लो तहको अदक्ष श्रमिक बन्नुपर्ने कि स्वदेशमै बेरोजगार भई कुण्ठित भई बाँच्नुपर्ने बाध्यता विरुद्ध उनले तु **सम्पर्क राख्नुहोला** शीर्षक निबन्धमा कडा शब्दमा व्यङ्ग्य प्रहार गरेका छन् ।

मुलुकमा ऐतिहासिक परिवर्तन ल्याउने क्रममा हाँसी हाँसी सहादतका लागि तयार हुने सहिदहरूको सपनालाई राज्य सत्ताको बागडोर सम्हालिरहेका नेताहरूले कुल्चिरहेका छन् । सहिदहरू सम्मानित हुनुको साटो उल्टै अपमानित भइरहेका छन् । उनीहरूले देखाएका बाटो हिँड्न कोही तयार देखिंदैन । यही समसामयिक सामाजिक विसङ्गति विरुद्ध उनले जोडदार व्यङ्ग्य गरेका छन्, **शत वार्षिकी मनाउने मन छ** शीर्षकको निबन्धमा ।

समग्रमा भन्नुपर्दा निबन्धकार दाहालका निबन्धमा देश प्रेमको भावना छुटाछुल्ल भएर पोखिएको पाइन्छ । उनले आफ्ना निबन्धमा मुलुकका राष्ट्रिय विभूतिप्रति सच्चा श्रद्धा भाव दर्साएका छन् । देशको विग्रंदो समसामयिक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक लगायतका अवस्थाप्रति उनले आफ्ना निबन्धमा तीव्र आक्रोशसाथ व्यङ्ग्य गरेका छन् ।

२.२.२.५. हास्य व्यङ्ग्यकार व्यक्तित्व

बलराम दाहाल हास्य व्यङ्ग्य क्षेत्रमा पनि उत्तिकै सक्रिय छन् । उनका हास्य व्यङ्ग्य मिश्रित थुप्रै कविता तथा निबन्ध प्रकाशित भएका पाइन्छन् । उनका **नेताहरूलाई जनताको चिठी, राष्ट्रिय कविता महोत्सवको हाँसो, तु सम्पर्क राख्नु होला, शत वार्षिकी मनाउने मन छ** आदि निबन्धमा पनि हास्य र व्यङ्ग्यको सन्तुलित प्रस्तुति पाइन्छ । दाहालले आफू संलग्न साहित्य कुञ्ज नेपाल, अनाम मण्डली तथा अन्य विभिन्न सङ्घ संस्थाद्वारा आयोजित विविध साहित्यिक कार्यक्रममा कहिले उद्घोषण गरेर त कहिले आफ्ना फुटकर रचना सुनाएर पनि उपस्थित श्रोतालाई हँसाएर भरपुर मनोरञ्जन दिने गरेका छन् ।

सुमधुर वाचन शैली भएका दाहालको प्रस्तुति श्रोताले असाध्यै रुचाउने गरेका छन् । रुसी सांस्कृतिक केन्द्रमा हुस्सु दिवसको अवसरमा सिस्नु पानी नेपालले आयोजना गरेको 'भाग शान्ति जय नेपाल' कार्यक्रममा पद्य साहित्य मार्फत मुलुकको राजनीतिक अस्तव्यस्ततामाथि कडा व्यङ्ग्य पस्केका दाहालले कार्यक्रममा सबैभन्दा बढी श्रोताको ताली पाएका थिए । उनको कविताका प्रत्येक हरफसँगै दर्शक/श्रोताले ताली पिटेर उनको समर्थन गरेको हुनाले सबैभन्दा बढी ताली पाएको स्रष्टा भन्दै दाहाललाई कार्यक्रमको अन्त्यमा मञ्चमा राखिएको फर्सी उपहार प्रदान गरिएको थियो ।^{१९}

२.२.२.६. भूमिकाकार व्यक्तित्व

बलराम दाहालले अन्य उदीयमान कवि लेखकका रचना आद्योपान्त पढेर तिनको भूमिका मार्फत आफ्नो भूमिकाकार व्यक्तित्व पनि प्रदर्शन गरेका छन् । उनले कर्ण थामीको पोखिएका यादहरू (२०६७) नामक गजल सङ्ग्रह आद्योपान्त पढेर सो कृतिको गहन विश्लेषणसाथ आफ्नो भूमिका लेखेका छन् । त्यसैगरी गजलकार मुकुन्द राज कँडेलको यात्रा उकालीको (२०६७) नामक गजल सङ्ग्रहको पनि विश्लेषणात्मक भूमिका लेखेको पाइन्छ । यी रचनाको भूमिका मार्फत कवि बलराम दाहालले आफ्नो समीक्षक व्यक्तित्व समेत राम्ररी उजागर गरेका छन् ।

^{१९} काफ्ले, २०६८

२.३. बलराम दाहालको कृतित्व

बलराम दाहालका हालसम्म ६ ओटा कृति प्रकाशन भएको पाइन्छ । ती प्रकाशित कृतिको क्रम निम्नानुसार छ :

-) घरको कथा (खण्डकाव्य), २०६३
-) हामी बालक (बाल कविता सङ्ग्रह), २०६५
-) खरानी पो भयो माटो (गजल सङ्ग्रह) २०६८
-) पश्चात्ताप (बाल उपन्यास), २०६८
-) सौगात (कविता सङ्ग्रह), २०६८
-) फुलबारी (बाल गजल सङ्ग्रह), २०६९

उल्लिखित कृतिहरूको क्रमशः सङ्क्षेपमा चर्चा गरिन्छ :

२.३.१. घरको कथा (खण्डकाव्य)

घरको कथा कवि बलराम दाहालको प्रकाशित मध्येको पहिलो कृति हो । २०६३ को ऐतिहासिक जन आन्दोलन- २ भन्दा अगाडिको राजनीतिक परिवेशसँग सम्बन्धित विषय वस्तु समेटिएको प्रस्तुत कृतिमा तत्कालीन समाजको समसामयिक परिदृश्य समेटिएको छ । तत्कालीन नेपाली समाजको कारुणिक अवस्थाको यस खण्डकाव्यमा अत्यन्तै मार्मिक चित्रण गरेको पाइन्छ ।

घरको कथा खण्डकाव्यको प्रकाशन वि. सं. २०६३ सालमा भएको भए पनि यसको कथावस्तु भने त्यसअघिको द्वन्द्वकालीन नेपाली समाजबाट टिपिएको हो । तत्कालीन नेपाली समाजभित्रको सामाजिक विषयवस्तु यस खण्डकाव्यमा समेटिएको छ । द्वन्द्वकालका घटना र त्यसले समाजमा पारेको प्रभावलाई मार्मिक ढङ्गमा समेटिएको यस खण्डकाव्यले तत्कालीन द्वन्द्वरत दुवै पक्षका कारण देशभर व्याप्त हत्या, हिंसा, अपहरण, जबर्जस्ती चन्दा असुली, लुटपाट आदि समस्याको यथार्थ वर्णन गरेको छ । तत्कालीन द्वन्द्वले समाजमा लगाएको घाउ र चोटको कथालाई घरको कथाले मार्मिक ढङ्गमा बयान गरेको छ ।

घरको कथा खण्डकाव्यमा आफ्नो घर भनेर सिंगो नेपाललाई चिनाइएको छ । मुलुकमा व्याप्त दशवर्षे द्वन्द्वकालीन पीडालाई हृदय संवेद्य रूपमा प्रस्तुत गरेको पाइन्छ । कवि दाहालले खण्डकाव्यमा द्वन्द्वकालीन (२०५२-०६२) अवधिको कहालीलाग्दो समयको यथार्थपरक वर्णन गरेका छन् । दसवर्षे द्वन्द्वकालको कहालीलाग्दो परिवेशमा अधिकांश नेपालीले आफ्नै आँखा अगाडि हत्या, हिंसाका वीभत्स दृश्य देखेका थिए । सोही यथार्थलाई खण्डकाव्यमा अत्यन्तै मार्मिक शब्दमा उनीएको छ ।

तत्कालीन द्वन्द्वको परिणाम स्वरूप माओवादी र सरकारी सुरक्षा निकायका तर्फबाट भएको ज्यादती, चौतर्फी लुट, हत्या, हिंसा, चन्दा आतङ्क, अपहरण, विस्थापन, पलायन आदि भयावह स्थितिको कारुणिक चित्रण गरिएको **घरको माया** खण्डकाव्य आकारमा सानै भए पनि यसले विषयको अत्यन्तै विराट् सेरोफेरो समेटेको पाइन्छ । खण्डकाव्यका केही मार्मिक श्लोक तल प्रस्तुत गरिएको छ :

बच्चा ती टुहुरा बने कति यहाँ कोही बिचल्ली परे
भन्छन् बास उठ्यो विलाप कतिको रोई परेली भिजे ।
चेलीको सिउँदो बग्यो अब पुग्यो रोक्छौ कि माछौं अभै
छैनन् लास उठाउने विपतमा मान्छे मलामी कठै !!

(खण्ड १, श्लोक १९)

जारी नै छ अझै यहाँ मनुजको मर्ने र मार्ने क्रम
चल्ने हो कहिले नि सम्म घरमा बोक्तै र फ्याँक्तै बम ?
भन्डै चौध हजार जीवन गए सम्झी रूँदै छन् हरे
केका लागि भिड्यौ सबैसंग यहाँ जाँदै सत्ता मरे ॥

(खण्ड १, श्लोक २६)

२.३.२. हामी बालक (बाल कविता सङ्ग्रह)

हामी बालक नामक बाल कविता सङ्ग्रह कवि बलराम दाहालको दोस्रो प्रकाशित कृति हो ।
वि. सं. २०६५ सालमा प्रकाशित यससङ्ग्रहभित्र २५ बाल कविता समेटिएका छन् ।

आफ्ना विद्यार्थीलाई अत्यन्तै सरल, सरस र सहज शब्द प्रयोग गरेर पढाउने बलराम दाहालको प्रस्तुत बाल कविता सङ्ग्रह कक्षा कोठाभित्र पठन पाठनको समय र सन्दर्भकै उपज मान्न सकिन्छ । यस सङ्ग्रहले स-साना केटाकेटीलाई पनि कविता भनेको के हो भन्ने बुझाउनुका साथै मनमा आएका भाव समेटेर कविता कसरी लेख्न सकिन्छ, भन्ने पाठ अत्यन्तै सरल शब्दमा सिकाउने प्रयास गरेको छ । यस सङ्ग्रहको अध्ययनपछि कविता भनेको के के नै हो, हामी जस्ताले कविता लेख्न कहाँ सक्छौं र भन्ने भ्रम बोकेर बसिरहेका केटाकेटी पनि कविता रचनामा लाग्न प्रेरित हुने अपेक्षा समेत गर्न सकिन्छ ।

स-साना केटाकेटीले बुझ्ने र बोल्ने बालसुलभ सरल शब्दहरूको मनोहर तालमेलबाट शब्दानुप्रासको सुन्दर प्रयोग गरिएका उनका बाल कविता बाल बालिकालाई कविता पढ्न आकर्षित गर्न सक्षम छन् । अन्त्यानुप्रासयुक्त रचना श्रुति मधुर त छँदै छन्, साथ साथै पठनीय समेत छन् । जसले गर्दा स-साना केटाकेटीले समेत भाका हालेर सुमधुर स्वरमा गाउँ गाउँ लाग्ने खालका मिठा मिठा बाल कविता यस सङ्ग्रहभित्र परेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका कविताको अध्ययनपछि स-साना बाल बालिका पनि सरल, सहज कविता रचनामा प्रेरित हुन सक्ने देखिन्छ ।

सङ्ग्रहभित्र समेटिएका कविताका शीर्षक र भाव सुहाउँदा चित्र पनि राखिएको हुनाले यो सङ्ग्रह बाल बालिकाका लागि बढी उपयोगी देखिन्छ । यसका साथै, सुरु सुरुका पृष्ठमा कविता राखेर पछिल्ला पृष्ठमा कविता लेख्ने सामान्य तरिका सरल भाषामा सिकाइएको हुनाले पनि यो पुस्तक स-साना बाल बालिकाका लागि निकै उपयोगी हुने देखिन्छ । यस सङ्ग्रहभित्र निम्न कविता समेटिएका छन् :

- | | |
|--------------------|--------------------|
| क) भानुभक्त | ख) बालक |
| ग. विद्यालय | घ) ठूलो मान्छे |
| ङ) पुरस्कार | च) परिश्रमी मान्छे |
| छ) बाल अधिकार | ज) शुक्रवार |
| झ) शनिवार | ञ) गृहकार्य |
| ट) गृहकार्य छुट्टा | ठ) पाठ |
| ड) किताब | ढ) समय |
| ण) रूँदै बस्छन् | त) हामीले |
| थ) अब बभ्रुनुपर्छ | द) कुकुर |
| ध) मौरी | न) ऋतु |
| प) पानी | फ) पूजा |
| ब) तारा | भ) डन्डा |
| म चिठी | |

यस सङ्ग्रहभित्र समेटिएका बालक, विद्यालय, गृहकार्य, किताब, पाठ, ठूलो मान्छे, पुरस्कार, परिश्रमी मान्छे, बाल अधिकार, शनिबार, अब बभ्रुपुच्छ, डन्डा लगायतका कविताले ससाना कोमल मस्तिष्कका कलिला बाल बालिकालाई नियमित विद्यालय गई मन लगाएर अध्ययन गर्नुपर्ने, परिश्रमी बन्नुपर्ने, आफूभन्दा ठूला अग्रजको मान सम्मान गर्दै उनीहरूको आज्ञा पालन गर्नुपर्ने र आफूभन्दा सानालाई माया गर्नुपर्ने पाठ सिकाउन खोजेका छन् । बाल बालिकाले आज राम्रा बानी, व्यवहार र बोली वचन सिकेको खण्डमा मात्र भोलि उनीहरू देशकै असल नागरिक बन्न सक्ने हुनाले कवि दाहालका कविताले उनीहरूमा नैतिक शिक्षाका साथमा ज्ञानगुणको प्रकाश छर्ने सत्प्रयास गरेका छन् । बलराम दाहालले बाल बालिकाहरूसँग खेल्दा खेल्दै उनीहरूलाई पढाउँदा पढाउँदै यो बाल कविता सङ्ग्रह लेखेको पाइन्छ।^{२०} यस सङ्ग्रहभित्रका कविताका केही सुन्दर पङ्क्ति यहाँ उल्लेख गरिएको छ :

नहेप बाल बालिका
भनेर पातला भुरा ।
पिरोल्न थाल्छ आज नै
सुनेर देशका कुरा ॥

म आज शान्त देशको
म आज शान्त बालक
भएर पढ्न पाउने
यही छ, चाहना अब ॥

(बालक कविताबाट)

२.३.३. खरानी पो भयो माटो (गजल सङ्ग्रह)

खरानी पो भयो माटो बलराम दाहालको हालसम्म प्रकाशित दुईमध्ये पहिलो गजल सङ्ग्रह हो । यसको प्रकाशन वि. सं. २०६८ सालमा भएको हो । यसको प्रकाशन अगाडि उनको **म दिन्थेँ फुलका गुच्छा** शीर्षकको गजल फुटकर रूपमा बहर माला (२०६३) मा प्रकाशित भएको थियो । त्यसैगरी **नगर्नेले गर्थौँ भन्छन्** शीर्षक गजल दोलखाली समकालीन साहित्य (२०६३) मा समेटिएको थियो ।

प्रस्तुत **खरानी पो भयो माटो** गजल सङ्ग्रहभित्र कुल ५६ ओटा गजल अटाएका छन् । गजलकार दाहालका अधिकांश गजलमा देशभक्तिको उच्च भावना छुत्ताछुल्ल भई पोखिएको पाइन्छ । प्रस्तुत कृतिभित्र केवल देशभक्तिका कुरा मात्र नभई यहाँ एउटा कोमल मुटु छ, जहाँ एउटा देश छ, नेपाली जीवन छ, एउटा सुन्दर र सार्थक नेपाली समाजको चित्र छ र मानव हृदयको संवेदनशील पोखाइ छ।^{२१}

दाहालले यस गजल सङ्ग्रहमा फारसी बहर र शास्त्रीय छन्द अन्तर्गतका विविध बहर तथा छन्दको कुशल प्रयोग गरेको पाइन्छ । गजलकार दाहालले यस सङ्ग्रहभित्रका गजलमा नेपाली लोक छन्द अन्तर्गतका भ्याउरे र सवाईका साथै स्वतन्त्र अक्षरगत वा मात्रागत एकरूपतामा आधारित लय विधानको समेत प्रयोग गरेको देखिन्छ । उनका लयमा गजलमा अनिवार्य मानिने आरोह अवरोह गति, यति जस्ता कुरामा निकै सचेतता अपनाएको पाइन्छ । उनका अधिकांश गजल गाऊँ गाऊँ लाग्ने खालका छन् ।

^{२०} पराजुली, २०६५, भूमिका

^{२१} नेपाल, २०६८, भूमिका

प्रस्तुत कृतिको शीर्षकमा नै देश वा देशको माटो खरानी बन्न थालेको सङ्केत गरेर गजलकारले प्रत्येक पाठकलाई देशप्रति एक पटक गम्भीर बन्न बाध्य गराएका छन् । सबै कुराले भरिपूर्ण भए पनि माल पाएर चाल नपाउने र भएको कुरा राम्ररी बनाएर खान समेत नजान्ने नेपाली संस्कृतिका कारण आज हामी पूर्ण भकारीभिन्न बसेको भोको मुसाको जस्तो वा समुद्रभिन्नै रहेको तृषित माछाको जस्तो जीवन बाँचिरहेका छौं भन्ने यथार्थको उद्घाटन यस सङ्ग्रहभिन्नका अधिकांश गजलमा भएको पाइन्छ ।^{२२} सङ्ग्रहभिन्न समेटिएका केही सुन्दर गजल पङ्क्तिका नमुना :

देखिँदैन भेटिँदैन जित्ति छुँदा पनि

धृतराष्ट्र बनेका छौं आँखा हुँदा पनि ।

(गजल- १)

प्रकृतिले जहाँ जहाँ जे जे दिए पनि

देशको ठूलो सम्पदा त अखण्डता रै'छ ।

(गजल- ६)

तँ र ममा नअल्झेर हामी बन्न आज

चारै दिशाबाट देशले गुहार मागेको छ ।

(गजल- १३)

काम चल्ला कि भनी ल्यायौं तर अरू भन्दै थिए

बोकाले दाइँ हुने भए किन बहर दाउनुपर्यो ?

(गजल- ४०)

पराई पनि खालमा बस्दा हुने मेल रै'छ

बनाउने र सिध्याउने फलाँस खेल रै'छ ।

(गजल- ५५)

लुगा धुने बेला यौटै धारो आँगनीको

सुकाउने बेला मात्र किन तार भिन्न ?

(गजल- २७)

गजलकार बलराम दाहालले आजको अस्त व्यस्त जीवनमा पनि गजललाई जीवन र समाजको सुन्दर चित्र बनाएर अत्यन्तै सरल शैलीमा पस्केका छन् । सङ्ग्रहभिन्नका उनका गजल पढ्दा गीति कविता वा छन्दका मिठा मिठा कविता पढेको भान हुन्छ । सोभो भनाइ साहित्यको सीमा हो भने कलाभिन्न मसुकक हाँसेको विचार सिर्जनाको शक्ति हो । शब्दको चमत्कार वा अर्थको चमत्कार सिर्जनामा जहिल्यै अपेक्षित हुन्छ । गजलकार बलराम दाहाल कलात्मक तरिकाले अनुभूतिको व्यवस्थापन गर्न निकै सिपालु देखिन्छन् ।^{२३}

^{२२} पूर्ववत्

^{२३} पूर्ववत्

२.३.४. पश्चात्ताप (बाल उपन्यास)

कविता र गजल रचनाकै क्षेत्रमा बढी सक्रिय बलराम दाहालको कलम बाल उपन्यास रचनामा पनि सक्रिय रूपमा चलेको देखिन्छ। हुनत, उनी सक्रिय छन्दवादी कवि नै हुन्। उनले आफूलाई कहिले कविका रूपमा, कहिले खण्डकाव्यकारका रूपमा त कहिले गजलकारका रूपमा चिनाउँदै आएका छन्। तर, उनले आफ्नो प्रतिभाको बलमा अन्य विधाको रचनातर्फ पनि विस्तारै आफूलाई प्रवृत्त गराइरहेका छन्। यस क्रममा उनले पश्चात्ताप (बाल उपन्यास, २०६८) लाई आफ्नो पहिलो औपन्यासिक कृतिका रूपमा पाठकसामु सगौरव पस्केका छन्।

उपन्यासकार दाहालले आफ्नो पहिलो औपन्यासिक रचना पश्चात्तापमा हजुरबा पात्रको परिकल्पना गरेर बाल बालिकालाई घतिलो शिक्षा दिएका छन्। उनले हजुरबा मार्फत सुशील र किरण जस्ता जिज्ञासु र अनुशासित बाल बालिकालाई व्यावहारिक अर्ती उपदेश दिँदै आफ्नो देश, संस्कृति र परम्पराप्रति आदर भाव देखाउनुपर्ने पाठ सिकाएका छन्। उनले हजुरबा मार्फत व्यावहारिक जीवन र जगत्का अनेक दृष्टान्त दिएर बाल बालिकालाई बाल अधिकारको महत्त्व बुझाउन सफल भएका छन्।

उपन्यासका माध्यमबाट उपन्यासकार दाहालले सुशील र किरणमा धन ठूलो कि विद्या भन्ने विषयमा गम्भीर र तार्किक बहस गराएका छन्। उनले उपन्यासमा सुशीललाई विद्या र किरणलाई धनको पक्षमा उभ्याएर अनेक तर्क वितर्क गराएका छन्। विद्यालाई ठूलो ठान्ने सुशील राम्ररी पढेर कालान्तरमा योग्य चिकित्सक भएको देखाइएको छ भने धनलाई ठूलो ठान्ने किरणले भने धनको पछि दौडँदा दौडँदै र मोज मस्तीमा डुब्दा डुब्दै जिन्दगी बरबाद गरेको देखाइएको छ। धनको पछि लागेको किरणले पढाइमा भन्दा धन कमाउनतिर मात्र मन लगाउँदा हातको मैला सरह धन कहिले ऊसँग हुन्छ भने कहिले हुँदैन पनि। धनको पछि लाग्दा लाग्दै र मोज मस्तीमा डुब्दा डुब्दै उसले आफ्नो स्वास्थ्य बिगारेर रोगी समेत बन्न पुग्यो। रोगले शिथिल बनेर अस्पताल पुगेको किरणको उपचारमा चिकित्सकका रूपमा उसकै बालसखा सुशील उपस्थित हुन्छ। जसले गर्दा किरण भावुक भएर आफूले पनि उतिखेर पढाइमा मन लगाएको भए, विद्यालाई ठूलो ठानेको भए आज आफू पनि सुशीलभै ठूलो मान्छे बन्न सक्ने विचार मनमा आएर भावुक हुँदै आँखाबाट आँसु बगाउन थाल्यो। उसले प्रशस्त धन कमाउन सके पनि समयमै त्यसको सदुपयोग गर्न नजान्दा आज ऊसँग धन पनि छैन र शरीर पनि रोगी भएको छ। बाल्यकालीन सखा किरणको त्यो अवस्था देख्दा सुशीलका आँखाबाट आँसु बग्नु थाल्यो। किरणले मनमनै पछुतो मान्छ र तलको कविता मनमनै दोहोर्याउन थाल्यो :

बुबा भन्नुहुन्थ्यो पढ न पढ बाबु तिमी सधैं
म ता उल्टै सम्झी हरघडि हिँडेछु बहकिँदै
नदीको पानीभैँ समय बितिहाल्यो खुरुखुरु
सबै सम्झी ऐले हरघडी रुँदै छु धुरुधुरु ॥

यसरी प्रस्तुत बाल उपन्यासको कथावस्तु अनुसार धनको पछि दौडँदा दौडँदैमा जिन्दगी बरबाद पारेको र सदुपयोग गर्न नजान्दा कमाएको धन पनि स्वाहा पारेको किरणले आफ्नो गल्तीप्रति पश्चात्ताप गरेको हुनाले उपन्यासको शीर्षक पश्चात्ताप सुन्दर र सार्थक भएको पाइन्छ।

२.३.५. सौगात (कविता सङ्ग्रह)

कवि बलराम दाहालको हालसम्म प्रकाशित एक मात्र कविता सङ्ग्रह हो सौगात। वि. सं. २०६८ सालमा प्रकाशित प्रस्तुत सङ्ग्रहभित्र जम्मा ४२ छन्दोबद्ध कविता सङ्कलित छन्। यसै कविता सङ्ग्रहको कृति परक अध्ययन गर्नु यस शोधको उद्देश्य भएकाले यसको विस्तृत चर्चा चौथो अध्यायमा गरिनेछ।

२.३.६. फुलबारी (बाल गजल सङ्ग्रह)

बाल गजलकार बलराम दाहालले आफ्नो छैटौँ पुस्तकाकार कृति **फुलबारी** नामको बाल गजल सङ्ग्रह प्रकाशित गरेर गजलप्रति रुचि राख्ने कलिला बाल बालिकादेखि प्रौढसम्म सबैलाई गजल लेख्न सिकाएका छन् । विशेष गरी बाल बालिकालाई लक्षित गरी रचिएका बाल गजलका साथमा उनले यस कृतिको भूमिका खण्डमा **गजल लेख्दा थाहा पाउनुपर्ने कुराहरू** भनेर गजलको छोटो चिनारी र गजल लेख्ने शैली समेत सिकाएका छन् ।

सामान्यतः कवितामा खान्छ, जान्छ, लान्छ, जस्ता अनुप्रास मिलेका शब्द प्रयोग गरे जस्तै गजलमा पनि अनुप्रासयुक्त शब्द प्रयोग गर्नुपर्छ र यसलाई काफिया भनिन्छ, भनेर उनले गजलका पारिभाषिक शब्दको पनि चिनारी दिएका छन् । त्यस्तै गजल रचनाका क्रममा बारम्बार दोहोरिरहने शब्दलाई रदिफ भनिन्छ, र योचाहिँ गजलको अनिवार्य तत्त्व होइन भनेर उनले रदिफलाई ऐच्छिक तत्त्वका रूपमा चिनाएका छन् । गजलका प्रत्येक पङ्क्तिलाई मिसरा भनिन्छ । दुई मिसरा मिलेर गजलको एक 'सेर' बन्छ, र सुरुका दुई पङ्क्ति अर्थात् मिसरालाई मतला भनिन्छ, भनेर पनि दाहालले आफ्नो भूमिकामा प्रस्ट्याएका छन् । दाहालका अनुसार गजलको सुरुका दुई पङ्क्ति अर्थात् मिसरामा काफिया हुनुपर्छ, तर रदिफ भने आउन पनि सक्छ, नआउन पनि सक्छ । गजलको अन्तिम सेर अर्थात् टुङ्ग्याउने सेरलाई मकता भाग भनिन्छ ।

गजल लेख्न बस्दा सुरुका दुई लाइनमा काफिया राख्नुपर्छ र रदिफ पनि छ, भने राख्नुपर्छ अनि तेस्रो लाइनमा काफिया राख्नु हुँदैन । चौथो लाइनमा काफिया राख्नुपर्छ । यसैगरी पाँचौँ, सातौँ र नवौँ लाइन (मिसरा) मा काफिया चाहिँदैन । छैटौँ, आठौँ र दसौँ लाइन (मिसरा) मा काफिया राखिन्छ, र छ, भने रदिफ पनि राखिन्छ ।^{२४}

दाहालले भूमिका खण्डमै तलको गजल राखेर सङ्केतमा गजल लेख्ने विधि पनि सिकाएका छन् :

आकाशका तारा टिप्न जाऊँ जस्तो लाग्छ,
तारा जस्तै पढाइ माथि पुर्याऊँ जस्तो लाग्छ ।
पढ बाबु पढ तिमी भन्नुहुन्छ बाले
पढी गुनी ठूलै नाम कमाऊँ जस्तो लाग्छ ।
अल्छी लाग्दा कहिलेकाहीं कोइली चरी सम्झी
कोइली जस्तै मिठो गीत गाऊँ जस्तो लाग्छ ।
निद्रा लाग्दा अल्छी लाग्दा सबै जना मिली
रमाइलो वातावरण बनाऊँ जस्तो लाग्छ ।
म धर्तीको सूर्य बनी अब चारैतिर
प्रकाश किरण तेज ज्योति पठाऊँ जस्तो लाग्छ ।

विभिन्न २५ बाल गजल समेटिएको प्रस्तुत बाल गजल सङ्ग्रहले बाल बालिकालाई मात्र गजल लेख्न नसिकाई गजलप्रति चासो राख्ने र लेख्न चाहने जो कोही र जुन कुनै उमेरका व्यक्तिलाई गजल लेख्न सिकाउन सक्छ । त्यसैले यो पुस्तक सबैका लागि उपयोगी, पठनीय र सङ्ग्रहणीय देखिन्छ ।

^{२४} दाहाल, २०६९ : भूमिका

२. ४. बलराम दाहालको साहित्यिक यात्रा

जीवनकै प्रारम्भिक बाल वयदेखि नै साहित्यिक सिर्जनाको मूल फुटेका कवि बलराम दाहाल फुटकर कविता लेख्दै, सुनाउँदै र अरूका कविता पनि सुन्दै सुनाउँदै अघि बढेको पाइन्छ । यस क्रममा उनले थुप्रै अप्रकाशित फुटकर कविता रचेको पाइन्छ । विद्यालय तहका तल्ला कक्षाहरूदेखि नै प्रतियोगितात्मक हिसाबले **मेरो गाउँ, मेरो विद्यालय** लगायतका विविध शीर्षकमा कविता रचना गरेर उनले सुनाउने गरेको पाइन्छ । तर, औपचारिक कविता लेखनको चाहिँ वि. सं. २०५३ सालको वैशाखमा प्रकाशित आँकुरा पत्रिकामा प्रकाशित **मानवता** शीर्षकको कवितादेखि नै प्रारम्भ भएको हो । सोही मानवता शीर्षकको कविता प्रकाशनपछि नै उनी बिस्तारै कविका रूपमा चर्चामा आउन थालेको देखिन्छ । त्यसैले वि. सं. २०५३ देखि वि. सं. २०६९ सालसम्मको कवि बलराम दाहालको भन्डै १६ वर्षे साहित्यिक यात्रा र यस अवधिमा प्रकाशित फुटकर रचना तथा पुस्तकाकार कृतिका आधारमा उनको साहित्यिक यात्राको चरण विभाजन निम्नानुसार गर्न सकिन्छ ।

१. प्रथम चरण (वि. सं. २०५३ - वि. सं. २०६२)

२. द्वितीय चरण (वि. सं. २०६३ देखि हालसम्म)

२. ४. १. प्रथम चरण (वि.सं. २०५३-वि.सं. २०६२)

कवि बलराम दाहालले आफ्नो साहित्यिक यात्राको प्रथम चरणमा सामान्य खालका फुटकर कविता, निबन्ध, गीत, गजल लेखेको पाइन्छ । यसका आधारमा यस चरणलाई दाहालको साहित्यिक यात्राको आभ्यासिक चरण मान्न सकिन्छ । वि. सं. २०५३ सालमा आँकुरा पत्रिकाको वैशाख अङ्कमा **मानवता** शीर्षकको कविता प्रकाशित भएपछि दाहालको औपचारिक कविता लेखनको शुभारम्भ भएको मानिन्छ । त्यसअघि उनका जेजति रचना थिए, ती सबै अनौपचारिक लेखनमै सिमित थिए । **मानवता**देखि सुरु भएको दाहालको औपचारिक लेखनसँगै अघि बढेको यस चरणमा उनका कुनै पनि पुस्तकाकार कृति भने प्रकाशित भएको पाइँदैन ।

यसै चरणमा फुटकर निबन्ध समेत प्रकाशित गरेर दाहालले आफ्नो कलम फुटकर निबन्ध रचनातर्फ पनि दौडाएको देखिन्छ । उनको पहिलो प्रकाशित निबन्धात्मक रचना **नेताहरूलाई जनताको चिठी** हो । यो रचना वि. सं. २०६० साल जेठ महिनाको हिमालय टाइम्स दैनिकमा प्रकाशित भएको पाइन्छ । त्यसैगरी सोही दैनिकमा दाहालका **राष्ट्रिय कविता महोत्सवको हाँसो** (०६० असार १२), **पाइन्छ भने तु सम्पर्क राख्नुहोला** (०६० असार १५), **शतवार्षिकी मनाउने मन छ ?** (०६० असार २४) लगायतका हास्य व्यङ्ग्य मिश्रित निबन्ध रचना प्रकाशित भएको पाइन्छ । त्यसैले यस चरणमा दाहालको कवि व्यक्तित्वका साथसाथै हास्य व्यङ्ग्य निबन्धकार व्यक्तित्वले समेत फक्रने बाटो खोजिरहेको र फाट्ट फुट्ट रचना सार्वजनिक भइरहेको पाइन्छ ।

दाहालका यस चरणका समग्र रचनाको अध्ययन गर्दा उनका रचनामा देशप्रेम, प्रकृति चित्रण, मानवतावाद र हास्य व्यङ्ग्य चेत जस्ता प्रवृत्तिगत साहित्यिक विशेषता भेट्न सकिन्छ । आभ्यासिक चरण भए पनि उनका कतिपय फुटकर कविता र निबन्धमा उच्च साहित्यिक गुण भेट्न सकिन्छ ।

२. ४. २. द्वितीय चरण (वि.सं. २०६३ देखि हालसम्म)

आफ्नो साहित्यिक यात्राको प्रथम चरणमा थुप्रै फुटकर रचना मात्र प्रकाशित गरेका बलराम दाहालको यस चरणमा ६ वटा पुस्तकाकार कृति प्रकाशित भएका छन् । उनको पहिलो प्रकाशित कृति **घरको कथा** खण्डकाव्य हो । यस खण्डकाव्यको प्रकाशन वि. सं. २०६३ सालमा भएको हो । यस काव्यको रचना मुलुकमा भन्डै १० वर्षसम्म चलेको जनयुद्ध र यसैको सेरोफेरोमा गरिएको देखिन्छ । यस काव्यको रचना गर्दा मुलुकमा जनयुद्ध उत्कर्षमा पुगेको र प्रकाशनमा आउँदा शान्ति वार्ता भई द्वन्द्वरत दुवै पक्षले हतियार बिसाइसकेको हुनाले सोही अनुसार पछिल्ला केही खण्डमा परिवर्तित सन्दर्भसित सान्दर्भिक हुने

गरी परिमार्जन समेत गरेको देखिन्छ । पछिल्ला केही खण्डमा ऐतिहासिक जन आन्दोलन- २ का झलक समेत समेटिएको पाइन्छ ।

घरको कथाको प्रकाशनपछि दाहालका हामी बालक (बाल कविता सङ्ग्रह) २०६५, खरानी पो भयो माटो (गजल सङ्ग्रह) २०६८, सौगात (कविता सङ्ग्रह) २०६८, पश्चात्ताप (बाल उपन्यास) २०६८ र फुलबारी (बाल गजल सङ्ग्रह) २०६९ क्रमशः प्रकाशित भएका पाइन्छन् । पुस्तकाकार यिनै कृतिका साथ साथै यस चरणमा दाहालका अन्य विभिन्न फुटकर कविता तथा गजल पनि फाट्ट फुट्ट प्रकाशित भएका देखिन्छन् ।

स्वच्छन्दतावादी भाव धारालाई अँगालेर कविता लेख्ने दाहालका यस चरणमा देखा परेका कृतिहरूमा पनि देशभक्तिको भावना छुटाछुल्ल भएर पोखिएको पाइन्छ । समसामयिक सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक विषय वस्तुमाथि किसिलो व्यङ्ग्य गर्नु पनि उनको विशेषता हो । विभिन्न स्थानमा आयोजित व्यङ्ग्यात्मक कार्यक्रमहरूमा उपस्थित दर्शकहरूको सबैभन्दा बढी ताली पाउने स्रष्टाका रूपमा समेत ख्याति कमाएका दाहालका अधिकांश कृतिमा मानवतावादी स्वर मुखरित भएको पाइन्छ । उनका थोरै कविता तथा गजल शृङ्गारिक भाव शैलीमा पनि रचिएका पाइन्छन् ।

२.५. कवि बलराम दाहालका काव्य प्रवृत्ति

नेपाली भाषा साहित्यका विविध विधामा उत्तिकै सक्रिय रूपमा कलम चलाइरहेका कवि बलराम दाहालले फुटकर कविता, गीत र गजलदेखि खण्डकाव्यसम्मका कृति प्रकाशित गराइसकेका छन् । उनै कवि दाहालका हालसम्म प्राप्त काव्य कृतिको समग्र अध्ययनबाट उनका काव्य प्रवृत्तिलाई सङ्क्षेपमा निम्नानुसार प्रस्तुत गरिएको छ :

२.५.१. स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति

कवि बलराम दाहालका फुटकर कविता, गीत तथा गजलदेखि बाल कविता सङ्ग्रह र खण्डकाव्यसम्म सर्वत्र स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति मुखरित भएको पाइन्छ । स्वच्छन्दतावादी भाव धारामा परिष्कृत भाषाशैली पाइनु दाहालको खास चिनारी वा मौलिक विशेषता हो । नेपाली साहित्यमा महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटादेखि प्रारम्भ भएको स्वच्छन्दतावादी भाव धाराको कवि दाहालले पनि पछ्याइरहेको पाइन्छ । दाहालका काव्यहरू अत्यन्त सुकोमल, भावुक, गम्भीर, शान्त, सुमधुर, श्रुतिरम्य बनेका छन् र अन्तर्हृदयकै मार्मिक अभिव्यक्ति प्रकट गर्न सफल भएका छन् ।^{२५}

कवि दाहालले विभिन्न अग्रज साहित्यिक व्यक्तित्व तथा विविध पक्षबाट प्रेरणा बटुलेर आफ्नो अलग कवित्व निर्माण गरेको पाइन्छ । विशेष गरी संस्कृत साहित्यका महाकवि कालिदास, नेपाली साहित्यका महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा र राष्ट्रकवि माधव घिमिरेका काव्य कृतिको अध्ययन गरेर तिनै रचनाको प्रभाव र प्रेरणामा आफ्नो स्वच्छन्दतावादी परिष्कारवादी काव्य चेतको विकास गरेको बुझ्न सकिन्छ ।

कवि दाहालले पूर्व परम्परा र समकालीन नेपाली कविता परम्पराबाट प्रभाव र प्रेरणा ग्रहण गर्दै थोरै शब्दमा विराट् भाव सौन्दर्यलाई खिचेर एउटैमा सम्पूर्णतालाई समेट्ने प्रयास गरेका छन् । दाहालका काव्य कृतिहरू स्वच्छन्दतावादी भाव धारामा चुर्लुम्म डुबेको देख्न सकिन्छ । कवि दाहालका काव्य कृतिको अध्ययन गर्दा उनले वस्तुपरकतामा भन्दा आत्मपरकतामा बढी जोड दिँदै आएको अनुभव गर्न सकिन्छ । कवि दाहाल प्रकृतिको तन्मय चित्रणमा भन्दा मन्मय चित्रणमा बढी रमाइरहेका देखिन्छन् । उनले आफ्ना रचनामा अतीत र प्रकृतिप्रति असीम मोह दर्साएका छन् । विशेष गरी हिन्दु संस्कृति, परम्परा र नेपाली संस्कृतिप्रति उनमा असिमित आस्था रहेको देख्न सकिन्छ ।

युवा कवि दाहालका काव्यमा मानवीय गौरव र जीवनवादी स्वर मुखरित भएको पाइन्छ । जीवनका जतिसुकै निराशा र विरहका क्षणमा पनि जीवनलाई शून्य र निरर्थक बोध नगरी सुन्दर ठानेर आफ्ना सिर्जनामा रमाउँदै आएका दाहाल जीवनवादी कविका रूपमा चिनिन्छन् । बौद्धिकता, तार्किकता र

^{२५} काफ्ले, २०६८, पृ. २०

दार्शनिकताको अभिव्यक्तिभन्दा भावुकता, मानवता र आत्मपरकताकै बाहुल्य रहनु नै स्वच्छन्दतावादी भावधाराको विशेषता हो । जुन विशेषता कवि दाहालमा प्रचुर मात्रामा देख्न सकिन्छ ।

२.५.२. प्रकृति चेतना

कवि बलराम दाहालका विभिन्न काव्य प्रवृत्तिमध्ये प्रकृति प्रयोग पनि उनको मूलभूत विशेषता हो । दाहाल प्रकृतिप्रेमी र सौन्दर्यप्रेमी कविका रूपमा देखिन्छन् । त्यसैले उनले आफ्नो काव्य यात्राको प्रारम्भिक चरणदेखि नै नेपाली प्रकृतिलाई आफ्ना सिर्जनात्मक काव्य कृतिमा मन्मथ ढंगले उतारेका छन् । विशेष गरी कवि दाहालले नेपालका हिमाली, पहाडी र तराई क्षेत्रमा रहेका विभिन्न परिवेशलाई आफ्नो प्रकृति चित्रणको सेरोफेरो बनाएका छन् ।

दाहालले नेपालका मनमोहक हिमचुली, वनपाखा, पहाड, नदीनाला, चौतारी, भन्ज्याङ, देउराली, लेक, बेसी आदिका प्राकृतिक सुन्दरताका छटाहरू सूक्ष्म र मर्मस्पर्शी अनि अति सङ्क्षिप्त बनाएर काव्यमा प्रस्तुत गरेका छन् । प्रकृति प्रयोग पनि स्वच्छन्दतावादी कविहरूको मूल विशेषता हो । जसलाई कवि दाहालले पनि आत्मसात् गरेको पाइन्छ । फुटकर रचनादेखि खण्डकाव्यसम्म जताजतै कवि दाहालको प्रकृति उज्यालो देखिन्छ । दाहालको प्रकृतिको उन्मुक्त चित्रणको एक नमुना :

सिर्सिर् वायु बहेर ती युवतीका सर्वाङ्ग जिस्काउँछ
हेरी धैर्य गुमेर पात बिचरा ! त्यो ओठ मिठयाउँछ ।
गर्दै स्वागत गान काफल चरी आएर डाकेपछि
नौलो कुत्कृत चढ्छ कुन्नि किन हो वैशाख लागेपछि ॥

(वैशाख लागेपछि, कविताबाट)

२.५.३. राष्ट्रवादी चेतना

युवाकवि बलराम दाहालका रचनामा राष्ट्रवादी स्वर प्रखर रूपमा मुखरित भएको पाइन्छ । उनका रचनामा राष्ट्रवादी स्वरको अभिव्यक्ति प्यारो नेपाल शीर्षकको कविताबाट प्रस्फुटित भई विभिन्न रचना हुँदै घरको माया खण्डकाव्यमा आइपुग्दा व्यापक रूपमा फैलिएको पाइन्छ । उनी राष्ट्र, राष्ट्रियता र राष्ट्रिय संस्कृतिप्रति सदा संवेदनशील देखिने कवि हुन् । उनका कतिपय बाल कवितामा समेत राष्ट्रियतालाई उजागर गर्नु उनको विशेष प्रवृत्ति देखिन्छ ।

आफ्ना अधिकांश सिर्जनामा राष्ट्र, राष्ट्रियता, जातीयता, संस्कृति एवम् वीरताका स्वर लहरीलाई मुखरित गर्दै राष्ट्रिय मर्यादालाई सर्वोपरि स्थान दिने कवि दाहालले नेपाली गौरवको गाथा गाएका छन् । उनले आफ्ना रचनामा नेपाल र नेपालीको वीरतापूर्ण इतिहास, राष्ट्रिय जन जीवन, संस्कृति, परम्पराका अतिरिक्त नेपाली भूगोलभित्रका पहाड, पर्वत, गाउँ, बेसी, उकाली, ओराली अनि भन्ज्याङ, चौतारीका गौरव गाथा पनि गाएका छन् । यसका साथै उनले आफ्ना रचनामा धार्मिक सम्पदा र मातृभूमिको खुला मनले प्रशंसा गरेको देख्न सकिन्छ ।

कवि दाहालका रचना अध्ययन गर्दा उनले आफ्नो मातृभूमिको अगाध महिमा गान गरेको र मातृभूमि प्रतिको स्नेह तथा श्रद्धा भाव प्रकट गरेको सहजै भेट्न सकिन्छ । कवि दाहालले पनि आफ्ना रचनामा नेपाल रहे मात्र नेपाली रहने अन्यथा हामी सबै नेपालीको अस्तित्व मेटिने भाव प्रकट गरेका छन् । उनले नेपाल र नेपालीको स्वाभिमान र अखण्डताको कामना आफ्ना काव्यमा गर्दै मुलुकको चौतर्फी उन्नतिको कामना गरेका छन् । दाहालको अजर अमर राष्ट्र प्रेमको नमुना यस्तो छ :

उचाइ हाम्रो चुचुरीहरूमा
छ वीरता यी खुकुरीहरूमा ।
उचाइ होचिन्छ कि पीर लाग्छ
बहादुरी घट्छ कि पीर लाग्छ ॥

(उचाइ कविताबाट)

२.५.४. मानवतावादी चेतना

कवि बलराम दाहालका रचनामा मानवतावादको भाव प्रखर रूपमा प्रकट भएको पाइन्छ । उनले आफ्ना फुटकर कवितादेखि खण्डकाव्यसम्म मानवतावादी स्वरलाई छटाछुल्ल पारेर पोखेका छन् । मानवता शीर्षकको कविता प्रकाशन गरेर औपचारिक काव्य यात्रा सुरु गरेका दाहालका रचनामा जताजतै

मानवतावादी स्वर घन्केको पाइन्छ । उनले आफ्ना रचनामा मानवता विरोधी तत्त्वको खोइरो खनेर मानवतावादी स्वर उरालेका छन् । शासक र पुँजीपति वर्गको मानवता विरोधी क्रियाकलापको धुवाँदार विरोध गरेका छन् । उनले आफ्ना रचनामा दीन दुःखीको पीडामा मलम लगाउने प्रयास गरेका छन् ।

मान्छेले मान्छेलाई दुःखमा सघाएर उसका दुःखमा रुने र सुखमा हाँस्ने कर्म गर्नुपर्ने भाव समेत कविले आफ्ना रचनामा पोखेका छन् । खास गरी शोषण, दमन, अन्याय, अत्याचार सबै अन्त्यका लागि सबैले त्यसका विरुद्ध सशक्त आवाज उठाउनुपर्ने भाव पनि कवि दाहालले आफ्ना अधिकांश रचनामा पोखेका छन् । मुलुक र मुलुकवासीको स्वतन्त्रताको चाहना, नेपाली वीरताको महिमा गान, जातीय भेदभाव विरुद्ध सशक्त आवाज कवि दाहालका रचनामा घन्केको पाइन्छ । मानव धर्म नै सबैभन्दा ठुलो धर्म हो भनेर वकालत गर्ने दाहालले आफ्ना रचनामा मानवताको चर्को वकालत गरेका छन् । उनले आफ्ना रचनामा विश्वकै मानव कल्याणका लागि सशक्त आवाज उठाउँदै विश्व शान्तिको कामना गरेका छन् । मानव प्रेम, शान्ति र आपसी भाइचाराको सद्भावका साथ समग्र मानव जातिको उत्थानको कामना गरेका छन् । उनले आफ्नो एक मात्र खण्डकाव्य **घरको कथामा** मानवता विरोधी काम कारवाहीप्रति व्यङ्ग्य गर्दै मानवताको वकालत गरेका छन् ।

२.५.५. सामाजिक चेतना

आफ्ना अधिकांश रचनामा सामाजिक चेतना अत्यन्त प्रखर रूपमा प्रकट गर्दै आएका कवि बलराम दाहालका रचना मानवतावादी भावले ओतप्रोत भएका पाइन्छन् । उनको पहिलो प्रकाशित खण्डकाव्य **घरको कथा** पूर्णतः सामाजिक परिवेशमा आधारित रचना हो । यस काव्यको समग्र अध्ययनबाटै उनको समाजप्रतिको दृष्टिकोण बुझ्न सजिलो हुन्छ । यस खण्डकाव्यले नेपाली समाजमा भड्किएको लामो द्वन्द्व र त्यसले निम्त्याएका सामाजिक भाँडभैलो, सामाजिक परिवर्तन र चेतनाको विषयलाई अत्यन्तै कुशलतासाथ प्रस्तुत गरेको छ । उनले यस काव्यमा नेपाली समाजको सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक अवस्थाको चित्रण गर्नुका साथै समाजमा विद्यमान शोषण, दमन, अन्याय, अत्याचारका कथा पनि समेटेका छन् । समाजमा धनी र गरिब, उच्च जात र निम्न जात, शासक र शासित वर्गबिच चल्दै आएको द्वन्द्वका कारण सिर्जित समस्याको उठान गर्नुका साथै समाजमा देखिएको परिवर्तनलाई पनि आफ्ना रचनामा उद्घाटन गरेका छन् ।

मानवता विरोधी तत्त्वको तीव्र विरोध गर्दै कवि दाहालले समाजमा मानवताको चीर हरण गर्नेहरू विरुद्ध तीव्र आक्रोश पोखेका छन् । उनले नेपाली समाजमा घटेका घटना तथा कारुणिक कथा व्यथालाई यथार्थ रूपमा आफ्ना रचनामा उतारेर त्यसमा विद्रोहको स्वर थपेका छन् । सामाजिक विकृति र विसङ्गतिप्रति तीव्र असन्तोष प्रकट गर्ने कवि दाहालले सामाजिक सुधारका पक्षमा आफ्नो कलम दौडाएका छन् । नेपाली राजनीतिकर्मीहरूको फोहोरी राजनीतिका कारण मुलुक अस्तव्यस्त भइरहेको तर्फ पनि उनको दृष्टि परेको छ । उनले नेपाली राजनीति र त्यसले जन्माएको विकृति र विसङ्गतिप्रति तीव्र व्यङ्ग्य प्रहार गरेका छन् ।

२.५.६. भाषिक चेतना

कवि बलराम दाहालका अधिकांश रचना अत्यन्तै सरल भाषामा उनीएका छन् । लामो समयदेखि बाल बालिकासँगै कक्षाकोठाभित्र पठनपाठनमा सक्रिय भएको हुनाले पनि उनको भाषाशैलीमा कुनै कृत्रिमता पाइन्न । बाल सुलभ रचनामा अत्यन्तै सक्रिय दाहालले आफ्ना रचनामा सरल, सरस र सहज भाषाको प्रयोग गरेका छन् । त्यसैले उनका अधिकांश रचना सरल छन् । जसले गर्दा जुनसुकै वर्ग, स्तर र उमेर समूहका पाठकका लागि पनि सुहाउने भाषाशैली उनका रचनामा पाइन्छ । विशेषतः नेपाली जनजिब्रोमा भिजेको शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएका उनका अधिकांश कविता/काव्य पठनीय छन् । उपजाति, अनुष्टुप्, शिखरिणी लगायतका छन्द पनि उनले प्रयोग गरेको भए पनि उनको सिद्धहस्तताचाहिँ शार्दूलविक्रीडित, उपजाति लगायतका छन्द प्रयोगमै देख्न सकिन्छ ।

नेपाली वन पाखामा बोलिने भर्रा नेपाली शब्दलाई अत्यन्तै सहजतासाथ उतार्न सिपालु कवि दाहालले आफ्ना रचनामा क्लिष्ट र दुरुह भाषालाई पूर्णतः बहिष्कार गरेको देख्न सकिन्छ । अत्यन्तै संयमसाथ कुशल शब्द संयोजनमा रमाउने दाहालले नेपाली भाषाका अनुकरणात्मक शब्दलाई व्यापक

मात्रा प्रयोग गर्दै काव्यलाई रसिलो पार्ने प्रयास गरेका छन् । आफ्ना काव्यमा करुण र वीर रसलाई अधिक महत्त्व दिने दाहालले यमक अलङ्कारलाई विशेष मन पराएको देखिन्छ । उनका कतिपय रचना पढ्दा यमक अलङ्कार प्रयोगका दृष्टिले आदर्शराघवका सोमनाथ सिग्दयाललाई समेत बिर्साउने क्षमता देखिन्छ । उनको यस्तो कला सौगात कविता सङ्ग्रहभित्र जताततै देख्न सकिन्छ । यमकका अतिरिक्त उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलङ्कारको पनि उनले सफल प्रयोग गरेका छन् । उनका अधिकांश रचनामा अन्त्यानुप्रासको कुशल संयोजन पाइन्छ भने कतै कतै आद्यानुप्रास र मध्यानुप्रासको छटा पनि देख्न पाइन्छ ।

२.६. सारांश

वि.सं. २०३७ साल मङ्सिर २२ गते जन्मेका बलराम दाहाल नेपाली साहित्यका एक आशलाग्दा प्रतिभा हुन् । नेपाली र संस्कृत साहित्यमा उच्च शिक्षा हासिल गरेका दाहाल शिक्षण पेसामा आवद्ध भएर पनि साहित्य सिर्जनामा निकै अगाडि छन् । विद्यालय तहदेखि नै कविता सिर्जना गर्न थालेका दाहाल हाल कवि, गजलकार, निबन्धकार, हास्यव्यङ्ग्यकार, उपन्यासकार आदि व्यक्तित्वका रूपमा समेत चिनिन्छन् । बाल साहित्यका क्षेत्रमा पनि कवि दाहालले कलम चलाएका छन् । मानवता (आँकुरा, २०५३) बाट सुरु भएको साहित्यिक यात्राका क्रममा हालसम्म उनका ६ ओटा पुस्तकाकार कृति प्रकाशित भएका छन् । घरको कथा (खण्डकाव्य), हामी बालक (बाल कविता सङ्ग्रह), खरानी पो भयो माटो (गजल सङ्ग्रह), पश्चात्ताप (बाल उपन्यास), सौगात (कविता सङ्ग्रह) र फुलबारी (बाल गजल सङ्ग्रह) उनका हालसम्म प्रकाशित कृति हुन् ।

यी कृतिका आधारमा कवि बलराम दाहालको हालसम्मको साहित्यिक जीवनलाई प्रथम चरण (२०५३-२०६२) र द्वितीय चरण (२०६३ देखि हालसम्म) गरी दुई चरणमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ । उनको साहित्यिक जीवनको प्रथम चरण आभ्यासिक चरणका रूपमा रहेको छ । यस चरणमा उनका फुटकर रचना विभिन्न पत्र पत्रिकामा प्रकाशित भएको पाइए पनि पुस्तकाकार कृति चाहिँ प्रकाशित हुन सकेका छैनन् । उनका पुस्तकाकार कृति दोस्रो चरणमा मात्र प्रकाशित हुन थालेको पाइन्छ । उनका रचनामा स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति, प्राकृतिक सौन्दर्यको चर्चा, राष्ट्रवादी चेतनाको प्रकटीकरण र मानवतावादी चेतना प्रदर्शन गरेको पाइन्छ । कवि दाहालले सामाजिक पक्षको चित्रण गर्नुका साथै भाषिक प्रयोगमा समेत अत्यन्तै सचेतता अपनाएका छन् । विशेषतः संस्कृतका वर्णमात्रिक छन्दमा कविता रच्नु कवि बलराम दाहालको विशेषता बनेको देखिन्छ ।

अध्याय : तिन

कविता सिद्धान्त र नेपाली कविता परम्परा

०. विषय प्रवेश

यस अध्यायमा कविता सिद्धान्त र नेपाली कविता परम्पराको चर्चा गरिएको छ । यस क्रममा कविता सम्बन्धी पौरस्त्य र पाश्चात्य अध्ययन पद्धति, कविताको परिभाषा, कविता विश्लेषण पद्धति आदिको चर्चा गरिएको छ । यसका साथै कविताका अत्यावश्यक अङ्ग (संरचना, लय विधान, भाव विधान, कथन पद्धति, भाषाशैली, विम्ब तथा अलङ्कार र शीर्षकबारे पनि सङ्क्षेपमा चर्चा गरिएको छ । नेपाली कविताको समसामयिक धाराको सङ्क्षिप्त विवेचनाका साथमा कवि बलराम दाहालको नेपाली कवितामा आगमनको चर्चा गर्दै अन्तिममा सारांश समेत प्रस्तुत गरिएको छ ।

३.१. कविताको परिचय

नेपाली भाषामा प्रयोग हुने 'कविता' तत्सम शब्द हो । यो 'कवि' शब्दमा 'ता' प्रत्यय लागेर बनेको हो । जसको अर्थ कविको कर्म वा कविले रचेको लयबद्ध रचना वा मुक्तक रचना भन्ने बुझिन्छ ।^{२६} कविता सिद्धान्तको अध्ययन गर्नुपर्दा पूर्व र पश्चिम दुवैतिरको परम्परा बुझ्नु जरुरी हुन्छ । कविता सिद्धान्तको परम्परा पूर्व र पश्चिम दुवैतिर धेरै पुरानो मानिन्छ । यसबारे पूर्व र पश्चिम दुवैतिरका कवि साहित्यकारले आ-आफ्नो धारणा सार्वजनिक गरेका छन् जुन धारणाले अहिलेसम्म पनि उचितकै प्रभाव जमाएको पाइन्छ । त्यही अनुसार अहिले पनि कविता काव्यको परिभाषा गर्ने परम्परा छ ।

३.२. कविता सम्बन्धी पौरस्त्य अध्ययन

पौरस्त्य साहित्यको प्रेरणाको स्रोत 'वेद' हो । वेदमा पनि अझ 'ऋग्वेद'लाई विश्व साहित्यमै सर्व प्राचीन ग्रन्थका रूपमा स्विकारिएको छ । कविताको बीज वेदमै अङ्कुरण भइ सकेको पाइन्छ । ऋग्वेदपछिका अन्य वैदिक वाङ्मय भन्नाले वेद, ब्राह्मण, आरण्यक र उपनिषद्लाई बुझिन्छ । यी ग्रन्थ ज्ञानको असीमित भण्डार पनि हुन् । संस्कृत वाङ्मयको सर्व प्राचीन ग्रन्थ वेदमा आध्यात्मिक जीवन र सांस्कृतिक विकासका सङ्केत पाइन्छन् । यथार्थमा वैदिक साहित्यमा विचार चिन्तनको व्यापक घनत्व पाइन्छ । वैदिक साहित्यदेखि क्रमशः विकसित हुँदै लौकिक साहित्य युगमा आइपुग्दा संस्कृत साहित्यका सम्मान्य आदिकवि वाल्मीकिकृत रामायण देखा पर्छ, जसमा कोमल भाव, विचार र पदावलीको सुन्दर विन्यास देखिन्छ ।

महाभारत र पुराणमा आइ पुग्दा कविताको भनै उच्च महत्त्व र गरिमा झल्केको पाइन्छ । पौराणिक साहित्यपछि देखा पर्ने ललित कविहरू धेरै छन् । तिनमा पनि सशक्त र सवप्रिय कवि प्रतिभा हुन्, कालिदास । कुमारसम्भवम् र रघुवंश जस्ता उच्च कोटिका महाकाव्य र मेघदूत जस्तो सुन्दर खण्डकाव्य मार्फत महाकवि कालिदासको कवि व्यक्तित्व झल्किएको पाइन्छ । उनको आगमनपछि अन्य विभिन्न कवि सर्जक पनि संस्कृत साहित्यमा देखापरेका पाइन्छन् । उनीहरूमा अश्वघोष, दण्डी, भारवि, माघ, श्रीहर्ष आदि कविले संस्कृत काव्य परम्परालाई अगाडि बढाएको पाइन्छ ।

कविता र काव्य एउटै मूलबाट व्युत्पन्न शब्द हुन् । त्यसका लागि 'कवि' शब्दको व्युत्पत्ति बुझ्ने हो भने यसको आशय बुझ्न सकिन्छ । साथै, कवि शब्दबाटै काव्य शब्द बन्ने हुनाले कवि शब्दको व्युत्पत्तिबाटै काव्य शब्दको समेत अर्थ प्रस्ट हुन सक्छ । कविलाई 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भू' का रूपमा समेत लिइएको छ । 'कु' धातुमा 'अच्' (इ) प्रत्यय लागेर बनेको कवि शब्दको अर्थ कार्य भन्ने बुझिन्छ । 'कृड्' धातुबाट निर्मित काव्य शब्दको अर्थ सङ्कुचन भएर आज महाकाव्य र खण्डकाव्य जस्ता विधामा सीमित भएको पाइन्छ । जे भए पनि यिनै दुई विधाको तात्त्विक संरचना अन्तर्गत रचिएका लघु र लघुतम रूपका कविताको सन्दर्भमा पूर्वमा श्रुति, स्मृति, वेद, पुराण हुँदै चिन्तनको सुदीर्घ परम्परा विकसित हुँदै

^{२६} अधिकार र भट्टराई, प्रयोगात्मक नेपाली शब्दकोश (२०७०), पृ. २३२

आएको हो । यस क्रममा ध्वनि, अलङ्कार, रस, औचित्य, रीति, भावना, कल्पना, बुद्धि, शैली आदि भाव र चिन्तन प्रस्तुत भएको पाइन्छ । त्यसै बेलादेखि रस, अलङ्कार आदिको मान्यता सशक्त रूपमा कवितामा आउन थालेको हो ।

समयको अन्तरालसँगै कविताका मूल्य मान्यता र प्रवृत्तिमा पनि आंशिक भिन्नता देखिन थालेको पाइन्छ । सामान्य चलन चल्तीमा कविताको भाषामा आएको भिन्नता छुट्ट्याउन कविता र यसका विविध आङ्गिक एवम् आत्मिक पक्षका आधारमा यसको परिचय गराउने क्रममा यस क्षेत्रमा संलग्न स्रष्टा एवम् द्रष्टा विद्वान्हरूले विविध परिभाषा प्रस्तुत गरेका छन् ।

संस्कृत काव्य परम्परासित प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूपमा जोडिएका मनीषीहरूले विभिन्न तर्क, बुद्धि र युक्तिद्वारा आफ्नो आफ्नो मान्यता वा सिद्धान्त प्रतिपादन गरी काव्यको परिभाषा गर्ने चेष्टा गरेका छन् । कसैले रस सिद्धान्त, कसैले अलङ्कार सिद्धान्त, कसैले ध्वनि सिद्धान्त, कसैले रीति र वक्रोक्ति सिद्धान्तको विवेचना गर्ने क्रममा कविता काव्यको कुनै न कुनै रूपमा परिभाषा प्रस्तुत गरेका छन् । जसले जे जस्ता तर्क गरे पनि रसलाई कविताको आत्मा, रीतिलाई शरीर र अलङ्कारलाई कविताको आभूषण मान्ने अभिमत प्रबल रूपमा अगाडि आएको पाइन्छ ।

कविताको समग्र र सर्व स्वीकार्य परिभाषा गर्न सहज छैन । यो अत्यन्तै जटिल कार्य हो । परिवर्तनशील संसारमा प्रत्येक वस्तु पनि परिवर्तनशील नै छ । आफ्नो ज्ञान, सिप, क्षमता र दक्षताले संसारमा असीमित परिवर्तन ल्याउन सफल मान्छेको स्वभाव, रुचि, जीवन शैली, प्रवृत्ति आदिमा समयको अन्तरालसँगै परिवर्तन आउनु स्वाभाविक हो । त्यसैले तिनै जिज्ञासु मानवबाटै सिर्जित रचना भएको हुनाले कविता काव्यको संरचनामा पनि समय सापेक्ष परिवर्तन हुनु अनौठो होइन । त्यसैले समयको अन्तरालसँगै कविताको संरचनामा पनि अवश्यै केही न केही परिवर्तन भएको छ । तसर्थ, परिवर्तनका वर्षौं पुरानो निकै लामो परम्परा र चिन्तन मननका आधारमा कविताको सर्वमान्य परिभाषा प्रस्तुत गर्नु सहज कार्य पक्कै होइन । तैपनि, यहाँ विभिन्न चरण र प्रवृत्ति केन्द्रित केही परिभाषालाई प्रस्तुत गर्ने प्रयास गरिएको छ ।

३.३. संस्कृत (पौरस्त्य) साहित्यमा कविताको परिभाषा

‘कुङ्’ शब्द अथवा कवृ वर्णे (वर्णने) धातुबाट कवि शब्दको निष्पत्ति गरिएको पाइन्छ भने रस र भावको मिश्रण कर्तालाई पनि कवि शब्दले सम्बोधन गरेको पाइन्छ । यिनै कविले लेखेको रचना वा कृतिलाई कविता वा काव्य नामकरण गरेको पाइन्छ । संस्कृत साहित्यका नक्षत्र अर्थात् पौरस्त्य साहित्य जगतका आचार्यमध्ये प्रथम मनीषी आचार्य भरत (इ.पू. दोस्रो शताब्दी) मानिन्छन् । उनले आफ्नो ‘नाट्यशास्त्रम्’ नामक ग्रन्थमा नाटकबारे विशेष चर्चा गरेका छन् । नाटकको चर्चा गर्ने क्रममा उनले काव्यको पनि चर्चा गरेका छन् ।

‘मृदुललितपदाह्वयं गूढशब्दार्थहीनम्
जनपदसुखबोध्यं युक्तिमन्तृप्रयोज्यम् ।
बहुकृत रसमार्गं सन्धिसन्धानयुक्तम्
स भवति शुभकाव्यं नाटकं प्रेक्षकाणाम् ॥’^{२७}

अर्थात् कोमल र मनोरम पदले युक्त भएको गूढ शब्दार्थ नभएको, सबैलाई सुखानुभूति गराउन सक्ने, युक्तियुक्त, नृत्य गीतमा उपयोग गर्न सकिने, अनेक रसयुक्त, सन्धि सन्धानयुक्त नाटक शुभ काव्य हुन्छ भनेर उनले आफ्नो काव्य परिभाषा प्रस्तु गरेका छन् ।

भामह : ‘शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्’ (भामह, काव्यालङ्कार) अर्थात् शब्द र अर्थको सहभाव नै काव्य हो भनेर भामहले शब्द र अर्थको मनोरम मेललाई काव्य वा कविता मानेका छन् ।

दण्डी : ‘शरीरं तावदिष्टार्थं व्यवच्छिन्ना पदावली काव्यम्’,^{२८} अर्थात् अभीष्ट अर्थ प्रकट गर्न योजना गरिएको पदावली काव्यको शरीर हो ।

वामन : ‘रीतिरात्मा काव्यस्य’,^{२९} अर्थात् काव्यको आत्मा रीति हो ।

रुद्रट : ‘ननु शब्दार्थौ काव्यम्’,^{३०} अर्थात् शब्द र अर्थ नै काव्य हो ।

^{२७} भरत, नाट्यशास्त्रम्

^{२८} दण्डी, काव्यादर्शम्

^{२९} वामन, काव्यालङ्कारम्

आनन्द वर्द्धन : 'ध्वनिरात्मा काव्यस्य',^{३१} अर्थात् ध्वनि नै काव्यको आत्मा हो ।

मम्मट : 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृतिः पुनः क्वापि',^{३२} अर्थात् दोषरहित गुणसहित शब्द र अर्थ नै काव्य हो । काव्यमा कतै कतै अलङ्कार नभए पनि हुन्छ ।

विश्वनाथ : 'वाक्यं रसात्मक काव्यम्',^{३३} अर्थात् रसात्मक वाक्य नै काव्य हो ।

जगन्नाथ : 'रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्दः काव्यम्',^{३४} अर्थात् रमणीय अर्थ प्रतिपादन गर्ने शब्द नै काव्य हो ।

यसरी काव्यको परिभाषा गर्ने क्रममा आचार्य भामहले शब्दार्थमा, दण्डीले इष्ट अर्थयुक्त पदावलीमा विशेष जोड दिएका छन् । त्यसैगरी आचार्य कृन्तकले वक्रोक्तिमा, आनन्द वर्द्धनले ध्वनिमा र विश्वनाथले रसमा, जगन्नाथले रमणीय अर्थ दिने शब्दमा विशेष जोड दिएका छन् ।

उपर्युक्त आधारबाट हेर्दा रस, अलङ्कार, ध्वनि, गुण, रीति, औचित्य आदिलाई काव्यका अपरिहार्य तत्त्वका रूपमा आत्मसात् गर्ने विभिन्न सम्प्रदायगत चिन्तनमा केन्द्रित भएर कविताको परिभाषा गरिएको पाइन्छ । मूलतः पौरस्त्य परिभाषा शब्द र अर्थको सहभाव तथा मानव कल्याणमै बढी केन्द्रित भएको देखिन्छ ।

३.४. कविता सिद्धान्त सम्बन्धी पश्चिमी अध्ययन

पूर्वमा जस्तै पश्चिममा पनि काव्यको परिभाषाबारे एक मत पाइँदैन । उनीहरूले आफ्नो आफ्नो काव्य सम्बन्धी धारणा प्रस्तुत गरेका छन् । पश्चिमी साहित्यको अध्ययन गर्दा काव्य वा कलाको आदि बीज खोज्न होमरसम्मै पुग्नुपर्ने हुन्छ । किनकि, पाश्चात्य काव्य वा कलाको बीज होमरदेखि नै रोपिएको पाइन्छ । अझ होमरपछि अरस्तुपूर्व वा प्रारम्भिक युगका हेसियड, सोलान जेनोफेनस, युरिपाइडिज, अरिस्टोफेनस आदि चिन्तकले काव्य सिद्धान्त सम्बन्धी आफ्नो टिप्पणी गरेको भेटिन्छ । जुन निम्नानुसार देखिन्छ :

होमर : होमरले काव्यलाई 'जादुले भरिएको आल्हादकारी अनुकरणात्मक तत्त्व'^{३५} का रूपमा चिनाएका छन् । उनी कविता वा काव्यको स्रोत दैवी प्रेरणालाई मान्दछन् ।

हेसियड : होमरपछि अर्का विद्वान् हेसियडले 'मान्छेलाई आनन्दित तुल्याउने र शिक्षा दिने कला नै काव्य हो'^{३६} भन्ने तर्क प्रस्तुत गरेका छन् ।

सोलोन : हेसियडपछि अर्का चिन्तक सोलोनले 'प्रतिभाको विकास अभ्यास वा साधनाबाटै हुन सक्छ' भनेका छन् । त्यसै गरी उनले 'कविताको सारभूत महिमा त्यसको ज्ञानभन्दा शिल्प वा प्रविधिमा हुन्छ'^{३७} भनेर सिर्जनाको रचना शिल्प वा प्रविधिमाथि विशेष जोड दिएका छन् ।

पिण्डार : 'थोरैमा धेरै भन्न सकिने उत्साह र प्रेरणाको सिर्जना काव्य हो । दिव्य प्रेरणा कविको अन्तस्करणबाट जन्मेको वरदान हो'^{३८} भन्ने तर्क उनको छ ।

यी साहित्य चिन्तकहरूका अतिरिक्त प्लेटोपूर्व जेनोफेनस, युरिपाइडिज, सोफिस्ट, अरिस्टोफेनस लगायतका चिन्तकले काव्यबारे आफ्ना आफ्ना धारणा सार्वजनिक गरेका छन् । उनीहरूका धारणा पश्चिमी साहित्य संसारकै काव्य चिन्तनका आदिबीजका रूपमा रहेका छन् ।

^{३०} रुद्रट, काव्यालङ्कारम्

^{३१} आनन्द वर्द्धन, ध्वन्यालोक

^{३२} मम्मट, काव्य प्रकाश

^{३३} विश्वनाथ, साहित्य दर्पण

^{३४} जगन्नाथ, रस गङ्गाधर

^{३५} त्रिपाठी, पाश्चात्य समालोचनाको सैद्धान्तिक परम्परा, ५

^{३६} पूर्ववत्, ८

^{३७} पूर्ववत्, ९

^{३८} पूर्ववत्, १०

पश्चिमी काव्य वा साहित्य जगत्को युग युगसम्म सम्भ्ररहने ज्ञान, विज्ञान, कला र साहित्यका सन्दर्भमा सुकरात, प्लेटो, अरस्तु जस्ता गुरु शिष्य परम्पराले महत्त्वपूर्ण स्थान ओगटेको पाइन्छ । उनीहरूको धारणाले पाश्चात्य साहित्य सम्बन्धी चिन्तन परम्परालाई समेत अधि बढाएको देखिन्छ । हुन त प्लेटोका गुरु सुकरातले आरम्भ गरेको कवि र काव्य सम्बन्धी चिन्तनको बीजमा प्लेटोले आफ्नो फरक धारणा प्रस्तुत गरेका छन् । कवि र काव्यका सम्बन्धमा प्लेटोको चिन्तन साहित्यको पक्षमा नभएर विपक्षमा केन्द्रित रहेको देखिन्छ । प्लेटोले साहित्यको समर्थनभन्दा पनि विरोधमै बढी ऊर्जा खर्चेका छन् । 'दैवी उन्मादको अवस्थामा साहित्यको सिर्जना हुन्छ । साहित्यले मानिसको आवेगलाई भरणपोषण गर्छ । साहित्य अनुकरणको पनि अनुकरण भएकाले यो सत्यभन्दा दुई गुणा टाढा हुन्छ । त्यसैले साहित्यकारलाई आदर्श गणराज्यबाट निष्कासन गर्नुपर्छ ।'^{३९} यसरी प्लेटोले कवि र काव्यमाथि गम्भीर आक्षेप लगाएर समग्र साहित्यिक सिर्जनामाथि नै नकारात्मक टिप्पणी गरेका छन् । तर, जीवनको उत्तरार्द्धतिर आइपुगेपछि भने उनले अलि भिन्न धारणा सार्वजनिक गर्दै साहित्यलाई सत् र असत् गरी दुई वर्गमा विभाजन गरेर सत् साहित्यलाई आदर्श गणराज्यमा स्थान दिन सकिने अभिमत दिएका छन् ।

प्लेटोपछि उनका चेला अरस्तुले आफ्ना गुरुका आरोपको खण्डन गर्दै आफ्नो सिद्धान्त वा आत्मधारणा प्रस्तुत गरेको पाइन्छ । यस क्रममा अरस्तुले साहित्य सम्बन्धी विभिन्न सिद्धान्त अधि सारेका छन्— दैवी उन्मादको सिद्धान्त, अनुकरण सिद्धान्त, विरेचन सिद्धान्त र नीतिपरक समालोचना सिद्धान्त । अरस्तुले 'कविता वा काव्य भनेको भाषाद्वारा अभिव्यक्त हुने अनुकरणात्मक कला हो'^{४०} भनेर काव्य वा साहित्यको चिनारी प्रस्तुत गरेका छन् उनको काव्यशास्त्रमा ।

अरस्तुपछि लन्जाइनसले काव्यलाई 'उच्च विचार र उदात्त चिन्तनको प्रेरणाद्वारा औचित्यको प्रतिपादन' भनेर चिनाएका छन् । उनले काव्यमा विम्ब, अलङ्कार र भावनामा तीव्रता हुनुपर्नेमा विशेष जोड दिएका छन् ।^{४१} त्यसपछि युरोपको इतिहासमा प्रारम्भ भएको मध्यकालसँगै युरोपको अँध्यारो काल सुरु भयो । यस अँध्यारो युगमा देखा पर्ने प्रकाश हुन् होरेस । उनले 'कविताले मनोरञ्जन र प्रशिक्षण दुवै कुरा दिनुपर्छ'^{४२} भन्ने धारणा सार्वजनिक गरेका छन् ।

युरोपको पुनर्जागरण कालपछि देखा परेका सिङ्नीले 'कविता मानवीय मन र चरित्रको संवर्द्धक र रूप प्रधान हुनुपर्छ' भन्ने विचार सार्वजनिक गरेका छन् । सिङ्नीपछि नव परिष्कारवादीहरूले परिष्कार, परिमार्जन, भाव र विचारको सन्तुलित प्रस्तुति तथा शास्त्रीयतामाथि सक्दो जोड दिएका छन् । परिष्कारवादी कविहरूपछि स्वच्छन्दतावादी कविहरूको चकचकी सुरु हुन्छ । उनीहरू आफ्ना काव्यमा स्वच्छन्द गतिमा बेरोकटोक विचरण गर्न थाल्छन् । उनीहरूलाई कविताको कुनै पनि शास्त्रीय नियमले बाँध्न सकेन । आफूखुसी काव्यमा जतासुकै विचरण गर्नु उनीहरूको पहिचान बन्यो । स्वच्छन्दतावादका प्रथम प्रवक्ताका रूपमा उदाएका कवि **वर्डस्वर्थ**ले 'कविता प्रबल मनोद्वेगको स्वच्छन्द प्रवाह हो । यसको उत्पत्ति शान्त अवस्थामा सञ्चित अनुभूतिबाट हुन्छ' (थापा, साहित्य परिचय, ३९) भनेका छन् ।

वर्डस्वर्थसँगै स्वच्छन्दतावादी साहित्यको फाँटमा उदाएका अर्का प्रतिभा हुन् **कलरिज** । उनले 'सर्वश्रेष्ठ पदावलीको सर्वश्रेष्ठ क्रम विधान नै कविता हो' (पूर्ववत्, ७१) भन्दै कवितामा सर्वश्रेष्ठ पद विन्यास र साङ्गीतिक श्रुति मधुरतामा विशेष जोड दिएका छन् ।

वर्डस्वर्थ र कलरिजपछि अर्का कवि **सेली**ले 'तीव्रतम दुःखको कथा नै सबभन्दा मिठो गीत हो' (पूर्ववत्, ३९) भनेर कवितालाई दुःखको मिठो गीतको सङ्ज्ञा दिएका छन् ।

पुनर्जागरण कालपछि पश्चिमी साहित्य संसारमा 'कला कलाका लागि' कि 'कला जीवनका लागि' भन्ने विषयमा चर्को विवाद देखिँदै आएको छ । यसले गर्दा जीवन सापेक्ष साहित्य र जीवन निरपेक्ष साहित्य सिर्जनामा समेत विशेष प्रभाव पर्दै आएको देखिन्छ ।

^{३९} पूर्ववत्, १०

^{४०} पूर्ववत्, १५-३०

^{४१} पूर्ववत्, १२१-१२८

^{४२} पूर्ववत्, १०८

पाश्चात्य साहित्यको विकास क्रम र कविताको क्षेत्रमा देखा परेका विभिन्न चरण र उपचरणको अध्ययन गर्दा पश्चिमी साहित्य संसारमा आधुनिक कालमा देखा परेका क्रोचे, आइए रिचर्ड्स, टिएस इलियट लगायतका कविहरू निकै सशक्त रूपमा अगाडि आएका छन् ।

क्रोचे : 'वस्तुको बोध र आत्मसात् गरिसकेपछि प्राप्त सहजानुभूतिलाई कलात्मक वाह्य प्रकटीकरण वा कलात्मक रूपान्तरण नै कला हो'^{४३} भनेर साहित्यलाई सहजानुभूतियुक्त कलात्मक प्रकटीकरणलाई कलाका रूपमा चिनाएका छन् ।

आइए रिचर्ड्स : 'मान्छेका अधिकांश आवेगको पूर्ति र अनुभूति सम्प्रेषण गर्ने कलात्मक रचनालाई काव्यको मूल्य'^{४४} भन्दै मान्छेका आवेगको पूर्ति र अनुभूति सम्प्रेषण गर्ने कलात्मक रचनालाई काव्यको मूल्यका रूपमा चिनाएका छन् ।

टिएस इलियट : 'संवेगको प्रयोगद्वारा आवेगहरूको नाटकीकरण हुनुपर्छ । संवेग नै कविता सृजना साधनका रूपमा आवेगको स्थानापन्न हुन जान्छ, र अझ कविता विषय वा वस्तुको रूपमा बदलिन्छ'^{४५} भने इलियटले संवेगको प्रयोगद्वारा आवेगहरूको नाटकीकरणलाई कविता सृजनाको साधनका रूपमा चिनाएका छन् ।

यसरी पाश्चात्य साहित्य जगत्को विकास क्रममा विभिन्न मोड तथा उपमोडको अध्ययन गर्दा पश्चिमी साहित्य संसारमा अनुकरण सिद्धान्त, विरेचन सिद्धान्त, मूल्य सिद्धान्त, सम्प्रेषण सिद्धान्त, कल्पना सिद्धान्त, कलावादी सौन्दर्य धारणा, स्वच्छन्दतावादी रहस्यवादी चिन्तन, निर्वैयक्तिकता, मानवीय संवेदनाको वस्तुगत समीकरण समन्वित संवेदना, सहजानुभूति, अभिव्यञ्जना, मानवीय अवचेतन मनको स्वचालित लेखन शैली विज्ञान र संरचनावादी विचार जस्ता अनेकौं युग र घुम्तीहरू पार गर्दै आजको चिन्तन धारासम्म आइपुगेको छ । यसरी पाश्चात्य काव्य चिन्तनको प्रवाह परिष्कार वाद, स्वच्छन्दता वाद, यथार्थवाद, अति यथार्थ वाद, प्रगति वाद, बिम्ब वाद, प्रतीक वाद, प्रयोग वाद हुँदै आजको समसामयिक धारासम्म आइपुगेको छ ।^{४६}

पश्चिमी जगत्का काव्य मनीषीहरूले केन्द्रीय कथ्य, बुद्धि तत्त्व, कल्पना तत्त्व, कला तत्त्वको केन्द्रीयतामा काव्य कविताको परिभाषा गर्दै यसको विवेचना, व्याख्या विश्लेषण र त्यसको मूल्याङ्कन गरेको पाइन्छ ।

३.५. नेपाली विद्वान्हरूको नजरमा कविता

संस्कृत काव्य चिन्तक मनीषीहरूले जसरी कविता काव्यबारे परिभाषा दिएका छन्, त्यसैगरी नेपाली साहित्य चिन्तकहरूले पनि कविता काव्यको परिभाषा प्रस्तुत गर्ने प्रयास गरेका छन् । जस अनुसार केही प्रतिनिधि काव्य चिन्तक मनीषीहरूको कविता काव्य परिभाषालाई निम्नानुसार प्रस्तुत गर्न सकिन्छ :

महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा : 'दर्शन भ्रम हो भने कविता सत्य हो । जहाँ मानवका आँसुहरू प्राकृतिक भावनामा पग्लिन्छन्, त्यही नै कविता हो ।'^{४७}

बालकृष्ण सम : 'कविता भन्नाले भावनाको बौद्धिक कोमलता हो ।'^{४८} समले भावनाको बौद्धिक कोमलता वा कोमल प्रस्तुतिलाई कविता मानेका छन् ।

माधव प्रसाद घिमिरे : 'शब्द र सङ्गीत, अर्थ र अभिप्रायमा एकाकार भएर जो अनौठो अनुभूति हुन्छ, त्यही नै कविता हो ।'^{४९} घिमिरेले शब्द, साङ्गीतिकता र अभिप्रायगत एकरूपताबाट प्राप्त हुने अनौठो अनुभूतिलाई कविताका रूपमा चिनाएका छन् ।

^{४३} पूर्ववत्, ३९

^{४४} पूर्ववत्, २६६

^{४५} पूर्ववत्, २८९

^{४६} थापा, नारायण प्रसाद अर्यालका कविता कृतिहरूको अध्ययन, २०६९

^{४७} देवकोटा, लक्ष्मी निबन्ध सङ्ग्रह, १३६

^{४८} सम, आगो र पानी, छैटौं

केदार मान व्यथित : तीव्रगामी कल्पनाको घोडामाथि अनुभूतिको काठी कसी विचारको लगाम पक्रेर भावुकता चढेको अभिव्यक्ति नै कविता हो भन्दै कवि व्यथितले भावुक अनुभूतिको प्रकट रूपलाई कविताका रूपमा चिनाएका छन् ।

कृष्ण गौतम : “शब्दका सुहाउँदा उपादान मार्फत आवश्यकता अनुसार धेरथोर बौद्धिक सहयोग समेत लिएर गरिने भावनाको कल्पनात्मक अभिव्यक्ति नै कविता हो ।”^{५०}

यी माथिका परिभाषा अनुसार के बुझ्न सकिन्छ भने कविको जीवन, विचार, दर्शन र साहित्यिक दृष्टिकोण अनुसार कविताको आफ्नैखाले परिभाषा गरिएको बुझ्न कठिन छैन । आजसम्मका विद्वान्हरूका जति जति काव्य कृतिको अध्ययन गरियो, यसबाट के बुझिन्छ भने जीवन र जगत्को सूक्ष्म अनुभूतिको लयात्मक र कलात्मक सौन्दर्यमय अभिव्यक्ति नै कविता हो । अझ अर्को शब्दमा भन्नुपर्दा प्रकृति जगत् र मानव मनविचको अनुभूति लयदार वा कलात्मक भाषामा अभिव्यक्त गर्नु नै कविता हो ।

३.६. कविता विश्लेषण पद्धतिको खोजी

कविता सिद्धान्तको अध्ययन पश्चात् कविता हुनका लागि आवश्यक तत्त्व तथा सिर्जनात्मक अङ्ग र कवितात्मक स्वरूपबारे पनि जानकारी लिनु राम्रो हुन्छ । कविताको मुख्य तत्त्व वा कविताका आवश्यक तत्त्वबारे पौरस्त्य काव्य शास्त्रमा प्रतिभा, व्युत्पत्ति र अभ्यासलाई स्विकारिएको छ । यी तिन तत्त्वमा पनि कविता साधनामा कसैले प्रतिभालाई प्रमुख महत्त्व दिएका छन् भने कसैले अभ्यास मात्र भए पनि कविता सिर्जना हुन सक्छ भन्नेमा विशेष जोड दिएका छन् । कसै कसैले चाहिँ प्रतिभा भए पनि नभए पनि व्युत्पत्ति र अभ्यास भए कविता सिर्जना हुन सक्ने धारणा सार्वजनिक गरेका छन् । समग्रमा यी तिनै गुण वा क्षमता सर्जकमा कुनै न कुनै रूपमा रहेकै हुन्छ । यी गुणलाई पश्चात्य साहित्य चिन्तक वा विश्लेषकले भिन्न भिन्न अर्थमा अर्थ्याउने चेष्टा गरेका छन् ।

कविता वा काव्य के हो भनेर बुझिसकेपछि आखिर कविता केका लागि रचिन्छ वा सिर्जना गरिन्छ भन्ने प्रश्न उठ्नु पनि नौलो होइन । विना कुनै उद्देश्य, लक्ष्य वा प्रयोजन कसैले पनि केही गर्दैन । त्यसैले पनि मानिसले कविता वा काव्य सिर्जना गर्नुमा पनि कुनै न कुनै प्रयोजन वा उद्देश्य पक्कै हुन्छ । पत्रकार, समालोचक जस्तै कवि पनि समाजकै एउटा अङ्ग भएकाले उसको सिर्जनामा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूपमा समाजकै छाया परेको पाइन्छ । यसबारे पूर्व र पश्चिमका साहित्य चिन्तक, समालोचक वा कवि सर्जकको फरक फरक मत पाइन्छ । समग्रमा पौरस्त्य काव्य चिन्तकहरूले धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, कलामा निपुणता, कीर्ति, प्रीति, प्राप्ति, अनुराग, मनोरञ्जन, व्यवहार, ज्ञान, अमङ्गल नाश, परामानन्दको प्राप्ति, हार्दिक चमत्कार आदिलाई काव्यको प्रयोजनका रूपमा चिनाएका छन् ।

पौरस्त्य काव्य मनीषीहरूले जस्तै पश्चात्य विद्वान्हरूले पनि आफ्नो आफ्नो धारणा सार्वजनिक गरेका छन् । उनीहरूले आनन्द, मानव एकताको सादा, नैतिक विचार, जनहित र परिवर्तनको सन्देशलाई काव्य प्रयोजनका रूपमा स्विकारेका छन् । त्यसै गरी नेपाली साहित्यमा पनि काव्य वा कविताका माध्यमबाट उपदेश, समाज सुधार, प्रेम प्रसार, आनन्द प्रसार, सौन्दर्य बोध र समाज कल्याणको भाव फैलाउनुलाई काव्यको मूल प्रयोजनका रूपमा स्विकारिएको पाइन्छ ।

यसरी हेर्दा काव्यमा मानव हृदयका दुःख, सुखको भाव स्पष्ट, अस्पष्ट रूपमा रहेकै हुन्छन् । काव्यले तिनलाई हाम्रो अगाडि प्रत्यक्षतः प्रकटीकृत गरिदिन्छ । जसको अध्ययनबाट हाम्रो चित्त शुद्ध हुन्छ । यसका आधारमा भन्नुपर्दा काव्य कसैका लागि समय बिताउने साधन मात्र हुन्छ भने कसैका लागि ज्ञान आर्जन गर्ने भरपर्दो साधन त कसैका लागि जीवन अनुभवको विस्तारद्वारा बौद्धिक तृप्तिको साधन बन्ने गर्छ । जे जस्तो भए पनि साहित्य समाजका लागि समाजकै विशिष्ट वर्गले सिर्जना गरेको हुन्छ । समग्रमा साहित्यको मूल प्रयोजन सौन्दर्यको अनुभव र ज्ञानको प्राप्तिद्वारा हृदयको विस्तार गर्नु हो भनेर स्विकार्न सकिन्छ ।

काव्य वा कविता रचना गर्दा जुनसुकै प्रयोजन वा उद्देश्यका लागि लेखे पनि वा सिर्जना गरे पनि त्यसमा निश्चित तत्त्व वा अङ्गको आवश्यकता हुन्छ नै । त्यसैले ती आवश्यक तत्त्व वा अङ्गलाई

^{५९} घिमिरे, २०२३, ३४५

^{५०} गौतम, सिर्जनाको सुवास, २६३

आधार वा सिमा मानेर कविता वा काव्यको विवेचना विश्लेषण गर्न सकिन्छ । त्यस्ता तत्त्व वा अङ्गहरू निम्न रहेका छन् :

-) शीर्षक
-) संरचना
-) लय विधान
-) भाव विधान/केन्द्रीय भाव वा विचार
-) कथन पद्धति
-) भाषाशैली
-) विम्ब तथा अलङ्कार

३.६.१. शीर्षक

सरसर्ती हेर्दा शीर्षक शब्दले कविता, कथा आदि रचनाको मूल कथ्यको सार्थकता भत्काउँछ । यति मात्रले पनि शीर्षकको परिभाषा सार्थक हुँदैन । वास्तवमा शीर्षक कविताको नामकरण मात्र होइन, यो कविताको संरचनाभित्र अभिव्यक्त भाव विचार, अनुभूति आदिको अथवा समग्र सारभूत विचारको सूचक वा उद्घाटक हो । कविताको स्वरूप वा मूल्यसँग शीर्षकको प्रत्यक्ष सम्बन्ध हुन्छ । शीर्षक विशेषीकृत भएमा यसले रचनाको अन्तर संरचना र भाषाशैलीले वहन गरेको समग्र विषय वस्तुको केन्द्रीय कथ्यलाई जाहेर गर्छ, नै । तर, खास कोण नभएका सामान्यीकृत शीर्षकमा त्यस्तो सामर्थ्य हुँदैन । त्यसैले शीर्षक चयन गरेर त्यसमा आधारित भाव कल्पना वा विचारको स्फुरणमा लाग्नुभन्दा अभिव्यक्तको सार सङ्क्षेप वा भाव संरचनालाई औँल्याएर शीर्षक चयन गर्नु उपयुक्त हुन्छ । कवितामा व्यञ्जना, प्रतीक, विम्ब आदिको प्रयोग र आन्तरिक तथा वाह्य संरचना जुनसुकै कोणबाट अभिव्यक्त हुन पुगे पनि शीर्षकले कुनै न कुनै रूपमा विषय वस्तुको समग्र वा केन्द्रीय भावलाई प्रस्तुत गरेको हुनुपर्छ । यस्तो हुन सकेको अवस्थामा कविताको भित्री र बाहिरी सङ्गति हुन कठिन हुन्छ ।

३.६.२. संरचना

कविताको संरचना दुई प्रकारको हुन्छ, आन्तरिक र वाह्य ।

३.६.२.१. आन्तरिक संरचना

कवितको आन्तरिक संरचना विशेष रूपमा केन्द्रीय कथ्य, भाषा, विचारको उठान, विकास र अन्तिम रागात्मक नतिजाको प्रवाह हो । भाव, विचार, लय र तीव्र संवेद्यताको सुन्दर निरूपण नै कविताको आन्तरिक संरचना हो । यसले रचनामा द्वन्द्वात्मक पद्धतिबाट एउटा भाव विचारको बाटो अङ्गालेर अगाडि बढ्छ । कविताको आन्तरिक संरचनाले प्राप्त गरेको बनोट जुनसुकै आकारको पनि हुन सक्छ, जस्तै : वृत्ताकार, चक्रात्मक, नागवेलीदार र खण्डीय स्वतन्त्र साहचर्यात्मक आदि । कविता पनि आफ्नै ढाँचाका हुन्छन् । कतै कतै कविता एउटै भाव विचारबाट आवर्तन र पुनरावर्तन भईकन पनि आफ्नो लक्ष्यमा पुगेको पाइन्छ भने कुनै कविताले व्यष्टिबाट समष्टि भाव छरिरहेको हुन्छ । कतै कतै कविताले तीव्र द्वन्द्व देखाई सम्भौता वा नयाँ सङ्केतमा भाषाशैलीका माध्यमबाट भाव वा विचारका साथै अन्तर्लय तथा रूप तत्त्वलाई समेत गति दिइरहेको पाइन्छ ।

३.६.२.२. बाह्य संरचना

कविताको वाह्य संरचना भनेको भाषिक शैलीगत उत्कर्षका साथै विधा उपविधागत संरचना हो । कविताको वाह्य संरचना त्यसका लयात्मक खण्ड वा गुण र विश्राम भई पाउ चरण वा पङ्क्ति विधान तथा पङ्क्ति पुञ्जसँगै थालिन्छ र त्यसका विविध भाग परिच्छेद हुँदै विस्तारित हुन्छ, अनि खण्डकाव्य र महाकाव्यसम्म पुग्दा सर्ग योजना पनि देखा पर्दछन् । कविताको वाह्य संरचना अन्तर्गत सुन्दर र सार्थक शीर्षक, छन्द, लयको शब्दगत संरचना पदावली, विम्ब, प्रतीक, रूपक आदि अलङ्कार, सुन्दर सुकोमल भाषाशैली, क्रमबद्ध र शृङ्खलित पङ्क्ति र पङ्क्ति पुञ्ज विस्तार परिच्छेद वा सर्गबन्ध आदिको सुसङ्गठन आदि पनि पर्दछन् । कविताको लघुतम रूपमा संरचना स्वस्फूर्त हुन्छ । बृहत् रूपमा आइपुग्दा

अन्य संरचनाको साथसाथै सर्ग योजना समेत आवश्यक पर्दछ । आख्यानलाई सूक्ष्म वा स्थूल रूपमा समाती कविताका लघु, मध्यम र बृहत् आयामतिर विस्तारित हुँदै जाँदा अनुभूति पनि सङ्क्षिप्तताबाट विस्तारतर्फ लम्केको हुन्छ । सायद त्यसैले पनि हुन सक्छ प्रस्ट संरचनाको अभावले गर्दा प्रयोगवादी कविता दुर्बोध्य हुन पुगेका भेटिन्छन् ।

३.६.३. लय विधान

कवितालाई विधागत रूपमा परिचय दिलाउने तत्त्व नै लय विधान हो । लय विधान प्रथमतः भाषिक स्वर व्यञ्जन वर्णगत ध्वनिको साम्य वैषम्य दुवै भएको विवरण प्रक्रियाको कालगत चरण, पाउ वा पङ्क्तिगत गतिक्रम र यति विधानबाट थालिन्छ । लय वा छन्दलाई वार्णिक, मात्रिक, वर्णमात्रिक आदि नाम दिने गरेको पाइन्छ । लय पनि दुईथरी हुन्छन्, आन्तरिक लय र वाह्य लय । आन्तरिक लयले कविता सुन्दाको आनन्द र कर्णप्रियता प्रदान गर्नुका साथै जीवन्तता प्रदान गर्छ । गद्य कवितामा गण मात्रा वा लघु, गुरुको पालना नगरिने आन्तरिक अनुप्रासीयता र पङ्क्ति पङ्क्तिविचको अन्त्यानुप्रासीयताबाट गद्य कविताको अन्तः लय ज्यादाभन्दा ज्यादा समृद्ध हुन पुग्छ । भाषाशैलीको पङ्क्तिगत र पङ्क्ति पुञ्जगत उच्चारण र श्रवणका क्रममा रम्य लाग्ने साङ्गीतिक ध्वनिगत रमरम नै ध्वनि विधानको लक्ष्य हो । मूलतः लय विधानले कवितामा साङ्गीतिक मधुरता लयात्मक निरन्तरता र श्रुतिमधुरता सिर्जना गर्छ ।

३.६.४. भाव विधान/केन्द्रीय भाव विचार

भाव कविताको प्राण तत्त्व वा मुटु नै हो । यो अनुभूति सुषुप्त अवस्थामा रहेको हुन्छ, जुन कविको आत्माले कल्पनाको माध्यमबाट कविताको रूपमा जन्म दिएको हुन्छ । केन्द्रीय भाव विचार कविताको सारतत्त्व भएको हुँदा कविमा रहेको सुषुप्त अवस्थाको अनुभूतिले कविलाई आन्दोलित गर्छ । अनि मात्र कविमा कुनै सिर्जना वा कविताको स्मरण हुन सक्छ । केन्द्रीय विचारले भावलाई कुनै विशृङ्खलताबाट जोगाएर सन्तुलित अभिव्यक्ति दिन्छ । यसैले भाव विधान आवर्तन र पुनरावर्तन हुँदै पङ्क्ति वा पङ्क्ति पुञ्जहरूमा आरम्भ र विकास भई परिणतिमा चाहिँ कवितामा रूपान्तरित हुन्छ । यिनै कुरा भएमा कविले आफ्नो साधना, अभ्यास, प्रयत्न आदिले कलात्मक कविता सिर्जना गर्न सक्छ । आन्तरिक र वाह्य संरचनाले भाव विधानलाई मनमोहक रूपान्तरण गर्दै लय, शैली, विम्ब, कथन, व्यञ्जना आदि अनेक माध्यमद्वारा कविताको रूप दिन्छ ।

३.६.५. कथन पद्धति

कविता मूलतः आत्मालाप गर्ने भाषिक लयात्मक कथन कला हो । तर, आत्मालाप नै भए पनि त्यस्तो अभिव्यक्ति श्रुतिरम्य भने हुनैपर्छ । यो कथन कौशलका रूपमा श्राव्य रहने परिप्रेक्ष्यमा कथन पद्धति कवितामा एक महत्त्वपूर्ण पक्षका रूपमा रहेको हुन्छ । कविले सिधै कवितात्मक कथन अभिव्यक्त गर्छ भने त्यसलाई कवि प्रौढोक्ति भनिन्छ । यो स्थितिलाई गद्य क्षेत्रको निबन्ध विधासँग पनि तुलना गर्न सकिन्छ । यहाँ कथयिता कविले आफ्नै वस्तुपरक वा आत्मपरक कथ्य आफैँ गुन्नुनाउँदा पनि अप्रत्यक्षतः कसैप्रति सम्बोधित भइरहेकै हुन्छ । यस्तो कथन खासगरी तृतीय पुरुष वा प्रथम पुरुष शैलीमा र कहिलेकाहीँ भने द्वितीय पुरुष शैलीमा पनि आत्मालापित हुन सक्छ । यदि कवितामा कविले आफ्ना आत्मालाप कथ्यलाई आख्यानीकृत गर्छ भने त्यो अर्को कथन पद्धति हो, आख्यानीकरणकै क्रममा दृश्यको चित्रण तथा संवाद/मनोवादका यथा सम्भव उपयोगबाट नाटकीकृत कथन पद्धति समेत अङ्गाली आत्मालाप कवि कथयिता अन्तर निहित रहि दिँदा कवितात्मक कथनको वैकल्पिक तेस्रो पद्धति प्रकट हुन्छ ।

३.६.६. भाषाशैली

कवितामा भाषाको अत्यन्तै महत्त्वपूर्ण भूमिका हुन्छ । भाषा साहित्यका हरेक विधाका लागि अत्यावश्यक मानिन्छ । भाषाका माध्यमबाट गरिने भावको साङ्गीतिक वा लयात्मक कथन नै कविता हो । भाषाका माध्यमबाट कविले आत्मालाप वा आत्मगान गर्छ । भाषाले अर्थलाई वहन गर्नुपर्छ भाव वा विचारलाई व्यक्त गर्ने प्रमुख माध्यम हो, भाषाशैली । भाषाको शब्दस्तरदेखि सङ्गठनात्मक चयनका रूपमा शैलीलाई लिइन्छ । कवितामा भाषाको दोहोरो दायित्व हुन्छ, भावको अभिव्यक्ति र साङ्गीतिकता ।

भाषाशैलीले स्रष्टाको निजत्व वा मौलिकतालाई प्रदर्शन गर्छ । भाषा र शैली अभिन्न हुन्छन् । भाषा अभिव्यक्तिको माध्यम हो भने शैली अभिव्यक्तिको तरिका हो । शैली भनाइ वा काम गराइएको तरिका हो । लेखकीय अभिव्यक्तिको घटक शैली हो । शैली रचनाकारको विशिष्ट रचना वैशिष्ट्य हो ।

३.६.७. बिम्ब तथा अलङ्कार

काव्यको प्रतिच्छायाका रूपमा आउने सहप्रस्तुत वा सहवर्ती अर्थ नै बिम्ब हो । बिम्ब विधान जीवन जगत्का विविध सन्दर्भ र सामग्रीबाट लिन सकिन्छ । यो कविताको एक अपरिहार्य तत्त्व हो । यसैले केन्द्रीय भाव वा कथनसँग जोडिएर आंशिक, पूर्ण वा अतिशयोक्तिबाट सिर्जित बिम्बहरू विशेष चमत्कारी मानिन्छन् । विशेष गरी अनुप्रास, उत्पेक्षा, रूपक, उपमा, यमक लगायतका विविध अलङ्कारले कविताको आन्तरिक भाव र बाह्य संरचनामा समेत चमत्कृति थप्ने गर्दछन् । कवितामा प्रयोग हुने बिम्ब र अलङ्कारले कवितालाई विशेष रूपमा उजिल्याउने हुनाले कवितामा यिनको उपयोग अत्यावश्यक मानिन्छ ।

३.७. नेपाली कविताको समसामयिक धारा (२०३७-हालसम्म) तथा कवि बलराम दाहालको आगमन :

नेपाली कविताको विकास क्रममा चौथो मोड वा धाराका रूपमा देखा परेको समसामयिक धारा स्वच्छन्दतावादी-प्रगतिवादी धाराबाट समेत केही प्रेरणा लिँदै अघि बढेको देखिन्छ । यस धाराले प्रयोगवादी क्लिष्टता र दुरुहताबाट टाढा रहँदै नव प्रगतिवादी सिर्जनाका रूपमा देखा परेको एक दशक पनि नपुग्दै राल्फा, अस्वीकृत जमात, अकविता, बुट पालिस, अमलेख, सडक कविता आन्दोलन आदि अभियान नेपाली कविताको उर्वर फाँटमा देखा परे । यस धारामा विशेषतः लघु कविताप्रतिको आकर्षण, समसामयिक विकासोन्मुख नेपाली समाजका सामाजिक, राजनीतिक र अन्य क्षेत्रमा देखा परेका विकृति र विसङ्गतिलाई कवितामा विशेष स्थान दिइएको देख्न सकिन्छ । राष्ट्रिय र अन्तर्राष्ट्रिय अन्तर विरोध एवम् मूल्य विचलनप्रतिको युवा सुलभ आक्रोश, अन्तर विद्रोह, प्राकृतिक र ग्रामीण परिवेशभन्दा सहर बजारको गन्जागोल, अस्तव्यस्त र अव्यवस्थित परिवेशप्रतिको असन्तुष्टि पनि यस चरणका कवितामा प्रकट भएका छन् । वर्तमानको यथार्थ जीवन जगत् सम्बन्धी नवीन बिम्ब र प्रतीकहरूको सुन्दर प्रयोग यस धाराका कविहरूले गरेका छन् ।

यस धारामा विशेष नेतृत्वकर्ता कवि कोही पनि नदेखिए पनि अनेकौं कवि प्रतिभा र तिनका अनेकौं कविता सङ्ग्रहले नेपाली कविताको ढुकुटी भर्ने काम गरेका छन् । यो धारा अभै पनि गतिशील नै देखिन्छ । यस धारामा अनेक कवि प्रतिभा जन्मने र नेपाली कविता साहित्यको विकासमा योगदान दिने क्रम चलिरहेकै छ । यस धारामा गद्य कविताको मुक्त आन्तरिक साङ्गीतिक छटा पनि प्रखर रूपमा प्रकट भइरहेको छ । खरो र प्राञ्जल भाषाशैलीमा युगीन भोगाइका यथार्थ र मानवीय मस्तिष्कको खोजीलाई आफ्ना सिर्जना मार्फत प्रकट गर्ने कार्यमा समसामयिक धाराका प्रतिभाहरू विशेष रूपमा सक्रिय देखिन्छन् । यस धाराका चर्चित कवि प्रतिभामा भुवन हरि सिग्देल, किशोर पहाडी, मीन बहादुर विष्ट, दिनेश अधिकारी, तोया गुरुङ, राम प्रसाद ज्ञवाली, देवी नेपाल आदि हुन् ।

यसै धारालाई प्रतिनिधित्व गर्दै युवा कवि बलराम दाहाल पनि वि. सं. २०५३ सालको आँकुरा पत्रिकाको वैशाख अङ्कमा प्रकाशित **मानवता** शीर्षकको कविता लिएर नेपाली कविताको उर्वर फाँटमा देखा परेका हुन् । त्यसयता दर्जनौं फुटकर कविता प्रकाशित गरी नेपाली कविता फाँटमा आफ्नो अलग चिनारी बनाउँदै गरेका कवि दाहालको पुस्तकाकार पहिलो कृतिचाहिँ **घरको कथा** (खण्डकाव्य, २०६३) हो । यस काव्यमा कवि दाहालले जन आन्दोलन- २ अघिको नेपाली राजनीतिक परिवेश र त्यसले सिर्जना गरेको घर घरको कथा व्यथालाई बडो मार्मिक र कारुणिक शैलीमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

घरको कथादेखि हालसम्म दाहालका हामी बालक (बाल कविता सङ्ग्रह, २०६५), सौगात (कविता सङ्ग्रह, २०६८), खरानी पो भयो माटो (गजल सङ्ग्रह, २०६८), पश्चात्ताप (बाल उपन्यास, २०६८) र फुलबारी (बाल गजल सङ्ग्रह, २०६९) गरी कुल ६ ओटा पुस्तकाकार कृति प्रकाशित भएका छन् । आफ्ना यिनै रचनाका माध्यमबाट कवि दाहालले आधुनिक नेपाली कविताको समसामयिक धाराको उन्नयनमा

आफूलाई समर्पित गर्दै आएका छन् । विशेष गरी ओभेलमा पर्दै गएको नेपाली छन्द कविताको क्षेत्रमा आफूलाई सक्रिय प्रतिभाका रूपमा उभ्याउँदै आएका उनले गीत गजल रचनाका क्षेत्रमा पनि आफ्नो रहरलाग्दो उपस्थिति देखाएका छन् ।

बाल कविता र बाल गजलको क्षेत्रमा पनि विशेष सक्रिय कवि दाहालले बाल बालिकालाई कविता र गजल लेखन समेत सिकाउँदै आएका छन् । आफ्नो पछिल्लो पुस्तकाकार कृति बाल गजल सङ्ग्रह **फुलबारी**मा पनि उनले गजलका पारिभाषिक शब्दावलीको अर्थ बुझाउनुका साथै गजल लेखन शैली समेत सिकाएका छन् । निरन्तर सिर्जनाका क्षेत्रमा सक्रिय कवि दाहाल नेपाली कविताको आधुनिक कालको अन्तिम प्रहरमा देखा परेको समसामयिक धाराको उन्नयनमा सपर्पित छन् ।

३.८. सारांश

‘कवि’ शब्दमा ‘ता’ प्रत्यय लागेर बनेको कविता शब्दको अर्थ कविको कर्म वा कविले रचेको लयबद्ध रचना वा मुक्तक रचना भन्ने बुझिन्छ । पौरस्त्य र पाश्चात्य साहित्य जगत्मा कविता सम्बन्धी विस्तृत अध्ययन भएका छन् । खासगरी पौरस्त्य साहित्यमा ऋग्वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत हुँदै विकसित भएको कविताको चर्चा आचार्य भरत, भामह, दण्डी, वामन, रुद्रट, आनन्द वर्द्धन, मम्मट, विश्वनाथ, जगन्नाथ जस्ता विद्वान्ले आ आफ्ना ग्रन्थमा गरेका छन् । पाश्चात्य साहित्य जगत्मा होमर, हेसियड, सोलोन, पिण्डार आदिका साथमा क्रोचे, आइए रिचर्ड्स, टिएस इलियट जस्ता विद्वान्ले पनि कविताबारे प्रशस्त चर्चा गरेका छन् । पौरस्त्य र पाश्चात्य साहित्य परम्पराको अध्ययनका आधारमा संरचना, लय विधान, भाव विधान, कथन पद्धति, भाषाशैली, विम्ब र शीर्षकलाई कविताका आवश्यक तत्त्वका रूपमा लिने गरिन्छ ।

सुवानन्द दासदेखि सुरु भएको नेपाली कविताको चर्चा गर्दा यसमा हालसम्म विभिन्न मोड तथा उपमोड देखा परेको पाइन्छ । यस क्रममा सबैभन्दा पछिल्लो चरणमा समसामयिक धारा देखा परेको छ । यस धारामा देखा परेका अनेक कवि सर्जकमध्ये बलराम दाहाल पनि एक हुन् । उनी यसै धाराको उन्नयनमा निरन्तर सक्रिय रहँदै आएका छन् ।

अध्याय : चार

कविता तत्वका आधारमा 'सौगात' कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

०. विषय प्रवेश

यस अध्ययनमा कवि बलराम दाहालको सौगात कविता सङ्ग्रहमा सङ्कलित कविताहरूको विवेचना गरिएको छ । यस क्रममा संरचना, लय विधान, भाव विधान, कथन पद्धति, भाषाशैली, बिम्ब तथा अलङ्कार र कविताको शीर्षकवारे विवेचना गरिएको छ ।

४.१. परिचय

'सौगात' कवि बलराम दाहालका विविध कविताहरूको संगालो हो । कुल ४२ लामा छोट्टा कविता समेटिएको यो सङ्ग्रह वि. सं. २०६८ सालमा प्रकाशित भएको हो । प्रस्तुत सङ्ग्रहभित्र कवि दाहालले आफूले जीवनमा भोगेका तिता, मिठा अनुभूतिका साथमा देखे, सुनेका र अनुभव गरेका सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रका विकृति, विसङ्गतिमाथिको व्यङ्ग्य, देशभक्ति, मानवतावादी भाव, जीवनवादी दृष्टिकोण आदिलाई बडो मार्मिक शैलीमा चित्रण गरेका छन् । सरल, सहज र सरस भाषाशैली, शब्दालङ्कारको श्रुति माधुर्य र संस्कृत शास्त्रीय वर्णमात्रिक छन्दको मनोरम प्रयोग आदिले गर्दा सङ्ग्रहभित्रका ४२ ओट्टै लामा छोट्टा कविता पठनीय, श्रवणीय छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका कविताहरू उपजाति, शार्दूलविक्रीडित, अनुष्टुप्, द्रुतविलम्बित, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, पञ्चचामर र शिखरिणी गरी कुल ८ ओटा वर्णमात्रिक छन्दमा रचिएका देखिन्छन् । सङ्ग्रहभित्र नथाक्ने मन र शङ्का शीर्षकका एकश्लोकी कवितादेखि कलिकथा, म अनन्त जान्छु, सम्भना छात्रावासको जस्ता शीर्षकका १६ श्लोकी कवितासम्म समेटिएका छन् । सौगात कविता सङ्ग्रहभित्र समेटिएका ४२ ओट्टै कवितालाई कविता विश्लेषणको सैद्धान्तिक साँचोमा ढालेर क्रमशः निम्नानुसार विश्लेषण गर्न सकिन्छ ।

४.२. 'जिन्दगी' कविता

४.२.१. संरचना

'जिन्दगी' सौगात कविता सङ्ग्रहभित्रको प्रथम कविता हो (दाहाल, २०६८, पृ. १) । कुल १५ श्लोकको यो कविता ६० हरफमा फैलेको छ । दुई सय बहत्तर शब्द र कुल ६ सय साठी अक्षर रहेको यस कविताका १४ श्लोक इन्द्रवज्रा र उपेन्द्रवज्रा छन्दको मिश्रणले बन्ने उपजाति छन्दमा रचिएको छ भने एक श्लोक उपेन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको छ । चार हरफे उपजाति र उपेन्द्रवज्रा छन्दका प्रत्येक हरफमा क्रमशः पाँच र ६ अक्षरमा विश्राम लिनुपर्ने संरचना यस जिन्दगी शीर्षकको कवितामा पाइन्छ । छन्दको शास्त्रीय मान्यतालाई ठिक ढङ्गमा प्रयोग गरिएको यो कविता संरचनात्मकताका दृष्टिले फुटकर कविताको सीमामा रहेको छ ।

४.२.२. लय विधान

चार हरफे उपजाति र उपेन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको यस कविताका प्रत्येक हरफमा क्रमशः पाँच र ६ अक्षरमा विश्राम लिनु पर्छ । कविता वाचन गर्दा संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको मिठो साङ्गीतिक रन्कोको सहज अनुभव गर्न सकिन्छ । सरल र सहज शब्द प्रयोगले गर्दा लयात्मक श्रुति मधुरताको अनुभूति हुन्छ । प्रत्येक श्लोकमा पूर्ण अन्त्यानुप्रासीय प्रयोगको श्रुति मधुर प्रस्तुति र कतै कतै आन्तरिक मध्यानुप्रासको साङ्गीतिक छटाको पनि सहज अनुभव गर्न सकिन्छ । त्यस्तै यमक अलङ्कारको सुन्दर प्रयोगले पनि कवितालाई थप लयात्मक बनाएको देखिन्छ । उदाहरणार्थ :

‘धारो उधारो छ र जिन्दगीको
धरापको राप सधैं सधैंको ।
तनाउका नाउ कुदाउँदै छन्
तमासका मास उदाउँदै छन् ।’

४.२.३. भाव विधान

कविताको शीर्षक 'जिन्दगी' राखिएवाटै यसले जिन्दगीकै सेरोफेरो र त्यसका आरोह अवरोहलाई आफ्नो विषय बनाएको बुझ्न कठिन हुँदैन । कवि बलराम दाहालले आफूलाई नै प्रथम पुरुष शैलीको 'म' पात्रका रूपमा कवितामा उपस्थित गराएर आफ्ना अनुभूतिका रूपमा मान्छेका जीवनका सुख, दुःख र जोड, घटाउलाई कलात्मक पारामा उतारेका छन् । चलचित्रका पर्दामा देखिने दृश्य जस्तै परिवर्तनशील मान्छेको जिन्दगीमा मान्छेले अनेक अप्ठ्यारासित ठोक्कंदै, यता दौडिने, उता कुद्ने गर्दा गर्दै एकातिर फैलिंदै जाने र अर्कातिर खुम्चिंदै जाने यथार्थलाई कविताले आफ्नो केन्द्रीय भाव बनाएको छ ।

मान्छेलाई जिन्दगीमा आफ्ना सफलता, असफलता सुख, दुःख र उकाली, ओरालीको खाता पल्टाउँदैमा फुर्सद छैन । अनेकथरी टन्टा पन्छाएर रफ्तारमा चलन खोज्दा खोज्दैमा मान्छेले आफ्नो जीवनका अनमोल पल खर्चिन बाध्य हुन्छ । समाजभित्रका अनेकानेक जालभेल र षड्यन्त्र चिर्दै समस्यादेखि भाग्नको साटो सामना गर्दै जीवनलाई उत्पादक कार्यमा लगाउनु आवश्यक छ । समाजमा निन्दा, प्रशंसा जे भए पनि त्यसको कुनै वास्ता नगरी पाइला चलाउने हो भने सङ्घर्षसाथ अघि बढ्दै जाँदा जीवनको सफलताको टाकुरामा पुग्न सकिने आशावादी दृष्टिकोण पनि कविले कवितामा प्रस्तुत गरेका छन् ।

यसरी जिन्दगीका आरोह, अवरोह, सुख, दुःख, हाँसो, रोदन आदि विविध पक्षको हिसाब किताब गरिएको यस कवितामा जिन्दगीका सङ्गति, असङ्गतिलाई सुन्दर शब्द, भाव र शैलीमा घोलेर प्रस्तुत गरिएको छ ।

४.२.४. कथन पद्धति

प्रस्तुत जिन्दगी शीर्षकको कविता प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टिविन्दुमा आधारित देखिन्छ । कवि दाहालले प्रथम पुरुष एक वचनको 'म' पात्रका दृष्टि विन्दुबाट प्रस्तुत कविताको विषय वस्तुलाई नियालेका छन् । उनले मान्छेको जीवनका विविध अनुभूतिलाई आफ्नै निजी अनुभूतिका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

४.२.५. भाषाशैली

प्रस्तुत जिन्दगी शीर्षकको कविता भाषिक प्रयोगका दृष्टिले सुन्दर छ । विच विचमा आएको यमक तथा अन्त्यानुप्रासको प्रयोगले साङ्गीतिक रन्को प्रवाह गरेका छन् । कवितामा साधना, मास, गीत, प्रतीत, सुदीप, जीवन, सङ्घर्ष, वन कुञ्ज आदि तत्सम शब्द, सामल, गाता, खाता, राप, गोटी, तगारो, खुङ्किला आदि तद्भव शब्द र जिन्दगी, रफ्तार, गिरफ्तार जस्ता आगन्तुक शब्दको प्रयोगले कविता बढी श्रुति मधुर बन्न पुगेको छ । कविताको शीर्षक नै आगन्तुक शब्दबाट चयन गरिएको छ । त्यसैले तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजनले गर्दा कविताको भाव विन्यासमा कुनै बाधा पुगेको छैन । समग्रमा कविताको भाषा सरल, सहज र सुबोध्य छ ।

४.२.६. बिम्ब/अलङ्कार

यस जिन्दगी कवितामा कवि बलराम दाहालले यमक अर अनुप्रास अलङ्कारलाई बडो कलात्मक पारामा प्रयोग गरेका छन् । यमक अलङ्कारको नमुना :

‘गारो तगारो कति आउँदा हुन्
सारो पसारो पलमा पुर्याउन् ।
उद्योगको योग हुँदैन छोड्न
माली हिमाली वन कुञ्जको म ॥’

त्यस्तै अन्त्यानुप्रासको प्रयोग पनि यस कविताको अर्को प्रमुख चिनारी हो । कविताका कुल १५ ओटै श्लोकमा पूर्ण अन्त्यानुप्रासको प्रयोग गरिएको छ । अन्त्यानुप्रास प्रयोगको एक नमुना :

‘निन्दा प्रशंसा जति होस् मलाई
छुँदैन त्यल्ले न गरोस् भलाइ ।
आओ चलाओ तर छैन घट्टो
सङ्घर्षको घर्षण भन् छ बहदो ॥’

कवितामा कवि दाहालले उपमा अलङ्कारको पनि प्रयोग गरेका छन् । 'यो जिन्दगी नै चलचित्र जस्तो' भन्दै जिन्दगीलाई चलचित्रसित दाँजेका छन् ।

कवि बलराम दाहालले यस कवितामा आफ्नो विचार अभिव्यक्त गर्ने क्रममा केही सुन्दर प्रतीक र विम्बको पनि सहारा लिएका छन् । उनले जीवनमा आइपर्ने सङ्कटलाई काँटी किलाको, सफलताको उच्च विन्दुलाई टाकुराको प्रतीकद्वारा चिनाएका छन् ।

४.२.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले यस कविताको शीर्षक 'जिन्दगी' चयन गरेका छन् । फारसी भाषाबाट सापटी लिइएको प्रस्तुत आगन्तुक शब्दको अर्थ जन्मदेखि मृत्युसम्मको समय, बाँचुन्जेलको समय वा जीवन काल^{४१} भन्ने बुझिन्छ । मान्छेको बाँचुन्जेलको समयका आरोह र अवरोह, दुःख र सुख, सङ्घर्ष र सफलता आदिलाई कलात्मक रूपमा प्रस्तुत गरेको हुनाले यस कविताको शीर्षक सार्थक नै देखिन्छ । जिन्दगीको सेरोफेरोभित्रकै भाव राशिलाई समेटेको हुनाले प्रस्तुत जिन्दगी शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

४.३. 'गुरु' कविता

४.३.१. संरचना

उन्नाइस अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा उनिएको पञ्चश्लोकी 'गुरु' शीर्षकको कविता संरचनाका दृष्टिले सशक्त देखिन्छ (दाहाल, २०६८, पृ. ४) । प्रथम पौरुषेय आत्मालापिय कथन पद्धतिमा आधारित प्रस्तुत कवितामा कतै कतै तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दुको समेत प्रयोग भएको छ । प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दुको 'म' पात्रको उपस्थिति गराएर कविले आफ्ना विचार पोख्ने कार्य गरेका छन् । नेपाली कविता जगतमा सम्भवतः सबैभन्दा बढी भिजेको लोकप्रिय बाह्य र सात अक्षरमा विश्राम हुने शार्दूलविक्रीडित छन्दका पाँच श्लोकमा बाँधिने प्रस्तुत 'गुरु' कविता २० हरफमा फैलेको छ । एक सय सत्तरी शब्द र तिन सय असी अक्षरमा समेटिएको प्रस्तुत गुरु शीर्षकको कविताको संरचना सुन्दर देखिन्छ ।

४.३.२. लय विधान

प्रत्येक हरफमा १२ र बाँकी सात अक्षरमा विश्राम हुन् १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दको नेपाली कविताका पाठकसित अत्यन्तै निकटवर्ती साइने गाँसिएको छ । त्यसैले पनि यस गुरु शीर्षक कवितामा पनि सोही छन्दको साङ्गीतिक रन्कोको सहज श्रुतिरम्यता अनुभव गर्न सकिन्छ । नेपाली वन पाखामा घन्किँदै आएको र लोक जीवनमा भिजि सकेको शार्दूलविक्रीडित छन्दको प्रयोगमा कवि बलराम दाहाल निपुण देखिन्छन् । अन्त्यानुप्रासको मधुर भङ्गारले कवितामा थप लयात्मकता थपेको अनुभूति हुन्छ ।

४.३.३. भाव विधान

कविताको शीर्षकका रूपमा रहेको गुरु शब्दबाटै समग्रमा यस कविताको भाव के हो भनेर बुझ्न सकिन्छ । संस्कृतको 'गुं ह्यावयतीति गुरुः' अर्थात् अज्ञानको अन्धकार हटाएर जीवनमा ज्ञानको प्रकाश छर्ने व्यक्ति नै गुरु हो भन्ने मन्त्रलाई आत्मसात् गरी कवि बलराम दाहालले आफ्नो जीवनमा कुनै न कुनै प्रभाव पार्ने र ज्ञानामृत पिलाउने जति सम्पूर्णलाई आफ्ना गुरुका रूपमा चिनाउँदै गुरुको महत्त्व बखान गरेका छन् । उनले पृथ्वीनारायण शाह र भानुभक्त आचार्यलाई एकताको पाठ सिकाउने गुरुका रूपमा चिनाएका छन् भने अरनिकोलाई कलाका गुरुका रूपमा सम्मान दिएका छन् । उनले बुद्धलाई शान्ति र शालीनताका गुरु मानेका छन् भने महर्षि व्यासलाई धर्म र संस्कारका गुरु थापेका छन् । त्यसै गरी सूर्य, चन्द्र, नदी, पन्छी, वायु, हिमाल, पृथ्वी प्रकृतिका यावत् रहस्यलाई पनि आफ्ना गुरुका रूपमा दाहालले

^{४१} नेपाली बृहत् शब्दकोश, नेप्रप्र, २०४०

पुजेका छन् । यसका साथै, उनले सूर्य र चन्द्रमालाई धर्तीमा प्रकाश दिनुपर्छ भनेर सिकाउने गुरु को होला भनेर प्रश्न समेत गरेका छन् । त्यस्तै उनले धर्तीका कणदेखि मान्छेसम्म सबैलाई आफ्ना गुरु स्विकाउँदै संसारका महागुरुका रूपमा यो संसार चलाउने परमेश्वरलाई चिनाएका छन् । तर, साहित्यकार तथा समीक्षक मोदनाथ प्रश्रितले भने स्वयं कविको पर्याप्त ध्यान नगएर या चिन्तनको परिपाक नपुगेर कतै कतै दार्शनिक विचलनका लक्षण देखा परेको आक्षेप लगाएका छन् । 'यो संसार चलाउने सब उनै ठूला रहेछन् गुरु ।' यो संसार कुनै पनि महान् गुरु अर्थात् परमेश्वरले योजनाबद्ध ढङ्गले चलाउँछन् भन्ने कुरा विज्ञानद्वारा निर्देशित प्रगतिवादले स्विकाउँदैन ।^{५२}

कवि दाहालले यस गुरु शीर्षकको कवितामा बडो सरल शैलीमा प्रकृतिका यावत् रहस्यदेखि इतिहाससम्म खोतलेर आफ्नो विचार पस्केका छन् ।

४.३.४. कथन पद्धति

कथन पद्धतिको कुरा गर्दा प्रस्तुत गुरु शीर्षकको कवितामा कवि बलराम दाहालले प्रथम पौरुषेय आत्मालापिय कथन पद्धति प्रस्तुत गरेका छन् । प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दुमा आधारित प्रस्तुत कवितामा कतैकतै तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दुको समेत प्रयोग भएको छ । कवि दाहालले 'म' पात्रलाई उभ्याएर विभिन्न व्यक्तिलाई आफूलाई ज्ञानगुनका कुरा सिकाउने गुरुका रूपमा चिनाएका छन् ।

४.३.५. भाषाशैली

आफ्ना अधिकांश रचनामा तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको सन्तुलित प्रयोगमा निपुण देखिएका कवि बलराम दाहालले गुरु कवितामा तत्सम र तद्भव शब्द स्रोतका शब्दहरूको कुशल विन्यास गरेका छन् । भाषिक शिल्प प्रयोगका दृष्टिले उनका अन्य कविताभन्दा यो कविता पनि उच्च महत्त्वको देखिन्छ । 'गुरु' शीर्षक नै संस्कृत तत्सम शब्दबाट चयन गरिएको छ । त्यसैले पनि यस कवितामा तत्सम शब्द स्रोतका शब्दकै प्रचुरता देख्न सकिन्छ । गुरु, एकता, अमर, शालीनता, तप, जगत्, प्रकृति, गगन, प्रभा, किरण, सूर्य, स्वतन्त्रता, उपकार, धर्ती जस्ता प्रशस्त तत्सम शब्दका साथमा हावा, पन्छी जस्ता तद्भव शब्दलाई मिहिन पारामा संयोजन गरेर कवि दाहालले कवितालाई श्रुति मधुर बनाएका छन् ।

४.३.६. बिम्ब/अलङ्कार

आफ्ना कवितामा अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा अत्यन्तै सजग कवि बलराम दाहालको यो गुरु कवितामा पनि अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रयोग भेट्न सकिन्छ । कुल २० हरफको कवितामा १६ हरफको अन्त्यमा गुरु शब्द प्रयोग गरिएको छ भने अन्य बाँकी चार हरफमा सूर्यका, चन्द्रका, हरू र बरु शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । कविताका प्रत्येक श्लोकका अन्त्यमा यी शब्दहरूको प्रयोगले कवितामा मिठास थपेको अनुभूति हुन्छ ।

४.३.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले यस कविताको शीर्षक 'गुरु' चयन गरेका छन् । उनले कवितामा मान्छेको जीवनमा ज्ञानगुनका कुरा सिकाउने विभिन्न व्यक्तिलाई विभिन्न कारणले गुरु मान्नुपर्ने वा आफूले गुरु मान्ने गरेको विचार प्रस्तुत गरेका छन् । उनले पृथ्वी नारायण, भानुभक्त, अरनिको, बुद्ध, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, वायु, जल, हिमाल, पन्छी आदि सबैले हामीलाई कुनै न कुनै ज्ञानगुनका कुरा सिकाउने र जीवनमा सद्प्रेरणा छन् भएकाले ती सबैलाई गुरु भन्नुपर्ने विचार व्यक्त गरेका छन् । जसले गर्दा गुरु शीर्षक पूर्णतः सार्थक देखिन्छ ।

^{५२} प्रश्रित, भूमिका, २०६८

४.४. 'कविता' कविता

४.४.१. संरचना

प्रस्तुत 'कविता' शीर्षकको कविता चार हरफे, १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ५)। आन्तरिक र बाह्य दृष्टि विन्दुको उचित संयोजन भएको प्रस्तुत ६ श्लोकी कविताको बाह्य संरचना २४ पङ्क्तिसम्मको आयतनमा फैलेको छ। कुल एक सय पचासी शब्द र चार सय छपन्न अक्षरमा फैलेको यो कविता कविप्रौढोक्ति कथन ढाँचामा संरचित छ।

४.४.२. लय विधान

यस 'कविता' शीर्षक कवितामा १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दको साङ्गीतिक रन्कोको सहज श्रुतिरम्य अनुभव गर्न सकिन्छ। प्रत्येक पाउमा १२ र ७ अक्षरमा विश्रामको विधान भएको शार्दूलविक्रीडित छन्दको लयात्मक प्रस्तुतिले प्रस्तुत कवितामा मिठास थपेको देखिन्छ। नेपाली वन पाखामा घान्कदै आएको र लोक जीवनमा भिजिसकेको शार्दूलविक्रीडित छन्दको लयात्मक श्रुति मधुरताले कवितालाई थप सशक्त बनाएको छ।

४.४.३. भाव विधान

कविताको शीर्षक नै 'कविता' राखिएको हुनाले पनि यस कविताको भाव विधानको प्रारम्भिक भल्को पाउन सकिन्छ। कवि बलराम दाहालले आफूले कविताको आराधना गर्दाको क्षणलाई कवितामा स्मरण गरेको प्रतीत हुन्छ। नेपाली साहित्यले जतिसुकै आधुनिकता वरण गरे पनि अझै कविता वा सिर्जनाका अन्य विधामा उही पुरानै शैली, शिल्प र भावकै प्राधान्य देखिन्छ। कविताको फाँटमा देखिएको गद्य र पद्य साहित्यको भगडाले गर्दा दिक्क भएर आइसकेकी कविता पनि रुँदै रुँदै फर्केर गएको विचार कविले प्रकट गरेका छन्। मनमा उकुसमुकुस भएर उर्लिएका भाव पोख्न उपयुक्त शैली, छन्द, अलङ्कार, रस आदिको खोजी गर्दा गर्दै विरक्तिभएर कविता फर्केर गएको र आफू भने के लेखौं, कस्तो भाव भरौं भन्ने अलमलमै अल्झिरहेको भाव कविले प्रस्तुत कवितामा व्यक्त गरेका छन्।

भर्खर भर्खर कविताको आराधनामा लागेका कविले आफूले चाहे जस्तो कविता सिर्जना गर्न नसकेको तथा मुटुमा उकुसमुकुस भई मडारिइ रहने अजस्र भावराशिलाई समेलेर कविताको रूप दिन नसकेको गुनासो प्रस्तुत कवितामा पोखेका छन्।

४.४.४. कथन पद्धति

प्रस्तुत 'कविता' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले मिश्रित दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन्। उनले कतै कतै प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दु अँगालेका छन् भने कतै तृतीय पौरुषेय परिधीय दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन्। यसका अतिरिक्त कविताको अधिकांश पङ्क्ति पुञ्जमा भने उनले कवितालाई द्वितीय पुरुष वाचक 'तिमी' शब्दले सम्बोधन गर्दै द्वितीय पुरुष दृष्टि विन्दुको पनि प्रयोग गरेका छन्।

४.४.५. भाषाशैली

कविता शीर्षकको कवितामा कवि बलराम दाहालले आफूना अन्य रचनामा जस्तै तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको सन्तुलित प्रयोग गरेका छन्। आगन्तुकभन्दा तद्भव बढी र तद्भवभन्दा तत्सम स्रोतका शब्द बढी प्रयोगमा विशेष रुचि राख्ने कवि दाहालले यस कवितामा पनि आफ्नो सोही विशेषतालाई निरन्तरता दिएका छन्। शीर्षकका रूपमा प्रयोग भएको 'कविता' शब्ददेखि स्वागत, भव्य, आद्योपान्त, सङ्गीत, पथ, अलङ्कार, नवीनता, मधुरता, सौन्दर्य, भाव, सरलता, लालित्य, गम्भीरता जस्ता विभिन्न तत्सम शब्द स्रोतका शब्द र चुचुरा, पुराना, मुजुरा, आँकुरा, भगडा, पात, टाढा, बाटो, आँप, ऍसेलु, रात, साँभ, च्याप्प, फ्याट्ट, छहरा, गाँठो, न्यानो जस्ता भर्रा तथा तद्भव शब्दको प्रचुरताले कवितामा मिठास थपेको छ। यसका साथै, जवानी, खुसी आदि आगन्तुक शब्दको समेत प्रयोग कवितामा

भेट्न सकिन्छ । आफ्ना अधिकांश रचनामा तत्सम शब्दको अधिक प्रयोग गर्ने कवि दाहालको प्रस्तुत कवितामा चाहिँ तद्भव तथा भर्ना नेपाली शब्दको प्रचुर प्रयोगको अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.४.६. बिम्ब/अलङ्कार

आफ्ना अन्य कवितामा भन्ने कवि बलाराम दाहालले यस 'कविता' शीर्षकको कवितामा पनि अन्त्यानुप्रासको प्रयोगमा सचेतता अपनाएका छन् । उनले कविताका प्रत्येक पाउका अन्त्यमा कुरा, आँकुरा, भुले, फुले, हेरिनन्, देखिनन्, झङ्कारको, अलङ्कारको, पातमा, रातमा, सम्पदा, सदा आदि शब्दको प्रयोग गरेर पूर्ण अन्त्यानुप्रासको सिर्जना गरेका छन् ।

४.४.७. शीर्षक

कवि बलाराम दाहालले कविताको शीर्षकका रूपमा 'कविता' शब्दको चयन गरेका छन् । आफूले कविता साधना गर्दाको क्षणको कल्पना गरी रचिएको प्रस्तुत कविता शीर्षकको कवितामा उनले कविता लेख्नुका दुःख, पीडा र अप्ठ्यारालाई समेटेको हुनाले शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

४.५. 'दैनिकी' कविता

४.५.१. संरचना

कवि बलाराम दाहालको प्रस्तुत दैनिकी शीर्षकको कविता आठ अक्षरी अनुष्टुप् छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ६) । प्रत्येक पाउमा आठ अक्षर हुने अनुष्टुप् छन्दको कुल ५६ पाउ अर्थात् १४ श्लोकको संरचनामा रहेको यो कवितामा कुल एक सय ९१ शब्द तथा चार सय ४८ अक्षर समेटिएका छन् । सामान्यतः चार पाउको एक श्लोक रहने परम्परा तोडेर कविले प्रस्तुत कवितामा एक श्लोकमा एक साथ आठ पाउ समेटेको देखिन्छ । जसले गर्दा कुल १४ श्लोकी प्रस्तुत कविता जम्मा सात अनुच्छेद वा सात श्लोकमा समेटिएजस्तो देखिन्छ ।

४.५.२. लय विधान

प्रस्तुत दैनिकी शीर्षकको कवितामा आठ अक्षरी अनुष्टुप् छन्दको लयात्मक प्रस्तुति पाइन्छ । विशेष गरी भागवत् गीता लगायत अधिकांश धार्मिक ग्रन्थहरूमा समेत उपयोग गरिएको अनुष्टुप् छन्द नेपाली जनजिब्रोमा निकै भिजेको छन्द भएको हुनाले पनि अनुष्टुप् छन्दको मिठो लयात्मक प्रस्तुतिले यस दैनिकी शीर्षक कवितालाई श्रुति मधुर बनाएको छ ।

४.५.३. भाव विधान

कविताको शीर्षक नै दैनिकी चयन गरिएको हुनाले यसमा व्यक्तिको दैनिक जीवनका आरोह अवरोह, भागदौड, बाँच्नका लागि दैनिक रूपमा गर्नुपर्ने सङ्घर्ष, हाँसो, खुसी, दुःख, सुख उज्यालो, अँध्यारो सबै पक्षलाई छुने प्रयास गरिएको देखिन्छ । विहान, बेलुकाको चारो बटुल्दै दिनभरि दशतिर भौँतारिनुपर्ने र राति गुँडमा फर्केर जसोतसो हात मुख जोडेर रात्रि कालीन विश्राम गर्नुपर्ने बाध्यताले गर्दा हरेक दिनको दैनिकी एकै प्रकारको भइरहेको र दैनिकी लेख्ने हो भने हरेक दिनको दैनिकीमा कुनै नयाँपन नभेटिने र एउटै कुरा दोहोरिने विचार कविले व्यक्त गरेका छन् । आजको अस्त व्यस्त समाजमा आँसुको भेल दवाएरै भए पनि सङ्घर्ष गर्नेपर्ने, एकलै बाँच्नुपर्ने भए पनि सबैसित हाँसैपर्ने, एकलै जन्मेर एकलै मरेर जानुपर्ने भए पनि सबैसित नाता गाँस्नुपर्ने बाध्यतालाई पनि कविले सम्झेका छन् । जीवनको महत्त्वपूर्ण ऊर्जाशील समय पेटको थैलो भडैमा ठिक्क हुने भएकाले ज्ञानको थैलोचाहिँ रित्तै रहेको गुनासो कविले गरेका छन् । यो अमूल्य जिन्दगीमा आफू वासनाको राज्यभित्र कताकता फसेको र त्यसबाट उम्केर उन्मुक्त भई हिँड्न नपाएको गुनासो गर्दै कविले खानकै लागि बाँच्ने हो भने पशु पन्छी र आफूमा कुनै अन्तर नहुने भाव प्रकट गरेका छन् ।

बाँचनकै लागि कठिन सङ्घर्ष गर्नुपर्ने आजको अस्त व्यस्त समाजमा आफूले चाहे जस्तो केही गर्न नपाइने, ज्ञानगुनका कुरा सिक्नमा भन्दा पनि पेटको थैलो कसरी भर्ने भन्ने चिन्तामा पिरोलिएर दशतिर दौडिनुपर्ने बाध्यतालाई कविले बडो मार्मिक ढङ्गमा प्रस्तुत दैनिकी शीर्षकको कवितामा उतारेका छन् ।

४.५.४. कथन पद्धति

दैनिकी शीर्षकको कवितामा कवि बलराम दाहालले मिश्रित दृष्टि विन्दु अँगालेका छन् । उनले कतै कतै प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दु अँगालेका छन् भने कतै तृतीय पौरुषेय परिधीय दृष्टि विन्दु मार्फत पनि आफ्नो विचार पोखेका छन् ।

४.५.५. भाषाशैली

दैनिकी शीर्षकको कवितामा पनि कवि दाहालले आफ्नो चिरपरिचित भाषाशैली अँगालेका छन् । तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्द संयोजनमा निपुण कवि दाहालले प्रस्तुत कवितामा पनि आफ्नो सोही खुबीलाई निरन्तरता दिएका छन् । दिन, व्यस्त, पर्याप्त, प्राप्ति, भव, प्रतिस्पर्धा, अर्थ, पूर्ण, वासना, राज्य, समय, इच्छा, पत्र, ज्ञान जस्ता विभिन्न तत्सम शब्दको प्रयोग भएको प्रस्तुत कवितामा कवि दाहालले अत्यधिक तद्भव तथा भर्ना नेपाली शब्दको प्रयोग गरेका छन् । उनका तद्भव तथा भर्ना नेपाली शब्दको प्रचुर प्रयोग गरिएका कवितामध्ये यो पनि एक हो । चारो, गुँड, राति, दैनिकी, यौटा, सम्भौता, विहान, भिड, नाता, पेट, थैलो, ठिक्क, रिक्तो, दिक्क, डोरी, भाँडा, गाग्री, आधा जस्ता थुप्रै भर्ना, तद्भव शब्दको प्रचुरताले कविताको भाषाशैलीमा मिठास थपेको छ । आगन्तुक शब्द अत्यन्तै कम प्रयोग गर्ने कवि दाहालले यस कवितामा पनि मस्त, जिन्दगी जस्ता निकै कम आगन्तुक शब्द प्रयोग गरेका छन् । अधिकांश भर्ना तथा तद्भव शब्द, केही तत्सम शब्द र निकै कम आगन्तुक शब्दको प्रयोग गरेर कवि दाहालले प्रस्तुत दैनिकी शीर्षक कवितालाई श्रुति मधुर बनाएका छन् ।

४.५.६. बिम्ब/अलङ्कार

आफ्ना कवितामा अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा अत्यन्तै सचेत कवि बलराम दाहालले यस दैनिकी शीर्षकको कवितामा पनि आफ्नो सोही वैशिष्ट्यलाई निरन्तरता दिएका छन् । कविताका प्रत्येक पाउका अन्त्यमा व्यस्त छु - मस्त छु, कुनै - तिनै, क्यै पनि - तैपनि, गरेपछि - पछि, गयो भने - भयो भने, ठिक्क छ - दिक्क छ, कताकता - यताउता जस्ता पद तथा पदावलीको मदतबाट कविले अन्त्यानुप्रासको श्रुति मधुरता पस्केका छन् ।

४.५.७. शीर्षक

दैनिक जीवनभित्रका आरोह, अवरोह, भागदौड, सङ्घर्ष आदिलाई विषय वस्तु बनाएर रचिएको प्रस्तुत कविताको शीर्षक 'दैनिकी' सुहाउँदो देखिन्छ । मान्छेले हरेक दिन विहान उठेदेखि दौडादौड गरेर विहान बेलुकाको गाँस जुटाउनुपर्ने बाध्यता, दैनिक रूपमा एकोहोरो नीरस यात्रा निरन्तर गरिरहनुपर्ने, नवीनता नहुने जीवनको दैनिक क्रियाकलापबारे कविले आफ्नो कलम कुदाएको हुनाले पनि समग्रमा कविताको दैनिकी शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

४.६. 'यात्रा' कविता

४.६.१. संरचना

'यात्रा' कविता ११ अक्षरी उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ८) । प्रत्येक पाउमा ११ अक्षर हुने र सुरुमा पाँच र त्यसपछि बाँकी ६ अक्षरमा विश्राम हुने प्रस्तुत छन्दका २४ पाउ अर्थात् ६ श्लोकको संरचनामा रहेको यस कवितामा कुल एक सय तिन शब्द र दुई सय ६४ शब्द अटेका छन् । यस कविताका पाँच श्लोक उपजाति छन्दमा रचिएका छन् भने एक श्लोक इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको छ ।

४.६.२. लय विधान

लयको कुरा गर्दा प्रस्तुत यात्रा शीर्षकको कविता लयात्मक देखिन्छ । ११ अक्षरी उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दको श्रुति मधुर साङ्गीतिक रन्कोका साथ सुरुमा पाँच अक्षरमा र बाँकी ६ अक्षरमा एक साथ विश्राम हुने यति व्यवस्थाले पनि यस कवितालाई थप लयात्मक बनाएको अनुभूति हुन्छ ।

४.६.३. भाव विधान

जसरी कुनै नदीको भूगोल हुँदैन, चराहरू राष्ट्रियताको साँघुरो घेरामा बाँधिएका हुँदैनन्, त्यसै गरी कवि बलराम दाहाल पनि उन्मुक्त यात्राको पक्षमा देखिन्छन् प्रस्तुत यात्रा शीर्षकको कवितामा । अहिले हामी जतिखेर जताको यात्रामा निस्के पनि भूगोल र माटोको सिमानामा खुम्चिएर बस्नुपर्ने बाध्यता छ । बिचरा चराको पखेटा काटेर लौ उड् भनेर छाडिदिए जस्तो हामी पनि पराधीन जीवन बाँच्न विवश भएकोमा कविले गुनासो गरेका छन् । कसैले पनि जन्मैदेखि साथमा माटो अर्थात् जमिन लिएर आएको हुँदैन । यहीं आएपछि भोग्दै जाँदा यो मेरो, यो तेरो भन्दै जाँदा हामीले दुःख बेसाइरहेको कुरा कविले कवितामा प्रस्ट पारेका छन् । हामीबिच माटो र सिमानाको भागबन्डा चलुन्जेल, तेरो र मेरो भन्ने विवाद रहुन्जेल हाम्रो यात्रामा निरन्तर सिमाना कोरिइरहनेछ, बन्देज लागिरहनेछ । तैपनि, जसले हाम्रो यात्रा रोके पनि त्यसको अन्तिम टुङ्गो भनेको समुद्र पारि हो र त्यहीं पुगेर मात्र त्यो रोकिनेछ । त्यसैले सिमाना र माटोको बन्धनमा मान्छेलाई बाँध्न नहुने विश्व बन्धुत्वको भावना कविले मुखरित गरेका छन् प्रस्तुत कवितामा ।

कवि बलराम दाहालले मेरो र तेरोमा विभक्त, साना, ठुला अनेक सिमानामा कैद हाम्रो स्वार्थ स्वार्थको संसारमा उन्मुक्तताको खोजी गरेका छन् । जसरी चराहरूका लागि कुनै राष्ट्रियता, भूगोल वा सिमानाको बन्देज हुँदैन, त्यसै गरी मान्छेको यात्रामा पनि कुनै बन्देज हुनु हुँदैन भन्ने भाव कविले प्रस्तुत यात्रा शीर्षकको कवितामा पोखेका छन् ।

४.६.४. कथन पद्धति

कथन शैली वा पद्धतिको कुरा गर्दा प्रस्तुत यात्रा शीर्षकको कवितामा कवि बलराम दाहालले मिश्रित दृष्टि विन्दुको उपयोग गरेर आफ्नो अभिव्यक्ति प्रस्तुत गरेका छन् । उनले प्रस्तुत कविताका अधिकांश श्लोकमा प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दुको प्रयोग गरेका छन् भने कतै कतै तृतीय पौरुषेय परिधीय दृष्टि विन्दु मार्फत पनि आफ्नो अभिव्यक्ति पस्केका छन् ।

४.६.५. भाषाशैली

सरल, सहज र सरस शब्द चयन गर्नु कवि बलराम दाहालको साहित्यिक विशेषता हो । आगन्तुक शब्दभन्दा बढी तत्सम शब्द र तत्सम शब्दभन्दा बढी भर्त्ता र तद्भव शब्द प्रयोग गर्ने दाहालले यस यात्रा शीर्षकको कवितामा पनि आफ्नो सोही शैली अँगालेका छन् । सामान्य पाठकका लागि समेत सहज बोधगम्य देखिने प्रस्तुत कवितामा कविले भूगोल, नदी, देश, अवशेष, सुदूर, यात्रा, दुःख, ब्रह्माण्ड, पाषाण, समुद्र, समाप्त जस्ता अत्यन्तै सरल र सहज तत्सम शब्दको उपयोगबाट आफ्नो रचनालाई समृद्ध बनाएका छन् । त्यसै गरी कविले चरा, सिमाना, पखेटा, बिचरा, रुख, बन्देज, जरा, माटो, हल्ला, भागबन्डा जस्ता भर्त्ता तथा तद्भव नेपाली शब्दको प्रयोगले कवितालाई थप श्रुति मधुर बनाएका छन् । निकै कम आगन्तुक शब्द चयन गर्दै आएका कवि बलराम दाहालले यस कवितामा मात्र एउटा आगन्तुक शब्द प्रयोग गरेका छन्, त्यो हो दायरा । समग्रमा भन्नुपर्दा तद्भव तथा भर्त्ता नेपाली शब्द र तत्सम शब्दको कुशल संयोजनले यात्रा कविताको भाषाशैली सुन्दर देखिन्छ ।

४.६.६. बिम्ब/अलङ्कार

कवि बलराम दाहाल अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा विशेष सचेत देखिन्छन् । त्यसैले यस यात्रा शीर्षकको कवितामा पनि उनले पूर्ण अन्त्यानुप्रासको सुन्दर आयोजन गरेका छन् । अरूको-नदीहरूको, देश छैन-अवशेष छैन, निस्कँदै थैं-जिस्कँदै थैं, चरा म-जरा म, जन्मिँदैमा-भोगिँदैमा, बनाउनाले-जनाले, हल्ला-

चल्ला, जारी-पारी जस्ता शब्द वा शब्द समूहले कवितामा अन्त्यानुप्रास आयोजनमा सहजता ल्याएका छन्। यसका साथै कवि दाहाल यमक प्रयोगमा विशेष रुचि राख्छन्। उनले यस कवितामा 'काटी पखेटा बिचरा चराको' भन्दै यमक अलङ्कारको प्रयोग गरेका छन्। जसले कवितामा मिठास थपेको अनुभव गर्न सकिन्छ।

४.६.७. शीर्षक

कविले यस कविताको शीर्षकका रूपमा 'यात्रा' शब्दलाई चयन गरेका छन्। एक स्थानदेखि अर्को स्थानसम्म पैदल वा सवारी साधन मार्फत जाने काम बुझाउने यात्रा शब्दले यहाँ जन्मसँगै सुरु हुने जिन्दगीको उकाली ओरालीको यात्रालाई सङ्केत गरेको छ। जीवनभर निरन्तर चलिरहने यात्रा कहाँ पुगेर टुङ्गिने हो, कुनै टुङ्गो छैन। त्यसले मार्गमा आइपर्ने अनेक अप्ठ्याराहरू पन्छ्याएर यात्रालाई निरन्तरता दिनुपर्ने भावराशिमा प्रस्तुत कविता अडिएको हुनाले यसको शीर्षक उपयुक्त लाग्छ।

४.७. 'नरोएको कुनै दिन' कविता

४.७.१. संरचना

समस्या पूर्ति शैलीमा रचिएको प्रस्तुत 'नरोएको कुनै दिन' शीर्षकको कविता आठ अक्षरी अनुष्टुप् छन्दमा उनीएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ९)। अनुष्टुप् छन्दका १२० पाउ अर्थात् ३० श्लोकमा रचिएको भए पनि कविले आठ पाउ अर्थात् दुई श्लोकलाई सँगसँगै राखेर एक अनुच्छेदको रूप दिएका छन्। जसले गर्दा बाहिरबाट सरसर्ती हेर्दा कविता जम्मा १५ श्लोकमा रचिएजस्तो देखिन्छ। कवितामा कुल तीन सय ९३ शब्द र नौ सय ६० अक्षर समेटिएका छन्। कविताको प्रत्येक अनुच्छेदको अन्तिम पाउ अर्थात् प्रत्येक दोस्रो श्लोकको तेस्रो र चौथो पाउ 'छैन कोठामा पुगेर नरोएको कुनै दिन' समस्यापूर्ति शैलीमा दोहोरिएको देखिन्छ।

४.७.२. लय विधान

आठ अक्षरी वर्णमात्रिक अनुष्टुप् छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'नरोएको कुनै दिन' शीर्षकको कविता विशेष लयात्मक देखिन्छ। समस्यापूर्तिका रूपमा पटक पटक आवृत्त भएको प्रत्येक दोस्रो श्लोकको तेस्रो र चौथो पाउले कवितामा थप मिठास थपेको अनुभव हुन्छ।

४.७.३. भाव विधान

वर्तमानको अस्तव्यस्त समाजमा मान्छे चिन्तै चिन्ताको भुमरीमा फसिरहेको छ। एउटा चिन्ताको टुङ्गो लगायो, अर्को चिन्ता सुरु भाइहाले हुनाले जीवनमा चिन्ताको ताँती कति लामो छ, भन्न नसकिने विचार कवि बलराम दाहालले कवितामा व्यक्त गरेका छन्। यतिखेर भविष्यको चिन्ता गर्नुभन्दा पनि वर्तमान नै धरापमा परिरहेको छ। जताततै उचाले र पछार्नेको जमात भेटिन्छ, जसले गर्दा सभा समारोहहरूमा कविता, गजल वा यस्तै आफ्ना सिर्जना सुनाउँदा दर्शक श्रोताको वाहवाहीका साथमा तालीको गडगडाहट पाए पनि अभावै अभाव र चिन्तै चिन्ताले गर्दा कोठामा पुगेपछि रुनैपर्ने कवि जीवनको कटु यथार्थलाई उनले बडो मार्मिक ढंगबाट व्यक्त गरेका छन्। सम्पूर्ण कवि लेखकका साभ्ना समस्या नभए पनि अलग अलग समस्याले सबैलाई घेरिरहेकै छन्। कविता सुनाएर ताली खाँदैमा बाँच्न गाह्रो हुँदै गएको ओठमा मुस्कान देखिन छाडेको विचार पनि कविले व्यक्त गरेका छन्। काम गरेको स्थानमा महिना दिन कुरेर तलब थापेपछि अधिल्लो महिनाको बाँकी उधारो तिर्दैमा सबै सकिने र फेरि भविष्यको चिन्ताले सताउने विचार कविको छ। मान्छेलाई जागिरको चिन्ता, पढाइको चिन्ता, राजधानीमा घडेरी जोड्न नसकेको चिन्ता, घरतिरको चिन्ता, पाएको पद फुस्केला भन्ने चिन्ता, पद नपाउँदाको चिन्ता, छोरा छोरीको चिन्ता जस्ता अनेक चिन्तै चिन्ताले जलाइरहेको र दिन दशा हट्न नसकेको चिन्ताले कोठामा पुगेर नरोएको कुनै दिन छैन भन्दै कवि दाहालले वर्तमानको विसङ्गत जीवनको कटु यथार्थमाथि व्यङ्ग समेत गरेका छन्।

दैनिक उपभोग्य सामग्रीको भाउले सगरमाथा नाघिसके पनि राज्यले गरिब जनताका लागि अनुदान दिएको छैन । कोठा भाडा जतिसुकै चर्को तिरन परे पनि राज्यले तिरिदिँदैन । मुलुकका अमूल्य जडिबुटी कौडीको भाउमा विदेश पुगिरहेका छन् भने तिनै जडिबुटीबाट निर्मित औषधिचाहिँ हामी चर्को मूल्यमा किनिरहेका छौं । मुलुक जलस्रोतमा संसारकै दोस्रो धनी राष्ट्र भएर पनि पानीको सदुपयोग हुन नसक्दा मुलुक दैनिक १८ घन्टासम्मको चर्को लोडसेडिङको मार खप्न विवश छ । यस्ता अनेकौं विसङ्गतिप्रति कवि दाहालले कवितामा आक्रोश पोखेका छन् । दाहालले आफूले भोगेको दुःखलाई 'नरोएको कुनै दिन' शीर्षक कवितामा सामान्यीकरण गर्न सकेका छन् ।^{५३} यसमा दैनिक जीवनमा आइपरेका आर्थिक सङ्कट र त्यस क्रममा उत्पन्न भएका मानसिक जटिलता तथा मान्छेका दुष्प्रवृत्तिहरूको सशक्त उद्घाटन भएको छ ।^{५४}

आफ्नो अमूल्य सिर्जना समेत बेचेर खान विवश महाकवि लगायत साहित्य स्रष्टालाई बाँचुन्जेल कुनै सहयोग नगर्नेले मरेपछि भने यस्तो र उस्तो भन्दै सम्मान गर्ने गलत परम्पराप्रति पनि कविले तिखो व्यङ्ग्य गरेका छन् । पटक पटक फरक फरक गठबन्धन बनाएर सत्ता हात पार्न लुछाचुँडी गर्नेहरूले मुलुकको समस्या समाधानमा भने कुनै चासो नदेखाएको प्रति कविको आक्रोश छ । यतिखेर भाषा, वेशभूषा, जात जाति, भूगोल, क्षेत्र आदिका नाममा मुलुकलाई मुलाभैँ टुक्र्याउने खेल भइरहेको प्रति कविले चिन्ता जनाएका छन् । 'मुलाभैँ देश काटेर बाँडेको हेर्न सकिदैन' भन्ने अभिव्यक्तिबाट राष्ट्रिय अखण्डता खण्डित हुने हो कि भन्ने चिन्ता व्यक्त गरिएको छ ।^{५५} हामीले यो मुलुक प्रगतिको सिँढी उक्लियोस् भनेर जतिसुकै सङ्घर्ष गरे पनि मुलुक बिगेको गाडी जस्तै घ्याच्च घ्याच्च रोकिएरहेको छ । जसले गर्दा मुलुक भन् भन् ठूलो बर्बादीको खाडलतिर जाकिँदै गएको अनुभव भइरहेको हुनाले कोठामा पुगेर नरोएको दिनै छैन भन्ने भाव कविले व्यक्त गरेका छन् ।

यसरी कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कवितामा वर्तमान जीवनका अभाव र अप्ठ्यारा, मुलुकको दुर्दशाले गर्दा दिनदिनै कोठामा पुगेर रनुपरिरहेको कटु यथार्थलाई बडो मार्मिक शब्दमा वर्णन गरेका छन् ।

४.७.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले यस 'नरोएको कुनै दिन' शीर्षकको कवितामा प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । उनले कतै कतै कवि निबद्ध पात्रहरूविच संवादात्मक अभिव्यक्ति पनि प्रस्तुत गरेका छन् । जस्तै : 'चिन्तै चिन्ता छ चिन्ताको के होला औषधि गुरु !

नसोध कति छन् चिन्ता ऐले म भन्न सकिदैन ।'

यसरी हेर्दा कविले यस कवितामा मिश्रित दृष्टि विन्दुको प्रयोग गरेको देख्न सकिन्छ ।

४.७.५. भाषाशैली

सरल, सहज र शब्दमा आफ्नो अभिव्यक्ति पाठकसामु सम्प्रेषित गर्नु कवि बलराम दाहालको विशेषता नै हो । त्यसैले यस 'नरोएको कुनै दिन' शीर्षकको कवितामा पनि कविले आफ्नो सोही विशेषताको परिचय दिएका छन् । अत्यन्तै सरल शब्द चयन गर्ने क्रममा कविले चिन्ता, औषधि, गुरु, भविष्य, वर्तमान, सभा, मन, कवि, सङ्कटा, शनि, भ्रामरी, पद, श्रद्धा, वाद, सिद्धान्त जस्ता तत्सम शब्दको उपयोग कवितामा गरेका छन् । त्यसै गरी कविले यौटा, कोठा, धराप, साभा, घर, मुस्कान, गाढो, मान्छे, यता, उता, घडेरी, बिजुली जस्ता तद्भव तथा भर्त्सा शब्द र धराप, वाह वाह, तलब, महिना, बाँकी, जागिर, लाइन, ग्यास जस्ता आगन्तुक शब्द चयन गरेर कविले प्रस्तुत कवितामा तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको तालमेल असाध्यै राम्ररी मिलाएका छन् ।

४.७.६. बिम्ब/अलङ्कार

आफ्ना कवितामा अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा सचेत कवि बलराम दाहालले यस 'नरोएको कुनै दिन' शीर्षक कवितामा पनि आफ्नो सोही चिनारीलाई यथावत् राखेका छन् । उनले सुरु-गुरु, सकिदैन-दिन,

५३ घिमिरे, भूमिका, २०६८

५४ ज्ञवाली, भूमिका, २०६८

५५ पूर्ववत्

धराप छ-खराब छ, छिन-दिन, तर-घर, देखिन-दिन, यता-उता, किन-दिन, यतातिर-उतातिर जस्ता शब्दको प्रयोगबाट अन्त्यानुप्रासको श्रुति मधुर भङ्कार प्रस्तुत गरेका छन् । यसका साथै, कवि दाहालले 'मुला भैं देश काटेर बाँडेको हेर्न सकिदैन' भन्दै मुलालाई उपमान र देशलाई उपमेय वस्तुका रूपमा प्रस्तुत गर्दै उपमा अलङ्कारको सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । त्यसै गरी उनले 'बिगेको आज गाडी भैं घ्याच्चघ्याच्च गराइयो' भन्दै मुलुकको बिगेको अवस्थालाई बिगेको गाडीसित तुलना गर्दै उपमा अलङ्कारकै सुन्दर प्रयोग गरेका छन् ।

४.७.७. शीर्षक

कविले यस 'नरोएको कुनै दिन' शीर्षकको कविता मार्फत युवक कवि मोतीराम भट्टले भन्दै डेढ शताब्दी अघि आरम्भ गरेको समस्या पूर्ति कविता लेखन परम्परालाई पुनः एक पटक विउँताउने जमर्को गरेको देखिन्छ । कुल १५ अनुच्छेदमध्ये प्रत्येक अनुच्छेदको अन्तिम पाउमा 'छैन पुगेर कोठामा नरोएको कुनै दिन' भन्ने पाउ दोहोर्याएर समस्या पूर्ति शैलीलाई जीवन्तता दिएका छन् । समस्या पूर्ति लेखनमा शीर्षकमा आएको शब्द वा पदावलीलाई कविताको प्रत्येक श्लोकको अन्तिम पाउमा दोहोर्याउने गरिन्छ । त्यही परम्परालाई यस कवितामा पनि निरन्तरता दिइएको हुनाले यस कविताको शीर्षक 'नरोएको कुनै दिन' सार्थक देखिन्छ ।

४.८. 'लाली' कविता

४.८.१. संरचना

प्रस्तुत 'लाली' शीर्षकको कविता ११ अक्षरी उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. १२) । २४ पाउ अर्थात् ६ श्लोकमा उनीएको प्रस्तुत कविता एक सय १२ शब्द र दुई सय ६४ अक्षरको संरचनामा फैलिएको छ । कविताका पाँच श्लोक उपजाति छन्दमा रचिएका छन् भने एक श्लोक इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको छ ।

४.८.२. लय विधान

प्रस्तुत लाली शीर्षकको कवितामा वर्णमात्रिक उपजाति छन्दको साङ्गीतिक मिठास पाइन्छ । सुरुमा पाँच र त्यसपछि बाँकी ६ अक्षरमा विश्राम हुने यति व्यवस्था भएको उपजाति छन्दको श्रुति मधुर भङ्कारको अनुभूति यस कवितामा सहजै गर्न सकिन्छ ।

४.८.३. भाव विधान

समाजमा परिवर्तनको अपेक्षा राखेर सुदूर पूर्वबाट लाली उदाउने र त्यसले मुलुकमा नयाँ बिहानी ल्याउने विश्वास कवि बलराम दाहालले गरेका छन् प्रस्तुत 'लाली' शीर्षकको कवितामा । जोस, जाँगर र उत्साह बोकेर क्रान्तिका भन्डाहरू फर्फराउँदै गरिएको सङ्घर्षले मुलुकमा नौलो इतिहास कोरेको सङ्केत कवितामा गरिएको छ । मुलुकको परम्परा तोड्न सङ्घर्ष गर्नेहरूले नयाँ परिवर्तन ल्याएको पक्षलाई कविले सङ्केत गरेका छन् ।

४.८.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले यस 'लाली' शीर्षकको कवितामा तृतीय पुरुष परिधीय दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । उनले यस कवितामा कतै कतै भने प्रथम पुरुष दृष्टि विन्दुको समेत उपयोग गरेको देखिन्छ । 'दिए भने त्यो उपहार लिन्छु, लिए भने हार्दिकता म दिन्छु ।' भन्दै म पात्रलाई कवितामा उभ्याई उसैका माध्यमबाट आफ्नो भाव प्रवाह गरेका छन् । त्यसैले प्रस्तुत कवितामा मिश्रित दृष्टि विन्दु प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.८.५. भाषाशैली

तत्सम, तद्भव र आगन्तुक गरी तिनओटै स्रोतका शब्द संयोजनमा रुचि राख्ने कवि बलराम दाहालले यस कवितामा पनि सरल, सरस र सहज भाषाशैलीको उपयोग गरेका छन् । सुदूर, गुण, उपहार,

इतिहास, माया, ममता, परम्परा, स्वतन्त्रता, सभ्यता, हार्दिकता, प्राचीनता, बीज, पाठ, माधुर्य आदि तत्सम शब्दका साथमा लाली, बास, जुन, घाम, नौलो, वर, भन्डा, कुरा, टिको जस्ता तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्दको कुशल संयोजनबाट उनले कवितामा मिठास थपेका छन् । उनले यस कवितामा एउटै मात्र आगन्तुक शब्द 'खुसी' प्रयोग गरेका छन् । समग्रमा भन्नुपर्दा यस कवितामा कविले सरल, सहज र सरस भाषाशैलीको प्रयोग गरेको देखिन्छ ।

४.८.६. बिम्ब/अलङ्कार

अन्त्यानुप्रास अलङ्कार प्रयोगमा सचेत कवि दाहालले यस लाली शीर्षकको कवितामा पनि आफ्नो सोही विशेषतालाई निरन्तरता दिएका छन् । उनले देखिँदै छ-लेखिँदै छ, बस्दै-जस्तै, हो कि-बोकी, आउँदै छन्-फहराउँदै छन्, आए-ल्याए, जिएर आए-लिएर आए, लिन्छु-दिन्छु, हराभरामा-परम्परामा जस्ता शब्द र पदावलीको प्रयोगले कवितामा अन्त्यानुप्रासको रन्को ल्याएका छन् । यसका साथै, उनले 'पाए कि माया ममता सबैको' भन्ने अंशमा सबैले माया ममता पाएका हुन् कि ? भन्दै उत्प्रेक्षा अलङ्कार प्रयोग गरेका छन् ।

४.८.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले यस कविताको शीर्षकका रूपमा लाली शब्द चयन गरेका छन् । मुलुकको सुदूर क्षितिजमा देखिएको क्रान्तिको लालिमा, परिवर्तनको लालिमा, स्वतन्त्रताको लालिमालाई लाली शब्दले सङ्केत गरेको हुनाले पनि यस कविताको शीर्षक 'लाली' सार्थक देखिन्छ ।

४.९. 'सम्भना छात्रावासको' कविता

४.९.१. संरचना

कुल १६ श्लोकमा फैलेको यस 'सम्भना छात्रावासको' शीर्षक कविता कवि बलराम दाहालको यस सौगात कविता सङ्ग्रहभित्र समेटिएका केही लामा कवितामध्ये एक हो (दाहाल, २०६८, पृ. १३) । प्रस्तुत कविता चार सय सतासी शब्द र एक हजार दुई सय सोह्र अक्षरको संरचनामा फैलिएको छ ।

४.९.२. लय विधान

'सम्भना छात्रावासको' शीर्षकको कवितामा १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दको साङ्गीतिक रन्को पाइन्छ । १२ र ७ अक्षरमा क्रमशः यति हुने शास्त्रीय नियम भएको शार्दूलविक्रीडित छन्द नेपाली जनजिब्रोमा सबैभन्दा बढी भिजेको हुनाले पनि यसको मिठास अन्य छन्दको तुलनामा अलि बढी नै पाइन्छ ।

४.९.३. भाव विधान

आफूले विद्यालयदेखि कलेज तहसम्म अध्ययन गर्दा बसेको तिन धारा संस्कृत छात्रावासको सम्भना गरेका छन् कवि बलराम दाहालले यस 'सम्भना छात्रावासको' शीर्षक कवितामा । नेपालको इतिहासमा अलग इतिहास कोरेको संस्कृत छात्रावासबाटै जहाँनियाँ राणा शासन हल्लाउन जयतु संस्कृतम् आन्दोलनको शङ्खघोष भएको थियो । त्यसैको प्रभाव स्वरूप चर्केको क्रान्तिले राणा शासन ढल्यो । त्यही ऐतिहासिक छात्रावासमा बसेर मुलुकका दूर दराजबाट आएका हजारौँ हजार विद्यार्थीले आफ्नो भविष्य उज्ज्वल बनाए । छात्रावासले विशेष प्रतिभा कति जन्मायो, जन्मायो । तर, कुनै व्यक्तिले यस्तै अर्को संस्था जन्माउन किन सकेन भन्ने चिन्ता कविको छ । कविले आफूले छात्रावासभित्र बिताएका स्वर्णिम क्षणहरू सम्झिँदै त्यहाँको हाँसो खुसी, उन्मुक्त वातावरण, विशेष खाना, रमाइला खेल, साथीभाइको हल्लीखल्ली सबै स्मरण गरेका छन् । उनले आफूले त्यति सुन्दर अवसर पाएर पनि त्यसको सदुपयोग गर्न नसकेकोमा दुःख समेत प्रकट गरेका छन् । यसका साथै कविले यस कवितामा आम नेपाली जनताको अधिकतम समय

पेट भर्ने समस्या र मिठो स्वाद लिने लोभसँग भिड्दैमा समाप्त हुने गरेको बताउँदै यस्तो अवस्थाप्रति चिन्ता प्रकट गरेका छन्।^{५६}

यसरी कवि दाहालले आफूले ऐतिहासिक तिन धारा संस्कृत छात्रावासमा बसेर अध्ययन गर्दाको समय स्मरण गर्दै छात्रावासमा बस्ने मौका पाएको प्रति कृतज्ञता प्रकट गरेका छन् यस 'सम्भना छात्रावासको' शीर्षक कवितामा। सोही छात्रावासकै कारण आफू आजको स्थानमा पुगेको स्मरण गर्दै कविले त्यस संस्थाप्रति श्रद्धा भाव व्यक्त गरेका छन्।

४.९.४. कथन पद्धति

आफूले विद्यार्थी जीवन कालमा बिताएका स्वर्णिम पलहरूको स्मरण गर्दै लेखिएको हुनाले प्रस्तुत 'सम्भना छात्रावासको' शीर्षक कवितामा कवि बलराम दाहालले मिश्रित कथन पद्धति अँगालेका छन्। कविताको अधिकांश भागमा तृतीय पुरुष दृष्टि विन्दु मार्फत तिन धारा संस्कृत छात्रावास र त्यसभित्रको जीवनलाई स्मरण गरेका छन् भने कतै कतै आफूलाई त्यसको एक अङ्गका रूपमा उपयोग गर्दै प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दुको पनि प्रयोग गरेका छन्।

४.९.५. भाषाशैली

सरल भाषाशैलीमा आफ्नो अभिव्यक्ति प्रकट गर्न सिपालु कवि बलराम दाहालले यस 'सम्भना छात्रावासको' शीर्षकको कवितामा पनि अत्यन्तै सरल भाषाशैली प्रस्तुत गरेका छन्। अधिकांश तत्सम र तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्दका साथमा थोरै आगन्तुक शब्दको समेत मिठो संयोजन प्रायः उनका कवितामा देख्न सकिने भाषिक विशेषता नै हो। प्रस्तुत कवितामा पनि कविले छात्रावास, समय, सन्ध्या, सूत्र, भाष्य, कुसुम, उद्यान, भोजन, दुर्गा शप्तशती, स्वर्णिम, प्रजातन्त्र, मन्त्र, स्वर्गीय, प्रवेश, संसार जस्ता नेपाली जनजिब्रोमा भिजिसकेका तत्सम शब्दका साथमा उनले थलो, भलो, बिहान, घन्टी, पल्लेटी, मौका, जुनी, गाढा, चिउरा, दही, भान्सा, भात, टोली, चउर, गफ, कोठा, घडी, दाल, मानिस, साँघुरो, घर, खुला जस्ता तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्दको मिठो समन्वय गरेका छन्। यसका साथै, उनले खर्च, बाजी, रौनक, क्वाँटी, खुसी जस्ता निकै कम आगन्तुक शब्दको समेत कवितामा प्रयोग गरेका छन्।

४.९.६. बिम्ब/अलङ्कार

आफ्ना रचनामा अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा निकै सचेत कवि बलराम दाहालले यस 'सम्भना छात्रावासको' शीर्षकको कवितामा पनि त्यसैलाई निरन्तरता दिएका छन्। उनले बित्यो-डुब्यो, गाढा थियो-टाढा भयो, तर-घर, बरु-अरू, खिरले-पिरले, पसी-बसी, बढी-पढी, गरी-सरि, जागदर्थ्यौँ-भागदर्थ्यौँ, क्षण-कारण, कालमा-सालमा, छोडीकन-जोडीकन जस्ता शब्द तथा पदावलीको सहयोगमा अन्त्यानुप्रासको मनोहर प्रस्तुति दिएका छन्।

४.९.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले आफूले जीवनका स्वर्णिम पलहरू बिताएको, विद्यार्थी जीवनको ऊर्जाशील समय खर्चेर जीवनको आधारशिला तयार गरेको तिन धारा संस्कृत छात्रावासमा आफूले बिताएका पलहरू स्मरण गरेर प्रस्तुत कविता रचेको हुनाले यसको शीर्षक 'सम्भना छात्रावासको' उचित देखिन्छ।

^{५६} ज्वाली, भूमिका, २०६८

४.१०. 'म अनन्त जान्छु' कविता

४.१०.१. संरचना

कुल १६ श्लोकको आयतनमा फैलेको यस 'म अनन्त जान्छु' शीर्षक कविता सौगात सङ्ग्रहभित्र समेटिएका केही लामा कवितामध्येको एक हो (दाहाल, २०६८, पृ. १६) । १६ श्लोक र ६४ पाउमा फैलेको प्रस्तुत कवितामा तिन सय सात शब्द र सात सय चार अक्षर समेटिएका छन् ।

४.१०.२. लय विधान

प्रस्तुत 'म अनन्त जान्छु' शीर्षक कवितामा उपजाति र उपेन्द्रवज्रा छन्दको मिश्रित लय विधान पाइन्छ । कुल १६ श्लोकमध्ये १३ श्लोकमा उपजाति र ३ श्लोकमा उपेन्द्रवज्रा छन्दको साङ्गीतिक छटा भेटिन्छ । क्रमशः पाँच र ६ अक्षरमा यति व्यवस्था भएका यी दुवै छन्दको गण व्यवस्थामा सामान्य अन्तर मात्र पाइन्छ ।

४.१०.३. भाव विधान

कसै कसैले कनी कनी लेख्न खोज्दैमा त्यो कविता हुन सक्दैन भन्ने कवि बलराम दाहालले मान्छेको भित्री तहसम्म पसेर तरङ्ग ल्याउन सक्ने भित्रैदेखि निस्केको भावराशि मात्र कविता हुन सक्ने विचार कवितामा व्यक्त गरेका छन् । जसरी बीज टुसाउँदैमा फल लाग्छ नै भन्न सकिन्न, जसरी घाम उदाउँदैमा सबै गरा गरामा घाम लाग्छ नै भन्न सकिन्न, त्यसै गरी कसैको लहलहै वा लहडबाजीमा कसैले केही लेख्ने रहर गर्दैमा त्यसले काव्यको रूप लिन नसक्ने धारणा कविको छ । रस, अलङ्कार, गुण आदिले टम्म भरिएको, पाठकले पढ्दा स्वाद लिएर आस्वादन गर्न सक्ने र पाठकको मन झङ्कृत गर्न सक्ने रचना नै काव्य हुन सक्ने भएकाले आफू त्यस्तै रचना मार्गमा प्रवृत्त भइरहेको कविले कवितामा बताएका छन् । श्लोकमा लोक अटाउने लक्ष्यसाथ आफू काव्य सागरको डुबानमा लागिपरेको र त्यसबाट मोती टिपेर ल्याउने अभियानमा लाग्दा घर परिवार लथालिङ्ग भएको, सरस्वतीको आराधनामा लाग्दा लाग्दै लक्ष्मी निकै टाढा पुगेको र आफू अझै उचाइयुक्त काव्य सिर्जनाको अनन्त यात्रामा अधि बढिरहेको आशय कविले प्रस्तुत कवितामा पस्केका छन् ।

यसरी कवि बलराम दाहालले जो कोहीले कनिकुथी लेख्न खोज्दैमा कविता बन्दैन भन्दै त्यसका लागि साधनाको खाँचो रहेको विचार प्रस्तुत म अनन्त जान्छु कवितामा प्रकट गरेका छन् ।

४.१०.४. कथन पद्धति

मूलतः प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दु अँगालिएको प्रस्तुत कवितामा कविले कतै कतै भने तृतीय पुरुष दृष्टि विन्दु पनि अँगालेका छन् । कविको प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दुको एक नमुना यस्तो छ :

म धाममा वा न त राममा छु
म याममा वा न त दाममा छु ।
म नाममा वा न त लाममा छु
नबोल ऐले म त काममा छु ॥

त्यसैगरी तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दुको उदाहरण यस्तो छ :

कनेर लेख्दा कविता हुँदैन
पसेर भित्री तहमा छुँदैन ।
तरङ्ग ल्याओस् र उमङ्ग छाओस् ।
क्यै तत्त्व अभ्यन्तरबाट आओस् ॥

यसरी कविले प्रथम र तृतीय पुरुष दृष्टि विन्दुको मिश्रण गरी मिश्रित दृष्टि विन्दु अँगालेका छन्, प्रस्तुत म अनन्त जान्छु शीर्षकको कवितामा ।

४.१०.५. भाषाशैली

सरल, सरस र सहज भाषाशैली प्रयोगमा चासो राख्ने कवि बलराम दाहालले यस कवितामा पनि आफ्नो सोही चासो दोहोर्याएका छन् । खासगरी जनमानसमा भिजेका तत्सम शब्दका साथमा तद्भव र आगन्तुक शब्द चयनमा कवि दाहाल निकै सचेत देखिन्छन् । उनका अधिकांश रचनामा पाइए जस्तै विशेषता यस कवितामा पनि पाइन्छ । आफ्ना रचनामा तत्सम र तद्भव शब्दका तुलनामा निकै कम आगन्तुक शब्द प्रयोग गर्दै आएका कविले यस कवितामा सोही शैलीलाई निरन्तरता दिएको देखिन्छ । कविता, अभ्यन्तर, तत्त्व, काव्य, बीज, धरा, सूर्य, अनादि, समाधि, रस, धाम, काव्यामृत, पक्ष, विश्वास, श्वास, आलोक, लोक, पीयूष, भारती, लक्ष्मी, वसन्त, विधा, रस, लोचन जस्ता तत्सम शब्दका साथमा कवि दाहालले घाम, गरा, बगान, निदान, डुवान, बत्ती, विजुली, माग जस्ता विविध तद्भव र भर्रा नेपाली शब्दको संयोजनले कवितामा मिठास थपेको अनुभूति हुन्छ । तत्सम र तद्भव शब्दका साथमा कविले जिन्दगी, निसान, इमान, सान, सवाल, दिमाग, निसाफ, साफ, दरबार, जबाफ जस्ता आगन्तुक शब्दको समेत प्रयोग गरेका छन् ।

४.१०.६. बिम्ब/अलङ्कार

यमक अलङ्कार प्रयोगमा सिद्धहस्तता देखाएका कवि बलराम दाहालले यस 'म अनन्त जान्छु' कवितामा पनि यमक अलङ्कारको कुशल प्रयोग गरेका छन् । यमक प्रयोगका केही नमुना :

चढेर पाइन्न विमान मान
खोजेर भेटिन्न समान मान ।
खनेर के हुन्छ प्रभास भास
वसन्त खोज्दै छ उदास दास ॥

जबाफका बाफ हुँदै बहन्छु
विधा विधाका सुविधा कहन्छु ।
नासो गुनासो छ कहाँ म मान्छु
घारी उघारी म अनन्त जान्छु ॥

कवि दाहालले यमक प्रयोग गर्ने क्रममा कतै कतैचाहिँ जबर्जस्ती शब्द थुपारेका हुन् कि जस्तो पनि लाग्छ । कतै कतै प्रकृत भावसँग मेल नखाने शब्द चयन भएको पनि देखिन्छ ।

छाडिन् जुलीले विजुलीकहाँ छन् ।

कविले अन्य कवितामा भैं यस कवितामा पनि अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा अन्त्यन्तै सचेतता अपनाएको देखिन्छ । हुँदैन-छुँदैन, छाओस्-आओस्, धरामा-गरामा, भास-दास जस्ता शब्द प्रयोगले अन्त्यानुप्रासको मिठास पनि कवितामा अनुभूत गर्न सकिन्छ ।

४.१०.७. शीर्षक

साहित्य सिर्जनाको यात्रा अनन्त कालसम्म जारी रहने र आफूले पनि यही मार्गमा निकै लामो यात्रा गर्न बाँकी नै रहेको सङ्केत गर्दै कवि बलराम दाहालले चयन गरेको यस कविताको शीर्षक 'म अनन्त जान्छु' उपयुक्त लाग्छ । कवितामा काव्य सिर्जनाको यात्रा सहज नभएकाले निकै कठिन भएको सङ्केत गरिएको छ । जस अनुसार यस कविताको शीर्षकलाई सार्थक मान्न सकिन्छ ।

४.११. 'उचाइ' कविता

४.११.१. संरचना

एघार अक्षरी उपजाति र उपेन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'उचाइ' शीर्षकको कविता कुल पाँच श्लोकसम्म विस्तार भएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. १९) । २० हरफमा फैलिएको प्रस्तुत कवितामा ८६ शब्द र कुल दुई सय २० शब्द अटेका छन् ।

४.११.२. लय विधान

प्रस्तुत 'उचाइ' शीर्षकको कवितामा कवि बलराम दाहालले ११ अक्षरी उपजाति र उपेन्द्रवज्रा छन्दको मिश्रण गरेका छन् । खासगरी उपेन्द्रवज्रा र इन्द्रवज्रा छन्दको मेलबाट बन्ने उपजाति छन्दका चार श्लोकका साथमा कविले एक श्लोकमा उपेन्द्रवज्रा छन्द प्रयोग गरेका छन् । क्रमशः पाँच र बाँकी ६ अक्षरमा यति व्यवस्था भएको भएका यी दुवै छन्दको गण व्यवस्थामा सामान्य अन्तर भेटिन्छ । उपेन्द्रवज्रा छन्दमा प्रत्येक पाउका आदि अक्षर ह्रस्व हुन्छन् भने उपजाति छन्दमा आदि अक्षर कुनै ह्रस्व र कुनै दीर्घ हुने व्यवस्था छ ।

४.११.३. भाव विधान

'उचाइ' शीर्षकको कवितामा कवि बलराम दाहालले नेपाल र नेपालीको वीरताको उचाइका साथमा भौगोलिक उचाइको गौरव गाथा पनि गाएका छन् । हामी नेपाली र हाम्रो प्यारो देश नेपालको उचाइ हिमालका चुचुराहरूका साथमा वीर पुर्खाले खेलाएको खुकुरीको धारमा अडिएको छ । आजको पुस्ताको अकर्मण्यताले गर्दा हाम्रो बहादुरीको उचाइ, हिमालको उचाइ, खुकुरीको धारको उचाइ होचिन्छ भन्ने चिन्ता कविलाई लागेको छ । मुलुकको सिमाना निकै सानो छ । त्यसमाथि हाम्रा सिमानाहरू भन्भन् वर सदै आएका खबर आइरहेका छन् । त्यसैले हाम्रो 'हिमाल सदै जब पुग्छ पारि, सिद्धिन्छ हामी सबको चिनारी' भन्ने अभिव्यक्तिका माध्यमबाट नेपालका सीमाहरू मिचिँदै गएकोमा चिन्ता र आक्रोश व्यक्त गरिएको पाइन्छ ।^{५७} हाम्रो माटो छिमेकतिर चोरिँदै छ । यस्तै स्थिति रहयो र शक्तिशाली छिमेकीले हाम्रा हिमाललाई पनि सिमापारि पुर्याए भने हामी सबैको चिनारी सकिने चिन्ता कविको छ । कवि हिमाल जस्तै अगिलन चाहन्छन् । उनी हिमालजस्तै पगिलन पनि चाहन्छन् । अगिलन, पगिलन र सड्गिलन नजान्नेले केही गर्न नसक्ने भाव कविले व्यक्त गरेका छन् । कविले एक जना अगिलँदैमा सबै अगिलन नसक्ने र एक जना पगिलँदैमा सबै पगिलन नसक्ने हुनाले सबै एकसाथ अगिलन र पगिलन सकेमा मात्र आफ्नो सड्कल्प पुरा हुने विचार कवितामा पोखेका छन् ।

यसरी कवि दाहालले सम्पूर्ण नेपालीको उचाइ अगिलन सक्नुपर्ने विचार व्यक्त गर्दै हामीमध्ये कोही कसैको उचाइ अगिलँदैमा सबैको उचाइ अगिलन नसक्ने हुनाले सबैको उचाइ एकसाथ अगिलन सक्नुपर्ने विचार प्रस्तुत उचाइ शीर्षकको कवितामा व्यक्त गरेका छन् ।

४.११.४. कथन पद्धति

आफ्ना अधिकांश कवितामा प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दु र तृतीय पुरषीय बाह्य दृष्टि विन्दु अँगाल्दै आएका कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कवितामा पनि मिश्रित दृष्टि विन्दुकै उपयोग गरेका छन् ।

४.११.५. भाषाशैली

अन्त्यन्तै सरल र सहज भाषाशैलीको प्रयोक्ता कवि बलराम दाहालले यस कवितामा पनि निकै संयमित भई सरल र सहज शब्द चयन गरेका छन् । नेपाली भाषामा उपलब्ध तत्सम, तद्भव र आगन्तुक तिनओटै स्रोतका शब्द चयनमा सिपालु कविले यस कवितामा पनि वीरता, सड्कल्प, पूर्ण जस्ता निकै कम तत्सम शब्दका साथमा उचाइ, असिना, पानी, चुचुरी, खुकुरी, चिनारी, हिमाल, पिर, माटो, सानो जस्ता

^{५७} ज्ञवाली, भूमिका, २०२८

तद्भव र भर्ता नेपाली शब्द अनि जिन्दगानी, बहादुरी, नक्सा जस्ता आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजन गरेका छन् । त्यसैले पनि यस कविताको भाषाशैली निकै सरल, सहज र सरस भएको अनुभूति हुन्छ ।

४.११.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत कविताको शीर्षकका रूपमा आएको उचाइ शब्दलाई नै प्रतीकात्मक रूपमा प्रयोग गरेका छन् कविले । उचाइ शब्दको शाब्दिक अर्थ मात्र नबुझाएर यसले यहाँ हामी सम्पूर्ण नेपाली र नेपालको चिनारी, वीरता र गौरव गाथाको उचाइलाई संकेत गरेको हुनाले शीर्षकका रूपमा चयन गरिएको उचाइ शब्द प्रतीकात्मक देखिन्छ । यसका साथै यस कवितामा कविले आफ्नो विशेषता अनुसार नै अन्त्यानुप्रासको पनि सुन्दर प्रयोग गरेका छन् ।

४.११.७. शीर्षक

नेपाली पुर्खाको बहादुरीले निर्माण गरेका नेपालीको वीरताको उचाइ र नेपाली हिम शिखरहरूले उचालेको उचाइलाई सङ्केत गर्दै हाम्रो उचाइ घट्ने पो हो कि भने चिन्ता व्यक्त गरिएको हुनाले शीर्षकका रूपमा आएको 'उचाइ' शब्द सार्थक देखिन्छ ।

४.१२. 'भानुलाई पत्र' कविता

४.१२.१. संरचना

उन्नाइस अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दका आठ अनुच्छेद अर्थात् आठ श्लोकका कुल ३२ पाउमा फैलिएको छ 'भानुलाई पत्र' शीर्षकको कविता (दाहाल, २०६८, पृ. २०) । यस कवितामा दुई सय ६० शब्दका साथमा ६ सय आठ अक्षर समेटिएका छन् ।

४.१२.२. लय विधान

कवि बलराम दाहालले नेपाली जनमानसमा आदिकवि भानुभक्त आचार्यको रामायणदेखि नै भिजेको र कर्णप्रिय मानिँदै आएको १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा उनीले गरेको छ यस 'भानुलाई पत्र' शीर्षकको कविता । १२ र ७ अक्षरमा यति हुने संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको साङ्गीतिक छटाको सहज अनुभूति हुने यस कविताको लय नेपाली जनजिब्रो सुहाउँदो देखिन्छ ।

४.१२.३. भाव विधान

'भानुलाई पत्र' शीर्षक कवितामा कवि बलराम दाहालले आदिकवि भानुभक्त आचार्यलाई सम्बोधन गर्दै वर्तमान नेपाली समाजभित्रको विगडगत स्थितिमाथि कडा व्यङ्ग्य गरेका छन् । भानुभक्तले आफ्नो रामायणमा चित्रण गरेको राम र रावणको सङ्घर्षलाई वर्तमान राजनीतिक खिचातानी र छिनाभङ्गीसित तुलना गर्दै कविले उतिखेरका हनुमानले रामलाई निकै गुन लगाए पनि अहिलेका मुलुक चलाउने हनुमानहरूले यो मुलुक डुबाइरहेको गुनासो कविले गरेका छन् । रामले मोहवश स्वर्ण मृगको पछि लागे जस्तो अहिले सबैले सत्ताको पछि लागेका र सत्तालाई दुधालु गाई बनाएर कान्तिपुरको शोभा लुटिरहेको आशय कविले प्रकट गरेका छन् ।

उतिबेला जङ्गल पुगेकी सीता रावणको अपहरणमा परेकी थिइन् तर हिजो आज घरैबाट दिनकै उज्यालोमा छोरीचेली अपहरणमा परिरहेका छन् । उतिखेर पाएको राज्य पनि छाडेर भरत दाजुको खराउ पुजेर बसे भने यतिखेरका नेताहरू राज्य नपाउँदा भगडा गर्दै पजेरोको पछि कुदिरहेका छन् । भानुको पालामा नेपाली भाषामा एकता थियो तर आज भने नेपाली भाषा र व्याकरणिक नियममा सुनामी आइरहेको प्रतिक्रिया कविको छ । भानुको समयको दौरा, सुरुवाल, टोपी हराउँदै गएका छन् भन्दै कविले आदिकवि भानुभक्तलाई सम्बोधन गरेर प्रस्तुत भानुलाई पत्र शीर्षकको कवितामा नेपाली समाजभित्र देखिएका विकृति र विसङ्गतिलाई चित्रण गरेका छन् । अतीत र वर्तमानको विपरीत अवस्थाबारे तुलनात्मक अध्ययन सहितको काव्यिक अभिव्यक्ति तथा नेपाली भाषामा बह्दै गएको विवाद र प्रयोगको

अनेकताप्रति असन्तोष व्यक्त गर्नुका साथै कविले नेपाली भाषाको वर्ण विन्यास सम्बन्धी पछिल्लो परिवर्तनलाई भाषाका क्षेत्रमा आएको सुनामीको सङ्ज्ञा दिई असन्तुष्टिको अभिव्यक्ति दिएका छन् । यसमा उनको नेपाली भाषाप्रतिको प्रगाढ अस्था र भाषिक परिवर्तनको स्वाभाविकताप्रति केही अनुदार चिन्तन एक साथ प्रकट भएका छन् ।^{५५}

यसरी कवि दाहालले प्रस्तुत भानुलाई पत्र शीर्षकको कवितामा आदिकवि भानुभक्त आचार्यलाई सम्बोधन गरेर उनैका सिर्जना र सिर्जित पात्रहरूसित वर्तमान समाजका विसङ्गत जीवन र पात्रहरूको तुलना गर्दै समसामयिक विकृतिमाथि कटाक्ष गरेका छन् ।

४.१२.४. कथन पद्धति

प्रस्तुत भानुलाई पत्र शीर्षकको कविता आदिकवि भानुभक्त आचार्यलाई सम्बोधन गरी लेखिएको हुनाले यसमा द्वितीय पुरुष दृष्टि विन्दु प्रयोग भएको छ । कविले भानुलाई सम्बोधन गर्दै उनका सिर्जना र सिर्जनाभित्रका पात्रको चरित्रसित वर्तमान समाज र समाजभित्रका चरित्रको तुलना गर्दा कतै द्वितीय पुरुष दृष्टि विन्दु र कतै तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु पनि प्रयोग भएको पाइन्छ ।

४.१२.५. भाषाशैली

तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजनको अनुभव हुने यस 'भानुलाई पत्र' शीर्षकको कवितामा कविले युग, जीवन, रावण, राम, स्वर्णमृग, राष्ट्र, शोभा, हरण, सीता, कीर्ति, एकता, शिर, भाषा, देह आदि तत्सम शब्द प्रयोग गरेका छन् । आज, रमिता, मेला, भर, गुन, दुधालु, गाई, धोका, खराउ, भगडा, घाँसी, ढुङ्गा, मुढा, बालुवा, टोपी, दौरा, गाडी आदि तद्भव र भर्रा शब्दका साथमा पजेरो, तरिका, सुनामी, सुरुवाल, जुलुस जस्ता आगन्तुक शब्द संयोजनबाट कविले आफ्नो अभिव्यक्ति पस्केका छन् । सरल, सरस र सहज शब्द चयनले प्रस्तुत कविता पनि बोधगम्य बन्न पुगेको छ ।

४.१२.६. बिम्ब/अलङ्कार

आदिकवि भानुभक्तकै शैली अनुसरण गर्दै कवि दाहालले अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा अत्यन्तै सचेतता देखाएका छन् । गुन-जीवन, मोहले-विद्रोहले, भनी-अनि, थिए-दिए, रोदन-मन, त्यहाँ-यहाँ, त्यता-यता, कुवा-बालुवा, तर-घर जस्ता शब्दको चयनबाट कविले कवितामा अन्त्यानुप्रासको रन्को थपेका छन् । यसका साथै, कविले 'सत्ता रैछ, दुधालु गाई' भन्दै सत्तालाई दुधालु गाईमा आरोपित गर्दै रूपक अलङ्कारको प्रयोग गरेका छन् ।

४.१२.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कविताको शीर्षक 'भानुलाई पत्र' भन्ने पदावली चयन गरेका छन् । यस कवितामा कविले आदिकवि भानुभक्तलाई सम्बोधन गर्दै उनका रामायण र अन्य रचनाका पात्र र तिनका प्रवृत्तिसित वर्तमान समाजका पात्र र तिनका प्रवृत्तिको तुलना गरेका छन् । वर्तमान समाजभित्रका विकृति र विसङ्गतिलाई कवितात्मक पत्रका रूपमा भानुभक्तलाई सम्बोधित गरिएको हुनाले पनि यस कविताको शीर्षक 'भानुलाई पत्र' सार्थक देखिन्छ ।

^{५५} ज्ञवाली, भूमिका, २०६८

४.१३. 'ॐकारमा छौं सबै' कविता

४.१३.१. संरचना

उन्नाइस अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दका ६ श्लोकका कुल २४ पाउमा फैलिएको छ 'ॐकारमा छौं सबै' शीर्षकको कविता (दाहाल, २०६८, पृ. २२) । एक सय ८३ शब्द र कुल चार सय ५६ अक्षरमा फैलेको यो कविता संरचनाका दृष्टिले लघु आयामको फुटकर रचना हो ।

४.१३.२. लय विधान

नेपाली समाजमा भानुभक्त आचार्यको रामायणले स्थापित गराएको १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा उनीएको छ प्रस्तुत 'ॐकारमा छौं सबै' शीर्षकको कविता । संस्कृतका वर्णमात्रिके छन्दमध्ये सबैभन्दा बढी श्रुति मधुर साङ्गीतिक रन्कोको अनुभव हुने प्रस्तुत छन्दमा १२ र सात अक्षरमा क्रमशः यति हुने व्यवस्था पाइन्छ ।

४.१३.३. भाव विधान

वर्तमान युगमा मानवता गिर्दै गएको र आसुरी प्रवृत्ति बढ्दै गएको अवस्थाप्रति चिन्ता व्यक्त गरेका छन् कवि दाहालले प्रस्तुत 'ॐकारमा छौं सबै' शीर्षकको कवितामा । जताततै युद्ध सरदारहरूले युद्धको शङ्खघोष गर्दै बाँसुरी बजाइरहेको र मानव सभ्यताको सृष्टि नै पल्टाउन खोजिरहेको कहालीलाग्दो यथार्थप्रति कविले चिन्ता व्यक्त गरेका छन् । सम्पूर्ण विम्ब, प्रतीक र नौला नौला रहस्यको मूल स्रोत शिव नै भएको र त्यसैका माध्यमबाट मान्छेले आफूभित्र रहेको निस्सारता चिर्दै बुद्धि नभईकन बुद्ध बन्ने बाटो रोज्नुपर्ने विचार कविले व्यक्त गरेका छन् ।

यस संसारमा जे जति यज्ञ यागादि, त्रिकाल वा त्रिगुण जे जे भए पनि ॐकारको छातामुनि सबै अटाउन सक्ने विचार व्यक्त गर्दै कविले धुलाको कणदेखि मान्छेसम्म सबै ॐकारकै छातामुनि अट्ने भाव कवितामा प्रकट गरेका छन् । मान्छेले बाहिरी ब्रह्माण्ड सारा घुमेर हेरिसके पनि आफूभित्र रहेको ब्रह्माण्ड देख्न नसकेको भन्दै ज्ञानको ढोका मात्र उघार्न सके यो दुनियाँ भल्कलाकार उज्यालो नै उज्यालो भएको र आँखा चिम्लेर ज्ञान चक्षुले हेर्न सक्ने हो भने जताततै ॐकारै ॐकार भएको भाव कविले प्रस्तुत कवितामा व्यक्त गरेका छन् ।

४.१३.४. कथन पद्धति

कविले प्रस्तुत 'ॐकारमा छौं सबै' शीर्षकको कवितामा तृतीय पौरुषेय बाह्य दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । शीर्षकमा रहेका पदावली वा वाक्यगत संरचना हेर्दा यो कवितामा प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दुमा रचिएको छ कि लाग्छ । तर, शीर्षक प्रथम पुरुष ढाँचामा भए पनि बाँकी कवि कथन भने तृतीय पौरुषेय बाह्य शैलीमै प्रकट भएको छ ।

४.१३.५. भाषाशैली

अन्य कविताका तुलनामा केही कठिन जस्तो प्रतीत हुने प्रस्तुत 'ॐकारमा छौं सबै' शीर्षकको कवितामा आध्यात्मिक जीवन शैली र भावराशि प्रस्तुत गरिएको हुनाले यसमा प्रयोग भएको भाषाशैली पनि तद्भव र आगन्तुक शब्दका तुलनामा अलिक कठिन भएको अनुभव हुन्छ । कविले प्रस्तुत कवितामा ॐकार, युद्ध, स्वर, विनाश, प्रलय, सृष्टि, विम्ब, प्रतीक, ज्ञाता, दृश्य, आसुरी, शालीन, शिव, ज्ञान चक्षु, ब्रह्माण्ड जस्ता तत्सम शब्दको चयन गरेका छन् भने बाँसुरी, घर, नौलो, छाती, जुनी, चुरिफुरी, धड्कन, ढोका, आँखा जस्ता तद्भव र भर्रा नेपाली शब्द र सफर, दुनियाँ जस्ता आगन्तुक शब्दसमेतको संयोजन गराएका छन् । जसले गर्दा केही कठिन जस्तो प्रतीत भए पनि सहज भाषिक शैलीको अनुभूति गर्न सकिन्छ प्रस्तुत कवितामा ।

४.१३.६. बिम्ब/अलङ्कार

आफ्ना अन्य कवितामा भैं कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'ॐकारमा छौं सबै' शीर्षकको कवितामा पनि अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा निकै सचेतता अपनाएका छन् । उनले आसुरी-बाँसुरी, सिद्ध्याउन-पल्टाउन, सम्पन्नता-सम्पूर्णता, फर्काउन-पल्टाउन, एकता-देवता, तालमा-ख्यालमा जस्ता अनेक पद र पदावलीको सहयोगमा कवितामा अन्त्यानुप्रासको मिठास अनुभूत गराउने प्रयास गरेका छन् कवि दाहालले ।

४.१३.७. शीर्षक

प्रस्तुत कविताको शीर्षकका रूपमा कवि बलराम दाहालले ॐकारमा छौं सबै भन्ने वाक्यात्मक पदावली चयन गरेका छन् । पूर्ण वाक्यको स्वरूपमा आएको प्रस्तुत पदावलीले हामी सबै ॐकारमा छौं वा ॐकारको छातामुनि हामी सबै अटाउन सक्छौं भन्ने भाव बुझाएको छ । कवितामा पनि कविले सोही भावराशिलाई समेटेको हुनाले प्रस्तुत कविताको शीर्षक सार्थक प्रतीत हुन्छ ।

४.१४. 'बाटो चिनेनौं तर' कविता

४.१४.१. संरचना

प्रस्तुत 'बाटो चिनेनौं तर' शीर्षकको कविता १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. २३) । कुल पाँच श्लोक भएको प्रस्तुत कवितामा २० पाउ छन् । यो कविता एक सय ५५ शब्द र तिन सय असी अक्षरको फैलावटमा फैलेको छ ।

४.१४.२. लय विधान

कवि बलराम दाहालको यस 'बाटो चिनेनौं तर' शीर्षकको कवितामा नेपाली जनमानसमा निकै भिजेको शार्दूलविक्रीडित छन्दको मिठासको अनुभव गर्न सकिन्छ । खासगरी १२ र ७ अक्षरमा क्रमशः यति वा विश्राम हुने नियम रहेको संस्कृतको वर्णमात्रिक शार्दूलविक्रीडित छन्दको रन्कोले गर्दा पनि यो कविता बढी लयात्मक देखिन्छ ।

४.१४.३. भाव विधान

हामीले हाम्रो जीवनकालमा कैयौंलाई आफ्नो काँध थापेर अग्ला बनायौं । माझीले यात्रीलाई पारि तारिदिए जस्तो हामीले पनि धेरैलाई पारि पुर्याइदियौं । कुनै चित्रमा पृथक् रङ टल्केर भिन्नै स्वरूप देखिएजस्तै सच्चा मित्रका गुण पनि सहज ढङ्गमा भल्किन्छन् । जीवनमा हामीले अझै कैयौं उकाली चढनु बाँकी नै छन् भन्दै कवि दाहालले मुलुकका मालीहरू कता पुगे भन्ने चिन्ता प्रकट गरेका छन् । यो संसारमा जे देखिन्छ त्यो सदैव स्थायी रूपमा रहँदैन र जे देखिन्छ र यहाँ खोज्दा जे पाइन्छ त्योचाहिँ सत्य हो भन्दा उनले परम सत्ता परमेश्वरलाई सच्चा इष्टमित्रका रूपमा चिनाएका छन् । जीवनरूपी यात्रामा जति सहयात्री भेटिन्छन्, ती सधैं साथ रहँदैनन् र तिनले हामीलाई चाहेर पनि साथ दिन सक्दैनन् । हामीले आफैँभित्र रहेको साथी चिन्न सक्थौं भने त्यो नै जीवनको ठूलो उपलब्धि हुन सक्छ । तर, हामीले जीवनभर जे जति चिने पनि, जाने पनि र बुझे पनि हामीले यात्रा गर्नुपर्ने मूल बाटो भने चिन्न नसकिरहेको विचार कविले प्रस्तुत कवितामा प्रकट गरेका छन् ।

समग्रमा भन्नुपर्दा प्रस्तुत 'बाटो चिनेनौं तर' शीर्षक कवितामा कविले हामीले जीवनभर जे जस्ता कुरा सिके पनि, जो जोसित मित्रता गाँसेर सहयोगका हातहरू अघि बढए पनि हामीले आफैँभित्र रहेका ईश्वरलाई चिन्न नसकेकोमा दुःख व्यक्त गर्दै कविले आफूले अँगालिरहेको आध्यात्मिक जीवन शैली र आस्तिक विचार पस्केका छन् ।

४.१४.४. कथन पद्धति

कविले शीर्षकका रूपमा चयन गरेको वाक्यात्मक पदावली प्रथम पुरुष बहुवचनमा भए पनि कविताभित्रका अधिकांश कथन तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दुमा आधारित छ। कतै कतैचाहिँ उनले प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दुको पनि प्रयोग गरेका छन्।

४.१४.५. भाषाशैली

आफ्ना अन्य रचनामा जस्तै कवि बलराम दाहालले यस 'बाटो चिनेनौं तर' शीर्षक कवितामा पनि सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन्। उनले यस कवितामा पनि तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजन गरेका छन्। कविले नदी, पृथक्, गुण, चित्र, उद्यान, मित्र, धनी, गोप्य जस्ता जनमानसमा सजिलै भिजिसकेका तत्समका साथमा माभी, सच्चा, रिक्तो, माली, छोटो, भेट, घाउ, लुगा, घँटो, खाटो, धागो जस्ता तद्भव तथा भर्सा शब्दका साथमा जिन्दगी, चाँदनी जस्ता निकै कम तर प्रचलित आगन्तुक शब्दको अत्यन्तै कुशल संयोजन गरेका छन्।

४.१४.६. बिम्ब/अलङ्कार

कवि दाहालले यस 'बाटो चिनेनौं तर' शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रासको मधुर प्रयोग गरेका छन्। उनले साथीहरू-यात्रीहरू, चित्रमा-मित्रमा, उकालीहरू-मालीहरू, पति-जति, चाँदनी-अनि, पनि-धनी जस्ता शब्दको प्रयोगबाट कवितामा अन्त्यानुप्रासको रन्को प्रस्तुत गरेका छन्।

४.१४.७. शीर्षक

शीर्षकका रूपमा आएको 'बाटो चिनेनौं तर' भन्ने पदावलीले हामीले जीवनमा धेरै कुरा गरे पनि, धेरैलाई चिने पनि र धेरैतिरको यात्रा गरे पनि आफैँभित्र रहेका परम सत्ता परमेश्वरलाई चाहिँ चिन्न नसकेको बताउँदै कविले हामीले गलत बाटोतिर यात्रा गरिरहेको बताउँदै बाटो चिन्न नसकेको कुरा सङ्केत गरेका छन्। जसबाट शीर्षकको सार्थकता भल्किन्छ।

४.१५. 'गए गहना' कविता

४.१५.१. संरचना

आठ अक्षरी अनुष्टुप् छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'गए गहना' शीर्षकको कविता आठ पाउयुक्त पाँच श्लोक अर्थात् कुल बिस पङ्क्तिमा फैलेको छ (दाहाल, २०६८, पृ. २४)। आठ अक्षरी अनुष्टुप् छन्दको ४० पाउको फैलावटमा फैलेको कवितामा कुल एक सय २९ शब्द र तिन सय ३२ अक्षर समेटिएका छन्।

४.१५.२. लय विधान

प्रस्तुत 'गए गहना' शीर्षकको कवितामा सरल र सुललित शब्दको लयात्मक प्रस्तुति पाइन्छ। आठ अक्षरी अनुष्टुप् छन्दको लयात्मक रन्कोको अनुभव हुने प्रस्तुत कवितामा श्रुति मधुरताको अनुभव गर्न सकिन्छ।

४.१५.३. भाव विधान

दोलखा जिल्लाको सुनखानी भन्ने गाउँमा जन्मेर नेपाली भाषा, साहित्यका क्षेत्रमा अलग छाप छाड्न सफल साहित्यकार तथा भाषासेवी जगन्नाथ त्रिपाठीलाई गहनाका रूपमा चिनाउँदै उनको निधनबाट नेपाली भाषाले भोग्नुपरेको अभावको अनुभूतिलाई प्रस्तुत 'गए गहना' शीर्षकको कवितामा कवि बलराम दाहालले समेटेका छन्। भाषासेवी त्रिपाठीलाई सम्भरेर कविले उनको निधनले राष्ट्रमा एउटा रिक्तताको अनुभव भएको भन्दै उनलाई जोगाउन नसकिएकोमा दुःख प्रकट गरेका छन्। आज हामीमाभ त्रिपाठी सशरीर उपस्थित नभए पनि उनको ज्ञान, कीर्ति र कर्मको सुवास सर्वत्र हर्षरी चलिरहेको विचार

कविले पाठकमाभ्र पस्केका छन् । यो संसारमा ज्ञान बाहेक पवित्र चिज केही हुँदैन भन्दै त्यस्तो चिज हिजो पनि बनेन र भविष्यमा पनि बन्नेछैन भन्ने कविको ठम्याइ छ । जगन्नाथ त्रिपाठी ज्ञानको गड्गा नै हुन् भन्दै राष्ट्रका सम्पदा बनेका जगन्नाथका सिर्जना र उनले देखाएको बाटोको जगेर्ना गर्नु राज्यकै दायित्व भएको पनि कविले सम्झाएका छन् ।

यसरी कवि दाहालले प्रस्तुत 'गए गएना' शीर्षकको कवितामा आफ्नो गृहजिल्ला निवासी साहित्यकार तथा भाषासेवी जगन्नाथ त्रिपाठीको निधनमा शोक प्रकट गर्दै उनको सम्झनामा उनीप्रति श्रद्धाका दुई थुङ्गा फुल अर्पण गरेका छन् ।

४.१५.४. कथन पद्धति

नेपाली भाषा साहित्यका वरिष्ठ साधक जगन्नाथ त्रिपाठीको सम्झनामा लेखिएको प्रस्तुत 'गए गहना' शीर्षकको कवितामा कवि बलराम दाहालले तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दुको प्रयोग गरेका छन् ।

४.१५.५. भाषाशैली

प्रस्तुत 'गए गहना' शीर्षकको कवितामा कवि बलराम दाहालले सरल र सहज भाषाशैली प्रयोग गरेका छन् । सरल शब्द चयन गर्नु कवि बलराम दाहालको विशेषता नै हो । यस कवितामा पनि उनले आफ्नो सोही खुबी प्रयोग गर्दै तत्सम र तद्भव शब्दको चयन गरेका छन् । उनले वृक्ष, ज्ञानगड्गा, ज्ञानामृत, ज्ञान, गौरव, दैव, पूज्य, गौरी शङ्कर, पवित्र, कार्मकाण्ड, राष्ट्र, ज्ञाता, भाषा, दर्शन, विद्वत् केशरी, ज्ञान गड्गा, विश्व, सम्पदा जस्ता जन मानसमा भिजिसकेका सरल तत्सम शब्दका साथमा विरुवा, अग्ला, थुङ्गो, भर्री, विदा, गहना, फुल, जगेर्ना जस्ता तद्भव तथा भर्रा शब्दको समेत कुशल संयोजन गरेका छन् ।

४.१५.६. बिम्ब/अलङ्कार

अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा निपुण कवि बलराम दाहालले यस 'गए गहना' शीर्षकको कवितामा पनि अत्यन्तै सावधानीसाथ अन्त्यानुप्रासको प्रयोग गरेका छन् । उनले यतै-जताततै, प्रभाव छ-अभाव छ, पाइयो-धाइयो, बचाउन-सजाउन, ज्ञानका-ध्यानका, भए-गए, आज त्यो-माभ्र यो, बनी-पनि, विश्वमा-भविष्यमा, कर्म हो-धर्म हो जस्ता पद तथा पदावलीको प्रयोगबाट अन्त्यानुप्रासको मिठास थपेका छन् । यसका साथै दोलखाको सुनखानीमा 'उम्रेको विरुवा'ले साहित्यसेवी जगन्नाथ त्रिपाठीलाई चिनाएको हुनाले यसमा कविले 'विरुवा' शब्दलाई प्रतिभाको प्रतीकका रूपमा प्रयोग गरेका छन् ।

४.१५.७. शीर्षक

'गए गहना' शीर्षक दुईओटा शब्दको संयोगबाट बनेको छ । गहनाजत्तिकै मूल्यवान् प्रतिभा गएको वा मृत्यु वरण गरेको संकेत गरेको हुनाले प्रस्तुत कविताले साहित्यकार तथा वरिष्ठ भाषासेवी जगन्नाथ त्रिपाठीको निधनपछि उनको सम्झना गरेको छ । त्यसैले प्रतिभा गए वा अस्ताए वा निधन भयो भन्ने अर्थमा प्रस्तुत कविताको शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

४.१६. 'सुकर्म' कविता

४.१६.१. संरचना

प्रस्तुत 'सुकर्म' शीर्षकको कविता ११ अक्षरी उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. २५) । उपजाति छन्दका ५ श्लोक र इन्द्रवज्रा छन्दको १ श्लोक गरी कुल ६ अनुच्छेदमा फैलेको यो कविता २४ पाउमा समेटिएको छ । यस कवितामा एक सय १८ शब्द र दुई सय ६४ अक्षर समेटिएका छन् ।

४.१६.२. लय विधान

क्रमशः पाँच र ६ अक्षरमा यति हुने संस्कृत वर्णमात्रिक उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दको लयात्मक प्रस्तुति रहेको यस सुकर्म शीर्षकको कवितामा सरल र सहज शब्दको प्रयोगले मिठास थपेको छ । प्रस्तुत कवितामा उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दको श्रुति मधुरताको सहज अनुभूति गर्न सकिन्छ ।

४.१६.३. भाव विधान

मान्छेको सुकर्मले उसको भाग्य रेखा आफैँ कोर्न सक्ने र जो भाग्यमा छ भने लडी लडी आउँछ भनेर भाग्यकै भरमा बस्छ उसले पछुताउनु सिवाय केही बाँकी हुनेछैन । हाम्रो कर्म नै भाग्य हो । राम्रो कर्म गर्नेको भाग्य आफैँ कोरिने र सुकर्मले नै हाम्रो दिन फिर्ने विचार कविले कवितामा पस्केका छन् । जसरी वनमा ऐंसेलु पाकेपछि जुरेलीलाई सुसेली सुसेली डाकिरहनुपर्दैन, आफैँ आइपुग्छ । त्यसैगरी राम्रो कर्म अर्थात् सुकर्म गर्दै गएपछि आफ्नो भाग्य आफैँ चम्किने धारणा छ कविको । हामीले आजको भिडभाडमा जोगिएर समाज र राष्ट्रका लागि लगातार अधि बढ्नुपर्नेमा जोड दिँदै कवि दाहालले समुद्र पिउँदै, पहाड बोक्दै, कठिनभन्दा कठिन बाटो छिचोल्दै, अभावलाई पन्छाउँदै, गर्मीको परबाह नगरी विश्वासको पात हम्कैँदै अधि बढ्न सकेको खण्डमा हामीले आफ्नो भाग्य आफैँ कोर्न सक्ने विचार व्यक्त गरेका छन् प्रस्तुत सुकर्म शीर्षकको कवितामा ।

४.१६.४. कथन पद्धति

प्रस्तुत 'सुकर्म' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दु र तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दुको सम्मिश्रण गरेका छन् । उनले कतै कतै कवितामा आफैँ उपस्थित भएर आफ्ना अनुभूतिहरू पाठकसामु पस्केका छन् भने कतै चाहिँ उनले आफूलाई द्रष्टाका रूपमा उभ्याएर तृतीय पुरुष दृष्टि विन्दुबाट आफ्नो विचार प्रवाहित गरेका छन् ।

४.१६.५. भाषाशैली

तत्सम र तद्भव शब्दको कुशल संयोजनमा निपुण कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'सुकर्म' शीर्षकको कवितामा पनि सरल तत्सम र तद्भव शब्दको भरपुर उपयोग गरेका छन् । कवि दाहालले आशिष, पीडा, युग, समुद्र, अभाव, विश्वास, भूत, अद्भूत, गर्भ, भाग्य, कर्म, सुकर्म जस्ता तत्सम शब्दका साथमा भिड, आमा, घाउ, बाटो, पहाड, पात, राप, ऐंसेलु, जुरेली जस्ता तद्भव तथा भर्त्ता शब्दको संयोजन गरेका छन् । जसले कवितामा मिठास थप्नुका साथै कवितालाई सरल र सहज बनाएका छन् ।

४.१६.६. बिम्ब/अलङ्कार

अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा कवि बलराम दाहालको निपुणता उनका प्रायः सम्पूर्ण कवितामा भल्किन्छ । यस सुकर्म शीर्षकको कवितामा पनि कविको सोही निपुणता भल्केको देख्न सकिन्छ । उनले ब्यूँझिँदै छु-निस्कँदै छु, मलाई-भलाई, पिएको-दिएको, चहराउँदै छन्-दुखाउँदै छन्, बोक्दै-भोग्दै, लम्किँदै छु-हम्किँदै छु, वर्तमान-खटान, जुरेली-सुसेली जस्ता पद र पदावलीको प्रयोगबाट अन्त्यानुप्रासको सुमधुर प्रस्तुति दिएका छन् । यसका साथै उनले प्रस्तुत कवितामा यमक अलङ्कारको पनि सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । यमक अलङ्कारको नमुना :

सरापको राप छ, वर्तमान
छ, भूतको अद्भूत त्यो खटान ।

४.१६.७. शीर्षक

जीवनमा सुकर्म गरेको खण्डमा आफ्नो भाग्य आफैँ कोर्न सफल भइन्छ । हाम्रो भविष्य अँध्यारो गर्तभित्रै भएको हुनाले वर्तमानमा जे छ, जति छ, र जस्तो छ, त्यसैको सदुपयोग गर्दै कमरेखाबाट भाग्यरेखा कोर्नुपर्छ, भन्ने आशय बोकेको प्रस्तुत कविताको शीर्षक शब्दका रूपमा आएको 'सुकर्म' पूर्णतः सार्थक देखिन्छ ।

४.१७. 'सम्भना' कविता

४.१७.१. संरचना

'सम्भना' शीर्षकको कविता ११ अक्षरी उपजाति र इन्द्रवज्रा नामका दुई छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. २६) । कुल २४ पाउयुक्त ६ श्लोकमा आवद्ध यस कवितामा एक सय एघार शब्द र दुई सय ६४ अक्षर समेटिएका छन् ।

४.१७.२. लय विधान

संस्कृतका वर्णमात्रिक छन्दको बद्ध लयमा आवद्ध प्रस्तुत 'सम्भना' शीर्षकको कवितामा कवि बलराम दाहालले ११ अक्षरी उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दको मिश्रित प्रयोग गरेका छन् । गण सिद्धान्तमा सामान्य अन्तर हुने यी दुई छन्दमा लयगत हिसाबमा खासै अन्तर भने भेटिन्न । उपेन्द्रवज्रा र इन्द्रवज्रा छन्द मिलेर उपजाति छन्द बन्ने भएकाले उपजाति छन्दका चार पाउमध्ये कुनै पाउको आदि अक्षर ह्रस्व र कुनै पाउको आदि अक्षर दीर्घ हुनुपर्ने प्रावधान छ । तर, इन्द्रवज्रा छन्दमा भने प्रत्येक पाउको आदि अक्षर दीर्घ हुने व्यवस्था छ ।

४.१७.३. भाव विधान

प्रस्तुत 'सम्भना' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले असमयमै मृत्युको सिकार बनेकी ओमी शर्मा नाम गरेकी कवयित्रीको सम्भना गरेका छन् । यो जिन्दगीको लीला अनौठो छ । कसैको जिन्दगीको बेला छँदै रात पर्छ अर्थात् लामो जिन्दगी बाँच्न बाँकी हुँदाहुँदै पनि यो सुन्दर संसार चटक्क छाडेर जान बाध्य हुनुपर्छ । कवि ओमीले छन्दसितको सम्बन्ध छिटै बन्द गरी विदा भएको प्रसङ्गलाई कविले मार्मिक ढङ्गमा उल्लेख गरेका छन् । सबैलाई छाडेर टाढा गए पनि उनी सबैको सम्भनामा गुन्जरहेकी छिन् भन्दै कविले कतै ! कति छिटै निदाइन् भनेर उनको भावपूर्ण सम्भना गरेका छन् । ढिलो छिटो सबैको जाने बाटो एउटै भए पनि सबैकी प्यारी, कोमल भावनाकी धनी ओमी विदा भएकोमा कविले अलि बढी चिन्ता व्यक्त गरेका छन् । उनले आफ्नै प्रियजनलाई जस्तै कवयित्री ओमी शर्मालाई पनि बारम्बार सम्भेका छन् प्रस्तुत कवितामा ।

४.१७.४. कथन पद्धति

कवयित्री ओमीको सम्भनामा कवि दाहालले आफ्नो मनको भाव पोखेको हुनाले प्रस्तुत सम्भना शीर्षकको कवितामा उनले तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दुको प्रयोग गरेका छन् ।

४.१७.५. भाषाशैली

कवयित्री ओमीको विछोडमा दुःखी भएका कविले आफ्नो भाव प्रस्तुत गर्न चयन गरेका शब्दहरू कारुणिक भाव वहन गर्न सक्षम छन् । कविले प्रस्तुत कवितामा तत्सम र तद्भव शब्दको कुशल संयोजन गरेका छन् । उनले प्रस्तुत कवितामा लीला, सम्बन्ध, बन्ध, विश्राम, छन्द, कविता, भृकुटी, कर्तव्य, संवेग, संसार, रीत, दैव, खेल आदि तत्सम शब्दको प्रयोग गरेका छन् भने रात, चिनारी, गला, चरी, भेटघाट जस्ता विभिन्न तद्भव शब्दको चयन गरेर कवितामा मिठास थपेका छन् ।

४.१७.६. बिम्ब/अलङ्कार

कवि बलराम दाहालले यस सम्झना शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा निकै होसियारी अपनाएजस्तो देखिन्छ । उनले जिन्दगीको-कसैको, सम्झनामा-कुनामा, हुन्छ-गुन्जिँदै छ, निदाइन्-बिलाइन्, हुँदैनन्-रुँदैनन्, बिटो यो-छिटो हो, थिएन-दिएन, साट-घाटबाट, यस्तै-त्यस्तै जस्ता पद र पदावलीले कवितामा अन्त्यानुप्रासको मिठास थपेको अनुभव हुन्छ । यसका साथै कविले प्रस्तुत कवितामा यमक अलङ्कारको प्रयोग पनि निकै सुन्दर गरेका छन् । यमक प्रयोगको एक नमुना :

‘नारी चिनारी पनि छन्दमै थ्यो ।’

‘कुटी कुटीमा भृकुटी हुँदैनन् ।’

४.१७.७. शीर्षक

आफूसँग परिचित कवि ओमीको मृत्युपछि उनको सम्झनामा रचिएको हुनाले कविताको शीर्षक सार्थक देखिन्छ । शीर्षकका रूपमा आएको सम्झना शब्दले यस संसार छाडेर विदा भइसकेको मान्छेको सम्झनामा आफ्नो मनको कारुणिक भाव र ऊसितको सम्झना गाँसिएका कुरालाई प्रस्तुत गरेको हुनाले शीर्षकको औचित्य प्रमाणित हुन्छ ।

४.१८. ‘देवकोटाप्रति’ कविता

४.१८.१. संरचना

प्रस्तुत ‘देवकोटाप्रति’ शीर्षकको कविता १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. २७) । सात श्लोकमा रचिएको प्रस्तुत कविता २८ पाउमा विस्तार भएको छ । दुई सय नौ शब्द र पाँच सय ३२ अक्षर समेटिएको प्रस्तुत कविता संरचनाका दृष्टिले लघु आयामको फुटकर कविता हो ।

४.१८.२. लय विधान

प्रस्तुत कविता १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ । संस्कृतका वर्णमात्रिक छन्दमध्ये प्रस्तुत छन्द नेपाली जनमानसमा सबैभन्दा भिजेको र जनमानसले सबैभन्दा बढी रुचाइएको छन्द हो । १९ अक्षरमध्ये सुरुमा १२ अक्षरमा र त्यसपछि सात अक्षरमा विश्राम हुने शास्त्रीय नियम हुने प्रस्तुत छन्दको मिठासले कवितामा साङ्गीतिक रन्को थपेको छ । तर, कविले शब्द चयनमा सतर्कता अपनाउन नसक्दा छैटौँ श्लोकको तेस्रो पाउमा लय भङ्ग भएको देखिन्छ :

‘सिङ्गो हार्दिकता र स्पन्दन कता भेटिन्छ, हेर्दै छु म ।’

४.१८.३. भाव विधान

नेपाली साहित्यका महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटाप्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जली अर्पण गर्दै लेखिएको प्रस्तुत कवितामा कवि दाहालले नेपाली साहित्यमा देवकोटाले पुर्याएको योगदानको सम्मान पूर्वक स्मरण गरेका छन् । नेपाली भाषा, साहित्यको उन्नयनमा देवकोटाले जे जस्तो योगदान पुर्याएका छन्, त्यसैको फल स्वरूप आज नेपाली भाषा साहित्यले समृद्धिको शिखरतर्फको यात्रा सुरु गरेको छ । प्राकृतिक सुन्दरतामा रमाउँदै कल्पनाका उडानमा उड्न रमाउने कविको भावना बुझ्न नसक्नेहरूले उनलाई पागलको सडुङ्गा दिँदै राँचीसम्म पुर्याए । उनैले कोरेको साहित्यको राजमार्गमा यात्रा गरेर आज कैयौँले आफूलाई कविको रूपमा चिनाइरहेका छन्, तैपनि देवकोटालाई उनी जीवित छुन्जेल समाजले कहिल्यै चिन्न सकेन, राज्यले उनको क्षमता आँकन सकेन । देवकोटाका सिर्जनालाई विगतदेखि आजसम्म पनि समाजले राम्ररी मनन गर्न नसकी अर्थ नै नबुझी पढ्ने र पढाउने काम भइरहेकोमा कविलाई दुःख लागेको छ । बाँचुन्जेल देवकोटाको मनमा शान्ति हुन नसके पनि राज्यले उनीप्रति श्रद्धाभाव नराखे पनि कवि दाहालले भने देवकोटाको आत्मा नभङ्कियोस् भन्दै श्रद्धाञ्जली अर्पेका छन् प्रस्तुत देवकोटाप्रति शीर्षकको कवितामा ।

४.१८.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'देवकोटाप्रति' शीर्षक कवितामा नेपाली साहित्यका महाकवि देवकोटालाई तिमी भनेर सम्बोधन गर्दै द्वितीय पुरुष दृष्टि विन्दुको प्रयोग गरेका छन् ।

४.१८.५. भाषाशैली

भाषाशैलीको कुरा गर्दा कवि बलराम दाहाल भाषिक प्रयोगमा निकै सचेत देखिन्छन् । खासगरी तत्सम र तद्भव शब्दको सन्तुलित प्रयोग र अत्यावश्यक अवस्थामा केही आगन्तुक शब्दको प्रयोग गर्न रुचाउने कवि दाहालले यस कवितामा आफ्नो सोही विशेषताको उपयोग गरेका छन् । उनले यस कवितामा काव्यद्वार, प्राचीनता, काव्य, महिमा, भाषा, धर्म, सभ्यता, कोटि, प्रणाम, शाकुन्तल, सत्य, प्रकृति, देश, गद्य, पद्य, महाकवि, काव्य सरिता, युगबोध, छवि, कवि, कीर्तन, छन्द, सृष्टि, दृष्टि जस्ता प्रशस्त तत्सम शब्दका साथमा अनौठा, पगरी, गहिरा, भिखारी अन्धा, विजुली जस्ता तद्भव शब्दको संयोजनले कवितामा भाषिक मिठास थपेका छन् । त्यसैगरी कवि दाहालले नारा, सिकारी, राँची जस्ता आगन्तुक शब्दको उपयोग गरेर तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजन गरेका छन् प्रस्तुत देवकोटाप्रति शीर्षक कवितामा ।

४.१८.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'देवकोटाप्रति' शीर्षक कवितामा कवि बलराम दाहालले अन्त्यानुप्रासको सुमधुर प्रयोग गरेका छन् । उनले थन्कैँदै-तन्कैँदै, जहाँ-यहाँ, शाकुन्तल-पागल, सिकारीहरू-भिखारीहरू, ठोक्किए-पोक्किए, कता-जता, तर्साउँछ-दर्साउँछ, कवि-छवि, कल्पना-भावना, चिन्दछन्-भिन्न छन्, यहाँ-वहाँ, पुष्पाञ्जलि-श्रद्धाञ्जलि जस्ता पद र पदावलीबाट अन्त्यानुप्रासको श्रुति मधुर छटा प्रस्तुत गरेका छन् ।

४.१८.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले नेपाली भाषा साहित्यका महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटाको सम्मानमा लेखेको हुनाले प्रस्तुत कविताको शीर्षक 'देवकोटाप्रति' चयन गरिएको छ । देवकोटाको योगदान सम्झिँदै उनीप्रति श्रद्धाञ्जली अर्पण गरिएको हुनाले यस कविताको शीर्षक उपयुक्त र सार्थक देखिन्छ ।

४.१९. 'रक्सी पुरानै रह्यो' कविता

४.१९.१. संरचना

संरचनागत कुरा गर्दा प्रस्तुत 'रक्सी पुरानै रह्यो' शीर्षकको कविता १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. २९) । यो कविता पाँच श्लोकमा फैलेको छ । कवितामा २० पाउ अर्थात् २० हरफ रहेका छन् । एक सय ६० शब्द र तिन सय ८० अक्षरमा फैलेको प्रस्तुत कविता संरचनाका दृष्टिले लघु आयामको फुटकर कविता हो ।

४.१९.२. लय विधान

कवि बलराम दाहालको प्रस्तुत 'रक्सी पुरानै रह्यो' शीर्षकको कविता १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ । संस्कृतका वर्णमात्रिक छन्दमध्ये नेपाली साहित्यमा पनि बढी नै भिजेको छन्द हो शार्दूलविक्रीडित छन्द । सुरुमा १२ र त्यसपछि बाँकी सात अक्षरमा यति अर्थात् विश्रामको व्यवस्था भएको यो छन्दको मिठासले गर्दा प्रस्तुत कविता पनि श्रुति मधुर बनेको छ ।

४.१९.३. भाव विधान

नेपाली आकाशमा मडारिरहेको कालो बादल हट्ला र छायाङ्ग होला भन्ने अपेक्षा गरे पनि कति परिवर्तनको अनुभव हुन सकिरहेको छैन । मुलुकमा धेरै महाधिवेशन भए, गरिए । तर, जबसम्म मान्छेका

सोच फेरिन्नन् तबसम्म जुलुसको आँधी नै आए पनि त्यसले मुलुकमा कुनै परिवर्तनको शङ्खघोष गर्न सक्दैन । आज हामीले पाखाबाट उठेर चुचुरा ताक्नु छ । बेसीबाट उठेर मुलुकमा विकासको लहर डाक्नु छ । हामीले आँगनको मैलो पुछेर घरको दैलो उघारे पनि नेपाल आमाको मुहार हाँस सकिरहेको छैन, अझै मलिन छ । परिवर्तनका लागि जनताले जतिसुकै ठुलो त्याग गरे पनि मुलुकमा पारिलो र हाँसिलो घाम लाग्न नसकेकोमा कविले चिन्ता व्यक्त गरेका छन् । मुलुकले जतिसुकै ठुलो युद्ध सहनुपरे पनि वा क्रान्तिको बिगुल घन्काए पनि मुलुकमा बोटल मात्र फेरेर केही हुनेवाला छैन । हामीले जबसम्म बोटलभित्रको रक्सी फेर्न सक्दैनौं तबसम्म त्यसको कुनै अर्थ रहँदैन । बोटल नयाँ भए पनि रक्सी पुरानै रह्यो भने त्यसको कुनै अर्थ हुँदैन भन्ने आशय कविको छ ।

यसरी कविले समस्यापूर्ति शैलीमा प्रत्येक श्लोकको चौथो पाउमा 'मात्रै बोटल फेरियो तर उही रक्सी पुरानै रह्यो' भन्ने पङ्क्ति दोहोर्याउँदै मुलुकमा ठुला ठुला क्रान्ति भए पनि अझैसम्म जनताले परिवर्तनको अनुभव गर्न नसकिरहेको यथार्थलाई कविताको विषयवस्तु बनाएका छन् ।

४.१९.४. कथन पद्धति

कवि दाहालले यस 'रक्सी पुरानै रह्यो' शीर्षकको कवितामा तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् ।

४.१९.५. भाषाशैली

कवि बलराम दाहालले यस कवितामा पनि नेपाली समाजमा भिजेका तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्द चयन गरेका छन् । उनले महाधिवेशन, राष्ट्र, विकास, आशा स्तम्भ, पवित्र, मन्दाकिनी, श्रद्धा, सौदामिनी जस्ता तत्सम शब्दका साथमा पेट, मादल, बादल, रह्रिलो, आँधी, पाखा, चुचुरा, हात, बेसी, मैलो, आँगन, घर, दैलो, मुहार, पारिलो, हाँसिलो, सिउँदो, लेक, माटो, लडाइँ जस्ता सरल तद्भव र भर्रा शब्द र रक्सी, बोटल, जुलुस जस्ता केही आगन्तुक शब्दको समेत बडो सुन्दर संयोजन गरेका छन् । प्रस्तुत कवितामा कविले तत्सम र आगन्तुक शब्दका तुलनामा तद्भव र भर्रा नेपाली शब्दको अधिक प्रयोग गरेका छन् । कतिपय शब्द उनी आफैले निर्माण समेत गरेका छन्, जस्तै : रह्रिलो ।

४.१९.६. बिम्ब/अलङ्कार

कवि दाहालले प्रस्तुत 'रक्सी पुरानै रह्यो' शीर्षक कवितामा अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । उनले मादल-बादल, हेरिए-फेरिए, गयो-रह्यो, तर-पर, मन्दाकिनी-सौदामिनी, सह्यो-रह्यो जस्ता शब्दका माध्यमबाट कवितामा अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । यसका साथै प्रस्तुत कविताको शीर्षक 'रक्सी पुरानै रह्यो' भन्ने पदावलीलाई प्रतीकात्मक रूपमा प्रयोग गरिएको छ । यसले मुलुकमा जतिसुकै परिवर्तन भए पनि व्यवस्था, व्यक्ति जे जे परिवर्तन भए पनि पुरानो सोच यथावत् रहेको हुनाले मुलुकमा परिवर्तनको अनुभव गर्न नसकिएको कुरालाई प्रस्तुत शीर्षकले सङ्केत गरेको छ । त्यसै गरी कविले 'बेसी लेक जता पुगे पनि कतै चम्केन सौदामिनी' भन्दै सौदामिनी शब्दलाई मुलुकमा आउनुपर्ने परिवर्तनको अर्थमा प्रयोग गरेका छन् । जसले मुलुकमा आएको लोकतान्त्रिक गणतन्त्रलाई बिम्बात्मक रूपमा सङ्केत गरेको छ ।

४.१९.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कविताको शीर्षक 'रक्सी पुरानै रह्यो' प्रतीकात्मक रूपमा प्रयोग गरेका छन् । मुलुकमा ठुला ठुला क्रान्ति भए, परिवर्तनकै लागि भनेर निकै लामो युद्ध पनि मुलुकले भोग्यो, पुरानो सत्ता ढालेर नयाँ सत्ता पनि ल्याइयो तैपनि मुलुक र मुलुकवासीले कुनै परिवर्तनको अनुभव गर्न पाएका छैनन् । त्यसैले जे जस्तो परिवर्तन भए पनि व्यक्तिको सोच परिवर्तन नभएसम्म केही हुँदैन भन्ने अर्थमा बोटल मात्र फेरियो, रक्सी फेरिएन, उही पुरानै रह्यो भन्ने आशय बोकेको हुनाले प्रस्तुत कविताको शीर्षक प्रतीकात्मक रूपमा सार्थक छ ।

४.२०. 'आग्लो नलागोस् तर' कविता

४.२०.१. संरचना

यस 'आग्लो नलागोस् तर' शीर्षकको कविता १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ३०) । पाँच श्लोकमा संरचित प्रस्तुत कवितामा कुल २० पाउ रहेका छन् । एक सय ७० शब्द र तिन सय ८० अक्षरमा संरचित प्रस्तुत कविता लघु संरचनाको फुटकर कविता हो ।

४.२०.२. लय विधान

१९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दको लय विधान रहेको प्रस्तुत 'आग्लो नलागोस् तर' शीर्षकको कवितामा सुरुमा १२ र त्यसपछि बाँकी सात अक्षरमा विश्राम हुने शास्त्रीय नियम रहेको छ । नेपाली जनमानसमा निकै लोकप्रिय यस छन्दको श्रुति मधुरता प्रस्तुत कवितामा अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.२०.३. भाव विधान

हाम्रो समाजमा बेला बेलामा अनेक थरी राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक क्रान्तिका नारा सुनिँदै आएको छ । अनेक थरी थोत्रा नीति, नियम फेर्नु छ । गलत परम्परा सबै बढारेर फ्याँक्नु पनि छ । आजको क्रान्तिले भोलि सिर्जनाको ढोका खोल्न सक्नुपर्छ । त्यसैले क्रान्तिका माध्यमबाट ढोकाभित्र सबै बटुल्नु छ भने ढोकामा आग्लो लगाएर हुँदैन भन्ने आशय कविले प्रस्तुत आग्लो नलागोस् तर शीर्षकको कवितामा प्रकट गरेका छन् । परिवर्तनको बाढीले समाजलाई गलत दिशातिर धकेल्छ कि भन्ने चिन्ताले कविले भ्याल ढोकामा बलियो चुकुल फेर्न र को आउँछ, र को जान्छ, त्यसको लेखाजोखा राख्न आग्रह गरेका छन् । हाम्रो समाजका कैयौँ कथा लेखिनै बाँकी छ भन्दै कविले देशको अधोगति नहोस्, यो मुलुक सबैको साभ्ना घर बनोस् भन्ने आशय पोखेका छन् । ढोकामा आग्लो लगाएर कसैलाई निषेध गरेर सबैलाई ढोकाभित्र समेट्न सकिँदैन । त्यसैले सबैलाई भेला गराएर सबैको विचारको सम्मान गर्दै अधि बढ्ने हो भने यो मुलुकमा बेला बेलामा भएका क्रान्ति सार्थक हुने विचार कविले प्रस्तुत कवितामा प्रकट गरेका छन् ।

४.२०.४. कथन पद्धति

प्रस्तुत 'आग्लो नलागोस् तर' शीर्षकको कविता तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दुमा आधारित छ । कवि बलराम दाहालले बाह्य दृष्टि विन्दुबाट यस कविताको रचना गरेका छन् ।

४.२०.५. भाषाशैली

भाषाशैलीको कुरा गर्दा प्रस्तुत 'आग्लो नलागोस् तर' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले सरल, सहज भाषाको प्रयोग गरेका छन् । उनले तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको सुन्दर संयोजन गरेका छन् । निरन्तर, कुसुम, कविता, क्रान्ति, कथा, अधोगति, विचार, शुद्ध जस्ता तत्सम शब्द, टाढा, ढोका, वास्ना, थोत्रा, अमिला, पाना, भोलि, सिर्जना, आग्लो, सिङ्गो, बस्ती, भर्ना, साभ्ना जस्ता तद्भव र कागज, चुकुल जस्ता सीमित आगन्तुक शब्दको मनोहारिता भेट्न सकिने प्रस्तुत कविताको भाषाशैली सुन्दर छ ।

४.२०.६. बिम्ब/अलङ्कार

अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा सचेत कवि दाहालले प्रस्तुत 'आग्लो नलागोस् तर' शीर्षकको कवितामा पनि अन्त्यानुप्रासको मनोहर प्रयोग गरेका छन् । भुल्यो-खुल्यो, घेर्नु छ-फेर्नु छ, घर-तर, हेर्नु है-फेर्नु है, पसी-बसी जस्ता पद तथा पदावलीको प्रयोगले कवितामा अन्त्यानुप्रासको श्रुति मधुरता थपेको छ । त्यसै गरी कविले 'भन्लान् अस्मृतको भर्यो अब भर्यो भर्ना भर्यो भर्भर्' भन्ने पङ्क्तिमा 'भ' अक्षरको पटक पटक आवृत्ति गरेर अनुप्रास अलङ्कार प्रयोग गरेका छन् ।

४.२०.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कविताको शीर्षकका रूपमा 'आग्लो नलागोस् तर' भन्ने पदावली चयन गरेका छन् । यदि हामीले ढोकाभिन्न सबै बटुल्नु छ भने ढोकामा आग्लो लगाएर हुँदैन । त्यसैले कविले यस कवितामा कसैलाई बाहिर पठाएर वा बाहिर पारेर यो देशमा न एकता कायम हुन सक्छ न त विकास नै हुन सक्छ भन्ने सङ्केत गरेका छन् । त्यसैले कसैमाथि कुनै प्रकारको छेकवार लगाएर देश निर्माण गर्न नसकिने तथ्यको सङ्केत गरिएको हुनाले कविताको शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

४.२१. 'प्यारो नेपाल' कविता

४.२१.१. संरचना

१९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'प्यारो नेपाल' शीर्षकको कविता पाँच श्लोक र २० पाउमा संरचित छ (दाहाल, २०६८, पृ. ३१) । एक सय ६७ शब्द र तिन सय ८० अक्षरको संरचनामा संरचित प्रस्तुत कविता लघु आयामको देखिन्छ ।

४.२१.२. लय विधान

प्रस्तुत 'प्यारो नेपाल' कविता १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ । १२ र ७ अक्षरमा क्रमशः यति अर्थात् विश्राम हुने शास्त्रीय विधान रहेको प्रस्तुत छन्दको साङ्गीतिक श्रुति मधुरता कवितामा सहज रूपमा अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.२१.३. भाव विधान

अनेक टुकामा विभक्त नेपाल पृथ्वी नारायण शाहको प्रयासबाट एक भए पनि फेरि टुक्रिने खतरा बढेर गएकोतर्फ कविले चिन्ता प्रकट गरेका छन् । यतिखेर राज्य सत्ता चलाउनेहरूलाई कविले पहिले मुलुक बनाइसकेपछि मात्र सङ्घीयता वा अन्य नाममा भागै लगाउनुपरे पनि लगाइरहुँला, पहिले मुलुक बनाउनेतिर नै ध्यान दिनुपर्यो भन्ने आग्रह गरेका छन् कविले । आज समय छँदै मुलुक बनाउन सकिएन भने भोलि सङ्कट आइपरेको क्षणमा पछुताउनुपर्नेछ भन्दै कविले समयमै मुलुक निर्माणमा एक हुन सत्ताको सेरोफेरोमा रमाइरहेकाहरूसित आग्रह गरेका छन् । पुर्खाले सिर्जेको अनमोल विगतको रक्षा गर्दै हामीले मुलुकको नयाँ इतिहास लेख्नु छ भन्दै कविले सत्ताको चक्कर काटिरहेकाहरूलाई सम्बोधन गर्दै मनको कलुषता फालेर, सबै दुर्गुण बिर्सेर र हातमा हात तथा काँधमा काँध मिलाएर अघि बढ्न आग्रह गरेका छन् । मलुकमा अनेक राजनीतिक दल छन्, अनेक नामधारी संस्था छन्, व्यक्ति पनि अनेक छन्, तैपनि नेपाल जस्तो प्यारो कोही पनि हुन नसक्ने विचार कविले सार्वजनिक गरेका छन् ।

४.२१.४. कथन पद्धति

प्रस्तुत 'प्यारो नेपाल' शीर्षकको कवितामा कविले प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । उनले मुलुकमा सत्ता चलाउनेहरूलाई द्वितीय पुरुष आज्ञार्थक क्रियापद प्रयोग गरी सम्बोधन गर्दै आफ्नो विचार वा दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेका छन् ।

४.२१.५. भाषाशैली

कवि बलराम दाहालले तत्सम र तद्भव शब्द बढी खेलाए पनि आगन्तुक शब्दलाई चाहिँ अत्यावश्यक अवस्थामा मात्र प्रयोग गर्ने गरेका छन् । उनको यही विशेषता प्रस्तुत 'प्यारो नेपाल' शीर्षकको कवितामा पनि देख्न सकिन्छ । प्रस्तुत कवितामा कविले तत्सम र तद्भव शब्दको भरपुर प्रयोग गरे पनि निकै कम आगन्तुक शब्द प्रयोग गरेको देखिन्छ । उनले जल, पवन, स्वर्ग, सहसा, पाताल, बलिदान, राज्य, ध्वजा, शिखर, सौन्दर्य, कलुषता, दुर्गुण, संस्था, प्रिय, सुन्दर, सत्ता आदि नेपाली जनजिब्रोमा भिजिसकेका तत्सम शब्दका साथमा माटो, अबगाल, प्यारो, आँखा, बिन्ती, कोठा, घर, छानो, किला, हुरी, पानी जस्ता

तद्भव र भर्ता शब्द र खबर, बेहाल जस्ता निकै कम आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजनबाट कवितामा मिठास थपेका छन् ।

४.२१.६. बिम्ब/अलङ्कार

कवि दाहालले प्रस्तुत 'प्यारो नेपाल' शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा अत्यन्तै सचेतता अपनाएका छन् । उनले हुकैँ यहीं-टुक्रैँ यहीं, बेहाल यो-नेपाल यो, तर-घर, सुन्दर-हन्छर, आँकुरा-कुरा जस्ता पद तथा पदावलीको प्रयोगबाट अन्त्यानुप्रासको मिठास थपेका छन् प्रस्तुत कवितामा ।

४.२१.७. शीर्षक

आफ्नो प्यारो मुलुक नेपालको गुणगान गर्दै त्यसको अखण्डता, सुदृढीकरण, विकास निर्माण र प्रगतिको कामना गरिएको हुनाले प्रस्तुत 'प्यारो नेपाल' शीर्षक सफल देखिन्छ । शीर्षकमा आएको प्यारो शब्द नेपाल शब्दको विशेषणका रूपमा आएको छ । जसले गर्दा विशेष्य पद नेपालको विशेषण पद प्यारो शब्दले गर्दा नेपाल हामी सबैको प्यारो मुलुक भएको सङ्केत गरेको छ ।

४.२२. 'सम्भेर आऊ प्रिये' कविता

४.२२.१. संरचना

लघु आयाममा फैलेको प्रस्तुत 'सम्भेर आऊ प्रिये' शीर्षकको कविता १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ३२) । कविता ६ श्लोक र २४ पाउमा फैलेको छ । कवितामा एक सय ९७ शब्द र चार सय ५६ अक्षर समेटिएका छन् । आकारका दृष्टिले प्रस्तुत कविता लघु संरचनामा संरचित छ ।

४.२२.२. लय विधान

प्रस्तुत 'सम्भेर आऊ प्रिये' शीर्षकको कविता १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ । वाचनका दृष्टिले नेपाली जनमानसमा सबैभन्दा बढी भिजेको प्रस्तुत छन्दमा क्रमशः १२ र ७ अक्षरमा विश्राम हुने यति व्यवस्था पाइन्छ । प्रस्तुत कवितामा शार्दूलविक्रीडित छन्दको मिठास भेट्न सकिन्छ ।

४.२२.३. भाव विधान

जीवनका अनन्त सपना छाडेर पर पुगे पनि विगतको जीवन्त भेटको सम्भनाले तानिएर बाटामा भेटिएका कुनै बच्चे पातको साङ्गीतिक धुन सम्भेर फर्की आऊ भन्दै कविले आफ्नी प्रेयसीलाई डाकेका छन् प्रस्तुत 'सम्भेर आऊ प्रिये' शीर्षकको कवितामा । नजिक हुँदा वास्ता नभए पनि टाढा हुँदा महत्त्व भन् भन् बढ्ने, माया उति उति गाढा हुने हुँदा जति टाढा पुगे पनि जीवनमा कुनै विपत्ति आइलागेको समयमा आफूलाई सम्भेर फर्की आउन कविले आग्रह गरेका छन् । तिमी जता पुगे पनि तिम्रो जीवनमा कुनै पनि दिन दुःख बोकेर आएको अवस्थामा यहाँ तिम्रा लागि हरदम ढोका खुलै छ, तिम्रा सपना, विपना चैते हुरीले उडाइलगे पनि म कुलो खन्दै हुनेछु, तिमी पानी बनेर आऊ भन्दै कविले आफूबाट टाढा पुगेकी प्रेयसीलाई फर्केर आउन आग्रह गरेका छन् । जीवनमा निकै माथि पुगेर उच्च तहको सफलता प्राप्त होस्, तिम्रै प्रशंसामा ताली बज्नु र समाजमा ठुलो मान्छेभन्दा पनि असल मान्छे बनेर चिनिन सक् भन्ने अनुरोध पनि कविले गरेका छन् । आफूले देश उठाउने शपथ खाएको हुनाले आफूलाई आड र भरोसा अनि होस्तेमा हँसे गर्न पनि तिमी मलाई सम्भेर आउनैपर्छ भन्दै कविले आफूलाई सम्भेर आउन टाढा पुगेकी प्रेयसीलाई अनुरोध गरेका छन् प्रस्तुत 'सम्भेर आऊ प्रिये' शीर्षकको कवितामा ।

४.२२.४. कथन पद्धति

प्रस्तुत 'सम्भेर आऊ प्रिये' शीर्षकको कवितामा कविले प्रथम पुरुषको 'म' पात्रका तर्फबाट द्वितीय पुरुषको 'तिमी' पात्रलाई सम्भेर अभिव्यक्त गरेका विचारलाई लिपिबद्ध गरेका छन् । कवितामा कविले प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् ।

४.२२.५. भाषाशैली

सरल शब्द चयनमा विश्वास गर्ने कवि बलराम दाहालले यस 'सम्भेर आऊ प्रिये' शीर्षकको कवितामा पनि सरल, सहज र सरस शब्द प्रयोग गरेका छन् । उनले विगत, जीवन्त, मार्ग, सङ्केत, धर्ती, तृष्णा, अनन्त, जीवन, सङ्गीत, महत्त्व, सर्वदा, विशाल, छाया, शपथ, सदा, लोक, धुन जस्ता सरल तत्सम शब्दका साथमा पाटो, भेट, नौलो, घुम्ती, सपना, पात, आफन्त, टाढा, बाटो, हुरी, कुलो, विपना, ढोका, आवाज, भरोसा, विरुवा, फेदी जस्ता तद्भव र भर्सा शब्द अनि सफर, नजर, आवाज, लस्कर जस्ता आगन्तुक शब्द समेतको संयोजनबाट भाषिक मिठास थपेका छन् ।

४.२२.६. विम्ब/अलङ्कार

आफ्ना अधिकांश छन्द कवितामा अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा अत्यन्तै सचेतता दर्साएका बलराम दाहालले प्रस्तुत 'सम्भेर आऊ प्रिये' शीर्षकको कवितामा पनि अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा विशेष होसियारी अपनाएको देखिन्छ । उनले भेटले-सङ्केतले, जब-अब, भए-प्रिये, सर्वदा-सदा, जता-यता, गर-लस्कर, गर-भर जस्ता पद र पदावलीको प्रयोगबाट कवितामा अन्त्यानुप्रासको झङ्कार प्रस्तुत गरेका छन् ।

४.२२.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कविताको शीर्षकका रूपमा वाक्यात्मक पदावली चयन गरेका छन् । आज्ञार्थक क्रियापदयुक्त पदावलीले कसैलाई आउन आदेश दिइरहेको वा अनुरोध गरिरहेको सङ्केत गरेको छ । आफूदेखि टाढा पुगेकी प्रेयसीलाई विगतका रमाइलो भेटघाट सम्भेर आफूलाई राष्ट्र निर्माणमा सघाउन फर्केर आउन अनुरोध गरिएको हुनाले कविताको शीर्षक उपयुक्त प्रतीत हुन्छ ।

४.२३. 'सोचेर आऊ तर' कविता

४.२३.१. संरचना

पाँच श्लोक, २० पाउमा फैलेको लघु आकारको फुटकर रचना हो कवि बलराम दाहालको 'सोचेर आऊ तर' शीर्षकको कविता (दाहाल, २०६८, पृ. ३३) । १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको प्रस्तुत कवितामा कविले एक सय ६३ शब्द र तीन सय ८० अक्षर अटाएका छन् ।

४.२३.२. लय विधान

कवि दाहालले आफ्ना अन्य कवितामा भन्ने प्रस्तुत 'सोचेर आऊ तर' शीर्षकको कवितामा पनि नेपाली जनमानसमा अलग छाप पार्न सफल १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्द प्रयोग गरेका छन् । १२ र ७ अक्षरमा विश्राम अर्थात् यति हुने व्यवस्था भएको यस छन्दको लयात्मक मिठास कवितामा सहजै अनुभूत गर्न सकिन्छ ।

४.२३.३. भाव विधान

परिवर्तनका लागि बन्दुक र बारुदको युद्धभन्दा पनि कलमको युद्ध बढी प्रभावकारी हुन्छ भन्दै कविले आफ्नो कलम विरुद्ध कसले जुध्न सक्ला र भन्ने प्रश्न गरेका छन् । अब क्रान्ति क्रान्ति भनेर मात्र केही हुनेवाला छैन । हामीले कस्तो क्रान्ति खोजेका हौं, मुलुकलाई कस्तो क्रान्तिको खाँचो छ, त्यसको प्रस्ट खाका तयार गरेर अब गोलीको क्रान्ति छोडेर वार्ता मार्फत शान्तिपूर्ण क्रान्ति अधि बढाउनु

आवश्यक छ । अब पनि बन्दुक, बारुद र बमको युद्ध लडेर क्रान्ति पुरा गर्ने सपना देखिन्छ भने त्यो मुलुक र मुलुकवासीका लागि राष्ट्रघात नै हो भन्दै कविले शान्तिपूर्ण सङ्घर्षको पक्षमा आवाज उठाएका छन्, प्रस्तुत कवितामा । एउटा शासकको बिदाइ गर्दा उठेका हातहरूले राम्ररी विश्राम लिइनसक्यै फेरि अर्को शासकलाई बिदा गर्न क्रान्ति गर्नुपर्ने स्थिति आइसकेको तर्फ कविले सङ्केत गरेका छन् । जनतालाई रुमानी सपना देखाएर क्रान्तिमा होम्ने क्रान्तिकारी नेताहरूले गरेका भाषण जनताले भुलिसकेका छैनन् । हिजो जनतालाई अनेक रहिरला सपना देखाउने भाषणकर्ता नेताहरूले जनतासामु गरेका वचन भुलेर उनीहरू आफ्नै स्वार्थमा रमिरहेका छन् । त्यसैले उनीहरूलाई ठिक बाटामा ल्याउन पनि अब कलमको बन्दुक बोक्नुपर्ने अवस्था आएको छ भन्दै कविले मुलुकले कस्तो क्रान्ति थग्न सक्छ, अब सोच विचार गरेर त्यस्तै क्रान्ति अघि बढाउनुपर्नेमा जोड दिएका छन् ।

४.२३.४. कथन पद्धति

कवि दाहालले प्रस्तुत 'सोचेर आऊ तर' शीर्षकको कवितामा प्रथम पुरुष द्रष्टा 'म' पात्रका तर्फबाट क्रान्ति चाहने जति सबैलाई द्वितीय पुरुष 'तिमी' सर्वनामबाट सम्बोधन गरेका छन् । त्यसैले प्रस्तुत कवितामा प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दुका साथमा कविले द्वितीय पुरुष दृष्टि विन्दुको पनि प्रयोग गरेको देखिन्छ ।

४.२३.५. भाषाशैली

प्रस्तुत 'सोचेर आऊ तर' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले अत्यन्तै सरल, सहज र सरस भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन् । तत्सम र तद्भव शब्द प्रयोगमा विशेष रुचि राख्ने र आवश्यकता अनुसार सीमित आगन्तुक शब्दको प्रयोग गर्ने कविले प्रस्तुत कवितामा पनि आफ्नो सोही खुबी दर्साएका छन् । कविले विरुद्ध, रण, क्रान्ति, स्पष्ट, राष्ट्र, वार्ता, राष्ट्रघाती, विचार, शासक, साक्षी, भाषण, संवेदना, घोषणा, सेना, स्वयं जस्ता नेपाली जिब्रोमा भिजिसकेका तत्सम शब्दका साथमा कलम, मुख, भाका, खाका, गुलियो, बिदाइ, हात, खुट्टा जस्ता तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्द र बारुद, बन्दुक, अमिन, मुलुक, टेप जस्ता निकै कम आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजनबाट भाषिक मिठास थपेका छन् ।

४.२३.६. बिम्ब/अलङ्कार

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'सोचेर आऊ तर' शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । उनले जुध-बारुद, गर-तर, भाका भने-खाका बने, पर-तर, तब-अब, थर्थर-तर जस्ता पद तथा पदावलीको प्रयोगले कवितामा अन्त्यानुप्रासको रौनक थपेको छ । त्यसै गरी कविले कवितामा 'बारम्बार छ क्रान्ति क्रान्ति मुखमा हो क्रान्ति भाका भने' भन्दै अनुप्रास अलङ्कार पनि प्रयोग गरेका छन् ।

४.२३.७. शीर्षक

मुलुकलाई कस्तो क्रान्ति आवश्यक पर्छ राम्ररी सोचेर आऊ भन्दै कविले बन्दुक र हतियारको क्रान्ति छाडेर कलमको क्रान्ति आवश्यक छ भन्दै राम्ररी सोचेर मात्र क्रान्तिको मैदानमा आउन आग्रह गरेका छन् । आज्ञार्थक वाक्यको तहमा रहेको प्रस्तुत कविताको शीर्षकमा आएको वाक्यात्मक पदावलीले क्रान्तिका लागि हतार गरेर नहुने भन्दै राम्ररी सोचेर सही निर्णय लिनु आवश्यक भएको सङ्केत गरेको हुनाले प्रस्तुत शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

४.२४. 'बाल्यकाल र कर्तव्य' कविता

४.२४.१. संरचना

प्रस्तुत 'बाल्यकाल र कर्तव्य' शीर्षकको कविता १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ३४)। जम्मा पाँच अनुच्छेद वा पाँच श्लोकमा फैलेको यस कवितामा २० पाउ रहेका छन्। चार चार पाउको एक श्लोक वा अनुच्छेद हुने संरचनामा रहेको प्रस्तुत कवितामा एक सय ५४ शब्द र तिन सय ८० अक्षर रहेका छन्।

४.२४.२. लय विधान

प्रस्तुत 'बाल्यकाल र कर्तव्य' शीर्षकको कविता शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ। १२ र ७ अक्षरमा विश्राम हुने प्रस्तुत छन्दको साङ्गीतिक श्रुति मधुरताको सहज अनुभूति कवितामा गर्न सकिन्छ।

४.२४.३. भाव विधान

कवि बलराम दाहालको जन्म दोलखा जिल्लामा पर्ने सुन्द्रावतीमा भएको हो। गौरीशङ्करको काखमा पर्ने उनको गाउँ कालिञ्चोक पुगेर भीमेश्वर दर्शन गरेपछि यसो हेर्दा नजिकै उनको घर देख्न सकिन्छ भन्दै कविले आफू जन्मेको गाउँ, आफ्नो बाल्यकाल र कर्तव्यबारे बताएका छन् प्रस्तुत कवितामा। बाल्यकालमा बाखा चराउने निहुँ गरेर बाबाको मोजा डल्लो पारेर भकुन्डो खेल्दा घरमा सजाय पाएको प्रसङ्गदेखि कविले गाउँ समाजका धेरै कुरा सम्झेका छन् कवितामा। आफू सानो छँदा गाउँघरमा कतै कसी काटिएको खबर सुन्दा पनि हेर्न पुग्ने गरेको भए पनि अहिले भने मान्छे नै काटिए पनि खासै वास्ता लाग्न छाडिसकेको तर्फ कविले चिन्ता व्यक्त गरेका छन्। बाबुआमाले बलराम नाम किन राखेका होलान् भन्ने प्रश्न गर्दै आफूले त्यो नाम सार्थक बनाउन सक्ने हो कि होइन भन्ने चिन्ताले कविलाई सताएको देखिन्छ। आमाले असिना, पानी सहँदै पसिना बगाएर आफ्ना लागि गरेको दुःखको गुन तिर्न अझै बाँकी रहेको कविले बताएका छन्।

४.२४.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले आफ्नो बाल्यकाल र आफ्नो कर्तव्य स्मरण गर्दै रचना गरेको प्रस्तुत 'बाल्यकाल र कर्तव्य' शीर्षकको कवितामा प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दुको प्रयोग गरेका छन्। प्रस्तुत कविता कवि प्रौढोक्तिको एक सुन्दर नमुना बनेको छ।

४.२४.५. भाषाशैली

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'बाल्यकाल र कर्तव्य' शीर्षकको कवितामा नेपाली भाषामा प्रचलित सरल तत्सम शब्दका साथमा रसिला तद्भव शब्दको मिठास पस्केका छन्। उनले गौरी शङ्कर, दर्शन, भीमेश्वर, शिर, सार्थक, अनर्थ, कर्तव्य, क्षमा, जीवन, दुःख, विगत, धर्ती जस्ता तत्सम शब्दका साथमा हिमाल, डिल, घर, बाखा, निहुँ, भकुन्डो, रहर, कान्ला, टुटुल्को, साँझ, गाउँ, मानिस, बारी, खेत, चउर, मैलो, धुलो, आमा, बुबा, सपना, टाढा, असिना, पसिना, पानी, धारा, ठट्टा, अधुरा जस्ता प्रशस्त तद्भव र झर्ना नेपाली शब्द र मोजा, खसी, वास्ता जस्ता आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजन गरेका छन्। यसका साथै, कविले चिरिच्याँट्ट, टक्क, फुङ्ग जस्ता अनुकरणात्मक शब्दको समेत उपयोग गरेर भाषाशैलीमा थप मिठास ल्याएका छन्।

४.२४.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'बाल्यकाल र कर्तव्य' शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रासको श्रुति मधुरताको अनुभव गर्न सकिन्छ। कविले यस कवितामा छर-भीमेश्वर, घर-तर, कति-खती, त्यता-यता, चल्याँ-थियाँ, किन-दिन, जिस्कँदा-बिदा जस्ता पद र पदावलीको प्रयोगबाट कवितामा अन्त्यानुप्रासको मिठास ल्याएका छन्।

४.२४.७. शीर्षक

कविले कविताको शीर्षकका रूपमा तीन शब्दयुक्त पदावली चयन गरेका छन्। उनले 'बाल्यकाल र कर्तव्य' शीर्षकको माध्यमबाट आफ्नो बाल्यकाल र आफूले निर्वाह गर्नुपर्ने कर्तव्यबारे चर्चा गरेका छन्। त्यसैले प्रस्तुत शीर्षक सार्थक देखिन्छ।

४.२५. 'वैशाख लागेपछि' कविता

४.२५.१. संरचना

'वैशाख लागेपछि' कविता शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ३५)। १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दका जम्मा पाँच श्लोक अर्थात् पाँच अनुच्छेदमा फैलेको यस कवितामा २० पाउ अर्थात् पङ्क्ति रहेका छन्। कवितामा एक सय ५२ शब्द र तिन सय ८० अक्षर अटेका छन्। प्रस्तुत कविता लघु आयाममा संरचित फुटकर कविता हो।

४.२५.२. लय विधान

प्रस्तुत 'वैशाख लागेपछि' शीर्षकको कवितामा शार्दूलविक्रीडित छन्दको लय पाइन्छ। १९ अक्षरको संरचना रहने प्रत्येक पाउमा १२ र सात अक्षरमा यति विश्राम हुने शास्त्रीय नियम पाइन्छ। प्रस्तुत कवितामा नेपाली जनजिब्रोले अत्यधिक रुचाएको शार्दूलविक्रीडित छन्दको सहज प्रवाह अनुभव हुन्छ।

४.२५.३. भाव विधान

शिशिर ऋतुको विदाइपछि, धर्तीले सबै कुरा विर्सेर आनन्दको घुम्टो खोल्दा सर्वत्र मनोहारी सौन्दर्य पोखिने र त्यस्तो सौन्दर्यले वैशाख लागेपछि, सबैमा कुत्कुती लगाउने भाव कविले कवितामा पोखेका छन्। धर्तीमा प्रकृतिको बैँस पोखिएपछि, बुढाबुढीदेखि बालबालिका र युवा युवतीसम्म सबै प्रकृतिको लीलामा भुम्मिने हुनाले वैशाखको अलग महत्त्व भएको विचार कविको छ। सिरसिरे बतासको तालमा पातको सुरिलो सङ्गीतमा भुम्दै काफल चरीले सबैका लागि स्वागत गान प्रस्तुत गरेपछि, सबैमा कुत्कुती लाग्न थाल्छ। थाकेका बटुवाले एकैछिन डिलमा बस्दा आफ्नो सम्पूर्ण थकान भुल्ने जादु पनि वैशाखमा पाइन्छ। वैशाखमा धर्तीमा पोखिने प्रकृतिको रहरलाग्दो सुन्दरतामा मान्छे मात्र नभई स्वयं सृष्टि सर्जक नै पनि लोभिएका हुन सक्ने भन्दै राति राति धर्तीमा आएर रहरिला परी चरीहरूलाई भेटेर गएको हुन सक्छ, भन्ने आशङ्का कविले कवितामा गरेका छन्। अहिलेको सृष्टिको सुन्दरता समाप्त भइसकेपछि, विधाताले अझै मनोहारी सिर्जना सृष्टि गरुन् भन्ने कविको अपेक्षा छ।

यसरी प्रस्तुत 'वैशाख लागेपछि' कवितामा धर्तीमा वैशाख आएपछि, प्रकृतिले उदारतापूर्वक प्राकृतिक सौन्दर्य खन्याइदिने हुनाले सबैमा त्यसले वासन्ती कुत्कुती लगाउने विचार कविले व्यक्त गरेका छन्।

४.२५.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'वैशाख लागेपछि' शीर्षकको कवितामा तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन्।

४.२५.५. भाषाशैली

वैशाख महिनामा धर्तीमा पोखिने प्राकृतिक सौन्दर्यको बयान गरिएको प्रस्तुत वैशाख लागेपछि कवितामा कविले सरल, सहज र सरस शब्द संयोजन गरेका छन्। उनले तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजनबाट भाषाशैलीमा मिठास ल्याएका छन्। उनले वसुन्धरा, आनन्द, लावण्य, तरङ्ग, धर्ती, आदेश, प्रकृति, शिशिर, वायु, युवती, सर्वाङ्ग, धैर्य, स्वागत गान, वसन्त, सृष्टि सर्जक, स्वयं, सुन्दर जस्ता तत्सम शब्दका साथमा घुम्टो, ठन्डी, नौलो, ठिटा, पात, विचरा, ओठ, चरी, काफल, बटुवा, टुसुक्क,

डिल, लहरा, पड्खा, रहरिला, तिर्खा जस्ता तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्दको कुशल संयोजनबाट भाषिक मिठास थपेका छन् । कविले यस कवितामा मात्र एउटा आगन्तुक शब्दको प्रयोग गरेका छन् । त्यो हो, जादु ।

४.२५.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'वैशाख लागेपछि' कवितामा कविले अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । उनले आनन्दको-लावण्यको, भगाएपछि-लागेपछि, दिन-किन, पठाएपछि-लागेपछि, जिस्क्याउँछ-मिठ्याउँछ, डाकेपछि-लागेपछि जस्ता पदहरूको प्रयोगबाट कवितामा अन्त्यानुप्रासको छटा प्रस्तुत गरेका छन् ।

४.२५.७. शीर्षक

कविताको शीर्षकका रूपमा कवि दाहालले 'वैशाख लागेपछि' रोजेका छन् । उनले यस कवितामा वैशाख लागेपछि, धर्तीमा पोखिने अपार सौन्दर्य र त्यसमा मानव हृदयमा लगाउने कुत्कुतीलाई मुख्य विषय वस्तु बनाएको हुनाले कविताको शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

४.२६. 'कवितै कविता लाग्छन्' कविता

४.२६.१. संरचना

चार हरफे अनुष्टुप् छन्दका ६ श्लोक र २४ हरफको संरचनामा रहेको प्रस्तुत 'कवितै कविता लाग्छन्' शीर्षकको कविता संरचनाका दृष्टिले लघु आयाममा संरचित कविता हो (दाहाल, २०६८, पृ. ३६) । आठ अक्षरको एक पाउ हुने र चार पाउको एक श्लोक हुने अनुष्टुप् छन्दको शास्त्रीय परम्परा भए पनि कविले एक पाउमा आठ आठ अक्षरका दुई पाउ मिसाएर जम्मा आठ पाउलाई चार पाउ बनाएका छन् । यस कवितामा एक सय ६९ शब्द र तिन सय ८४ अक्षरको संयोगबाट प्रस्तुत कविताको संरचना पूर्ण भएको छ ।

४.२६.२. लय विधान

आठ अक्षरी अनुष्टुप् छन्दको साङ्गीतिक छटा भेटिने प्रस्तुत कविता लयात्मक छ । विशेष गरी धार्मिक ग्रन्थदेखि अन्य रचनासम्म धेरैतिर फैलेको अनुष्टुप् छन्द नेपाली जनमानसमा भिजेको छ । सोही अनुष्टुप् छन्दको श्रुति मधुरताले प्रस्तुत कविता रम्य बनेको छ ।

४.२६.३. भाव विधान

कवि बलराम दाहाल रुँदा, हाँस्दा, निदाउँदा सर्वत्र कवितै कविता देख्छन् । मान्छेलाई नै कविता देख्ने कवि धर्तीलाई नै कविको घर ठान्छन् । उनलाई यस धर्तीमा उम्रने जति सबै बीज कवितै लाग्छन् । युद्ध मैदानमा योद्धा ढलेको कारुणिक दृश्यदेखि हरेक दृश्य र विषयलाई उनी कविताको विषय ठान्छन् । कवि दाहालका विचारमा कविता लेख्दैमा जो कोही कवि बन्न सक्दैन । जसले टाढासम्मको दृश्य देख्न सक्छ, अनुभूत गर्न सक्छ र त्यसलाई शब्दमा उतार्न सक्छ उही कवि बन्न सक्ने धारणा कविको रहेको छ । कवि दाहालका अनुसार कविताको विषय जोसुकै र जेसुकै हुन सक्छ । तैपनि कविताको उन्नति, प्रगति खासै हुन नसकेको अनुभूतिले कविलाई चिन्तित तुल्याएको छ । कविता लेख्ने धेरै भए पनि वास्तविक साधकको कमी भएकाले कविताले एकलै रुनुपरिरहेको प्रति कविले चिन्ता व्यक्त गरेका छन् ।

४.२६.४. कथन पद्धति

प्रस्तुत 'कवितै कविता लाग्छन्' शीर्षकको कवितामा कविले प्रथम पुरुष 'म' पात्रलाई प्रत्यक्षतः उपस्थित नगराईकन पनि प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । उनले आफ्ना निजी अनुभूतिका रूपमा कवितालाई विषय वस्तु बनाएर आफ्नो अभिव्यक्ति पोखेका छन् ।

४.२६.५. भाषाशैली

प्रस्तुत कवितामा कविले अत्यन्त सरल र सहज भाषाशैली प्रयोग गरेका छन् । कवितामा कविता, धर्ती, कवि, बीज, युद्ध, योद्धा, दृश्य, पात्र, पूर्ण, शब्द, सुन्दर, स्वयं, विषय, अंश जस्ता तत्सम शब्दका साथमा घर, मान्छे, थुम्को, हिमाल, सामु, चिसो, ज्यान, नम्बरी, रिक्ता, भाँडा, भुत्रा, भाम्रा, लुगा जस्ता तद्भव र भर्रा नेपाली शब्द र मैदान, मजा, मौसम जस्ता आगन्तुक शब्दको सन्तुलित प्रस्तुतिले कवितामा मिठास थपेको छ ।

४.२६.६. बिम्ब/अलङ्कार

कवि दाहालले प्रस्तुत 'कवितै कविता लाग्छन्' शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा अत्यन्तै सचेत प्रयास गरेका छन् । कविले सुन्दर-घर, बीज छन्-चिज छन्, हुन्छ, यो-छुन्छ यो, हुन्न शब्दमा-छुन्न शब्दमा, अजम्बरी-नम्बरी, पल्टँदा-सम्भँदा, लुगाभरि-धर्धरी जस्ता पद तथा पदावली मार्फत अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । यसै गरी कविले 'स्वयं हिमालको थुम्को कविता छ, अजम्बरी' भन्ने पङ्क्तिमा कवितालाई हिमालको थुम्कोमा आरोप गरेको हुनाले रूपक अलङ्कारको प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.२६.७. शीर्षक

कविताको विषय जताततै छ, जे पनि कविताको विषय बन्न सक्छ र जो पनि कविता सिर्जनाको आधार बन्न सक्छ भन्ने भाव बोकेको प्रस्तुत 'कवितै कविता लाग्छन्' शीर्षकको कवितामा कविता शब्दको द्वित्व भएर 'कवितै कविता' बनेको छ । कविलाई वरिपरिका हरेक विषय वस्तु र दृश्य कवितै कविता लाग्ने हुनाले यस कविताको शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

४.२७. 'बाँकी छ' कविता

४.२७.१. संरचना

चार हरफे उपजाति, इन्द्रवज्रा र उपेन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'बाँकी छ' शीर्षकको कविता कुल आठ श्लोक अर्थात् आठ अनुच्छेदमा फैलेको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ३७) । ११ अक्षरी उपजाति छन्दका ६ श्लोक, इन्द्रवज्रा छन्दको एक श्लोक र उपेन्द्रवज्रा छन्दको एक श्लोक गरी कुल आठ श्लोक अर्थात् ३२ पाउको फैलावट रहेको प्रस्तुत कवितामा एक सय ५३ शब्द र दुई सय ६४ अक्षर रहेका छन् ।

४.२७.२. लय विधान

११ अक्षरी उपजाति र उपेन्द्रवज्रा छन्दको संयुक्त छटाको अनुभव हुने प्रस्तुत 'बाँकी छ' शीर्षकको कवितामा संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको लयात्मक प्रस्तुति भेटिन्छ । ५ र ६ अक्षरमा यति अर्थात् विश्राम हुने उपजाति र उपेन्द्रवज्रा छन्दको श्रुति मधुरताको सहज अनुभूति गर्न सकिन्छ, प्रस्तुत कवितामा ।

४.२७.३. भाव विधान

कवि बलराम दाहालले यस 'बाँकी छ' शीर्षकको कवितामा आवेगको वेग चलन नदिने, स्वभावको भाव गल्ल नदिने, नोक्सानले सान ठल्ल नदिने र स्वतन्त्रको तन्त्र बदल्ल नदिने उद्घोष गरेका छन् । सङ्घर्षदेखि भाग्ने खानका कालहरूलाई कविले मुख चलाएर मात्र खान पाइन्न भन्दै कर्ममा जुट्ने सल्लाह दिएका छन् । एउटा दलिएको दलियै हुने र अर्कोले मोज गरिरहने खेल सदाका लागि अन्त्य गर्नुपर्छ भन्दै कविले अभै धेरै कुरा लेख्न बाँकी नै छ भनेका छन् । बहारको हार देख्न, स्वच्छन्दको छन्द समेट्न र क्लेशको लेश मेट्न अभै बाँकी छ, भन्दै उनले उद्वेगको वेग फुट्न, तरङ्गको रङ्ग उठ्न, लिलामका लाम छुट्न र विवादका वाद जुट्न बाँकी भएको दावी गरेका छन् ।

४.२७.४. कथन पद्धति

कविले प्रस्तुत 'बाँकी छ' शीर्षकको कवितामा मिश्रित दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । उनले कतै प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् भने कतै कतै चाहिँ तृतीय पुरुष दृष्टि विन्दु पनि प्रयोग गरेका छन् ।

४.२७.५. भाषाशैली

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'बाँकी छ' शीर्षकमा सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन् । विशेष गरी तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको सुन्दर संयोजनमा रुचि राख्ने कविले यस कवितामा पनि आफ्नो सोही रुचिलाई कायम गरेका छन् । उनले आवेग, वेग, स्वभाव, भाव, स्वतन्त्र, तन्त्र, गोल, भूगोल, स्वच्छन्द, छन्द, क्लेश, लेश, प्रभाव, भाव, विशिष्ट, शिष्ट, विभक्त, भक्त, सम्पूर्ण, पूर्ण, विभाग, भाग, खण्ड, प्रहार, हार, उद्वेग, वेग, तरङ्ग, विवाद, वाद, शान्त, आराम जस्ता तत्सम शब्दका साथमा बखान, कुरा, अन्त, गान, बगान, बाँकी जस्ता तद्भव शब्द र नोक्सान, सान, जुहार, हार, बहार, हार, कमाल, माल, लिलाम, लाम जस्ता आगन्तुक शब्दको प्रयोग गरेर भाषिक मिठास ल्याएका छन् । उनका अन्य कवितामा आगन्तुक शब्दको निकै कम प्रयोग भएको पाइए पनि यसमा तिनका तुलनामा केही बढी आगन्तुक शब्दको प्रयोग गरेका छन् ।

४.२७.६. बिम्ब/अलङ्कार

अन्य कवितामा भन्ने कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कवितामा पनि अन्त्यानुप्रासको प्रयोगमा भिन्न शैली अपनाएका छन् । उनले कविताको पहिलो श्लोकका चारै पाउको अन्त्यमा दिन्न शब्दको प्रयोग गरेका छन् भने दोस्रो श्लोकका सुरुका दुई पाउमा छ-छ र त्यसपछिका दुई पाउमा कैल्यै-कैल्यै शब्दको आवृत्ति गरेका छन् । त्यसैगरी उनले त्यसपछिका अन्य श्लोकमा पनि कतै चारै पाउमा एउटै शब्द त कतै दुई दुई पाउमा एउटै शब्दको आवृत्ति गरेर अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा केही नवीनता ल्याएका छन् । अन्त्यानुप्रासका अतिरिक्त कवि दाहालले यस कविताका प्रत्येक पाउमा यमक अलङ्कार प्रयोग गरेका छन् । तर, कतिपय पङ्क्तिका यमक अलङ्कार जबर्जस्ती प्रयोग गरेको जस्तो पनि देखिन्छ । यमक प्रयोगका केही उदाहरण :

आवेगको वेग म चलन दिन्न
स्वभावको भाव म गलन दिन्न ।
नोक्सानले सान म ढलन दिन्न
स्वतन्त्रको तन्त्र बदलन दिन्न ॥

४.२७.७. शीर्षक

कवि दाहालले कविताको शीर्षक 'बाँकी छ' चयन गरेका छन् । जीवनमा अनेक कुरा लेख्न, अनेक कुरा देख्न, अनेक कुरा समेट्न र अनेक कुरा मेट्न पनि बाँकी छ भन्ने भाव कवितामा कविले प्रस्तुत गरेको हुनाले यस कविताको 'बाँकी छ' भन्ने शीर्षक स्वाभाविक लाग्छ ।

४.२८. 'जोगिंदै आएँ' कविता

४.२८.१. संरचना

चार हरफे द्रुतविलम्बित छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'जोगिंदै आएँ' शीर्षकको कविता कुल १० श्लोक अर्थात् १० अनुच्छेदमा फैलेको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ३९) । १२ अक्षरी द्रुतविलम्बित छन्दका कुल ४० पाउको फैलावटमा रहेको र एक सय ६९ शब्द तथा चार सय ८० अक्षर समेटिएको प्रस्तुत कविता लघु आयाममा संरचित छ ।

४.२८.२. लय विधान

१२ अक्षरी द्रुतविलम्बित छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'जोगिंदै आएँ' शीर्षकको कवितामा संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको साङ्गीतिक रन्को पाइन्छ । प्रस्तुत कवितामा क्रमशः ७ र ५ अक्षरमा यति हुने द्रुतविलम्बित छन्दको श्रुति मधुरताको सहज अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.२८.३. भाव विधान

समाजमा अनेकौं थरी लफडा छन् । अनेक किसिमका खतरा छन् । पतनको बाटोका अगुवा यहीं छन् । भगुवा, ढँटुवा, छँटुवा सबै सबै यही समाजमै चारैतिर फैलेका छन् । विपत्तिका पताका फहराउन, विफलका फल चखाउने, विरहका रहमा डुबाउने र सफलताको फल टिप्न नदिनेहरू पनि यतै वरिपरि छन् । दमनमा मिचिँदै, खटनमा थिचिँदै, प्रविधिमा घुलिँदै आफूलाई जोगाउँदै अधि बढ्न सके मात्र समाजमा आफ्नो अस्तित्व कायम राख्न सकिन्छ । अनेक किसिमका विवशताका भुमरीमा फस्दै, प्रलयको लयमा लहरिँदै मन नपरी नपरी पनि बग्नैपर्ने विवशता एकातिर छ भने अर्कातिर पेटको ज्वाला दन्किँदो छ, जसलाई सहन गर्न कठिन हुँदै गएको छ । अनेक किसिमका समस्यामा अल्झेर पनि, अनेक किसिमका लफडामा फसेर पनि अनेक अभाव र आपत विपत्तिसित जुध्दै आफूलाई जोगाउँदै अधि बढ्नुको विकल्प नभएको यथार्थप्रति कविले समर्थन जनाएका छन् ।

४.२८.४. कथन पद्धति

यस 'जोगिंदै आएँ' शीर्षकको कवितामा कविले मिश्रित दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । कविले यस कविताका कतिपय श्लोकमा तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् भने केही श्लोकमा चाहिँ प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दु पनि प्रयोग गरेका छन् ।

४.२८.५. भाषाशैली

कवि बलराम दाहालले आफ्नो चिरपरिचित शैली अनुरूप नै यस जोगिंदै आएँ शीर्षकको कवितामा पनि तत्सम र तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्दका साथमा निकै कम आगन्तुक शब्द प्रयोग गरेका छन् । उनले पतन, तन, दल, नियम, यम, विपत्त, फल, प्रविधि, विधि, भुवन, वन, प्रलय, लय, शिशिर, शिर, उदर, शपथ, पथ, जीवन, मरण, रण जस्ता तत्सम शब्द, खत, खटिरा, चहक, खटन, रहर, खति, सजग, थकित, चकित जस्ता तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्द र गलत, लफडा, बखत, मौसम जस्ता केही आगन्तुक शब्दको समेत सुन्दर संयोजन गरेका छन् ।

४.२८.६. बिम्ब/अलङ्कार

कवि बलराम दाहालले यस जोगिंदै आएँ शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । त्यसका साथमा उनले कविताका कुल ४० पाउमध्ये ३८ पाउमा यमक अलङ्कार प्रयोग गरेका छन् । यमक प्रयोगको उदाहरण :

- गलतका लतका लफडा कति ?
- बखतका खतका खटिरा कति ?
- कपटका पटका कति पड्किए ?
- चहकका हकमा कति अड्किए ?

४.२८.७. शीर्षक

समाजमा रहेका अनेक समस्यासित जुधेर अनेकौं अपठ्यारा भेलेर आफूलाई फसाउन, डुबाउन, विगान र भत्काउन खोज्नेहरूसित जोगिंदै जीवनमा अधि बढ्दै आएको भाव कविले व्यक्त गरेको हुनाले पनि यस कविताको शीर्षक 'जोगिंदै आएँ' उपयुक्त प्रतीत हुन्छ ।

४.२९. 'नियति, कविता र कवि' कविता

४.२९.१. संरचना

चार हरफे द्रुतविलम्बित छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'नियति, कविता र कवि' शीर्षकको कविता कुल ७ श्लोक अर्थात् ७ अनुच्छेदमा फैलेको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ४१) । १२ अक्षरी द्रुतविलम्बित छन्दका २८ पाउको फैलावटमा रहेको यस कवितामा एक सय ३१ शब्द र तिन सय ३६ अक्षर समेटिएका छन् । संरचनाका दृष्टिले प्रस्तुत कविता लघु आयाममा संरचित कविता हो ।

४.२९.२. लय विधान

१२ अक्षरी द्रुतविलम्बित छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'नियति, कविता र कवि' शीर्षकको कवितामा संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको साङ्गीतिक मिठास पाइन्छ । प्रस्तुत कवितामा क्रमशः ७ र ५ अक्षरमा यति हुने द्रुतविलम्बित छन्दको श्रुति मधुरताको सहज अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.२९.३. भाव विधान

नियतिको खेलले दरबार, सरकार र अखबारदेखि घरबारसम्म कसैलाई नछोडे जस्तै कवि पनि त्यसबाट पूर्णतः मुक्त हुन सक्ने कुरै भएन । तर, नियतिको खेलमा परे पनि नपरे पनि त्यसको कुनै परवाह नगरी कवि प्रकृतिको रसपानमा डुब्न चान्छन् । गति लिइसकेको कविता सिर्जनाको वेग एक्कासि किन रोकियो भन्ने प्रश्न गर्दै कविले कविताको प्रगतिको गति बन्द हुनुमा समाजमा फैलेको विकृति र विसङ्गतिको प्रभाव देखेका छन् । कविहरूसित रचना सामर्थ्य नभएर, कवि कला हराएर वा सिर्जनाका लागि उपयुक्त मौसम वा विषय भाव नभएर कविता सिर्जनाको गति धिमा भएको होइन भन्ने कविको बुझाइ छ । यही समाजमा कैयौं कविले रहर लाग्दा कविता सिर्जना गरेर पाठकलाई कविताको मिठास चखाएका छन् भन्दै कवि दाहालले सम्पूर्ण कविहरूको योगदान स्तुत्य हुने विचार कवितामा पस्केका छन् ।

४.२९.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'नियति, कविता र कवि' शीर्षकको कवितामा मिश्रित दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । कविले कविताका कतिपय पङ्क्तिमा 'म' पात्रका रूपमा आफैं उपस्थित भएर प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दुबाट आफ्नो अभिव्यक्ति पोखेका छन् भने कतैचाहिँ आफूलाई तटस्थ राखेर तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दुबाट आफ्नो विचार पोखेका छन् ।

४.२९.५. भाषाशैली

सुललित भाषाशैलीका प्रयोक्ता कवि बलराम दाहालले यस 'नियति, कविता र कवि' शीर्षकको कवितामा पनि तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको सन्तुलित प्रयोग गरेका छन् । उनले नियति, यति, प्रकृति, कृति, रसपान, प्रगति, गति, हृदय, चन्द्र, कविकला, गन्ध, सुगन्ध, कवि, कविता, सज्जन, कनिष्ठ, जेष्ठ जस्ता तत्सम शब्द, घरबार, हरिया, रहरिला, हरिला, रसिला, मुख, छिटा जस्ता तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्द र दरबार, सरकार, अखबार, सकस, मौसम, गजल, उपर जस्ता आगन्तुक शब्दको सन्तुलित प्रयोगले कविताको भाषाशैली सुललित बनेको छ ।

४.२९.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'नियति, कविता र कवि' शीर्षकको कवितामा कविले अन्त्यानुप्रासका अतिरिक्त यमक अलङ्कारको सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । यमक प्रयोगको एक दृष्टान्त :

नियतिका यतिमा दरबार छ
नियतिका यतिमा सरकार छ ।
नियतिका यतिमा अखबार छ
नियतिका यतिमा घरबार छ ॥

४.२९.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले यस कविताको शीर्षकका रूपमा 'नियति, कविता र कवि' चयन गरेका छन् । तिनओटा तत्सम नाम शब्दका साथमा एउटा संयोजक प्रयोग भएको प्रस्तुत कविताको शीर्षक केही लामो देखिए पनि सार्थक नै देखिन्छ । नियतिले कसैलाई नछोड्ने भएजस्तै कवि र उसको सिर्जना कविता पनि नियतिको खेलबाट मुक्त छैन भन्ने भाव बोकेको प्रस्तुत कविताको शीर्षक उपयुक्त नै लाग्छ ।

४.३०. 'सौगात' कविता

४.३०.१. संरचना

चार हरफे उपजाति छन्दमा उनिएको प्रस्तुत 'सौगात' शीर्षकको कविता ८ श्लोक अर्थात् ८ अनुच्छेदमा फैलेको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ४३) । ११ अक्षरी उपजाति छन्दका ३२ पाउको लघु आयाममा संरचित यस कवितामा एक सय ५० शब्द र तिन सय ५२ अक्षर अटेका छन् ।

४.३०.२. लय विधान

सौगात कविता सङ्ग्रहको शीर्षक कविता 'सौगात' पनि उपजाति छन्दमै रचेको पाइनुले उपजाति छन्द कवि बलराम दाहालको प्रिय छन्द हो भन्ने कुराको पुष्टि भएको छ । ११ अक्षरी उपजाति छन्दमा रचिएको प्रस्तुत कवितामा क्रमशः ५ र ६ अक्षरमा यति हुने संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको शास्त्रीय नियम भएको हुनाले श्रुति मधुरताको अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.३०.३. भाव विधान

कविता सिर्जनाको सुगन्धको सौगात बोकेर रस र छन्दको लौरो टेकेर विविध भाका सुसेल्लै काव्यको राजधानी पुग्ने यात्रामा आफू अघि बढेको सङ्केत कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'सौगात' कवितामा गरेका छन् । कलिको नक्कली बगानमा बसेर सबै छन्दको गान गर्दै काव्यरूपी श्रीखण्ड टिप्दै रस माधुरीको धुरी चढ्न बाँकी नै रहेको पनि उनले सङ्केत गरेका छन् । कहिले कविता नथाक्दै आफू थाक्ने र कहिले कविता नजाग्दै आफू जाग्ने गरेको भन्दै आफूले काव्यको कतै भिरालो र कतै उकालो मार्गमा यात्रा गरिरहेको उनले बताएका छन् । सबैका गलामा कविता कलाको प्रवाह हुन सक्दैन, कविताको शैली, कला किन्न सकिन्न त्यसैले यो अपार जस्तो लाग्छ भन्दै कविले आफू काव्यको हली बनेर काव्यको खेतबारी राँटा नराखी जोतेर सबैको प्रिय हली बन्ने अभियानमा लागिपरेको स्विकारेका छन् । काव्यको खेतबारी जोत्न दिन र रात भन्ने हुँदैन, जति जोते पनि कहिल्यै मेलो सिद्धिदैन । जोत्दा राँटा बस्यो भने काव्यको उब्जनीमा पनि घाटा पर्छ भन्दै वाली पाकेन र पाकेको काव्यको खेती कसैले चाखिदिएन भने चित्त दुख्ने विचार कवितामा कविले प्रकट गरेका छन् । कविले आफू काव्यका सबै खेत चहारेर हातमा काव्यको सौगात (प्रसाद) बोकेर पाठकसामु आएको हुनाले एकचोटि सो सौगात चाखिदिन सबैसित आग्रह गरेका छन् ।

४.३०.४. कथन पद्धति

प्रस्तुत सौगात शीर्षकको कवितामा कविले मिश्रित दृष्टि विन्दु अङ्गालेका छन् । उनले यस कवितामा कतै कतै तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दुको प्रयोग गरेका छन् भने कविताको अधिकांश भागमा भने प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् ।

४.३०.५. भाषाशैली

प्रस्तुत कविताको भाषाशैलीको चर्चा गर्दा आफ्ना अन्य कविताभन्दा कवि दाहालले यस कवितामा पनि अत्यन्तै सुललित शब्द चयन गरेका छन् । तत्सम र तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्द प्रयोगमा निपुण कविले प्रस्तुत सौगात शीर्षकको कवितामा पनि आफ्नो सोही खुबी देखाएका छन् । उनले सुगन्ध, रस, छन्द, काव्य, राजधानी, कलि, श्रीखण्ड, खण्ड, माधुरी, कविता, मार्ग, प्रवाह, धारा, कला, शैली, प्रिय, प्रसाद, काव्यमाद, मन्दिर जस्ता तत्सम शब्द र लौरो, भाका, नक्कली, बगान, धुरी, भिरालो, हली, राँटा, खेत, छिटो, उब्जनी, बाली, गला, मेलो, विउ, पुरानो जस्ता तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्दको कुशल संयोजन गरेर भाषिक कुशलता देखाएका छन् । कविताको शीर्षक बनेको सौगात, जवानी जस्ता निकै कम आगन्तुक शब्दले पनि अर्थ विस्तारमा सहयोग नै पुर्याएका छन् ।

४.३०.६. बिम्ब/अलङ्कार

अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा सचेत कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'सौगात' शीर्षकको कवितामा पनि अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा अत्यन्तै सचेतता देखाएका छन् । उनले सुगन्धको यो-छन्दको यो, जवानी-राजधानी, बगान-गान, पुरीको-माधुरीको, नथाक्दै-नजागदै, उकालो-भिरालो, कलामा-गलामा, कैल्यै-जैल्यै, बनेर-गनेर, जान्ने-मान्ने, राँटा-घाटा, डुलेर-भुलेर जस्ता पद तथा पदावलीको प्रयोगबाट कवितामा अन्त्यानुप्रासको मिठास थपेका छन् । यसका साथै कवितामा कविले यमक अलङ्कारको पनि सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । यमक प्रयोगको एक नमुना :

यो नक्कलीको कलिको बगान
जाऊ बजाऊ सब छन्द गान ।
श्रीखण्डको खण्ड टिपी पुरीको
धुरी धुरी चढ्नु छ माधुरीको ॥

४.३०.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले आफ्नो कविता सङ्ग्रहको शीर्षक नै यही कविताबाट चयन गरेका छन् । सौगात कविता सङ्ग्रहको शीर्षक कविता 'सौगात' मा आफूले काव्यानुरागीहरूका लागि काव्यको सौगात लिएर आएको चर्चा कविले गरेका छन् । आगन्तुक सौगात शब्दले कोसेली, उपहार, भेटी आदि अर्थ बुझाउने हुनाले यहाँ कविले पाठसामु ल्याएका कविता उपहार बनेर प्रस्तुत भएको सङ्केत गरिएको छ ।

४.३१. 'कलिकथा' कविता

४.३१.१. संरचना

'कलिकथा' चार हरफे र ११ अक्षरी उपजाति, उपेन्द्रवज्रा र इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको एक सुन्दर कविता हो (दाहाल, २०६८, पृ. ४५) । उपजाति छन्दका १४ श्लोक, उपेन्द्रवज्रा छन्दको एक श्लोक र उपजाति छन्दको एक श्लोक गरी कुल १६ श्लोक अर्थात् १६ अनुच्छेदको प्रस्तुत कविता ६४ पाउमा फैलेको छ । कुल दुई सय ७८ शब्द र सात सय चार अक्षर समेटिएको प्रस्तुत कविता संरचनाका दृष्टिले मभौला आकारको फुटकर कविता हो ।

४.३१.२. लय विधान

'कलिकथा' ११ अक्षरी उपजाति छन्दमा रचिएको छ । क्रमशः ५ अक्षर र ६ अक्षरमा यति अर्थात् विश्राम हुने संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको शास्त्रीय नियम भएको उपजाति छन्दको श्रुति मधुरता यस कवितामा सहजै अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.३१.३. भाव विधान

वर्तमान कलियुगमा धर्तीमा अनेकौं दङ्गा फसाद जन्मिरहेका छन् । समतामूलक समाजको परिकल्पना गरे पनि हाम्रो समाज भन् भन् असभ्य, भन् भन् संवेदनहीन, भन् भन् अशान्त, भन् भन् कोलाहलयुक्त र भन् भन् कहालीलाग्दो बन्दै गएको प्रति कविले चिन्ता व्यक्त गरेका छन् । संवेदनाको तार टुट्दै गएको, मानवता भुल्दै गएको, कर्तव्य विसिँदै गएको र हामी बसेको घरै नासिँदै गएकोमा पनि कविको चिन्ता छ । समाजमा छलछाम, असत्य, अन्याय, अत्याचार र हरामको साम्राज्य फैलिँदै गएको छ । लोभानी पापानी बढेर गएको, शक्तिको खेल चर्किँदै गएको, स्वतन्त्रता गुम्ने खतरा देखिँदै गरेको बजारमा सबैभन्दा बढी नोटले महत्त्व पाउन थालेको स्थितिमा समाजको मूल्य ह्रास भइरहेकोमा कविले चिन्ता व्यक्त गरेका छन् । हाम्रो समाजमा यस्ता अनेक समस्याका पोका असरल्ल भइरहेको समयमा त्यसलाई कसले पन्छाउने भन्ने प्रश्न खडा भएको छ । समाजमा राक्षसी स्वभाव पालेर हुर्किरहेका पुतनादि प्रवृत्तिको अन्त्यका लागि हामी सबैले आफ्नो आफ्नो स्थानबाट सक्दो भूमिका खेल्ने हो भने सबैको मन गाँसिनेछ र समाजको मैलो पनि हट्नेछ भन्ने आशय कविले प्रस्तुत कलिकथा कवितामा प्रकट गरेका छन् ।

४.३१.४. कथन पद्धति

कवि दाहालले प्रस्तुत 'कलिकथा' शीर्षकको कवितामा मिश्रित दृष्टि विन्दु अङ्गालेका छन् । उनले यस कवितामा कतै कतै तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दुको प्रयोग गरेका छन् भने कविताका कतिपय अंशमा चाहिँ उनले प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दु पनि प्रयोग गरेका छन् ।

४.३१.५. भाषाशैली

आफ्ना रचनामा निकै सरल भाषाशैली प्रयोग गर्ने कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कलिकथा शीर्षकको कवितामा पनि तत्सम, तद्भव र भर्त्सा शब्दको सन्तुलित प्रस्तुति दिएका छन् । उनले यस कवितामा कलिकथा, समता, समाज, दशा, असभ्य, सभ्य, पाताल, आशक्ति, शक्ति, संवेदना, मानवता, कर्तव्य, दुर्गन्ध, आकाश, धर्ती, श्वास, शालीन, लीन, उत्थान, आवेश, सङ्कल्प, साम्राज्य, पूर्णमा, पूतना जस्ता तत्सम शब्द र घुटुक्क, पासो, सिरान, तार, फलिफाप, घर, हुरी, आँधी, गिदी, बाफ, लाम, किनारा, धान, दराज जस्ता तद्भव तथा भर्त्सा नेपाली शब्दका साथमा नसा, बाज, कहानी, बजार, रवाफ, हराम, जवानी, बहार, निसाना जस्ता आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजन गरेर भाषिक मिठास ल्याएका छन् ।

४.३१.६. बिम्ब/अलङ्कार

कविले प्रस्तुत 'कलिकथा' शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । उनले दशामा-नसामा, आज-समाज, किनारमा छ-सिरानमा छ, छुटे भैँ-टुटे भैँ, मेलमिलाप छैन-फलिफाप छैन, फैलिँदै छ-मैलिँदै छ, नासिँदै छ-भासिँदै छ, निसासिँदै छ-बतासिँदै छ, धरामा-जरामा, हतार-बजार, हराउँदै छन्-कराउँदै छन्, शक्ति-देशभक्ति, तमाम-फलाम जस्ता पद तथा पदावलीको प्रयोगले कवितामा अन्त्यानुप्रासको मिठास झल्काएका छन् । त्यसका साथै यस कवितामा कविले यमक अलङ्कारको प्रयोग पनि कुशल ढङ्गमा गरेका छन् । यमक प्रयोगको एक नमुना :

असभ्यका सभ्य मिलेर आज
पातालको ताल भयो समाज ।
वियोगको यो किनारमा छ,
आशक्तिको शक्ति सिरानमा छ ॥

४.३१.७. शीर्षक

कविताको शीर्षकका रूपमा कविले 'कलिकथा' चयन गरेका छन् । कलियुगमा देखिएका अनेकानेक समस्या र तिनले समाजमा पारेका नकारात्मक प्रभावको चर्चा गरिएको हुनाले प्रस्तुत कविता साँच्चै कलियुगको कथा बनेर आएको छ । त्यसैले प्रस्तुत कविताको शीर्षक चयन सान्दर्भिक लाग्छ ।

४.३२. 'कलाको आँगन' कविता

४.३२.१. संरचना

चार हरफे इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'कलाको आँगन' शीर्षकको कविता ५ श्लोक अर्थात् पाँच अनुच्छेदमा फैलेको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ४८) । कुल २० पाउ, एक सय शब्द र दुई सय २० अक्षरको संरचनामा संरचित छ । आकारका दृष्टिले प्रस्तुत कविता लघु आयामको संरचना हो ।

४.३२.२. लय विधान

'कलाको आँगन' ११ अक्षरी इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको छ । प्रत्येक पाउमा क्रमशः ५ अक्षर र ६ अक्षरमा यति अर्थात् विश्राम हुने संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको शास्त्रीय नियम भएको इन्द्रवज्रा छन्दको श्रुतिमधुरता यस कवितामा सहजै अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.३२.३. भाव विधान

पृथ्वीको भूस्वर्गका रूपमा परिचित नेपाल नाना थरी कलाको पवित्र आँगनी हो । यहाँको आँगनीमा जताततै सुरम्यताको सौगात भेटिन्छ । हाम्रा आँखा जता जता घुम्छन्, उतै उतै राम्रो सिवाय केही देखिन्न । रङ्गीबिरङ्गी छहरा र छाँगाहरूले मोहनी लगाएर मनमा आनन्दको बाढी नै उतार्ने विचार कविले प्रस्तुत 'कलाको आँगन' कवितामा । कलाका अन्वेषकलाई मोहनी लगाउन सफल नेपालका अनेक भूभागमध्ये पोखरा र चुपचाप पोखराको सुन्दरता बढाइरहेको मोहनीलाग्दो फेवा तालको पनि कविले मनोहर शब्दमा वर्णन गरेका छन् । नेपाली धर्तीमा जे जे भेटिन्छ, जति जति नियालिन्छ, उति नौलो लाग्ने र अनेकतामा पनि एकता भेटिने आशय कविको रहेको छ ।

४.३२.४. कथन पद्धति

कवि दाहालले प्रस्तुत 'कलाको आँगन' शीर्षकको कवितामा तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु अँगालेका छन् ।

४.३२.५. भाषाशैली

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'कलाको आँगन' शीर्षक कवितामा सरल, सहज र सरस भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन् । सकभर छोटो छोटो र सरल शब्द प्रयोगमा विश्वास राख्ने कविले प्रस्तुत कवितामा तत्सम र तद्भव शब्दको सन्तुलित प्रयोग गरेका छन् । तत्सम र तद्भव शब्दसँगै उनले निकै कम आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजनले कविताको भाषाशैलीलाई श्रुति मधुर तुल्याएका छन् ।

४.३२.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'कलाको आँगन' शीर्षक कवितामा कविले अन्त्यानुप्रास अलङ्कारको सन्तुलित प्रयोग गरेका छन् । उनले कवितामा कलाको-सुरम्यताको, छाँगा-आँखा, पार्छ-उताछ, अभाव-चुपचाप, अनेकतामा-कल्पनामा, भित्र-चित्र, छाया-माया जस्ता शब्दहरूको प्रयोगले कवितामा अन्त्यानुप्रासको श्रुति मधुरता झल्काएका छन् । त्यसै गरी कविले 'नेपाल यो आँगन हो कलाको' भन्दै नेपाललाई कलाको आँगनको आरोप गरिएको हुनाले रूपक अलङ्कार प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.३२.७. शीर्षक

'कलाको आँगन' विशेषण र विशेष्य मिलेर बनेको शीर्षक हो । कविताको शीर्षकमा आएका आँगन विशेष्यका रूपमा र कलाको भेदक विशेषणका रूपमा आएका छन् । नेपाललाई कलाको आँगनको रूपमा चित्रित गर्दै जता हेर्यो उतै कला प्रस्फुटित हुने अर्थमा आएको हुनाले प्रस्तुत शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

४.३३. 'हार खान्न' कविता

४.३३.१. संरचना

११ अक्षरी उपजाति र उपेन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'हार खान्न' शीर्षकको कविता संरचनाका दृष्टिले लघु आयामको रचना हो (दाहाल, २०६८, पृ. ४९) । उपजाति छन्दका तीन श्लोक र उपेन्द्रवज्रा छन्दको एक श्लोक गरी कुल चार श्लोक, १६ पाउमा फैलेको प्रस्तुत कवितामा ८३ शब्द र एक सय ७६ अक्षर अटाएका छन् ।

४.३३.२. लय विधान

प्रस्तुत 'हार खान्न' शीर्षकको कवितामा चार हरफे उपजाति र उपेन्द्रवज्रा छन्दको लयात्मक छटा भेटिन्छ । प्रत्येक पाउमा क्रमशः ५ र ६ अक्षरमा विश्राम अर्थात् यति हुने उपजाति र उपेन्द्रवज्रा छन्दको श्रुति मधुरता प्रस्तुत कवितामा सहजै अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.३३.३. भाव विधान

कविले प्रस्तुत 'हार खान्न' शीर्षकको कवितामा आफूले नर्तकीभै नाचन सक्ने, बन्धकीमा बाँचन नसक्ने भन्दै आफ्नो कमाइ जति साँचन सकिन्छ, त्यतिमै रमाएर हाँस्नुपर्ने विचार प्रकट गरेका छन् । त्यसैगरी वर्तमानको सीमित आमदानी र असीमित खर्चका बाटाहरूबिच सन्तुलन नमिल्दा घरबार चलाउन धौधौ पर्न थालेको भए पनि आफूले हार नखाई जिन्दगीलाई अघि बढाउनुपर्ने विचार कविको छ । बाटो जस्तो हुन्छ, सवारी साधन पनि त्यसैगरी हाँके जस्तै जिन्दगीलाई पनि जे पाइन्छ, जति पाइन्छ, त्यसैका आधारमा सन्तुष्ट भई कति पनि हार नखाई मान्छेले आफ्नो जीवन चलाउनु पर्ने विचार कविले कवितामा राखेका छन् ।

४.३३.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'हार खान्न' शीर्षकको कवितामा मिश्रित दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । उनले यस कवितामा प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दु र तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु एकसाथ प्रयोग गरेका छन् ।

४.३३.५. भाषाशैली

प्रस्तुत 'हार खान्न' कवितामा कवि बलराम दाहालले सरल, सहज र सरस भाषाशैली प्रयोग गरेका छन् । कविले यस कवितामा तत्सम र तद्भव शब्दको सन्तुलित प्रयोगसँगै निकै कम आगन्तुक शब्दको कुशल संयोजनले कविताको भाषाशैलीलाई श्रुति मधुर तुल्याएका छन् ।

४.३३.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत कवितामा कविले अन्त्यानुप्रासको कुशल प्रयोग गरेका छन् । उनले कवितामा सक्छु-सक्छु, धान्न-खान्न, गाँस-घाँस, जुधाई-कुदाई, लाग्लान्-छाड्लान्, भन्थे-बन्थे, भिरालो-विरालो शब्दको प्रयोगले अन्त्यानुप्रासको मधुरता ल्याएका छन् ।

४.३३.७. शीर्षक

अनेक खालका अपठ्याराहरूमा पनि हार नखाई निरन्तर अगाडि बढ्नुपर्ने भाव बोकेको प्रस्तुत 'हार खान्न' उपयुक्त देखिन्छ । शीर्षकका एउटा भाव वाचक नाम शब्द 'हार' र एउटा अकरण सूचक क्रियापद 'खान्न' प्रयोग भएको देखिन्छ । जसले हार नखाई निरन्तर अघि बढि रहन्छु भन्ने भाव बुझाएको छ ।

४.३४. 'यस्तो किन ?' कविता

४.३४.१. संरचना

११ अक्षरी उपजाति, उपेन्द्रवज्रा र उपजाति छन्दमा रचिएको प्रस्तुत 'यस्तो किन' शीर्षकको कविता लघु संरचनामा संरचित रचना हो (दाहाल, २०६८, पृ. ५०) । उपजाति छन्दका तीन श्लोक, उपेन्द्रवज्रा र इन्द्रवज्रा छन्दका दुई दुई श्लोक गरी कुल ७ श्लोक, २८ पाउमा फैलेको यस कवितामा एक सय ४१ शब्द र तिन सय आठ अक्षर समेटिएका छन् ।

४.३४.२. लय विधान

प्रस्तुत 'यस्तो किन ?' शीर्षकको कवितामा चार हरफे उपजाति, उपेन्द्रवज्रा र इन्द्रवज्रा छन्दको लयात्मक छटा भेटिन्छ । प्रत्येक पाउमा क्रमशः ५ र ६ अक्षरमा विश्राम अर्थात् यति हुने उपजाति, उपेन्द्रवज्रा र इन्द्रवज्रा छन्दको श्रुति मधुरता प्रस्तुत कवितामा सहजै अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.३४.३. भाव विधान

अहिले हाम्रो जता जताको यात्रा भइरहेको छ, उतै उतैको बटुवा रोइरहेको भेटिन्छ । केही सन्तुष्ट छैन, सुखी छैन । धुलो, मैलोले ढाकिएको समाजबाट जति धुलो, मैलो हटाउन सकिन्छ त्यति मात्र समाजको बिचल्लीको कथा लेख्न सकिन्छ भन्ने विचार प्रस्तुत 'यस्तो किन ?' शीर्षकको कवितामा कविले प्रकट गरेका छन् । यतिखेर यो संसारको मुहार फेर्न सक्ने तगडा सन्तानको खाँचो रहेको विचार प्रकट गर्दै कविले सबैको कर्तव्य एउटै हुँदा हुँदै पनि अधिकार फरक हुने, सबैको आधार एउटै माटो भए पनि समाज भने भिन्न हुने, बाटो भिन्न हुने र भन् भन् फाटो बढ्दै जाने स्थिति देखा पर्नु चिन्ताको विषय भएको कुरा बताएका छन् । कोही जीवनको हार गुहार गर्दै छन् कोही अरूको जितमा खिन्न छन् । लक्ष्य एउटै हुनेहरूको बाटो भने भिन्न भिन्न भएकाले कसैले रोए पनि, आर्तनाद गरे पनि कोही कसैलाई चासो छैन । मान्छे, मान्छेबिचको विश्वासका धर्साहरू मेटिँदै गएको हुनाले स्वयं मान्छे, यो संसारबाट लखेटिँदै छन् । मानवतामा क्रमशः क्षय भइरहेको छ भने कुकर्म बढ्दै गएको छ । जसले गर्दा हाम्रो समाजमा अनेक प्रकारका तृष्णा र दुःखका कारण बढ्दै गइ रहेका छन् ।

४.३४.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'यस्तो किन ?' शीर्षकको कवितामा मिश्रित दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । उनले यस कविताका केही श्लोकमा प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दु र केही श्लोकमा तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु एकसाथ प्रयोग गरेका छन् ।

४.३४.५. भाषाशैली

यस 'यस्तो किन ?' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले सरल र सहज भाषाशैली प्रयोग गरेका छन् । उनले यस कवितामा तत्सम र तद्भव शब्दको सन्तुलित प्रयोग गर्नुका साथै केही सीमित आगन्तुक शब्दको समेत कुशल संयोजन गरी कविताको भाषाशैलीमा श्रुति मधुरता ल्याएका छन् ।

४.३४.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'यस्तो किन ?' शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रस्तुति देख्न सकिन्छ । उनले कवितामा हुँदै छ-रुँदै छ, लेख्न सक्छु-छेक्न सक्छु, हेर्दा-फिर्दा, आउँदैनन्-हुँदैनन्, बाटो-फाटो, खिन्न-भिन्न, मेटिँदै छन्-लखेटिँदै छन्, धर्म-कर्म, मर्म-अधर्म जस्ता पद तथा पदावलीको प्रयोगले अन्त्यानुप्रासको श्रुति मधुरता झल्काएका छन् । यसका अतिरिक्त कविले कविताका केही पङ्क्तिमा यमक अलङ्कारको प्रयोग समेत गरेका छन् । यमक प्रयोगको नमुना :

'म ध्यानको यान चढेर हेर्दा ।'

'गर्छन् कतै हार गुहार कोही ।'

'छ जीतमा हार मुहार खिन्न ।'

४.३४.७. शीर्षक

समाजमा अनेक खाले समस्या छन् । कतै हाँसो खुसी, कतै रुवावासी, कसैको मोज मस्ती, कसैको विचल्ली सबै सबै यही समाजमा व्याप्त छन् । मान्छे मान्छेविच फाटो बढ्दै छ । यस्तै यस्ता विसङ्गतिविच कविले यस्तो किन भइरहेछ भन्दै आफ्नो गम्भीर प्रश्न अघि सारेका छन्, कविताको शीर्षकका रूपमा । त्यसैले पनि प्रस्तुत शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

४.३५. 'बुभ्नेर आऊ' कविता

४.३५.१. संरचना

'बुभ्नेर आऊ' शीर्षकको कविता ११ अक्षरी उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ५२) । उपजाति छन्दका तीन र इन्द्रवज्रा छन्दको एक श्लोक गरी कुल ४ श्लोक, १६ पाउमा फैलेको यस कवितामा ८१ शब्द र एक सय ७६ अक्षर समेटिएका छन् । संरचनाका दृष्टिले प्रस्तुत कविता लघु आयाममा संरचित कविता हो ।

४.३५.२. लय विधान

प्रस्तुत 'बुभ्नेर आऊ' शीर्षकको कवितामा चार हरफे वर्णमात्रिक उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दको लयात्मक छटा देख्न सकिन्छ । प्रत्येक पाउमा क्रमशः ५ र ६ अक्षरमा विश्राम अर्थात् यति हुने उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दको श्रुति मधुरता प्रस्तुत कवितामा अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.३५.३. भाव विधान

कविले प्रस्तुत कवितामा मुख्य दोषी छुटेर आफूचाहिँ अदालतमा उपस्थित भएर बयान दिन परिरहेको सामाजिक विसङ्गतिको सङ्केत गर्दै नलजाई आफ्नो चोटमा मलम लगाएर आफूलाई सघाउन र यथार्थ बुभ्नेर जान सबैसित आग्रह गरेका छन् । जहाँ जहाँ समस्या देखिन्छन्, जहाँ जहाँ अप्ठ्याराहरू छन्, त्यहाँ त्यहाँ हामीले आफ्ना दुःख नलुकाई बाहिर ल्याउन सक्नुपर्छ । समाजको प्रगतिका बाटाहरू रुद्ध छन् । जसले गर्दा जनतामा असीमित आक्रोश जन्मेको छ, जुन कुनै पनि बेला पट्ट फुट्न सक्छ । त्यसैले कसैमाथि आरोप नलगाई, भिडलाई अवगालको भारी नबोकाई अघि बढ्न कविले सबैसित आह्वान गरेका छन् प्रस्तुत कवितामा ।

४.३५.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'बुभ्नेर आऊ' शीर्षकको कवितामा मिश्रित दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । उनले यस कविताका केही श्लोकमा प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दु र केही श्लोकमा तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु एकसाथ प्रयोग गरेका छन् ।

४.३५.५. भाषाशैली

यस 'बुभ्नेर आऊ' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले सरल र सहज भाषाशैली प्रयोग गरेका छन् । उनले यस कवितामा तत्सम र तद्भव शब्दको सन्तुलित प्रयोग गर्नुका साथै केही सीमित आगन्तुक शब्दको समेत कुशल संयोजन गरी कविताको भाषाशैलीमा श्रुति मधुरता ल्याएका छन् ।

४.३५.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'बुभ्नेर आऊ' शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रस्तुति देख्न सकिन्छ । उनले कवितामा चोटमा छु-कोटमा छु, आऊ-जाऊ, जहाँ छन्-त्यहाँ छन्, खोज्छु-छु, खडा भो-घडा त्यो, भए नि-गए नि, छुन्न-हुन्न जस्ता पद तथा पदावलीको प्रयोगले अन्त्यानुप्रासको श्रुति मधुरता भल्काएका छन् ।

यसका अतिरिक्त कविले कविताका केही श्लोकमा यमक अलङ्कारको प्रयोग समेत गरेका छन् । यमक प्रयोगको नमुना :

संसर्गका सर्ग जहाँ जहाँ छन्
प्रदोषका दोष त्यहाँ त्यहाँ छन् ।
संलग्नको लग्न कहाँ छ खोज्छु
कबोलले बोल म दुःखमा छु ॥

४.३५.७. शीर्षक

कविताका शीर्षकका रूपमा कविले 'बुभ्नेर आऊ' दुई शब्दयुक्त पदावली चयन गरेका छन् । 'बुभ्नेर' शब्द क्रियाविशेषणका रूपमा र 'आऊ' शब्द आज्ञार्थक क्रियापदका रूपमा आएका छन् । यसबाट कविले कसैलाई केही कुरा बुभ्नेर आउने आदेश दिएको बुझिन्छ ।

४.३६. 'सिद्धिन्छ राम्रैसँग' कविता

४.३६.१. संरचना

'सिद्धिन्छ राम्रैसँग' शीर्षकको कविता १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ५३) । कुल ५ श्लोक, २० पाउमा फैलेको यस कवितामा एक सय ५९ शब्द र तिन सय असी अक्षर समेटिएका छन् । संरचनाका दृष्टिले प्रस्तुत कविता लघु आयाममा संरचित कविता हो ।

४.३६.२. लय विधान

प्रस्तुत 'सिद्धिन्छ राम्रैसँग' शीर्षकको कवितामा चार हरफे वर्णमात्रिक शार्दूलविक्रीडित छन्दको लयात्मक छटा भेट्न सकिन्छ । प्रत्येक पाउमा क्रमशः १२ र ७ अक्षरमा विश्राम अर्थात् यति हुने १९ अक्षरी शार्दूलविक्रीडित छन्दको श्रुति मधुरता प्रस्तुत कवितामा सहज अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.३६.३. भाव विधान

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'सिद्धिन्छ राम्रैसँग' शीर्षकको कवितामा आफूले डरलाग्दो सपना देखेको, आफूलाई निद्रामा छलेको र आफू जागै बस्न बाध्य भएको प्रसङ्गबाट कविताको उठान गरेका छन् । उनले सहिदका आत्मा छटपटिदै आफ्नो वरिवरि घुमेको, आफू एक्कासि बेहोस भएको र केही बेरपछि होसमा आउँ सहिदले यहाँ अर्थात् हाम्रो देशमा के कस्तो छ भनेर सोधखोज गर्दै एउटा चिठी छाडेर गएको प्रसङ्ग कवितामा अधि सारेका छन् । मुलुकमा परिवर्तनका लागि सहिदहरू हाँसी हाँसी मृत्यु वरण गर्न तयार भए । तर, अबै मुलुकमा सोचेजस्तो परिवर्तन आएको छैन । त्यसैले सहिदका आत्मा मुलुक र मुलुकवासीको चिन्ताले भट्किरहेको सङ्केत कविको छ । मुलुक भन् भन् दुर्गतिको ओरालो भरिरहेको छ । तैपनि, मुलुक चलाउनेहरूको घँटामा घाम लागेन भने तिनीहरू राम्रैसँग सिद्धिने विचार कविले प्रकट गरेका छन् । जसले मुलुकको समस्यामाथि राजनीति गर्दै आगामा घिउ थप्ने काम गर्छ, भोका पेट हुनेहरूले उसैको घर घेर्नेछन् । हरेक तहका समस्या यथावत् रहिरहने हो भने, जात जात र धर्म धर्मका विच समस्या चर्किरहने हो भने मुलुकले कहिल्यै गति लिन सक्नेछैन भन्दै कविले नयाँ नेपाल निर्माणमा सँगसँगै अधि बढ्नुपर्नेहरू आपसमा टेढिन थाले र पहिचानका नाममा अनेक दङ्गा फसाद चर्काउन थाले भने तिनीहरू राम्रैसँग सिद्धिनेछन् भन्ने आशय कवितामा राखेका छन् । गाउँ घरमा बारी जति खेत विराउँदै बसाइँ सर्न विवश धनेहरू निर्धक्क गाउँ घरमै बस्न सक्नु, हाँसखेल गरी बाखा चराउँदै बनिबुतो गरेरै भए पनि निश्चिन्त पेट भर्न पाउनु, तर भोको पेट लिएर कसैका अगाडि याचना गर्दै हिँड्नु नपरोस् भन्दै कविले जसले दोहोरो चाल चल्छ, ऊ राम्रैसँग सिद्धिने चेतावनी कवितामा दिएका छन् ।

४.३६.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'सिद्धिन्छ राम्रैसँग' शीर्षकको कवितामा मिश्रित दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् । उनले यस कविताका केही पङ्क्तिमा प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दु, केही पङ्क्तिमा द्वितीय पुरुष दृष्टि विन्दु र कतै कतै भने तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु पनि प्रयोग गरेका छन् ।

४.३६.५. भाषाशैली

यस 'सिद्धिन्छ राम्रैसँग' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले सरल र सहज भाषाशैली प्रयोग गरेका छन् । उनले यस कवितामा तत्सम र तद्भव शब्दको सन्तुलित प्रयोग गर्नुका साथै केही सीमित आगन्तुक शब्दको समेत कुशल संयोजन गरी कविताको भाषाशैलीमा श्रुति मधुरता ल्याएका छन् । दाहालले आत्मा, सञ्चार, अग्नि, उदर, क्रान्ति, विजय, चिन्तन, निर्माण जस्ता तत्सम शब्द, रात, सपना, चिठी, घाम, घिउ, घर, कडा, भाले, चाल, दोहोरो, कुना, बारी, खेत, निर्धक्क, बास, बाखा, बनिबुतो, धोक्रो जस्ता तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्द र सहिद, होस जस्ता आगन्तुक शब्दको प्रयोगले कवितामा भाषिक मिठास थपेको अनुभव हुन्छ ।

४.३६.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'सिद्धिन्छ राम्रैसँग' शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रस्तुति देख्न सकिन्छ । कविले कवितामा बसैं-परैं, लगे-गए, पर्खाइमा-अग्निमा, गाउँमा-त्यहाँ जस्ता पदको प्रयोगले अन्त्यानुप्रासको श्रुति मधुरता झल्काएका छन् । यसका साथ साथै उनले यस कवितामा अन्त्यानुप्रास प्रयोगमा क्रमभङ्गता पनि ल्याएका छन् । घर-सँग, अब-सँग, तर-सँग जस्ता पदहरूको प्रयोगमा अन्त्यानुप्रासको अनुभूति हुन सक्दैन । कविले प्रस्तुत कवितामा धने नाम गरेको पात्रात्मक बिम्बद्वारा गरिवीका कारण आफू जन्मेको गाउँ घर छाडेर बसाई सर्न बाध्य नेपालीको अवस्थालाई सङ्केत गरेका छन् ।

४.३६.७. शीर्षक

समाजमा जसले दोहोरो चाल चल्छ, जनताका पिर मर्का बुझ्दैन, सहिदका सपना कुल्चिन्छ र मुलुकमा जात जातको, धर्म धर्मको, भूगोल भूगोलको बिच फाटो बढाउँछ, ऊ राम्रैसँग सिद्धिने सङ्केत गरेको हुनाले कविताको शीर्षक 'सिद्धिन्छ राम्रैसँग' सार्थक देखिन्छ ।

४.३७ 'संसारको सार' कविता

४.३७.१. संरचना

द्विश्लोकी 'संसारको सार' शीर्षकको कविता चार हरफे इन्द्रवज्रा र उपजाति छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ५४) । ११ अक्षरी इन्द्रवज्रा छन्दको एक श्लोक र उपजाति छन्दको एक श्लोक गरी जम्मा दुई श्लोक अर्थात् जम्मा दुई अनुच्छेद रहेको प्रस्तुत कवितामा रहेका ८ पाउमा ३३ शब्द र ८८ अक्षर समेटिएका छन् । संरचनाका दृष्टिले प्रस्तुत कविता अन्यन्तै लघु आयाममा संरचित छ ।

४.३७.२. लय विधान

प्रस्तुत द्विश्लोकी 'संसारको सार' शीर्षकको कविता ११ अक्षरी इन्द्रवज्रा र उपजाति छन्दमा रचिएको हुनाले यस कवितामा संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको लयात्मक मिठास पाउन सकिन्छ । क्रमशः ५ र ६ अक्षरमा यति अर्थात् विश्राम हुने इन्द्रवज्रा र उपजाति छन्दको साङ्गीतिक रन्को प्रस्तुत लघु आकारको कवितामा पनि सहजै अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.३७.३. भाव विधान

यो संसार रहस्यै रहस्यले भरिएको छ । जति हेरयो, यो संसार उति नै चित्र समान लाग्छ । आफूले अलि अलि बुझ्न थालेदेखि नै यो संसारको जाल अनौठो लागे पनि आँखा खुल्दै जाँदा, दृष्टि परिवर्तन हुँदै जाँदा यो सारा संसार जालभन्दा पनि सुधामय रहेको आफूलाई अनुभव भएको विचार कविले प्रस्तुत संसारको सार शीर्षकको कवितामा व्यक्त गरेका छन् । यो संसारको सार भन्नु नै अदृश्य लाग्ने दृश्यमै पनि मिष्टता, शिष्टता र विशिष्टताको अनुभूति हुनु हो भन्ने कविको धारणा यस कवितामा समेटिएको छ ।

४.३७.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'संसारको सार' शीर्षकको कवितामा तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेका छन् ।

४.३७.५. भाषाशैली

यस 'संसारको सार' शीर्षकको लघु कवितामा कवि दाहालले अत्यधिक तत्सम शब्द प्रयोग गरेका छन् । उनले जम्मा ३३ शब्दमध्ये अज्ञान, चित्र, विचित्र, संसार, प्रारम्भ, समान, वसुधा, सुधा, विशिष्टता, शिष्टता, मिष्ट, अदृश्य, दृश्य, प्रवेश, वेश, संसार, सार विशेष, शेष जस्ता अधिकांश तत्सम शब्द प्रयोग गरेका छन् । प्रस्तुत कवितामा केही अप्रचलित तत्सम शब्द पनि परेका छन् ।

४.३७.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'संसारको सार' शीर्षकको कवितामा अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रस्तुति देख्न सकिन्छ । कविले प्रस्तुत कवितामा भान-समान, आउँदा यो-सुधा यो, शिष्टतामा-मिष्टतामा, वेश-शेष जस्ता पद तथा पदावलीको प्रयोगले अन्त्यानुप्रासको श्रुति मधुरता झल्काएका छन् । यसका साथै उनले यस कवितामा यमक अलङ्कारको पनि सुन्दर प्रयोग गरेका छन् । यमक प्रयोगको नमुना :

अदृश्यको दृश्य प्रवेश वेश
संसारको सार विशेष शेष ।

४.३७.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कविताको शीर्षकका रूपमा 'संसारको सार' भन्ने पदावली चयन गरेका छन् । कवितामा कविले हामीले आफ्नो दृष्टि बदलेर हेर्ने हो भने यो संसार सुधामय रहेछ र संसारको सार भन्नु पनि यही नै रहेछ भन्ने भाव प्रस्तुत गरेको हुनाले कविताको शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

४.३८ 'नथाक्ने मन' कविता

४.३८.१. संरचना

'नथाक्ने मन' शीर्षकको एकश्लोकी कविता चार हरफे उपजाति छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ५४) । ११ अक्षरी उपजाति छन्दका एक श्लोक अर्थात् एक अनुच्छेद रहेको प्रस्तुत कविताका ४ पाउमा २० शब्द र ४४ अक्षर समेटिएका छन् । संरचनाका दृष्टिले प्रस्तुत कविता अन्यन्तै लघु आयाममा संरचित छ ।

४.३८.२. लय विधान

प्रस्तुत 'नथाक्ने मन' शीर्षकको एकश्लोकी कविता ११ अक्षरी उपजाति छन्दमा रचिएको हुनाले यस कवितामा संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको लयात्मक मिठास पाउन सकिन्छ । क्रमशः ५ र ६ अक्षरमा यति अर्थात् विश्राम हुने उपजाति छन्दको साङ्गीतिक रन्को प्रस्तुत लघु आकारको कवितामा पनि सहजै अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.३८.३. भाव विधान

कविले प्रस्तुत एकश्लोकी कवितामा आफूले सारा कुरा भुलेर घुम्दा घुम्दा लामो समय बिताएको र जति धेरै डुले पनि, जति धेरै घुमे पनि आफ्नो मन भने कहिल्यै नथाकेको, कहिल्यै नअघाएको प्रसङ्ग स्मरण गरेका छन् । अझै कतिन्जेल यसरी नै भुल्नुपर्ने हो, यसै गरी कतिन्जेल घुम्नुपर्ने हो, डुल्दा डुल्दा कतिन्जेल यसरी नै हराउनुपर्ने हो भन्दै कविले यस भव सागरको दुःखरूपी समुद्रमा रमाउन सक्ने, यही दुःखमा सुख खोज्न वा देख्न सक्ने मान्छे नै सुखी हुन्छ भनेका छन् । यसका साथै, यस्ता दुःखमा नथाकी सबै व्यथा भुलेर अघि बढ्नुपर्ने विचार प्रस्तुत कवितामा पोखेका छन् ।

४.३८.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कविताको पहिलो शब्दका रूपमा प्रथम पुरुष वाचक भूतकालिक क्रियापद 'थाकेँ' प्रयोग गरेको हुनाले यसमा प्रथम पुरुष दृष्टि विन्दुको प्रयोग भएको देखिन्छ । तर, बाँकी पङ्क्तिमा भने तृतीय पुरुष दृष्टि विन्दु देखिन्छ ।

४.३८.५. भाषाशैली

यस 'नथाक्ने मन' शीर्षकको लघु कवितामा कविले मन र दुःख गरी जम्मा दुईओटा तत्सम शब्द प्रयोग गरेका छन् । बाँकी शब्दमा उनले तद्भव शब्दको मात्र प्रयोग गरेका छन् । सकुन्जेल, सबै, कहिल्यै, यो, कतिन्जेल, सधैं, यही, सुखी, त्यही जस्ता तद्भव शब्दको प्रयोगले कवितामा तद्भव शब्दकै बाहुल्य देखिन्छ ।

४.३८.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'नथाक्ने मन' शीर्षकको कवितामा कविले अन्त्यानुप्रासको सुन्दर प्रस्तुति गरेका छन् । उनले प्रस्तुत कवितामा भुलेर-डुलेर, यही हो-त्यही हो जस्ता पद तथा पदावलीको प्रयोगले पूर्ण अन्त्यानुप्रासको श्रुति मधुरता झल्काएका छन् ।

४.३८.७. शीर्षक

प्रस्तुत एकश्लोकी कविताको शीर्षकका रूपमा कविले 'नथाक्ने मन' चयन गरेका छन् । विशेषण नथाक्ने र विशेष्य मन शब्दको मेलबाट बनेको प्रस्तुत शीर्षक उपयुक्त नै प्रतीत हुन्छ ।

४.३९. 'शङ्का' कविता

४.३९.१. संरचना

'शङ्का' शीर्षकको एकश्लोकी कविता चार हरफे उपजाति छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ५४) । ११ अक्षरी उपजाति छन्दका एक श्लोक अर्थात् एक अनुच्छेद रहेको प्रस्तुत कविताका ४ पाउमा १८ शब्द र ४४ अक्षर समेटिएका छन् । संरचनाका दृष्टिले प्रस्तुत कविता अन्यन्तै लघु आयाममा संरचित छ ।

४.३९.२. लय विधान

प्रस्तुत 'शङ्का' शीर्षकको एकश्लोकी कविता ११ अक्षरी उपजाति छन्दमा रचिएको हुनाले यस कवितामा संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको लयात्मक मिठास पाउन सकिन्छ । क्रमशः ५ र ६ अक्षरमा यति अर्थात् विश्राम हुने उपजाति छन्दको साङ्गीतिक रन्को प्रस्तुत लघु आकारको कवितामा पनि सहजै अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.३९.३. भाव विधान

'शङ्का' शीर्षकको एकश्लोकी कवितामा कवि बलराम दाहालले मान्छेले जीवनभर शङ्कै शङ्कामा बाँच्नुपरिरहेको यथार्थलाई सङ्केत गरेका छन् । मान्छे यता नआए पनि उसमाथि शङ्का गरेर दोषको भागीदार सम्झने र उता नगए पनि उसको चरित्रमा दाग लगाउने कार्य होला कि भनेर ऊ सधैंभरि शङ्कै शङ्कामा बाँच्नुपरिरहेको यथार्थलाई कविले प्रस्तुत गरेका छन् । उनले कतै जाँदा कसैको अनुरागले बाँध्ला कि भन्ने आशङ्का र कतै नजाँदा चाहिँ भयनागले डसेर घाइते बनाउने हो कि भन्ने पनि आशङ्का कवितामा प्रकट गरेका छन् ।

४.३९.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कवितामा तृतीय पुरुष दृष्टि विन्दु प्रयोग गरेको देखिन्छ ।

४.३९.५. भाषाशैली

यस 'शङ्का' शीर्षकको लघु कवितामा कविले भाग, अनुराग, भयनाग जस्ता तत्सम, यता, उता, पनि जस्ता तद्भव शब्द र दाग जस्तो आगन्तुक शब्दको समेत प्रयोग गरेर भाषिक मिठास ल्याउने कोसिस गरेका छन् ।

४.३९.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'शङ्का' शीर्षकको कवितामा कविले चारओटै पाउमा 'लाग्ला' शब्दको प्रयोग गरेर अन्त्यानुप्रासको मिठास ल्याएका छन् ।

४.३९.७. शीर्षक

प्रस्तुत एकश्लोकी कविताको शीर्षकका रूपमा कविले 'शङ्का' चयन गरेका छन् । भाव वाचक नाम शब्दका रूपमा आएको प्रस्तुत कविताको शीर्षकले यता गए पनि, उता गए पनि वा नगए पनि शङ्कै शङ्काको जालोमा बाँच्नुपर्ने वर्तमानको विसङ्गत जीवनको सङ्केत गरेको हुनाले कविताको शीर्षक सार्थक प्रतीत हुन्छ ।

४.४० 'घोत्तिरहेछु' कविता

४.४०.१. संरचना

प्रस्तुत 'घोत्तिरहेछु' शीर्षकको कविता चार हरफे, ११ अक्षरी उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ५५) । पाँच श्लोक अर्थात् पाँच अनुच्छेद रहेको प्रस्तुत कवितामा २० पाउ रहेका छन् । ९८ शब्द र दुई सय २० अक्षर समेटिएको प्रस्तुत कविता संरचनाका दृष्टिले लघु आयाममा संरचित छ ।

४.४०.२. लय विधान

प्रस्तुत 'घोत्तिरहेछु' शीर्षकको कविता ११ अक्षरी उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको हुनाले यसमा संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दको लयात्मक मिठास भेट्न सकिन्छ । क्रमशः ५ र ६ अक्षरमा यति अर्थात् विश्राम हुने उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दको साङ्गीतिक रन्को प्रस्तुत लघु आकारको कवितामा पनि सहजै अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.४०.३. भाव विधान

केही नलेखी पनि नहुने र लेखेर मात्रै पनि नहुने आजको समयमा अब कवि लेखकहरूले केही न केही लेख्नुपर्छ भन्दै कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'घोत्तिरहेछु' शीर्षकको कवितामा कवि लेखकहरूको त्यस्तो लेखाइ केही नयाँ र केही सुन्दर हुनैपर्नेमा जोड दिएका छन् । कविले आफू पनि केही न केही त लेख्न सक्ने दाबी गर्दै आफ्नो ज्ञान चक्षु जति टाढा पुग्न सक्छ, उतिसम्मको रचना आफ्ना पाठकसामु पस्किरहेको स्विकारेका छन् । उनले सकेसम्म सबैका लागि र नसके पनि कोही कसैका लागि भए पनि आफ्नो रचना सम्झनाको चिन्नु बन्न सकोस् भन्ने अपेक्षा पनि गरेका छन् । उनले आफ्नो लेखनी नदीको प्रवाह जस्तै स्वस्फूर्त प्रवाहमा बगिरहोस्, भर्ना भै लेखनी प्रवाहमान् भइरहोस् र कनी कनी केही लेख्न नपरोस् भन्ने कामना गर्दै कनी कनी लेखेर राम्रो सिर्जना जन्मिन नसक्ने कुरा स्विकारेका छन् । साहित्य साधनामा आफू जति डुब्नुपर्थ्यो, आफ्नो कविता सङ्ग्रह 'सौगात' ले जुन उचाइ लिनुपर्थ्यो, सौगातभित्रका रचनामा आफू जति डुब्नुपर्थ्यो, त्यति डुब्न नसकेको कुरा स्विकार्दै कविले आफू आगामी दिनमा आफ्नो लक्ष्य अनुरूप अझै अघि बढ्ने वाचा पनि पाठकसामु गरेका छन् । आफूले सोचे जस्तो सबै समेट्ने कविता लेख्न बाँकी नै रहेको स्विकार्दै कविले काव्यको उचाइ भेट्ने कविता कोर्न अझै नसकेको बताएका छन् । कवि दाहालले आफू अझै सुन्दर भावना जन्माउन, सबैलाई समेट्ने कविता कोर्न र उचाइ भेट्ने सिर्जना जन्माउन निरन्तर साधना पथमा घोत्तिरहेको संकेत समेत कवितामा गरेका छन् ।

४.४०.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'घोत्तिरहेछु' कवितामा मिश्रित दृष्टि विन्दु उपयोग गरेका छन् । उनले आफ्नो लेखनीको सम्बन्धमा कवितामा भाव सम्प्रेषण गरेको हुनाले यस कवितामा विशेष गरी प्रथम पुरुष आन्तरिक दृष्टि विन्दु प्रयोग भएको छ भने कतै कतै चाहिँ तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु समेत उपयोग भएको छ ।

४.४०.५. भाषाशैली

प्रस्तुत 'घोत्तिरहेछु' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले तत्सम र तद्भव शब्दको अत्यन्तै मिठो संयोजन गरेका छन् । उनले सुन्दर, सुदूर, ज्ञानचक्षु, नदी, गति, कविता, लेखनी, साधना, भावना जस्ता सीमित तत्सम शब्दका साथमा आज, नयाँ, अब, केही, सके, सबै, सधैं, सम्झना, भर्ना, आफैं, राम्रो, बाँकी जस्ता अत्यन्तै सरल, छोट्टा र नेपाली जन जिब्रोमा बसिसकेका तद्भव तथा भर्ना शब्दको कुशल संयोजन गरेका छन् । उनले प्रस्तुत कवितामा एउटै मात्र आगन्तुक शब्दको प्रयोग गरेका छन्, त्यो हो सौगात ।

४.४०.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'घोत्तिरहेछु' शीर्षकको कवितामा कविले अन्त्यानुप्रास अलङ्कारको सुन्दर विन्यास गरेका छन् । उनले बन्नुपर्छ-लेख्नुपर्छ, लेख्छु-ज्ञानचक्षु, कसैको-सधैंको, कस्तो-त्यस्तो, बनेको-कनेको, डुब्नुपर्थ्यो-पुग्नुपर्थ्यो, भावनामा-साधनामा जस्ता पदहरूको विन्यासबाट कवितामा अन्त्यानुप्रासको मिठास ल्याएका छन् ।

४.४०.७. शीर्षक

कवि दाहालले प्रस्तुत कविताको शीर्षक 'घोत्तिरहेछु' चयन गरेका छन् । कुनै चिन्ता, चिन्तन र साधनामा डुबिरहेको सङ्केत स्वरूप कविले चयन गरेको क्रियापद मूलक प्रस्तुत शीर्षकले कवि कविताको साधनामा घोत्तिरहेका छन् भन्ने सङ्केत गरेको छ । त्यसैले कविताको शीर्षक उपयुक्त प्रतीत हुन्छ ।

४.४१. 'आमा' कविता

४.४१.१. संरचना

प्रस्तुत 'आमा' शीर्षकको कविता चार हरफे अनुष्टुप् र शिखरिणी छन्दमा संयुक्त रूपमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ५६) । आठ पाउयुक्त चार हरफे अनुष्टुप् छन्दका चार श्लोक र शिखरिणी छन्दका चार पाउयुक्त एक श्लोक समेत गरी कुल ३६ पाउको संरचनामा संरचित प्रस्तुत कविता लघु आकारको फुटकर संरचना हो । कवितामा एक सय ४२ शब्द र तिन सय २४ अक्षर समेटिएका छन् ।

४.४१.२. लय विधान

प्रस्तुत 'आमा' शीर्षकको कविता ८ अक्षरी अनुष्टुप् र १७ अक्षरी शिखरिणी छन्दमा रचिएको हुनाले यसमा संस्कृतका दुई भिन्न भिन्न वर्णमात्रिक छन्दको लयात्मक मिठास भेट्न सकिन्छ । आठ अक्षर अर्थात् पुरै एक पाउको अन्त्यमा यति अर्थात् विश्राम हुने अनुष्टुप् छन्द र ६ र ११ अक्षरमा यति हुने शिखरिणी छन्दको साङ्गीतिक रन्को प्रस्तुत लघु आकारको कवितामा सहजै अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.४१.३. भाव विधान

कविले आजको दिनसम्म आफू जहाँ जहाँ पुगे पनि जे जे गरे पनि आमाकै प्रकाशमा चलिरहेको स्मरण गर्दै घरदेखि टाढा प्रवासमा रहँदा पनि आफूमा आमाकै छाया नाचिरहेको भाव कवितामा प्रस्तुत गरेका छन् । आफूलाई जन्म दिएर धर्ती टेक्न लगाउने आमा मात्र आमा नभएर कविले सभ्यता, भाषा, धर्ती सबैलाई आमाका रूपमा स्विकार्दै दुःखको नाउ तारेर उनीहरूलाई हसाउनुपर्ने विचार कवितामा पोखेका छन् । आमाको मूल्य बुझेर दुधको भारा तिर्न हरदम प्रयत्नशील कविले आमा शब्द नै प्यारो र पवित्र छ भन्दै उनले आमाको काखको माया कहिल्यै नछुट्ने दावी गरेका छन् । आमाले पनि प्रकृतिको सुन्दर दिनदेखि दुःख, कष्टका यातना समेत भेलेकी हुनाले आमाको व्यथा निको पार्ने मलम बनेर हामीले जन्म दिने आमादेखि, धर्ती, भाषा, सभ्यता सबैको सेवामा जुट्नुपर्ने विचार कविको छ । यदि हामीले आमाको चहराइरहेको घाउमा मलम लगाउन सकेनौं भने आमाको मन दुःखी हुने भाव कविले कवितामा पोखेका छन् ।

४.४१.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'आमा' कवितामा प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दु उपयोग गरेका छन् । उनले आमाप्रतिको आफ्ना भक्ति भाव र समर्पणलाई प्रथम पुरुष शैलीमा 'म' पात्रलाई उपस्थित गराएर अभिव्यक्त गरेका छन् ।

४.४१.५. भाषाशैली

प्रस्तुत 'आमा' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले तत्सम र तद्भव शब्दको अत्यन्तै मिठो संयोजन प्रस्तुत गरेका छन् । उनले प्रकाश, यात्रा, प्रवास, सत्य, वाणी, सभ्य, माधुर्य, सभ्यता, भाषा, जननी, बीज, छाया, धारा, मूल्य, धर्ती, शब्द, शुद्ध, पवित्र, दुःख, माया, प्रकृति, सुन्दर, मन, दुखित जस्ता सरल तत्सम शब्दका साथमा आज, आमा, छोरो, नजिकै, बेली, आँगनी, नौलो, नाउ, माटो, दुध, विच, भर्खर, प्यारो, आज, काख जस्ता अत्यन्तै सरल, छोटो र नेपाली जनजिब्रोमा बसिसकेका तद्भव तथा भर्रा शब्दको कुशल संयोजन गरेका छन् । उनले प्रस्तुत कवितामा एउटै मात्र आगन्तुक शब्दको प्रयोग गरेका छन्, त्यो हो मलम ।

४.४१.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'आमा' शीर्षकको कवितामा कविले अन्त्यानुप्रासको सुन्दर विन्यास गरेका छन् । उनले प्रकाशमा-प्रवासमा, जन्मिँदा-हुकिँदा, बस्नु छ-पस्नु छ, उमानु छ-उतानु छ, छिर्दछु-तिर्दछु, तर-भर्खर, यो-गयो, गरी-सधैँभरि, दिन-किन जस्ता पद तथा पदावलीको विन्यासबाट कवितामा अन्त्यानुप्रासको मिठास ल्याएका छन् ।

४.४१.७. शीर्षक

कवि दाहालको प्रस्तुत कविताको शीर्षक 'आमा' चयन गरेका छन् । आफूलाई जन्म दिने आमादेखि भाषा, संस्कृति, धर्ती सबैलाई आमाकै रूपमा चिनाएका र आमाप्रतिको आफ्ना दायित्व बोध गरेर आमाको मुहार हसाउने प्रण गरेको हुनाले प्रस्तुत कविताको शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

४.४२. 'रहस्य' कविता

४.४२.१. संरचना

प्रस्तुत 'रहस्य' शीर्षकको कविता चार हरफे अनुष्टुप् छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ५७) । आठ पाउयुक्त चार हरफे अनुष्टुप् छन्दका सात श्लोक, २८ पाउको संरचनामा संरचित प्रस्तुत कविता लघु आकारको फुटकर संरचना हो । कवितामा एक सय ९५ शब्द र चार सय ४८ अक्षर समेटिएका छन् ।

४.४२.२. लय विधान

प्रस्तुत 'रहस्य' शीर्षकको कविता ८ अक्षरी अनुष्टुप् छन्दमा रचिएको छ । यस कवितामा संस्कृतको वर्णमात्रिक अनुष्टुप् छन्दको लयात्मक मिठास भेट्न सकिन्छ । आठ अक्षर अर्थात् पुरै एक पाउको अन्त्यमा यति अर्थात् विश्राम हुने अनुष्टुप् छन्दको साङ्गीतिक रन्को प्रस्तुत लघु आकारको कवितामा सहजै अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.४२.३. भाव विधान

कारागारभित्र जन्मेका भगवान् श्रीकृष्णको जीवनमा पूतना बध गर्दा होस् वा व्याधाको बाण लागेर आफैँ मर्दा होस् दुःखै थियो, सुखैसुख थिएन भन्दै जीवनमा कसैलाई पनि सुखैसुख नभएको विचार कवि दाहालले प्रस्तुत 'रहस्य' शीर्षकको कवितामा प्रकट गरेका छन् । कविले आफू मिस्री भए कृष्ण मिठास हुन्, आफू सत्तावान् भए कृष्ण सत्ता हुन्, आफू शरीर भए कृष्ण आत्मा हुन् र कृष्ण चन्द्र र सूर्यको ज्योति हुन् भन्दै कविले कृष्णलाई सम्झेका छन् । लीला पुरुष कृष्णले जीवनमा अनेक लीला रचेर आफ्नो शक्ति देखाएर गए भन्दै कविले आफूले केही न केही लीला रच्नु जरुरी भएको स्विकारेका छन् । कविले सकभर आफूले कविता सिर्जनामै लीला रच्ने र नसके कृष्णकै लीला सम्झेर बाँच्ने प्रण गरेका छन् । कृष्णले आफूभित्र भएको सम्पूर्ण शक्ति चिनेजस्तो आफूले पनि आफूभित्रको शक्ति चिन्नुपर्नेमा कविले जोड दिएका छन् ।

४.४२.४. कथन पद्धति

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत 'रहस्य' शीर्षकको कवितामा मिश्रित दृष्टि विन्दु उपयोग गरेका छन् । उनले कवितामा प्रथम पौरुषेय आन्तरिक दृष्टि विन्दुका साथमा तृतीय पुरुष दृष्टि विन्दुको समेत उपयोग गरेका छन् ।

४.४२.५. भाषाशैली

प्रस्तुत 'रहस्य' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले तत्सम र तद्भव शब्दको मिठो संयोजन प्रस्तुत गरेका छन् । उनले कृष्ण, व्याधा, बाण, मृत्यु, पूतना, बध, दुःख, सत्ता, शरीर, आत्मा, सूर्य, चन्द्र, ज्योति, लीला पुरुष, लीला, शक्ति, युग, अदृश्य, तत्त्व, महत्त्व जस्ता तत्सम शब्दका साथमा डुँडेलो, मिस्री, आफू, भित्री, एउटा, नौलो जस्ता तद्भव शब्दको संयोजनबाट कवितामा भाषिक मिठास थपेका छन् । तत्सम र तद्भव शब्दका अतिरिक्त निकै थोरै आगन्तुक शब्द प्रयोग गर्ने क्रममा कविले जिन्दगी, विदा जस्ता आगन्तुक शब्दको समेत प्रयोग गरेका छन् ।

४.४२.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'सहस्य' शीर्षकको कवितामा कविले अन्त्यानुप्रासको सुन्दर विन्यास गरेका छन् । उनले कारागारमा-जहाँ, तक-सुख, कृष्ण हुन्-कृष्ण हुन्, गैगए-भए, रचनुपर्दछ-बचनुपर्दछ, थरीथरी-सधैँभरि, टुङ्गिने-टुङ्गिने, तत्त्व छ-महत्त्व छ जस्ता पद तथा पदावलीको विन्यासबाट कवितामा अन्त्यानुप्रासको मिठास ल्याएका छन् ।

४.४२.७. शीर्षक

कवि बलराम दाहालले प्रस्तुत कविताको शीर्षक 'रहस्य' चयन गरेका छन् । भगवान् श्रीकृष्णको कारागारमा भएको जन्मदेखि, व्याधाको हातबाट भएको मृत्युसम्म उनलाई दुःखै दुःख भएजस्तै हामीले जतिसुकै दुःख कष्ट सहनुपरे पनि जीवनमा कुनै न कुनै लीला रचेर बाँच्नुपर्छ भन्दै कविले श्रीकृष्णले आफूभिन्नको शक्तिको रहस्य चिने जस्तै हामीले पनि आफूभिन्नको रहस्यमय शक्तिलाई चिन्नुपर्ने भाव विन्यास भएकाले कविताको शीर्षक उपयुक्त प्रतीत हुन्छ ।

४.४३. 'उही छ कुरो' कविता

४.४३.१. संरचना

प्रस्तुत 'उही छ कुरो' शीर्षकको कविता चार हरफे पञ्चचामर छन्दमा रचिएको छ (दाहाल, २०६८, पृ. ५९) । चार पाउयुक्त पञ्चचामर छन्दका पाँच श्लोक २० पाउको संरचनामा संरचित प्रस्तुत कविता लघु आकारको फुटकर संरचना हो । कवितामा एक सय ३३ शब्द र तिन सय २० अक्षर समेटिएका छन् ।

४.४३.२. लय विधान

प्रस्तुत 'रहस्य' शीर्षकको कविता १६ अक्षरी पञ्चचामर छन्दमा रचिएको हुनाले यस कवितामा संस्कृतको वर्णमात्रिक पञ्चचामर छन्दको लयात्मक मिठास भेट्न सकिन्छ । आठ आठ अक्षरमा यति अर्थात् विश्राम हुने पञ्चचामर छन्दको साङ्गीतिक रन्को प्रस्तुत लघु आकारको कवितामा अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.४३.३. भाव विधान

मुलुकमा जतिसुकै परिवर्तन आए पनि, संसारमा जतिसुकै चमत्कार भए पनि गाउँ घरका हली, किसानको अवस्था उस्तै छ । हाम्रा पानी पँधेरा, घाट सबैतिरका कथा व्यथा उस्तै छन् । एक फाँको सातु

र नून तेलको कथा व्यथामा पनि कुनै फेर बदल आएको छैन । त्यसैले आफ्नो अमूल्य आँसुको मूल्य खोजी गर्दै हाम्रा गाउँ घरका भुपडीहरू रोइरहेको भाव कविले कवितामा पस्केका छन् । हात, खुट्टा, ओठ जताततै खेतमा धाँजा फाटे जस्तै चिरा परेका छन् । दैवले ठगेर लक्ष्यमा पुग्न नसक्दा जिन्दगी नदी भैं कलकल बग्न सकिरहेको छैन । जताततै भोक, प्यास, आँसु र पेटकै कुरा मात्र सुनिन्छ । जता गए पनि वेदना नै वेदना मात्र सुन्नुपर्ने विवशताभिन्न बाँचिरहेका हाम्रा गाउँघर विउँभाउन अब सबै नयाँ नयाँ सिर्जनाको आवाज बोकेर उठ्ने बेला आएको छ । अब सबै क्रान्तिमा ओर्लनुपर्ने बेला आएको छ । यदि हामीले क्रान्तिको बिगुल घन्काउन सफल भयौं भने गरिबका दुःखका कुरा फेरि फेरि सुन्नुपर्नेछैन भन्दै कविले सबैलाई क्रान्तिको मैदानमा ओर्लन आह्वान गरेका छन् । देशमा सबै समान छन्, यो देशमा बुद्धले फेरि जन्म लिएका छन् भन्दै नयाँ सिर्जना गरेर हामीले हाम्रो मुलुकलाई संसारभर चिनाउन सक्नुपर्नेमा जोड दिएका छन् । कविले मुलुकमा बारम्बार हुँदै आएको उही क्रान्तिको कुरा फेरि एक पटक कवितामा दोहोर्याएका छन् ।

४.४३.४. कथन पद्धति

कवि दाहालले प्रस्तुत 'उही छ कुरो' शीर्षकको कवितामा तृतीय पुरुष बाह्य दृष्टि विन्दु उपयोग गरेका छन् ।

४.४३.५. भाषाशैली

प्रस्तुत उही छ कुरो' शीर्षकको कवितामा कवि दाहालले तत्सम र तद्भव शब्दको अत्यन्तै मिठो संयोजन गरेका छन् । उनले व्यथा, कथा, दुःख, भाग्य, लक्ष्य, नदी, वेदना, क्रान्ति, बुद्ध, समुद्र, देश जस्ता निकै कम तत्सम शब्दका साथमा गाउँ, हली, किसान, घाट, सातु, नून, तेल, भोपडी, आँसु, खेत, चिरा, हात, आँसु, अलमल, कलकल, भोक, प्यास, पेट, सिर्जना, बन्चरो जस्ता तद्भव तथा भर्रा नेपाली शब्दको संयोजनबाट कवितामा भाषिक मिठास थपेका छन् । तत्सम र तद्भव शब्दका अतिरिक्त निकै थोरै आगन्तुक शब्द प्रयोग गर्ने क्रममा कविले जिन्दगी, गरिब जस्ता आगन्तुक शब्दको समेत कवितामा प्रयोग गरेका छन् ।

४.४३.६. बिम्ब/अलङ्कार

प्रस्तुत 'उही छ कुरो' शीर्षकको कवितामा कविले अन्त्यानुप्रासको सुन्दर विन्यास गरेका छन् । उनले किसानका-घाटका, अलमल-कलकल, वेदना-सारमा, जताततै-रमाउँदै, सिर्जना-देशमा, फैलियोस्-लेखियोस् जस्ता पदको विन्यासबाट कवितामा अन्त्यानुप्रासको मिठास ल्याएका छन् । यसका अतिरिक्त कवितामा कविले उपमा अलङ्कारको प्रयोग पनि गरेका छन् । उपमा अलङ्कार प्रयोगको एक नमुना :

'चिरा परेर खेत भैं चिरा चिरा छ हातमा'

४.४३.७. शीर्षक

मुलुकमा जे जस्ता क्रान्ति भए पनि परिवर्तनका कुरा सुनिए पनि अभैसम्म गरिब किसानको जीवन आँसु नै आँसुमा डुबिरहेको छ, अर्थात् कुरो उही छ । जनताको जीवन जहाँको त्यहीँ छ, उनीहरूको दुःख जस्ताको तस्तै छ । त्यसैले जतिसुकै परिवर्तनका नारा भट्याए पनि मुलुकको अवस्था उही छ भन्ने भाव बोकेको प्रस्तुत कविताको शीर्षक 'उही छ कुरो' निकै उपयुक्त प्रतीत हुन्छ ।

४.४४ सारांश

समग्रमा भन्नुपर्दा कवि बलराम दाहालको प्रस्तुत 'सौगात' कविता सङ्ग्रह कविको जीवनका आरोह-अवरोह, नेपाली समाजका कथा-व्यथा, जीवन जगतका यावत् रहस्य आदिको सन्तुलित भाँकी हो । कुल ४२ कविता समेटिएको प्रस्तुत सङ्ग्रहभित्र संस्कृतका ८ वर्णमात्रिक छन्दको प्रयोग गरिएको छ । विभिन्न बिम्ब, प्रतीक र अलङ्कारले सुसज्जित प्रस्तुत सङ्ग्रहका अधिकांश कविता पठनीय, श्रवणीय र आस्वाद्य बन्न पुगेका छन् ।

अध्याय : पाँच

‘सौगात’ कविता सङ्ग्रहका कविताहरूको प्रवृत्तिपरक अध्ययन

५.१. विषय प्रवेश

यस अध्यायमा कवि बलराम दाहालको ‘सौगात’ कविता सङ्ग्रहमा सङ्कलित कवितालाई उनका प्रवृत्तिहरूका आधारमा विश्लेषण गरिएको छ । प्रवृत्तिपरक अध्ययनका क्रममा वादका आधारमा स्वच्छन्दता, सामाजिक यथार्थता, राष्ट्रियता, शिल्प शैलीका दृष्टिले व्यङ्ग्यात्मकता तथा छन्दोबद्धता उनका कवितामा पाइने मुख्य विशेषता भएकाले यिनै प्रवृत्तिको आधारमा सम्पूर्ण कविताको विश्लेषण गरी अन्त्यमा सारांश प्रस्तुत गरिएको छ ।

५.२. स्वच्छन्दता

सौगात कविता सङ्ग्रहभित्रका कविताहरूको अध्ययनका क्रममा कवि बलराम दाहालका विविध प्रवृत्ति भेटिन्छन् । तीमध्ये स्वच्छन्दता एक प्रमुख प्रवृत्तिको रूपमा कवितामा मुखरित भएको पाइन्छ । विशेषतः पाश्चात्य साहित्य जगतका वर्डस्वर्थ र कलरिजद्वारा प्रतिपादित स्वच्छन्दतावादलाई नेपाली साहित्यमा भित्र्याउने श्रेय महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटालाई जान्छ । महाकवि देवकोटाद्वारा प्रतिपादित स्वच्छन्द शैली अँगालेर कविता सिर्जना गर्ने कविहरूको नेपाली साहित्यमा कमी छैन ।

विशेषतः प्रबल प्रकृति प्रेम, मानवतावाद, आस्तिक र आध्यात्मिक चेतना, क्रान्ति चेत, अतीतप्रतिको मोह र भविष्यप्रतिको स्वप्निल परिकल्पना तथा वर्तमानसँगका असन्तुष्टि एवम् वेदनाका साथै करुणा र व्यङ्ग्य चेतलाई अँगाल्ने ^{५९} स्वच्छन्दतावादी शैली कवि बलराम दाहालको पनि प्यारो शैली बनेको देखिन्छ । प्रकृत भावसँग नमिल्ने खालका यमकको कसरत देखा उनी शास्त्रीय शैलीका कवि हुन् भन्ने भ्रम पर्न सक्छ । वास्तवमा उनको शैली स्वच्छन्दतावादी हो ।^{६०} कविता सङ्ग्रहको भूमिकामै राष्ट्र कवि माधव घिमिरेले कवि दाहालको शैली स्वच्छन्दतावादी नै हो भनेर किटान गरिसकेपछि, यसमा शङ्का गरिरहनुपर्ने स्थिति देखिन्न ।

खासगरी कवि दाहालका कवितामा प्रशस्त व्यङ्ग्यात्मकता, आत्मपरकता, प्रकृति चित्रण, क्रान्ति चेतना जताततै सल्बलाइरहेको देख्न सकिन्छ । सङ्ग्रहभित्रका कविताको अध्ययन गर्दा अनुभूत हुने स्वच्छन्दतावादी शैलीका केही नमुना :

तिम्रो प्रीत छ आँप, बेल, तुलसी, ऐंसेलुका पातमा
के मध्याह्न, बिहान, साँझ जहिल्यै जिस्क्याउँछ्यौ रातमा
हे ! चाञ्चल्य नवीनता मधुरता सौन्दर्यकी सम्पदा
आयौ च्याप्प समात्न खोज्छु कविता फुत्केर भाग्य्यौ सदा ॥

(कविता, २०६८, पृ. ५)

सिर्सिर् वायु बहेर ती युवतीको सर्वाङ्ग जिस्क्याउँछ
हेरी धैर्य गुमेर पात बिचरा ! त्यो ओठ मिठ्याउँछ ।
गर्दै स्वागत गान काफल चरी आएर डाकेपछि
नौलो कुत्कृत चढ्छ कुन्नि किन हो वैशाख लागेपछि ॥

(वैशाख लागेपछि, २०६८, पृ. ३५)

^{५९} नेपाली कविता (भाग ४), २०५३, साझा प्रकाशन

^{६०} घिमिरे, भूमिका, २०६८

हामी के वरु सृष्टि सर्जक स्वयं लोभी भएका हुनन्
आई राति परी चरी रहरिला भेटी गएका हुनन् ।
योभन्दा अझ सृष्टि सुन्दर रचून् यो सृष्टि उल्टेपछि
नौलो कुत्कृत चढ्छ कुन्नि किन हो वैशाख लागेपछि ॥
(पूर्ववत्)

यसरी सौगात कविता सङ्ग्रहभित्रका कविताहरूको अध्ययन गर्दा कवि बलाराम दाहालको स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति छुटाछुल्ल भएर पोखिएको पाइन्छ । सङ्ग्रहभित्रका कविताको समग्र अध्ययन गर्दा भूमिकामा राष्ट्रकवि घिमिरेले भनेभैं उनको मूल काव्य प्रवृत्ति स्वच्छन्दतावादी नै हो भन्न सकिन्छ ।

५.३. सामाजिक यथार्थता

युवा कवि बलराम दाहालले सौगात सङ्ग्रहभित्रका कविताहरूमा आफू जन्मी, हुर्की, बाँचेको समाजको यथार्थ चित्रण गरेका छन् । उनले आफ्नो वरिपरिको समाजको चित्रण गर्ने क्रममा सिङ्गो नेपाली समाजको यथार्थ चित्र उतारेका छन् । बिहानदेखि यता दौड्यो, उता दौड्यो तर उपलब्धि शून्यको स्थिति छ । पेट भर्नकै लागि बिहानदेखि साँभसम्म दौडधुप गर्नुपर्ने बाध्यता छ । यस्तै विविध पक्षलाई कवि दाहालले आफ्ना कविताहरूमा समेटेका छन् ।

भर्दैमा पेटको थैलो मलाई आज ठिक्क छ
रित्तो छ ज्ञानको थैलो त्यसैले आज दिक्क छ ।
(दैनिकी, २०६८, पृ. ६)

अकासिंदो बजार भाउले गर्दा साँभ बिहान हात मुख जोर्न पनि धौ धौ पर्न थालिसक्यो । तैपनि राज्यले जनताको पीडामा मलम लगाउनेतर्फ कुनै चासो दिएको छैन । जनता भोकभोकै रात गुजार्न बाध्य छन् । यस्तै सामाजिक असङ्गतिमाथि कलम कुदाएका छन् कवि दाहालले ।

ग्याँस चामलको भाउ ऐले लाख पुगे पनि
दिँदैन राज्यले सिल्लै खानुपछि किनेर नि ॥
तिर्दैन राज्यले भाडा हामी हौं जति निर्धन
छैन पुगेर कोठामा नरोएको कुनै दिन ॥
(नरोएको कुनै दिन, २०६८, पृ. १०)

कविले बाल्यकाल र कर्तव्य शीर्षकको कवितामा आफ्नो बाल्यकालको सम्झना गर्ने क्रममा नेपाली समाज र अधिकांश नेपालीले देखे भोगेको बाल्यकालीन स्मृतिको सुन्दर चित्र उतारेका छन् ।

बाख्रा वस्तु चराउने निहुँ गरी खेल्थ्यौं भकुन्डो कति ?
बाबाका कति खेलमा रहरले मोजा बनायौं खती ?
कान्ताबाट लडेर हाय ! शिरमा उठ्थ्यो टुटुल्को कति ?
पुग्थ्यो काण्ड डुलेर साँभ घरमा फर्केर आएपछि ॥
(बाल्यकाल र कर्तव्य, २०६८, पृ. ३४)

५.४. राष्ट्रियता

कवि बलराम दाहालको प्रस्तुत सौगात कविता सङ्ग्रहभित्रका कविता कृतिको अध्ययन गर्दा उनका अधिकांश रचनामा नेपाली जाति, माटो, भूगोल, सिमानाप्रति असीम श्रद्धा व्यक्त भएको पाइन्छ। सौगात कविता सङ्ग्रहभित्रका केही कविताले राष्ट्रियता, देशभक्ति र स्वतन्त्रताप्रतिको विशेष अनुराग प्रकट गरेका छन्।^{६१} नरोएको कुनै दिन शीर्षकको कवितामा प्रस्तुत 'मुलाभैँ देश काटेर बाँडेको हेर्न सकिदैन' भन्ने अभिव्यक्तिबाट राष्ट्रिय अखण्डता खण्डित हुने हो कि भन्ने चिन्ता व्यक्त गरिएको भने उचाइ शीर्षकको कवितामा 'हिमाल सदैँ जब पुग्छ पारि, सिद्धिन्छ हामी सबको चिनारी' भन्ने अभिव्यक्तिका माध्यमबाट नेपालका सीमाहरू मिचिँदै गएकोमा चिन्ता र आक्रोश व्यक्त गरिएको पाइन्छ।^{६२} यो राष्ट्रको चौतर्फी समुन्नतिका लागि वर्षौँदेखि आवाज उठाइयो, सङ्घर्ष गरेर रगत, पसिना बगाइयो तर विग्रेको गाडीभैँ मुलुकलाई गतिहीन बनाएर घ्याच्च घ्याच्च अड्काइयो। यस्तो अव्यवस्थाप्रति कविले चर्को आक्रोश व्यक्त गरेका छन्।

उक्लियोस् राष्ट्र यो भन्दै वर्षौँदेखि कराइयो
विग्रेको आज गाडीभैँ घ्याच्च घ्याच्च गराइयो।

(नरोएको कुनै दिन, २०६८, पृ. ९)

नेपाली राष्ट्रियतामाथि चौतर्फी आक्रमण भइरहेको बेलामा पनि हाम्रा राज्यका चालक भनिने राजनीतिक दलका नेताहरू विदेशीको अधि लम्पसार परिरहेका छन्। उनीहरूकै कारण हाम्रा वीर पुर्खाहरूले कोरेको वीरताको इतिहास धमिलिने चिन्ता बढेर गएको छ। हाम्रा पुर्खाले आफ्नो वीरता र बहादुरीले जुन उचाइ कोरेका थिए, त्यो आज होचिने हो कि भन्ने चिन्ता कविले व्यक्त गरेका छन्।

उचाइ हाम्रो चुचुरीहरूमा
छ वीरता यी खुकुरीहरूमा
उचाइ होचिन्छ कि पीर लाग्छ
बहादुरी घट्छ कि पीर लाग्छ ॥

(उचाइ, २०६८, पृ. १९)

नेपालीको आफ्नोपन मर्दै गएको छ। विदेशीको देखासिकी चरम रूपमा बढ्दै गएको छ। विदेशी संस्कृति, रीतिरिवाज, पोसाक, खानपान, रहनसहन आदिले हाम्रो समाजलाई नराम्ररी गाँजिसकेको छ। जसले गर्दा हाम्रो राष्ट्रियता दर्साउने मौलिक पहिरनको समेत महत्त्व कम हुँदै गएको छ। यस्तो अवस्थाप्रति पनि कविताले चिन्ता प्रकट गरेका छन्।

त्यो दौरा, सुरुवाल छैन शिरमा टोपी सजिन्नन् यहाँ
सीताका अनि रामका अब कुनै गाथा सुनिन्नन् यहाँ।

(भानुलाई पत्र, २०६८, पृ. २०)

कवि दाहालले यो मुलुकका उन्नत शिखरमा प्रवाहित हुने सौन्दर्यका आँकुरा हुर्के बढेको देख्न चाहेका छन्। उनी भोलि मुलुकको सौन्दर्यमा लाली चढेको कुरा आफ्ना सिर्जनाहरूमा पोख्न बाँकी नै रहेको हुनाले मुलुक विकासको चुचुरातिर लम्केको हेर्न लालायित छन्।

मैले देख्नु छ देशको शिखरमा सौन्दर्यको आँकुरा
मैले लेख्नु छ भोलिको खबरमा लाली चढेको कुरा ॥

(प्यारो नेपाल, २०६८, पृ. ३१)

^{६१} ज्ञवाली, भूमिका, २०६८

^{६२} पूर्ववत्

५.५. व्यङ्ग्यात्मकता

‘सौगात’ सङ्ग्रहभित्रका कैयौं कवितामा कवि बलराम दाहालले नेपाली समाजमा विस्तारै भित्रिँदै गएको विकृति र विसङ्गतिप्रति गहिरो चिन्ता प्रकट गरेका छन् । वर्तमान समाजले क्रमशः आफ्नो मूल्य मान्यता भुल्दै गएको छ । समाजलाई अनेक प्रकारका सामाजिक समस्याले घेरिरहेका छन् । हाम्रो समाज अनेकौं सामाजिक विकृति, विसङ्गति र असङ्गतिको अखडा बन्दै गएको छ । यहाँ राजनीतिक असङ्गतिले समाजलाई आक्रान्त पारेको छ । भाषा, धर्म, संस्कृति सबै आक्रमणको निसानामा छन् । बजार भाउ दिनदिनै अकासिइरहेको छ । जनतालाई साँभ्र विहान हात मुख जोर्न धौ धौ पर्दै जान थालेको छ । यस्ता सामाजिक असङ्गतिमाथि कविले आफ्नो कवितामा व्यङ्ग्यको तिर चलाएका छन् ।

जडीबुटी सबै बेच्छन् भूसको मूल्यमा त्यता
राज्यले औषधि किन्छ सुनको मूल्यमा यता ।

(नरोएको कुनै दिन, २०६८, पृ. १०)

बाटा मुन्तिर बग्दै छ त्रिशुली त्यो निरन्तर
बाटाकै घर निस्पट्ट बल्दैन विजुली तर ॥

(पूर्ववत्, २०६८, पृ. ३४)

पालैपालो मही पार्न मदानी मात्र खोसियो
अहँ निस्केन घ्यू आज नौनाडी सबको गल्यो ॥

(पूर्ववत्, २०६८, पृ. ३५)

यतिखेर नेपालको राजनीति गम्भीर अलमलमा छ । सत्ताका लागि छिनाभ्रष्टी चलिरहेको छ । देश बनाउने हामी नै हौं भनेर सगर्व घोषणा गर्नेहरू पनि सत्ता सिनोकै वरिपरि प्रदक्षिणा गरिरहेका देखिन्छन् । मुलुक बनाउने दिशामा भन्दा पनि सत्तालाई दुधालु गाईका रूपमा उपभोग गर्नेहरूको जमात निकै बढेकोमा पनि कविले आक्रोशयुक्त चिन्ता जाहेर गरेका छन् ।

बाँचेको युगमा छ आज रमिता चल्दै छ मेला यहाँ
जस्तो रावण रामको अधि थियो त्यस्तै छ भेला यहाँ ।
त्यो बेला हनुमानको भर थियो ठूलै लगाए गुन
ऐलेका हनुमानका भर परी डुब्दै छ यो जीवन ॥

(भानुलाई पत्र, २०६८, पृ. २०)

लागेथे तर राम स्वर्णमृग त्यो पछ्याउँदै मोहले
सत्तामोह बढेर राष्ट्र अब यो फस्दै छ विद्रोहले ।
सत्ता रैछ दुधालु गाई कतिको चिन्ता छ थाक्ला भनी
हे प्यारा कवि भानु ! कान्तिपुरको शोभा हरायो अनि ॥

(पूर्ववत्, २०६८, पृ. २०)

त्यो बेला वनवासमा त वनकी सीता हराइन् त्यहाँ
ऐलेको वनवासमा त घरकी सीता हराइन् यहाँ ।

(पूर्ववत्, २०६८, पृ. २०)

मुलुकमा परिवर्तनका नाममा अनेक थरी क्रान्ति भए । जनताले अनेक थरी क्रान्तिमा हाँसी हाँसी बलिदान गरेर यो मुलुकमा पटक पटक परिवर्तनको शङ्खघोष गरे, तर उनीहरूले वास्तविक परिवर्तनको अनुभूति भने कहिल्यै गर्न सकेनन् । परिवर्तनमा मर्ने चाहिँ जनता र परिवर्तनबाट फाइदा उठाउने चाहिँ

सीमित टाठाबाठा ! यस्तो विडम्बनापूर्ण असङ्गति विरुद्ध पनि कवि दाहालले कलम चलाएका छन् । उनले नयाँ बोतलमा पुरानै रक्सी भरेर बेच्ने शासकहरूप्रति कडा व्यङ्ग्य गरेका छन् ।

धेरै आज महाधिवेशन भए देख्यौं सबै हेरिए
फेरिन्नन् जबसम्म सोच मनका के हुन्छ के फेरिए ?
मेरो राष्ट्र सजाउने जुलुसको आएर आँधी गयो
मात्रै बोतल फेरियो तर उही रक्सी पुरानै रह्यो ॥
(रक्सी पुरानै रह्यो, २०६८, पृ. २९)

मैलो आँगनको पुछेर घरको दैलो उघाच्यौं तर
आमाको किन हो मुहार मलिनै देखिन्छ हुन्छिन् पर ।
सोचेभैं किन पारिलो र हँसिलो लागेन खै घाम त्यो
मात्रै बोतल फेरियो तर उही रक्सी पुरानै रह्यो ॥
(पूर्ववत्, २०६८, पृ. २९)

जन युद्धका नाममा मुलुकमा मच्चाइएको गृह युद्धको अग्निमा कति मारिए, कति बेपत्ता पारिए, कतिको अङ्ग भङ्ग भयो, त्यसको कुनै लेखाजोखा नै रहेन । तत्कालीन गृह युद्ध कालीन समयमा मान्छे मारिएका समाचार खासै अनौठो लाग्न छाडिसकेको थियो । किनकि, त्यतिखेर मान्छेको कुनै मूल्य थिएन । त्यस्तो दुर्दान्त अवस्थाप्रति पनि कविले आफ्नो कवितामा व्यङ्ग्य गरेका छन् ।

काटिन्थ्यो पर गाउँमा जब खसी जान्थ्यौं दगुदैँ त्यता
काटिन्छन् कति आज मानिस त्यसै क्यै छैन वास्ता यता ।
(बाल्यकाल र कर्तव्य, २०६८, पृ. ३४)

५.६. छन्दोबद्धता

छन्दोबद्धता कवि बलराम दाहालको एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति हो । संस्कृतका वर्णमात्रिक छन्दमा कविता लेख्न सिपालु कवि हुन् दाहाल । उनले संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दलाई एक कुशल छन्दशिल्पीले भैं सरलतासाथ खेलाएका छन् । कुल ४२ कविता समेटिएको प्रस्तुत सौगात कविता सङ्ग्रहमा कविले कुल आठ ओटा वर्णमात्रिक छन्द प्रयोग गरेका छन् । 'कवि बलराम दाहालको प्रस्तुत सौगात कविता सङ्ग्रहमा जम्मा पाँच ओटा वर्णमात्रिक संस्कृत छन्दको प्रयोग गरिएको मैले पाएँ र ती छन्दहरू यी हुन्— इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा मिश्रित उपजाति (अठार ओटा कवितामा), शार्दूलविक्रीडित (पन्ध्र ओटा कवितामा), चार हरफे वा आठ पाउको अनुष्टुप् (६ ओटा कवितामा), द्रुतविलम्बित (दुइ ओटा कवितामा), पञ्चचामर (एक कवितामा) र शिखरिणी र अनुष्टुप् सँगै एक कवितामा ।'^{६३} वरिष्ठ समालोचक प्रा. डा. वासुदेव त्रिपाठीले भूमिकामा यस सङ्ग्रहमा जम्मा पाँच ओटा छन्द प्रयोग भएको उल्लेख गरेका भए पनि सङ्ग्रहभित्रका कविताहरूको सूक्ष्म अध्ययन गर्दा निम्न आठ ओटा छन्दको प्रयोग भएको पाइन्छ : १) उपजाति, २) शार्दूलविक्रीडित, ३) अनुष्टुप्, ४) द्रुतविलम्बित, ५) इन्द्रवज्रा, ६) उपेन्द्रवज्रा, ७) शिखरिणी र ८) पञ्चचामर ।

^{६३} त्रिपाठी, भूमिका, २०६८

५.६.१. उपजाति

सौगात कविता सङ्ग्रहभित्रका सौगात, नथाकने मन र शङ्का शीर्षकका तिन ओटा कविता उपजाति छन्दमा रचिएका छन् ।

उदाहरणार्थ :

म काव्यको आज हली बनेर
जोत्दै छु यो खेत गरा गनेर ।
राँटा नराखीकन जोत्न जान्ने
हली सबैको प्रिय बन्छ मान्ने ॥

(सौगात, २०६८, पृ. ४३)

५.६.२. उपजाति र उपेन्द्रवज्रा

जिन्दगी, म अनन्त जान्छु, उचाइ, र हार खान्ने शीर्षकका चार ओटा कवितामा कवि बलराम दाहालले केही श्लोकमा उपजाति र केही श्लोकमा उपेन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् । उनले जिन्दगी शीर्षकको कविताका कुल १५ श्लोकमध्ये १४ श्लोकमा उपजाति र एक श्लोकमा उपेन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् । सायद उपजाति छन्दमा कविता रचना गरेँ भन्दा भन्दै असावधानीवश उपेन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग भएको पनि हुन सक्छ । त्यसैगरी म अनन्त जान्छु शीर्षकको कविताका कुल १६ श्लोकमध्ये कविले १३ श्लोकमा उपजाति छन्दको प्रयोग गरेका छन् भने तीन श्लोकमा चाहिँ उपेन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् । उचाइ शीर्षकको कवितामा कविले पाँच श्लोकमध्ये चार श्लोकमा उपजाति र एक श्लोकमा उपेन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् । कवि दाहालले हार खान्ने शीर्षकको कवितामा पनि चारमध्ये तीन श्लोकमा उपजाति र एक श्लोकमा उपेन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् ।

उपजाति छन्द प्रयोगको एक नमुना :

दाए, कुदाए कतिले हिलामा
काँटी किला छन् कति खुड्किलामा ।
तथापि मैले नबढी हुँदैन
म टाकुरामा नचढी हुँदैन ॥

(जिन्दगी, २०६८, पृ. ३)

उपेन्द्रवज्रा प्रयोगको एक नमुना :

यसो गरे हुन्छ कि भन्छु हुन्न
उसो गरे हुन्छ कि भन्छु हुन्न ।
जसो गरे जीवन उधिँएला
कसो गरे जीवन सुधिँएला ॥

(पूर्ववत् पृ. २)

५.६.३. उपजाति र इन्द्रवज्रा

कवि दाहालले लाली, सुकर्म, सम्भ्रना, बुभेरेर आऊ, घोट्लिरहेछु, संसारको सार र यात्रा शीर्षकका सात ओटा कवितामा उपजाति र इन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् । उनले लाली शीर्षकको कविताका कुल ६ श्लोकमध्ये पाँच श्लोकमा उपजाति र एक श्लोकमा इन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् । उनले सुकर्म शीर्षकको कविताका ६ श्लोकमध्ये पाँच श्लोक उपजाति र एक श्लोक इन्द्रवज्रा छन्दमा रचेका छन् । कविले सम्भ्रना शीर्षक कविताका ६ मध्ये दुई श्लोक उपजाति र चार श्लोक इन्द्रवज्रा छन्दमा रचेका छन् । बुभेरेर आऊ शीर्षक कवितामा चाहिँ चारमध्ये तीन श्लोक उपजाति र एक श्लोक इन्द्रवज्रा छन्दमा रचिएको छ । कविले घोट्लिरहेछु शीर्षक कविताका पाँचमध्ये चार श्लोकमा उपजाति र एक श्लोकमा इन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् भने संसारको सार शीर्षक कविताका दुईमध्ये एक श्लोकमा उपजाति र एक श्लोकमा इन्द्रवज्रा छन्द प्रयोग गरेका छन् । यसैगरी उनले यात्रा शीर्षकको कविताका ६ श्लोकमध्ये पाँच श्लोकमा उपजाति र एक श्लोकमा इन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् ।

इन्द्रवज्रा छन्द प्रयोगको एक नमुना :
 काटी पखेटा विचरा चराको
 लौ उडु त भन्छन् कसरी उडोस् त्यो ?
 त्यै काटिएको विचरा चरा म
 आधा ढलेको रुखको जरा म ॥

(यात्रा, २०६८, पृ. ८)

५.६.४. उपजाति, उपेन्द्रवज्रा र इन्द्रवज्रा

कवि बलराम दाहालले बाँकी छ, कलिकथा र यस्तो किन ? शीर्षकका तिन कवितामा चाहिँ उपजाति, उपेन्द्रवज्रा र इन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् । उनले बाँकी छ शीर्षकको कविताका आठमध्ये ६ श्लोकमा उपजाति, एक श्लोकमा इन्द्रवज्रा र एक श्लोकमा उपेन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् । त्यसैगरी कविले कलिकथा शीर्षक कविताका १६ श्लोकमध्ये १५ श्लोक उपजाति छन्दमा र एक श्लोक उपेन्द्रवज्रा र एक श्लोक इन्द्रवज्रा छन्दमा रचेका छन् । यस्तो किन ? शीर्षकको कवितामा कविले सातमध्ये तीन श्लोकमा उपजाति, दुई श्लोकमा उपेन्द्रवज्रा र दुई श्लोकमा इन्द्रवज्रा छन्दको प्रयोग गरेका छन् ।

उपजाति छन्द प्रयोगको एक नमुना :
 आवेगको वेग म चलन दिन्न
 स्वभावको भाव म गलन दिन्न ।
 नोक्सानको सान म ढलन दिन्न
 स्वतन्त्रको तन्त्र बदलन दिन्न ॥

(बाँकी छ, २०६८, पृ. ३७)

उपेन्द्रवज्रा छन्द प्रयोगको एक नमुना :
 कमालको माल बनाउने क्वै
 विभागमा भाग लगाउने क्वै ।
 म खण्ड पाखण्ड बनेर जान्न
 प्रहारको हार सहेर जान्न ॥

(पूर्ववत्)

इन्द्रवज्रा छन्द प्रयोगको एक नमुना :
 क्वै फाइदा लिन्छ, दलिन्छ अर्को
 क्वै वागमा खेल्छ, उखेल्छ अर्को ।
 सोध्दा कुरा टार्छ, बटार्छ अन्त
 यस्ता कुनै खेल नखेल अन्त ॥

(पूर्ववत्)

५.६.५. शार्दूलविक्रीडित

उपजाति, इन्द्रवज्रा र उपेन्द्रवज्रा छन्द बाहेक कविले यस सङ्ग्रहभित्रका गुरु, कविता, सम्झना छात्रावासको, भानुलाई पत्र, अंकारमा छौं सबै, बाटो चिनेनौं तर, देवकोटाप्रति, रक्सी पुरानै रहयो, आग्लो नलागोस् तर, प्यारो नेपाल, सम्झेर आऊ प्रिये, सोचेर आऊ तर, बाल्यकाल र कर्तव्य, वैशाख लागेपछि र सिद्धिन्छ राम्रैसँग शीर्षकका कुल १५ कवितामा १९ अक्षरी वर्णमात्रिक शार्दूलविक्रीडित छन्द प्रयोग गरेका छन् । सौगातभित्र सङ्कलित कविताको अध्ययन गर्दा कवि दाहालको शार्दूलविक्रीडित छन्दको प्रयोग परिष्कृत हुँदै गएको अनुभूत हुन्छ ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द प्रयोगको एक नमुना :

क्वाँटीको रस त्यो असाध्य रसिलो लाग्थ्यो र भान्सा पसी
 खान्थ्यौं भात थपी थपी सब जना यौटै थलोमा बसी ।
 मैले होइन भातले वरु यहाँ खाँदै छु यो जिन्दगी
 दौडेको छु त्यतै जता समयले लाँदै छु यो जिन्दगी ॥

(सम्झना छात्रावासको, २०६८, पृ. १३)

५.६.६. अनुष्टुप्

कवि बलराम दाहालले सौगातभिन्नका ६ श्लोकमा अनुष्टुप् छन्दको प्रयोग गरेका छन् । उनले १. दैनिकी, २. नरोएको कुनै दिन, ३. गए गहना, ४. कवितै कविता लाग्छन्, ५. आमा र ६. रहस्य शीर्षकका कवितामा चार हरफे अनुष्टुप् छन्दको कुशल प्रयोग गरेका छन् ।

उदाहरणार्थ :

पाएको पद फुस्केला भन्ने चिन्ता यतातिर
पद नपाउँदा लाग्ने अर्को चिन्ता उतातिर ॥
छोराछोरीहरूको त्यो अर्कै चिन्ता छ लाइन
छैन पुगेर कोठामा नरोएको कुनै दिन ॥

(नरोएको कुनै दिन, २०६८, पृ. ९)

५.६.७. द्रुतविलम्बित

सौगातभिन्नका कवितामा विभिन्न छन्दको प्रयोग गर्ने क्तममा कवि दाहालले दुइटा कवितामा चार हरफे, १२ अक्षरी वर्णमात्रिक द्रुतविलम्बित छन्दको प्रयोग गरेका छन् । उनले **जोगिँदै आएँ र नियति, कविता र कवि** शीर्षकका दुई कवितामा द्रुतविलम्बित छन्दको प्रयोग गरेका छन् ।

उदाहरणार्थ :

सहरिया हरिया रचना थिए
प्रगतिको गतिमा किन रोकिए ?
सकसमा कसमा हुनु भाव के ?
विकृतिका कृतिको छ प्रभाव के ?

(नियति, कविता र कवि, २०६८, पृ. ४९)

५.६.८. पञ्चचामर

कवि दाहालले सङ्ग्रहभिन्नका कवितामा विविध छन्दको उपयोग गर्ने क्तममा उही छ कुरो शीर्षकको कवितामा १६ अक्षरी वर्णमात्रिक पञ्चचामर छन्दको उपयोग गरेका छन् ।

उदाहरणार्थ :

चिरा परेर खेतभैँ चिरा चिरा छ हातमा
ठगेछ दैवले कठै ! रहेछ भाग्य आँसुमा ।
पुगेन लक्ष्यमा बरै जताततै छ अल्मल
बगेन आज जिन्दगी नदी बनेर कल्कल ॥

(नियति, कविता र कवि, २०६८, पृ. ४९)

५.६.९. शिखरिणी

कवि दाहालले अनुष्टुप् छन्दमा रचिएको **आमा** शीर्षकको कविताको एक श्लोकमा शिखरिणी छन्दको पनि प्रयोग गरेका छन् । कविताको अन्तिम श्लोकमा प्रयोग गरिएको शिखरिणी छन्दको नमुना यस्तो छ :

विताइन् आमाले पनि प्रकृतिका सुन्दर दिन
यहीं खेल्यौं, हुक्यौं तर पनि बुझेनौं किन किन ?
व्यथा छन् आमाका मलम अहिले खोज्नु छ कति
नखोज्दा आमाको मन दुखित होला अब कति ??

(आमा, २०६८, पृ. ५६)

यसरी कवि बलराम दाहालले आफ्नो कविता सङ्ग्रह **सौगातमा** संस्कृतका विभिन्न वर्णमात्रिक छन्दको प्रयोग गरेका छन् । उनले सङ्ग्रहभित्रका ४२ कवितामा कुल आठ ओटा छन्दको प्रयोग गरेका छन् ।

५.७. सारांश

कवि बलराम दाहालको प्रवृत्तिका आधारमा सौगात कविता सङ्ग्रहभित्रका कविताको विश्लेषण गर्दा उनका कवितामा स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति सल्वलाएको देख्न सकिन्छ । प्रकृति चित्रण कवि दाहालको एक मुख्य विशेषता नै बनेको देखिन्छ । मानव मनभित्रका माया, प्रेमलाई कवितामा सहज ढङ्गमा उतारिएको छ । सङ्ग्रहमा समेटिएका दाहालका कवितामा नेपाली समाजभित्रका सामाजिक यथार्थ चित्रण गरिएको छ । उनका रचनामा राष्ट्रियताको भाव ओतप्रोत भई प्रकट भएको पाइन्छ । छन्दोबद्ध कविता रचनामा विशेष रुचि राख्ने कवि दाहालले यस सङ्ग्रहभित्रका ४२ कवितामा संस्कृतका आठ वर्णमात्रिक छन्द प्रयोग गरेका छन् । कवि दाहालका रचनामा समसामयिक सामाजिक विकृति र विसङ्गतिमाथि कडा व्यङ्ग्य गरिएको पनि पाइन्छ ।

अध्याय : छ

उपसंहार तथा निष्कर्ष

६.१. अध्यायगत सार

कवि बलराम दाहालको 'सौगात कविता सङ्ग्रहको अध्ययन' शीर्षकको यस शोधपत्रमा जम्मा पाँच अध्याय रहेका छन् ।

पहिलो अध्याय शोध परिचयको रूपमा रहेको छ । यसमा शोधको प्रयोजन, समस्या कथन, उद्देश्य, पूर्वकार्यको समीक्षा, शोधविधि, शोधपत्रको रूपरेखा आदिको उल्लेख गरिएको छ ।

दोस्रो अध्याय कवि बलराम दाहालको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको सङ्क्षिप्त चिनारीका रूपमा रहेको छ । कवि दाहालको जन्म, जन्मस्थानको परिचयदेखि उनको व्यक्तित्वका विविध पाटालाई यस अध्यायमा समेटिएको छ । यसका साथै, उनको साहित्यिक क्षेत्रको संलग्नता, उनका सिर्जना, पुस्तकारकार कृति आदिको समेत सङ्क्षिप्त चिनारी यसै अध्यायमा दिइएको छ ।

तेस्रो अध्यायमा कविता सिद्धान्तबारे चर्चा गरिएको छ । यस अध्यायमा कविताबारे पौरस्त्य र पाश्चात्य धारणाका साथमा कविताको परिभाषा प्रस्तुत गरिएको छ । यस अध्यायमा कविता तत्त्वको चिनारी दिइएको छ । यस क्रममा नेपाली कविताको समसामयिक धाराको चर्चा गर्ने सन्दर्भमा कवि दाहालको नेपाली साहित्यमा आगमनको प्रसङ्ग समेत उल्लेख गरिएको छ ।

चौथो अध्यायमा विवेच्य ग्रन्थ 'सौगात' कविता सङ्ग्रहमा समेटिएका ४२ ओटै कविताको कविता तत्त्व (संरचना, लय विधान, भाव विधान, कथन पद्धति, भाषाशैली, विम्ब/अलङ्कार र शीर्षक) का आधारमा विश्लेषण गरेर निष्कर्ष दिइएको छ ।

पाँचौं अध्यायमा 'सौगात' कविता सङ्ग्रह भित्रका कवितालाई स्वच्छन्दता, सामाजिक यथार्थता, राष्ट्रियता, व्यङ्ग्यात्मकता र छन्दोबद्धता जस्ता कवि दाहालका काव्य प्रवृत्तिका आधारमा विश्लेषण गरेर अन्त्यमा निष्कर्ष दिइएको छ ।

६.२. निष्कर्ष

दोलखा जिल्लाको सुन्द्रावती गाविसको लप्से गाउँमा वि.सं. २०३७ मङ्सिर २२ गते जन्मेका कवि बलराम दाहाल नेपाली साहित्यमा उच्च सम्भावना बोकेर उदाएका कवि हुन् । पिता देवी प्रसाद र माता लक्ष्मी दाहालका माहिला पुत्रका दाहालले प्रारम्भिक शिक्षा गाउँकै विद्यालयबाट प्रारम्भ गरेका र उनले काठमाडौंको रानी पोखरी संस्कृत माध्यमिक विद्यालयबाट माध्यमिक तह र नेपाल संस्कृत विश्व विद्यालयबाट आचार्य थगा त्रिभुवन विश्व विद्यालयबाट नेपाली विषयमा स्नातकोत्तर तह उत्तीर्ण गरेका छन् ।

विद्यालयका तल्ला कक्षादेखि नै कविता रचन थालेका दाहालको पहिलो प्रकाशित कविता चाहिँ 'मानवता' (आँकुरा, २०५२) हो । मानवताको प्रकाशनयता उनका **घरको कथा** (खण्डकाव्य, २०६३), **हामी बालक** (बाल कविता सङ्ग्रह, २०६५), **खरानी पो भयो माटो** (गजल सङ्ग्रह, २०६८) **पश्चात्ताप** (बाल उपन्यास, २०६८), **सौगात** (कविता सङ्ग्रह, २०६८) र **फुलबारी** (बाल गजल सङ्ग्रह, २०६९) गरी आधा दर्जन पुस्तकाकार कृति प्रकाशित भएका छन् । यी कृतिका माध्यमबाट दाहालले आफूलाई कवि, उपन्यासकार, गजलकार र खण्डकाव्यकारका रूपमा नेपाली साहित्य संसारमा परिचित गराएका छन् ।

कविताको पूर्व र पश्चिममा आ-आफ्नै ढङ्गमा अध्ययन भएको पाइन्छ । पूर्व र पश्चिम दुवैतिरका विद्वान् चिन्तकहरूले आ आफ्नै ढङ्गमा कविताको परिभाषा दिएका छन् । पूर्वमा आचार्य भरतको 'नाट्यशास्त्र'देखि सुरु भएको कविता चिन्तन परम्परामा दण्डी, वामन, रुद्रट, मम्मट, विश्वनाथ,

जगन्नाथ जस्ता उत्तरवर्ती विद्वान्हरूले पनि कविताको भिन्न भिन्न परिभाषा दिएका छन् । उता पश्चिमी साहित्य संसारमा पनि होमर, हेसियड, सोलोन, पिण्डार, क्रोचे, आइए रिचर्ड्स, टिएस इलियट जस्ता विद्वान्ले पनि कविताबारे चर्चा गरेका छन् । नेपाली साहित्यका विद्वान्हरूमध्ये महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा, बालकृष्ण सम, माधव प्रसाद घिमिरे, केदार मान व्यथित, कृष्ण गौतम जस्ता स्रष्टा, समीक्षकहरूले पनि कविताबारे आ आफ्नै परिभाषा दिएका छन् । सम्पूर्ण विद्वान् स्रष्टा समीक्षकहरूको परिभाषालाई आधार बनाउँदा प्रकृति जगत् र मानवविचको अनुभूतिलाई लयदार वा कलात्मक भाषामा अभिव्यक्त गर्नु नै कविता हो भन्न सकिन्छ । संरचना, लय विधान, भाव विधान, कथन पद्धति, भाषाशैली, विम्ब तथा अलङ्कार र शीर्षक जस्ता तत्त्व कविताका आवश्यक अङ्ग हुन् । नेपाली कविता परम्परामा सबैभन्दा पछि देखा परेको समसामयिक धारामा उदाएका विभिन्न कविमध्ये संस्कृतको वर्णमात्रिक छन्दमा कविता लेख्ने सफल कवि हुन् बलराम दाहाल ।

कवि बलराम दाहालका विभिन्न कृतिमध्ये सौगात कविता सङ्ग्रह एक हो । सौगात कविता सङ्ग्रहभित्र ४२ ओटा लामा छोटो छन्दोबद्ध कविता समेटिएका छन् । नेपाली साहित्यमा गद्य कविताकै बोलवाला रहेको समयमा छन्द कविताको फाँटमा आशाको जुनकिरी बनेर उदाएका कवि दाहालले यस सङ्ग्रहमा उपजाति, शार्दूलविक्रीडित, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, द्रुताविलम्बित, पञ्चचामर, शिखरिणी र अनुष्टुप् गरी आठ वर्णमात्रिक छन्दको प्रयोग गरेर छन्द कविता परम्परालाई नयाँ जीवन दिने कार्य गरेका छन् । उनको आगमनले नेपाली छन्द कवितामा बल पुगेको अनुभव हुन्छ ।

कवि दाहालको सौगात कविता सङ्ग्रहका कवितामा स्वच्छन्दता, सामाजिक यथार्थता, राष्ट्रियता, व्यङ्ग्यात्मकता र छन्दोबद्धता जस्ता प्रवृत्तिगत विशेषता पाइन्छ ।

सौगात कविता सङ्ग्रहको भूमिकामा राष्ट्रकवि माधव घिमिरेले कवि दाहालको काव्य प्रवृत्ति स्वच्छन्दतावादी नै हो भनेर किटान गरेको हुनाले स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति कवि दाहालको प्रमुख विशेषता बन्न पुगेको छ । उनका कवितामा नेपाली वन पाखामा पाइने प्राकृतिक सुन्दरताको मनोहारी वर्णन पाइन्छ । स्वच्छन्द भाव प्रवाहमा बगेका उनका कविता नेपाली कविता साहित्यका उच्च प्राप्ति बनेका छन् । दाहालका कवितामा नेपाली समाजभित्रका सामाजिक यथार्थ पनि छुचल्केको पाइन्छ । उनका कविताले समसामयिक नेपाली समाजका अनेक पाटाको यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत गरेका छन् । कविले आफू जन्मी हुर्केको समाजका अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा, थेग्नै नसक्ने स्तरको महङ्गी, बेरोजगारी, शोषण आदिको यथार्थ चित्र पनि कवितामा उतारेका छन् । राष्ट्रियताको भाव प्रस्तुत गर्नु कवि दाहालका कवितामा पाइने अर्को प्रवृत्ति हो । उनले नेपाल राष्ट्रको अखण्डता, सीमा रक्षा, मुलुकको समग्र प्रगति, आम नागरिकको उन्नति आदि विषयमा पनि अत्यन्तै सशक्त कलम चलाएका छन् । मुलुकको राजनीतिक अन्योल, अव्यवस्था र भद्रगोलको स्थितिमाथि कविले सहानुभूति पूर्वक सुधारको अपेक्षा गरेका छन् ।

व्यङ्ग्यात्मकता सौगात कविता सङ्ग्रहभित्र पाइने कवि दाहालको अर्को प्रवृत्तिगत विशेषता हो । मुलुकका विभिन्न असङ्गति विरुद्ध सशक्त व्यङ्ग्य गरेका छन् सौगातभित्रका कवितामा । नेपाली समाजका राजनीतिक भद्रगोल, शोषण, दमन, महङ्गी आदिमाथि कवि दाहालले व्यङ्ग्य गरेका छन् । नेपालका वन पाखामा जताततै पाइने अमूल्य जडिबुटीको मूल्य र महत्त्व बुझ्न नसक्दा हामीले कौडीका भाउमा विदेशीलाई बेचेर त्यही जडिबुटीबाट उत्पादित औषधि निकै महङ्गो मूल्यमा खरिद गरिरहेको तथ्यप्रति कविले व्यङ्ग्य गरेका छन् । जलस्रोतमा धनी भएर पनि बाटामुनि विशाल नदी नाला यत्तिकै बगेर खेर गइरहेको छ र बाटामाथिकै घरहरू निस्पट्ट अन्धकारमुनि रुमल्लिरहेकोप्रति पनि कविले व्यङ्ग्य गरेका छन् । चर्को महङ्गीले गर्दा जनता भोकभोकै मर्ने अवस्था आइलागे पनि राज्यले जनताको चिन्ता नलिएको अवस्थाप्रति कविले आक्रोश पोखेका छन् । राजनीतिक दलहरूले सत्ताका लागि लुछाचुँडी गरेको र पालैपालो सत्ता चलाएर मुलुकलाई बर्बादीको खाडलतिर धकेलिरहेको अवस्थाप्रति पनि कविले व्यङ्ग्य गरेका छन् ।

छन्दोबद्धता सौगात कविता सङ्ग्रहभित्रका कविताहरूमा पाइने अर्को विशेषता हो । नेपाली कविता साहित्यमा गद्य कवि र कविताको बाढी आइरहेको समयमा छन्द कविता परम्परामा आशा लाग्दो प्रतिभाका रूपमा देखा परेका कवि बलराम दाहालले सौगात कविता सङ्ग्रहभित्र संस्कृतका आठओटा वर्णमात्रिक छन्दको प्रयोग गरेका छन् । शार्दूलविक्रीडित, उपजाति, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, पञ्चचामर,

द्रुतविलम्बित, अनुष्टुप् र शिखरिणी गरी आठ वर्णमात्रिक छन्दमा रचिएका ४२ लामा छोट्टा फुटकर कविताले स्थान पाएका छन् सौगात सङ्ग्रहमा ।

यसरी यस शोधपत्रमा कवि बलराम दाहालको व्यक्तित्व र कृतित्वको सङ्क्षिप्त चिनारी प्रस्तुत गर्नुका साथै उनको सौगात कविता सङ्ग्रहभित्रका कविताहरूको विश्लेषण गरिएको छ । समग्रमा भन्नु पर्दा नेपाली छन्द कविताको इतिहासमा कवि बलराम दाहाल एउटा आशालाग्दा प्रतिभा हुन् । उनको आगमनले नेपाली छन्द कविताले नयाँ जीवन पाएको अनुभूत गर्न सकिन्छ ।

❖ अध्ययनको उपलब्धि

- कवि बलराम दाहाल (२०३७) नेपाली कविताको समसामयिक धाराका प्रखर प्रतिभा हुन् ।
- कवि दाहाल गद्य कविताको बोलवाला रहेको वर्तमानमा नेपाली कविता साहित्यमा छन्दमा कविता लेख्ने आशालागदा कवि हुन् ।
- कवि दाहाल महाकवि देवकोटाद्वारा प्रवर्धित स्वच्छन्दतावादी कविता धारामा कविता लेख्ने कवि हुन् ।
- कवि दाहाल आफ्ना कवितामा समसामयिक नेपाली समाजको यथार्थ यथार्थ चित्रण गर्ने कवि हुन् ।
- आफ्ना सिर्जनामा राष्ट्रियताको स्वर उराल्ने कवि दाहाल सामाजिक तथा राजनीतिक विकृति र विसङ्गतिप्रति सशक्त व्यङ्ग्य गर्ने कवि हुन् ।

❖ ६.४. अध्ययनका सम्भाव्य शीर्षकहरू

- क) छन्द कविताको इतिहासमा कवि बलराम दाहालको योगदान ।
- ख) स्वच्छन्दतावादको आलोकमा कवि बलराम दाहालको सौगात कविता सङ्ग्रह ।
- ग) व्यङ्ग्य कवि बलराम दाहाल र उनको सौगात कविता सङ्ग्रह ।

परिशिष्ट

‘सौगात’ कविता सङ्ग्रहका सर्जक कवि बलराम दाहालसँग गरिएको कुराकानीलाई यस परिशिष्ट खण्डमा समावेश गरिएको छ ।

प्रश्न : तपाईंलाई छन्दमा कविता लेख्न सक्छु जस्तो कहिलेदेखि लाग्न थाल्यो ?

मलाई छन्द के हो भन्ने थाहा नभएको बेलामा पनि सानैदेखि अरूले लय हालेर कविता पाठ गरेको सुन्न असाध्यै मन पर्थ्यो । समय क्रमले जब म दोलखाबाट संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, रानी पोखरीमा कक्षा ८ मा भर्ना भएँ तब त्यहाँका गुरुहरूले संस्कृतका श्लोक भाका हालेर वाचन गर्दै पढाउँदा छन्दका कवितामा अलि अलि रस बस्न थाल्यो । पछि रघुवंश, कुमारसम्भव जस्ता महाकाव्य पढेपछि यस्ता छन्दोबद्ध श्लोक कसरी लेखेको होला भन्ने उत्सुकता बढ्दै गयो । विद्यालय तहमै छँदा तिन धारा छात्रावासका अग्रजहरूले गौरी खण्डकाव्य भाका हालेर पढेको सुनेपछि मैले यस खण्डकाव्य पटक पटक दोहोर्याएँ । त्यही छात्रावासमै छन्द, छन्दका गण, यति, गति र लयबारे सिक्ने अवसर मिल्यो । अलि अलि कनिकुथी शार्दूलविक्रीडित छन्दमा सामान्य वर्णनात्मक कविता कोर्न त्यसै बेला सिकियो । विस्तारै छन्दमा रस बस्न थाल्यो । पछि दुई चारओटा फुटकर कविता लेखेर प्रतियोगितामा सहभागी हुँदा कवितामा प्रथम पुरस्कार पाएपछि विशेष गरेर २०५६ सालदेखि म छन्दमै लेख्न सक्छु र जन्म पनि सक्छु जस्तो लाग्यो र लगत्तै घरको कथा खण्डकाव्य लेख्न सुरु गरें । यो यात्रा आजसम्म जारी छ ।

प्रश्न : छन्द कविता लेखनतर्फ नै आकर्षित हुनुको खास कारण के हो ?

छन्दभित्र एउटा बेजोड शक्ति हुन्छ र रहरलाग्दो सङ्गीत हुन्छ । यो सङ्गीत बजाउन जान्यो भने टाढा टाढाका मानिस पनि झुम्मिन्छन् । बजाउन जानेन भने झुम्मिएका मानिस पनि भाग्छन् । मलाई चाहिँ त्यही छन्दभित्रको सङ्गीतले आकर्षित गर्‍यो । प्रायः कविता, काव्यहरू छन्दकै बढ्ता रुचाइने र मलाई पनि छन्दोबद्ध कविता नै मन पर्ने अनि छन्द नै मेरो प्राण भइसकेकाले पनि म छन्द कविता लेखनतर्फ अकर्षित भएको हुँ ।

प्रश्न : समकालीन छन्द कविमध्ये कोबाट बढी प्रभावित हुनुहुन्छ र किन ?

यहाँ प्रभावित हुनुको मतलब मैले चाहिँ कविताले हृदयमा छाप छोड्नु र कविप्रति सम्मान आदर भाव जगाउनु हो भन्ने ठानेको छु । हुन त कतिपय कविका सामान्य कवितांशले पनि कहिले काहीँ मन पगाल्छ । तर, समग्रमा म चाहिँ पुराना पुस्ताका कवि माधव घिमिरे र ०५० को दशकयता भुवन हरि सिग्देलबाट अलि बढी प्रभावित छु । घिमिरेको विन्दुमा सिन्धु अटाउने कलात्मक शैली र सिग्देलको यथार्थ परक काव्यात्मक शैलीको ममा अलि बढी छाप बसेको छ । यसो भनिरहँदा अन्य बाँकी कविहरूप्रति अनादर गर्न खोजेको चाहिँ होइन । यो मेरो नितान्त व्यक्तिगत बुझाइ र भोगाइ हो ।

प्रश्न : ‘सौगात’ कविता सङ्ग्रहको पृष्ठभूमि बताइदिनुहोस् न ।

मसँग सुरुमा ‘जिन्दगी’, ‘गुरु’, ‘नरोएको कुनै दिन’ र ‘रक्सी पुरानै रह्यो’, शीर्षकका केही फुटकर कविता थिए । पछि विस्तारै सभा, समारोह र विभिन्न कार्यक्रममा जाँदा समस्यापूर्ति कविता पनि बाध्यताले थपिँदै गए । ‘रहस्य’, ‘बाटो चिनेनौं तर’, ‘अंकारमा छौं सबै’ शीर्षकका कविता बेलाबखतका स्वामीज्यूहरूका वेदान्ती प्रवचनबाट जन्मिए । अन्य कविता आफ्नै भोगाइ, कसैलाई श्रद्धाभावका लागि आएका छन् । कतिपय कविता यमक अलङ्कारको नमुना बनेर आए । अन्त्यमा ४०-५० ओटा कविता तयार भएपछि अब यी कविता विद्वान् पाठकहरूका बिचमा सौगात स्वरूप मैले सुम्पिनुपर्छ जस्तो लाग्यो र ‘सौगात’ शीर्षकमै थप एक कविता लेखेपछि कविता सङ्ग्रहको नाम पनि ‘सौगात’ नै रहन गयो ।

प्रश्न : ‘सौगात’ मा कम छन्द परेजस्तो लाग्दैन ?

धेरै छन्द प्रयोग गरेर मात्रै कविता राम्रा हुने होइन । कम छन्द प्रयोग गर्दा पनि कविता राम्रो हुने होइन । मेरो जुन जुन छन्दमा हात बसि सकेको छ, रगण, मगणको रगडाइमा अल्बिनु पर्दैन, तिनै छन्दमा कविता लेखियो । हात बसि सकेका छन्दमा आफूलाई अलि सहज लाग्ने, भाव पनि सोचे जस्तो

आउने र सलल बग्ने भएकाले सात-आठओटा छन्द मात्र सौगातमा परेका छन् । त्यसैले मलाई सौगातमा कम छन्द प्रयोग भयो भन्ने चिन्ता पनि छैन र बढी छन्द प्रयोग गर्न पाएको भए हुन्थ्यो भन्ने लोभ पनि छैन ।

प्रश्न : 'सौगात' भित्रका कविताबारे तपाईंको मूल्याङ्कन कस्तो छ ?

सौगातभित्रका कविता प्रायः प्रतिकूल परिस्थितिमा जन्मिएको समयका सौगात हुन् । यसभित्र प्रायः सबै विषय वस्तु समेटिएका छन् जस्तो लाग्छ । यसभित्रका कविता जीवन भोगाइदेखि युगका विकृति र विसङ्गतिप्रति व्यङ्ग्य गर्दै प्रकृति र स्मृतिमा रमाउँदै विश्व बन्धुत्वको भाव बोकेर आएका छन् जस्तो लाग्छ । प्रा.डा. वासुदेव त्रिपाठीले सौगातभित्रका कवितामा आएका यमक छटा नेपाली काव्यको एक विशेष प्राप्ति हो भन्नु भएको छ । मलाई पनि यमकको यति धेरै प्रयोग गरिएको सायद यो नै पहिलो कविता सङ्ग्रह हो जस्तो लाग्छ । छन्दको सुललित प्रयोग, विषयगत विविधता, लैङ्गिक असमानता, आशावादी र मानवतावादी स्वर मुखरित भएको छ । यस कविता सङ्ग्रहमा प्रकृति, स्मृति र मृत्युका सम्भनामा कोरिएका कविता सम्भन लायक छन् । यसमा अभै सुधार गर्नुपर्ने पक्ष धेरै छन् । निरन्तर साधनाले मात्र ती पक्षमा सुधार आउने छ । त्यसका लागि विद्वान् पाठकहरूले मूल्याङ्कन गरी आवश्यक सल्लाह, सुझाव दिनु हुने छ भन्ने आशामा छु ।

प्रश्न : 'सौगात' मा सङ्कलित कविता कसरी चयन गर्नुभयो ?

सौगातमा सङ्कलित कविता कुनैलाई राजनीतिक अस्थिरताले जन्माएको छ । जस्तै : भानुलाई पत्र, रक्सी पुरानै रह्यो, सोचेर आऊ तर आदि । कुनै कविता सामाजिक विसङ्गतिबाट, कुनै व्यक्तिगत भोगाइबाट, कुनै युगले भोगेको पीडाबाट, कुनै अध्यात्मवादी दर्शनबाट चयन भएका छन् । कुनै प्रकृतिबाट, कुनै स्मृतिबाट पनि कविता जन्मेका छन् । यस्तै यस्तै विषय वस्तुबाट सौगातभित्रका कविता चयन गरिएको छ ।

प्रश्न : 'सौगात' भित्रको सबैभन्दा मन परेको कविता कुन हो र किन ?

आफूले जन्माएका सन्तान सबैको उत्तिकै माया लाग्दो रहेछ । आफू कवि हुँ भन्ने विर्सिएर समालोचक बनेर सौगात पढ्दा मलाई हर दृष्टिकोणबाट जिन्दगी र गुरु शीर्षकका कविता बढी मन पर्छ । यी कविता जति पटक पढ्दा पनि मलाई नयाँ नै जस्तो अनुभव हुन्छ । किनकि, जिन्दगी कवितामा व्यक्तिगत भोगाइको अभिव्यक्ति भए पनि त्यो भोगाइमा आम जिन्दगीले भोगिरहेको साझा भोगाइ यथार्थ परक बनेर आएको छ । जिन्दगी रहनुजेल त्यो कविता पढ्दा आम पाठकले पनि आफ्नै अनुभव भेट्न पाउँछ । कुनै व्यक्ति, वस्तु, ठाउँ, प्रकृति वा कुनै चिजले हामीलाई केही न केही सिकाइ रहेकै हुन्छ । गुरुका पनि गुरु महागुरु भनेको प्रकृति नै रहेछ । यसैलाई मैले चाहिँ यो संसार चलाउने अदृश्य महागुरु सम्भेको छु । प्रकृतिदेखि टाढा कोही पनि हुँदैन र हुन सक्दैन पनि । त्यसैले गुरु कविता मलाई बढी मन पर्छ र गुरुलाई सदैव पुजि रहन्छु ।

प्रश्न : 'सौगात' कविता सङ्ग्रहमा यमक अलङ्कारको प्रयोग अत्यधिक देखिन्छ नि ?

सौगातमा यमक अलङ्कारको प्रयोग अत्यधिक छ । किनकि, कतै यमक अलङ्कारको चमत्कार देखाउन प्रयोग गरियो होला । कतै यमक अलङ्कार नेपाली कविता परम्परामा सबैभन्दा बढी प्रयोग भएको देखाएर यमक अलङ्कारको सम्मान गर्नका लागि पनि आएका छन् भने कतै सहज तरिकाले आएका छन् । त्यस्तै कतै यमक बढी प्रयोग हुँदा कुनै पङ्क्तिमा प्रकृत भाव सलल नबग्न पनि सक्छ । तर, अब चाहिँ यमक प्रयोगले मेरा काव्यमा निकै कम स्थान पाउने छ ।

प्रश्न : तपाईंको कृतिको यसरी अध्ययन गर्न लागेकोमा तपाईंलाई कस्तो लागेको छ ?

कुनै पनि सर्जकको कृतिको अध्ययन गरेर कुनै पनि शोधार्थीले शोध तयार पार्दा एक त शोधार्थीको समालोचकीय क्षमताको वृद्धि हुन्छ भने अर्कातिर सर्जकको सम्मान हुने र उसले सार्वजनिक हुने अवसर समेत पाउँछ । नयाँ शोधार्थीलाई सम्बन्धित सर्जक र कृतिबारे केही खोज्नुपर्ने, अनुसन्धान गर्नुपर्ने भने

पनि धेरै सहयोग पुग्छ । त्यसैले म अत्यन्त हर्षित छु । 'सौगात' कविता सङ्ग्रहमा शोध तयार पारिदिने शोधार्थीप्रति विशेष आभार प्रकट गर्दछु ।

प्रश्न : छन्दमा कविता लेख्ने सम कालीन कविबारे तपाईंको धारणा कस्तो छ ?

प्रारम्भमा कविता भनेपछि छन्दकै मात्र हुन्छन् भन्ने धारणा थियो र छन्दको चर्को बोलवाला पनि थियो । तर, कालान्तरमा गद्य कविताले छन्दोबद्ध कविताभन्दा बढी प्राथमिकता पाउँदै गयो, छन्द कविता लेखन केही सुस्तायो । तर, ०४० को दशक यता फेरि छन्द कविता मौलाउन थाल्यो । छन्द कविहरू बढ्दै गए । सम कालीन कविहरू पनि गद्यमा भन्दा पद्य लेखनमै रमाउन थाले । युवा पुस्तामा पनि छन्द कविताको मोह बढ्दै गयो । हुँदा हुँदा अहिले बहर (छन्द) मा गजल लेख्ने गजलकार पनि निकै बढेका छन् । सम कालीन कविहरू अहिले गम्भीर विषय वस्तुलाई पनि सरल तरिकाले भाव सम्प्रेषण गर्न सक्ने र छन्दको संवेदनशीलतालाई बुझ्न सक्ने क्षमताका छन् । विषयगत विविधतामा रमाउने अनेकानेक छन्दको प्रयोग गरी फुटकर कविता, काव्य, महाकाव्य रच्ने कविहरू अहिले प्रशस्त छन् । कला र भावको सन्तुलित प्रयोग गरी युगको सन्देश सम्प्रेषण गर्न सफल देखिन्छन् । समकालीन छन्द कविहरू आशावादी र ऊर्जाशील छन् । फेरि छन्दको युग फर्किएको जस्तो लाग्छ मलाई त ।

पत्राचारबाट प्राप्त

सन्दर्भ सामग्री सूची

१. अधिकारी, हेमाङ्ग राज र बट्टी विशाल भट्टराई (सं.), प्रयोगात्मक नेपाली शब्दकोश (२०७०), विद्यार्थी पुस्तक भण्डार : काठमाडौं ।
२. उपाध्याय, केशव प्रसाद, साहित्य प्रकाश (२०४९), साभ्ना प्रकाशन : ललित पुर ।
३. काफ्ले, ममता, 'घरको कथा' खण्डकाव्यको कृतिपरक अध्ययन (२०६८), त्रिवि, अप्रकाशित शोधपत्र ।
४. कुँवर, उत्तम, स्रष्टा र साहित्य (२०५०), साभ्ना प्रकाशन : ललित पुर ।
५. गौतम, कृष्ण, सिर्जनाको सुवास (२०५६), साभ्ना प्रकाशन : ललित पुर ।
६. घिमिरे, माधव (२०६८), रमाइलो शैली रसिलो भाव, सौगात कविता-सङ्ग्रह, भानुभक्त मेमोरियल उच्च मा.वि : काठमाडौं ।
७. घिमिरे, माधव (२०२३), सम्पादकीय, कविता तत्त्व, कविता वर्ष
८. ज्ञवाली, राम प्रसाद (२०६८), यमक र समस्यापूर्तिमा बलवान् कवि बलराम, सौगात कविता सङ्ग्रह, भानुभक्त मेमोरियल उच्च मावि : काठमाडौं ।
९. त्रिपाठी, वासुदेव र अन्य (सं.), नेपाली कविता भाग ४ (२०६५), साभ्ना प्रकाशन : ललित पुर ।
१०. त्रिपाठी, वासुदेव, पाश्चात्य समालोचनाको सैद्धान्तिक परिचय (२०६५ पाँचौं संस्करण), साभ्ना प्रकाशन : ललित पुर ।
११. त्रिपाठी, वासुदेव (२०६८), सौगातका सम्बन्धमा, सौगात कविता सङ्ग्रह, भानुभक्त मेमोरियल उच्च मावि : काठमाडौं ।
१२. थापा, कुमारी भवानी, नारायण प्रसाद उपाध्याय अर्यालका कविता कृतिहरूको अध्ययन (२०६९), त्रिवि, अप्रकाशित शोधपत्र ।
१३. थापा, मोहन हिमांशु, साहित्य परिचय (२०६०), साभ्ना प्रकाशन : ललित पुर ।
१४. दाहाल, बलराम, सौगात (२०६८) : भानुभक्त मेमोरियल उच्च मावि : काठमाडौं ।
१५. घरको कथा (२०६३), एबिसी प्रकाशन, प्रकाशन ।
१६. हामी बालक (२०६५), भानुभक्त मेमोरियल उमावि ।
१७. खरानी पो भयो माटो (२०६८), भानुभक्त मेमोरियल उमावि ।

१८.पश्चात्ताप (२०६८), भानुभक्त मेमोरियल उमावि ।
१९.फुलबारी (२०७०), भानुभक्त मेमोरियल उमावि ।
२०. देवकोटा, लक्ष्मी प्रसाद, लक्ष्मी निबन्ध सङ्ग्रह (२०६९), सोह्रौं सं., साभा प्रकाशन : ललित पुर ।
२१. न्यौपाने, दैवज्ञ राज (२०६८), जहाँ सबैको मुटु भस्किने छ, सौगात कविता सङ्ग्रह, भानुभक्त मेमोरियल उच्च मावि : काठमाडौं ।
२२. प्रश्रित, मोदनाथ (२०६८), 'सौगात' बनोस् जनयात्राको सम्बल, सौगात कविता सङ्ग्रह, भानुभक्त मेमोरियल उच्च मावि : काठमाडौं ।
२३. बन्धु, चूडामणि, अनुसन्धान तथा प्रतिवेदन लेखन (२०६५), रत्न पुस्तक भन्डार : काठमाडौं ।
२४. शर्मा, तारानाथ (२०६८), जसका कलममा अनुप्रास थैथै गर्छ, सौगात कविता सङ्ग्रह, भानुभक्त मेमोरियल उच्च मावि : काठमाडौं ।
२५. शर्मा, सोमनाथ, साहित्य प्रदीप (२०५८), विद्यार्थी पुस्तक भन्डार : काठमाडौं ।
२६. श्रेष्ठ, दयाराम र मोहन राज शर्मा, नेपाली साहित्यको इतिहास (२०४९), चौ.सं., साभा प्रकाशन : ललित पुर ।